पूर्वक बयान बतलाया और इस्लाम के पांच स्तम्भों के विषय जो अबतक अज्ञात थे प्रकाश डाला। हैदराबाद के ५१ ईसाई शिक्षकों ने इसमें भाग लिया और इस सेमिनार को आगे भी करने का संकल्प किया।

७. समस्त भारत में ११ अक्टोबर १९७३ से महिला जाग्रति का सप्ताह मनाया गया जो सर्वोदय महिला सम्मेलन के फैसलानुसार हुआ। इसमें महिला कार्यकर्त्ताओं का महिला समूह में काम करने और उनमें जाग्रति लाने पर विचार किया गया। पर्चों और इस्तिहारों के विरुध भी इस सप्ताह में विचार प्रकट किया गया। इस सप्ताह में ३०० कार्यकर्त्ताओं का टीम भारत के ३०० जिलाओं में कार्य करेंगे।

८. कलकत्ता में आत्म-नियुक्ति की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है यह स्टेट बैंक ओफ इन्डिया की सहायता प्राप्त है। इसमें आडिट काम और अन्य बैंक के कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है। विभिन्न स्कूल और कालेजों के छात्रों को यह प्रशिक्षण दिया जाता है।

९. भारत के प्राइमरी स्कूलों के छात्र अपने पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त लैब्रेरी का पुस्तक आधा से भी कम पढ़ने पाते हैं। दूसरे उन्नत देश के बच्चे पांच गुणे अधिक पढ़ते हैं। शिक्षा विभाग के जांच करने से यही मिला कि भारत के ८८ स्कूलों में ·१२ स्कूलों का तो लैब्रेरी तक नहीं है। ८० स्कूलों के कुल जमा केवल ७२०८ पुस्तकें पाये गये। यह कमी नये विद्यार्थियों के लिए निरुत्साह का कारण है।

१० १५८ केजी वजन का दिल्ली का गिर्जा घण्टा जो कश्मीरी गेट गिरजा से २८ अगस्त को चोरी हुआ था एक महीने के बाद मिला। यह लन्डन में बना था। अमेरिका के गिरजों में जैसे डकैती होती हैं वैसा ही भारत के गिरजों में भी हो रहे हैं। नागपुर के दो प्रोटेस्टान्ट चर्चों को अपने चांदी तथा मैक्रोफोनों से हाथ धोना पड़ा वैसा ही उससे पहले रोमन कथोलिक चर्च की भी हानि हुई।

११ दरभंगा के श्री कामेश्वरी प्रिय पुवर होम अन्धों के लिये एक नेत्रहीन स्कूल, कारखाना तथा शिक्षा का संचालन कर रहा है। नेत्रहीन छात्रों से आवेदन पत्र बुलाये गये हैं। जहां मुफ्त शिक्षा दी जायगी और रहने का प्रबन्ध और पाकेट मनी भी दिया जायगा।

१२ अरब देशों के तेल पर प्रतिबन्ध लगाने से अमेरिका जो पहले तेल बाहर भेजता था उसको भी तेल का घाटा पड़ा है। इसराएल से अमेरिका का सांठ गांठ के कारण ही अरब देशों ने यह कदम उठाया है। इसराएल के विरुद्ध मिश्र को ६ करोड़ डोलर का मदद राजा फैजल ने दिया है और अन्य देशों को भी ६ करोड़ डालर देने का आग्रह किया है।

१३ टोकियो (जापान) का अयोमा गाकुइन विश्व-विद्यालय ने धार्मिक विभाग को निर्देश किया है कि आगे को वे बाहर के छात्रों को प्रवेश न करने दें। यह घटना १९६९ और १९७३ में कन्टो गाडकिन कालेज में भी घटी थी। पैसा की कमी ही इसका कारण है।

१४ हंगारी का शक्तिशाली ८१ वर्षीय करडिनल जोसेफ मिन्डसेन्टी २२ सेप्तम्बर ७३ को कनाडा प्रस्थान किये थे जहां उन्हें भव्य स्वागत किया गया। उनके भाषण ने गिर्जे के श्रोताओं का आंसू बहा दिया। यह करडिनल देशान्तृत होकर वियना में रहते हैं।

१५ अफ्रीका के ४० समाचारपत्रों के सम्पादकों ने अपने पत्रिकाओं में उन्नति लाने का अर्ज किया है। इस सलाहकारी सभा में यूरोप के मददगार तथा रोमन कथोलिक पत्रकारों ने भी भाग लिया था।

१६ बिल्ली ग्रहाम जो जगद प्रसिद्ध प्रचारक हैं हाल ही में कोरेया गये थे। वहां बड़े २ शहरों में उन्होंने प्रचार का काम किया जहाँ लाखों लाख आदमी उपस्थित थे। ऐसा उपस्थिति बिल्ली ग्रहाम ने कभी नहीं देखा था। सिउल के प्रचार सभा में ६००० पाद्री और प्रचारक विभिन्न देशों से उपस्थित थे।

१७ क्यूबा जो कि साम्यवादी देश है वहां १०००० बैबल और ६००० सुसमाचार चीली के बैबल सोसाइटी द्वारा भेजा गया था सुरक्षित पहुंचा। यह दान फिडेल कास्ट्रो को १९७१ में चीली के अर्चविशप राडल सिलवा एनरीकेज द्वारा दिया गया था। ये किताबें स्पेन में बने थे।

Gossner Mission

१८ शिक्षा मानव अधिकार है—वयस्क शिक्षा के तृतीय अन्तरराष्ट्रीय सभा ८ सेप्तेम्बर १९७३ को जापान में हुआ। यह अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा दिवस था। जगत में जनसंख्या की बढ़ती से अशिक्षित वयस्कों की संख्या में भी बढ़ती हुई है। २० वर्षों में ८ करोड़ संख्या बढ़ गई। शिक्षा पर अधिकार अभी मानव अधिकार हो गया है।

१९ संयुक्त राष्ट्र युवा तथा मानव अधिकार पर सम्मेलन इटली के सेन रेमो में हुआ। यह २२ अगस्त से १० सेप्तेम्बर तक चला। इसमें मानव अधिकार सम्बन्धी बातों में युवकों की संख्या बढ़ाने का विचार किया गया। युवकों को काम का मौका तथा सैनिक नौकरी पर भी विचार किया गया। इस प्रकार का यह दूसरा सम्मेलन था। इसके पहले युगोस्लाविया के बलग्रेड नगर में पहला सम्मेलन १९७० में हुआ था।

२० अफ्रीका के मुकोनो नगर का एकमात्र थेओलोजिकल कालेज, बिशप टुकर कालेज जो उगन्डा के पाद्रियों को प्रशिक्षण देता था आर्थिक समस्या के कारण बन्द होने की अवस्था में है। यदि ३१ दिसम्बर १९७३ तक यथेष्ट अर्थ न मिले तो बन्द हो जायगा।

२१ सुसमाचार प्रचार करने वाला जहाज लोगोस हाल ही में मलदीव द्वीप गया था। मलदीव द्वीप इसलाम का जड़ है जहां कोई ईसाई नहीं हैं। केवल श्रीलंका से गये हुए कुछ ईसाई है। शिक्षा मंत्रालय इसका जिम्मेवार था और लोगोस को भव्य स्वागत दिया गया। प्रदर्शिनी में पुस्तकों की भारी मांग थी। पांच दिनों के बाद लोगोस वहां से प्रस्थान किया।

२२ वर्ल्ड कौंसिल अफ चर्चेस का ५वीं सभा इन्डोनेसिया के जकाती नगर में २२ जुलाई से ८ अगस्त १९७५ को होगा। इसका विषय है "योशु मुक्त करता है और एकता लाता है।" इन्डोनेसिया का नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल अतिथि सेवक रहेगा। अधिक संख्या में युवक तथा महिलाओं का जमघट की उम्मीद है।

२३ रूस का पत्रियाकि पीमेन सेप्तेम्बर में वर्ल्ड कौंसिल अफ चर्चेस का निरीक्षण किये। मनुष्यों के बीच सेवा तथा कलीशियाओं में एकता पर जोर दिया गया विशेष कर यूरोप में।

२४ इंगलैंड चर्च ने यह फैसला किया कि महिलाओं को अभिषेक करना १९७५ तक स्थगित कर दिया जाय। कन्टरबरी का आर्च बिशप डा० मिकाएल रामसे ने इस बात पर यह मौका दिया।

(एन०सी०सी० रिभीऊ के सौजन्य से)

संक्षिप्त समाचार देश-विदेश

१. न्यूयोर्क का खबर है कि अमेरिकन लूथेरान चर्च के एक पाद्री की एक बच्ची हुई पाद्री का नाम रेव· मार्गारेट किर्च है जो १९७० के विधान अनुसार पहला अभिषिक्त महिला पाद्री हैं।

२. जेनेवा का खबर है कि अन्तरराष्ट्रीय लूथेरान–संशोधित लूथेरान—रोमन कथोलिक सभा ने एलान किया कि विवाह एक अजीवन बद्धता है परन्तु तिस पर भी तलाक और फिर से ब्याह के सम्बंध में भारी मतभेद बनी रही।

३. काला लूथेरान बिशप को परितोषिक :—अफ्रीका के नम्बीया के बिशप लेवनार्ड एन औवाला को वृहद धर्म प्रचार के उपलक्ष्य में परितोषिक दिया गया।

४. फ्रेंकफुर्त पश्चिमी जर्मनी का खबर है कि अफ्रीका के नम्बीया का लूथेरान चर्च के प्रधान पर यह आरोप लगाया गया कि उसने वहां के संरक्षक पुलिस को कुछ खबर दी। प्रधान ने इसे अस्वीकार किया परन्तु इसी सिलसिले में वहां के चार जर्मन पाद्रियों ने जर्मनी वापस कर दिये जाने के लिए आवेदन किया।

५. हंगारी के ब्युडापेस्ट का खबर है कि हंगारी के लूथेरान नेता ने पश्चिमी चर्चों से आग्रह किया है कि वे शांति और सहयोग के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करें।

६. अर्जेन्टीना ब्युनोस आयर्स का खबर है कि वहां के संयुक्त लूथेरान चर्च ने ५००० मेम्बर के २६ वी सभा को चिट्ठी द्वारा अर्ज किया है कि वे हिंसा के प्रश्न पर अपनी परिस्थिति व्यक्त करें।

Gossner Mission

७. स्वीडेन का खबर है कि मध्य पूर्व, अफ्रीका के शरणार्थी और चीली के शरणार्थी प्रोग्राम के लिए स्वीडिस समिति ने ३ करोड़ १० लाख क्राउन का बजेट बना लिया है।

८. पोलेन्ड के लूथेरानों ने लुवेनबर्ग प्रतिज्ञापत्र का स्वागत करते हुए कहा कि लूथेरानों और संशोधित कलीशियाओं के लिए एक नया बल है।

९. कोरेया के लूथेरानों ने अपने काम को अधिक फैलाने का संकल्प किया है। विशेष कर प्रचार के काम को। अब तक वहां के १००० सदस्य कलीशिया सामाजिक सेवा कार्य तक ही सीमित था।

आवश्यकता

सिंहभुम इलाका में तीन प्रशिक्षित प्रचारकों की आवश्यकता है-जिन्हें कलीशिया के वेतन-मान के अनुसार वेतन दिया जायगा। प्रार्थी को 'हो' अथवा 'मुण्डारी' भाषा में गिर्जाराधना चलाने की क्षमता हो।

इच्छुक प्रचारक अपना आवेदन पत्र, अपनी योग्यता, अनुभव तथा प्रमाण पत्र एवं सिफारिश के साथ १५ जनवरी, १९७४ तक — Rev. D. Hemrom, G. E. L. Church Sitaramdera, P. O. Agrico, Jamshedpur के पास अवश्य ही भेज देवें।

Pastors' Conference 1974, Rourkela

The World Vision International, U. S. A. in collaboration with the Rourkela Christian Council has planned for a Pastors' Conference from January 7th, to 11th 1974 at Rourkela. The aim of this conference is to bring together in fellowship the Pastors of Chhatisgarh, Chotanagpur, Purulia and North-West Orissa. This would inspire both spiritually and Physically the pastors and evangelists of these areas through the challenges and opportunities that they would be exposed to during the conference.

Dr. Paul Stromberg Rees and Dr. Richard C. Halverson of the world Vision and Dr. Samuel Kamaleson of Madras would be the speakers besides several others.

We covet your prayers for :

(i) the out-pouring of the Holy Spirit on the Speakers and participants in the conference so that the churches in these areas are revived.

(ii) the health and safety of the Speakers and the organisers of the conference.

(iii) necessary facilities to be available for making arrangements for the conference.

(Barun Kumar Das.)
Executive Secretary,
Pastors'Conference, 1974.

—:o:—

Gossner Mission

नया दिन नया जीवन

मंगल सोय "अनमोल"

नया दिन इस नूतन वर्ष का
नये जीवन का संदेश लाया;
नई उमंग नई आशाओं का
मधुर उपहार है लेके आया।
पुराना वर्ष गुजर कर भी
दे गया खुशी बड़े दिन की;
सुख-दुःख देकर अंत में
मिटाया पीड़ा सबके मन की।

नया वर्ष भी मसीह में है
एक नई सृष्टि का शृंगार;
पुरानी बातों को भूल कर
लाया नई खुशियों का अंबार।

यूं तो हर पल जीवन का
अपने में अनमोल होता है;
दुखद क्षण भी बीत कर
एक यादगार बन जाता है।
किन्तु मिलती नई जिंदगी को
ईश्वर का वरदान समझकर;
उसी के चरणों में कर देंगे
सच्चे मन से धन्यवाद देकर।

क्या भरोसा नाश्वर जग का
मन लगायें अमर वचन में;
पावन आत्मा का दान पायेंगे
अपने इसी जग जीवन में।

तुम्हारे पुण्य जन्मदिन में

—'नमजन'—

प्रभु ! क्या समर्पित करूं
तुम्हारे पुण्य जन्मदिन में ?

सोना, लोबान, गन्धरस
ज्योतिषियों ने
दिया
तुम्हारे पुन्य जन्मदिन में।

गड़रियों ने आकर
मुक्तिदाता समझ
ग्रहण किया
तुम्हारे पुण्य जन्मदिन में।

समर्पित है प्रभु
यह टूटा दिल
ग्रहण कर ले
तुम्हारे पुण्य जन्मदिन में।

प्रार्थना आप के लिए क्या कर सकती है?

Basant Kumar Surin
D.U. Mission Boys' Hostel Hazaribagh

प्रार्थना द्वारा ईश्वर को स्मरण करना मसीही धर्म का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। प्रार्थना है क्या चीज ? " प्रार्थना हमारा और ईश्वर का पारस्परिक संबंध है और अपने को उसके हाथों सौंप देने में हमें अथाह सिद्धि की परिपूर्ति हो सकती है।"

प्रार्थना को महत्व से हम सभी मसीही अच्छी तरह परिचित हैं। लेकिन शायद हम में बहुत कम ही लोग होंगे, जिनको इसका प्रत्यक्ष फल का अनुभव हो। आइये हम यहाँ देखें कि इतिहास के पुरुषार्थी व्यक्तियों के लिए प्रार्थना ने क्या किया ?

आज भी यदा कदा लोग विज्ञान एवं धर्म के बीच संघर्ष की बातें करते हैं। किन्तु वास्ताविकता यह है कि हमारा आधुनिक मनोविज्ञान वही सिखाता है जो ईसा मसीह ने सिखाया था। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि प्रार्थना एवं धार्मिक निष्ठा द्वारा चिंता आकुलता, बोझ, भय और बहुत -सी बीमारियाँ दूर की जा सकती हैं।

मसीही होने के नाते अगर हम मसीही नियमों की न्यूत्तम शर्तों पर नहीं चलते तो प्रार्थना करना हमारे लिए कोई अर्थ नहीं रखता है। प्रार्थना गैर-मसीहियों में भी की जाती है, लेकिन हमारे प्रार्थना को रीति-रीवाज उनसे सर्वथा भिन्न है। प्रार्थना मुख्यत: दो प्रकार की हो सकती है पहला, प्रत्यक्ष प्रार्थना और दूसरा, अप्रत्यक्ष प्रार्थना। प्रत्यक्ष प्रार्थना वह हो सकती है जिसमें हम ईश्वर से वाणी द्वारा प्रकट कर प्रार्थना करते हैं अप्रत्यक्ष प्रार्थना मौन प्रार्थना भी है जिसमें हमारी चाल-चलन, चरित्र एवं प्रतिदिन के कार्य-कलापों को माना जा सकता है।

इस संदर्भ में हम देखें, मसीही धर्म क्या हो सकता है। इसके पहलू क्या हो सकते हैं और आज के इस युग में एक सच्चे मसीही की क्या माप-दंड हो सकती है।

मसीही धर्म हमें अनन्त जीवन, प्रेरणा एवं शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। इसा मसीह के विचार से धर्म के दो पहलू मुख्य हैं— (१) हृदय से ईश्वर की भक्ति और (२) अपने पड़ोसी के प्रति समभाव। जो व्यक्ति इन दो बातों का पालन करता है वह धर्म को न जानकर भी धार्मिक है।" आपके विचार से एक सच्चे मसीही की माप-दंड क्या हो सकती है? वे जो नियमित रूप से चर्च जाते हैं, वे जो ईश्वर की समस्त आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे जो कभी भी स्वार्थ एवं बेइमानी का काम नहीं करते।

मसीही कौन है, यह आप जॉन वेली के शब्दों में सुनिए। जॉन वेली ऐडिनबरा विश्वविद्यालय में धर्म-शास्त्र पढ़ाने वाले अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न प्राध्यापक थे। उन्हीं के शब्दों में :— "कुछ विचारों को बौधिक मान्यता देकर तथा कुछ नियमों से सहमति प्रकट करने मात्र से ही मनुष्य मसीही नहीं बनता। मसीही वह है जो एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति से अनुप्राणित रहता है एवम् अमुक प्रकार के जीवन व्यवहार को अपनाता है।"

यदि उपर्यक्त बातों को मानने वाला मसीही कहा जा सकता है तो आप एक सच्चे मसीही हैं। अब हम ठोस विषय वस्तु पर आते हैं :—

विलियम जेम्स प्रार्थना के विषय में कहते हैं :— "प्रार्थना उन शक्तियों में से है जिनके सहारे मनुष्य जीता है, उस शक्ति के नितान्त अभाव का अर्थ है मृत्यु"।

साधु सुन्दर सिंह की तो सम्पूर्ण जीवन प्रार्थना से ही भरी पड़ी थी। भारत में महात्मा बुद्ध के बाद महात्मा गाँधी ही एक महान नेता के रूप में अवतरित हुए। यदि वे प्रार्थना की जीवनदायिनी शक्ति से प्रेरणा न पाते तो टूट कर रह जाते। यह कोई मेरी अपनी मनगढ़न्त बात नहीं। गाँधी जी ने स्वयं एक जगह लिखा है कि "प्रार्थना

की शक्ति के बिना मैं कभी का पागल हो गया होता।" इन कथन के साक्ष्यरूप हजारों व्यक्ति आपको इस संसार में विद्यमान मिलेंगे।

संसार के अत्यन्त पुरुषार्थी व्यक्ति भी रोज प्रार्थना करते थे - हैं। उदाहरण स्वरूप कुछेकों का नाम बता सकता हूँ। जेक डेम्पसी का नाम आपने जरूर सुना होगा। एक महान कुश्तीकार रह चुके हैं। एक इन्टर-व्यू के दौरान इनसे पूछा गया कि आप कुश्ती लड़ने से पूर्व साहस का संचार कैसे करते हैं? उसने बताया— प्रार्थना किए बिना वह कभी सोता नहीं था। अभ्यास के अलावे जब कुश्ती लड़ने जाता है तो पहली घंटी बजने के पहले ही प्रार्थना कर लेना नहीं भूलता। प्रार्थना से उसे साहस और विश्वास के साथ लड़ने की शक्ति मिलती है। फुटबॉल सम्राट पेले भी ऐसा ही किया करता था।

पुरुषार्थी केनी मार्क, रेकनबेकर, एडवर्ड आर· स्टेटीनिअस, जनरल मार्क क्लार्क, सभी रोज सुबह-शाम, बुद्धि एवं मार्गदर्शन के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे। यहाँ तक की वैज्ञानिक भी प्रार्थना की शरण लेते रहे हैं। उदाहरणार्थ 'MAN THE unknown' पुस्तक के लेखक और नोबल पुरस्कार पाने वाले डाक्टर ऐलेक्जी केरेल को ही लीजिए। 'Readers' Digest' पत्रिका में उन्होंने लिखा था कि प्रार्थना से अत्यन्त प्रबल शक्ति उपलब्ध की जा सकती है और वह शक्ति भू-गुरुत्वाकर्षण शक्ति (Earth Gravitational Power) के समान ही वास्तविक है।" वे आगे लिखते हैं –"मैं एक डाक्टर हूँ' और मैंने देखा है कि सभी इलाज नाकाम हो जाने पर भी रोगी श्रद्धा से प्रार्थना कर व्याधि एवं संकट से मुक्त हो सके हैं।'

क्या कारण है कि प्रार्थना हमें शन्ति-दृढ़ता एवं धैर्य प्रदान करती है? इसका उत्तर यह है—जिस प्रकार सागर का ऊपरी चंचल भाग और उमड़ती मौजें उसके अन्तस्तल की शान्ति भंग नहीं कर सकते उसी प्रकार यदि मनुष्य का विशाल चिरंतन शक्तियों पर अधिकार हो तो वैयक्तिक जीवन का एक क्षणिक उतार-चढ़ाव उसके लिए कोई महत्व नहीं रखता जिस व्यक्ति में वास्तविक धार्मिक निष्ठ हो और प्रार्थना करे तो वह दृढ़ एवं संतुलित रहता है और धैर्य-पूर्वक जीवन के किसी भी कर्त्तव्य को निभाने में तत्पर रहता है

हम भगवान का द्वार तभी खटखटाते हैं जब दु:खी और निराश हो जाते हैं और हमारी सहनशक्ति जबाब दे जाती है— किन्तु उस निराशावस्था की प्रतीक्षा ही क्यों की जाय? क्यों न हम प्रतिदिन प्रार्थना एवं निष्ठा द्वारा अपनी शक्ति का विकास करते जाँय। यह जरूरी तो नहीं कि प्रार्थना रविवार को ही की जाय। हमें प्रत्येक दिन किसी समय सुबह शाम, दोपहर प्रार्थना करती रहनी चाहिए।

रेडियम की भाँति प्रार्थना भी प्रकाश एवं शक्ति का स्रोत है। प्रार्थना के द्वारा मनुष्य अपनी सीमित शक्ति को असीम शक्ति के स्रोत से जोड़कर उसकी बुद्धि करने का प्रयास करता है। प्रार्थना करते समय हम अपना संबंध सृष्ठि का संचालन करने वाली चिरंतन शक्ति के साथ जोड़ते हैं। हमारी लालसा रहती है कि उस शक्ति का कुछ अंश हमें प्राप्त हो जाए - ताकि हम अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। प्रार्थना करने से ईश्वर हमारे अभावों की पूर्ति कर देता है और हम सबल एवं स्वस्थ हो उठते हैं। भक्ति से प्रार्थना द्वारा ईश्वर का स्मरण करके हम अपने शरीर एवं आत्मा का उद्धार करते हैं। "चाहे मनुष्य क्षण-भर ही प्रार्थना क्यों न करे उसे उसका शुभ-परिणाम मिले बिना नहीं रहता।"

प्रभु यीशु हमें चिताता है। "प्रार्थना में लगे रहो क्योंकि तुम परीक्षा में न पड़ो।" प्रार्थना में लगे रहो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ पहुँचा है।" अपनी चिता एवं व्याकुलता में हम भगवान को प्रार्थना द्वारा क्यों स्मरण कर लें?

भले ही स्वभाव और शिक्षा की दृष्टि से आप निष्ठावन व्यक्ति नहीं, भले आप नास्तिक हों, फिर भी प्रार्थना से आपको अप्रत्याशित सहायता मिल सकती है। यह एक व्यावहरिक उपाय है। इसे व्यावहरिक इसलिए बताता है कि चाहे मनुष्य ईश्वर में निष्ठा न भी रखे, इससे उसकी तीर मूलभूत मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं

Gossner Mission

की, जो उसके लिए बहुत आवश्यक है पूर्ति हो जाती है। वे हैं: —

(१) प्रार्थना करके हम अपने वास्तविक दु:ख को वाणी में प्रकट कर सकते हैं। अनिशिचित एवं धुँधली समस्याओं का निराकरण प्राय: असंभव है। इसलिए प्रार्थना करना, बहुत कुछ अपनी समस्याओं को कागज पर उतारने के समान ही है। यदि हम किसी समस्या को लेकर ईश्वर की सहायता चाहें तो भी हमें उसे वाणी में प्रकट करना पड़ेगा।

(२) प्रार्थना से हमें ऐसा अनुभव होता है कि मानों हम अपने दु:ख भार को अकेले न ढो कर दूसरों में बाँट रहे हैं। हम में से कुछ ही व्यक्ति ऐसे सामर्थ वाले होगें जो अपने भार को तथा यातना देने वाले कष्टों को अकेले सह लेते हैं। कभी-कभी हमारे कष्ट ऐसे भी होते हैं कि उन्हें हम अपने निकटतम संबंधियों एवं अभिन्न मित्रों तक को नहीं बता सकते। ऐसी हालत में अपना दु:ख व्यक्त करने के लिए प्रार्थना ही एकमात्र उपाय रह जाता है। कोई भी मनोरोग चिकित्सक आपको बता सकेगा कि चिकित्सा की दृष्टि से व्याकुलता, तनाव एवं संताप की अवस्था में अपने दु:खों को दूसरों के सामने व्यक्त कर देने में बड़ा ही लाभ होता है। और यदि कुछ दु:ख ऐसे हों जिन्हें हम किसी और से न कह सकें तो ईश्वर से तो निश्चय ही कह सकते हैं।

(३) प्रार्थना से रोगी को व्यस्त रखने के सिद्धान्त को बल मिलता है, उसे व्यस्त रखने की यह पहली अवस्था है। मैं तो क्या आप भी नहीं मानेंगे कि कोई भी व्यक्ति बिना कोई लाभ हुए, अपनी समस्या सुलझाने के लिए रोज-रोज प्रार्थना करता रहे। यह मैं या आप भी यह नहीं मानते कि वह अपनी उलझन को समाप्त करने के लिए कोई प्रयत्न ही न करे।

"प्रार्थना से अत्यन्त प्रबल-शक्ति की उद्भावना होती है। फिर प्रार्थना करके ऐसी शक्ति का उपयोग क्यों न किया जाय? ईश्वर की परिभाषा और राम-रहीम के झगड़े में क्यों पड़ा जाय, जबकि प्रकृति की वह रहस्यमयी शक्ति हमारी रक्षा करती है।"

अब मैं इस प्रार्थना संबंधी लेख को एक प्रार्थना से अंत करना चाहूँगा। आइये हम सब प्रार्थना करें — हे ईश्वर अब हमलोग अकेले संघर्ष नहीं कर सकते, हमें तुम्हारी सहायता और स्नेह चाहिए। हम लोगों की सभी भूलों का क्षमा कर दे और हमलोगों के हृदय के कल्मष धो डाल। हमलोगों को शान्ति, स्थिरता और स्वास्थय का मार्ग प्रदान कर। हमलोगों को सभी से मेल-मिलाप रखना सीखा। अपने उद्धारकर्त्ता के नाम पर, सुन और ग्रहण कर, आमीन।

अपनो बहन

सुशील कुमार तोपनो

कालेज की एक 'मैगजीन' में छपी "गुणी लड़कियाँ" के ग्रुप में जब उसने पुष्पा का चित्र देखा तो मुन्नी याद आ गयी। हाँ तो उसकी छोटी बहन, लता, प्यार से मुन्नी कह कर ही तो बुलाते थे। लेकिन अब मुन्नी नहीं है। वह खो चूकी है और वह नहीं मिलेगी………। उस मुन्नी की प्यारी प्यारी होंठ, मासूम चेहरा नदानी आंखे छोटे छोटे हाथ—बुतरू बुतरू पांव स्वप्न में भी नहीं आते। केवल ख्यालों में ही आते हैं— तब आंसू भी नयनों से निकल कर आ जाते हैं। एक समय था जब मुन्नी अपनी प्यारी-सी तोतली आवाज में विजय को भैया-भैया कहकर पुकारती हुई आती थी, और विजय के पैरों में लिपट जाती थी। फिर सिर उठाकर विजय को भरपूर नयनों से देखती और मीठा मीठा मुस्कान भर देती। तब विजय भी झुककर पुष्पा का माथा चुम लेता था। और गोद में भर लेता था। और सुन्दर सुन्दर मधुर मधुर कहानियाँ सुनाता था पुष्पा खुश होती थी और मन लगाकर सुनती थी।

Gossner Mission

अब ये सारे वास्तविक घटनाएँ दिमाग में धूंध के उस पार नजर आते हैं। और विजय अपनी बिती बिखरी हुई दुनियां में पहुँच जाता है। और मानसपटल पर छाया धूंध आस्ते आस्ते छाँट जाता है। और दिल में भरता हुआ घाव फिर से ताज़ा हो जाता है। एक लम्बी 'आह' हो जाती है और जब इस 'आह' को नहीं सह पाता है तब गालों में आंसू लुढ़का देता है।

आज भी यही कुछ हुआ। रात मदहोश थी। हवा बेहोश थी। बाहर बरसात हो रही थी। तूफान भी साथ दे रहा था। झिंगुर विलाप कर रहे थे। लोमड़ियां रो रहे थे। कुत्ते सो रहे थे। चांद-तारे सारे बेहोश थे। लोग सपना ढो रहे थे। उल्लु का आवाज वातावरण में रूक-रूक कर आ जाता था। लेकिन विजय अबतक जाग रहा था। यादों की देश में भाग रहा था। उसके हाथ में 'मैगजीन' था। 'मैगजीन' में "गुणी लड़कियाँ" वाला ग्रुप फोटो था। उसमें पुष्पा का चित्र था। विजय उसी को देख रहा था। न जाने वह क्या सोच रहा था। नयनों से अंसू बहा रहा था और बहा रहा था...।

फिर वह क्या सोच अपना आंसू पोंछा। उठा और मुंह हाथ धोया। ठंढा खाना खाया। खाने के बाद अपना चित्रकारी का सारा समान उठाया। 'टेबिल' पर एक कागज लिटाया। वह पुष्पा का चित्र को उभारने लगा। वैसे वह एक मना हुआ चित्रकार था। रंगों का 'कंट्रास्ट' ऐसा ना देता है कि देखने वालों का आंखे ले लेता है। यानी कि देखने वाले देखते ही रह जाते हैं। सुनने-जानने वाले देखने के लिए तरसते रह जाते हैं। पत्रिकाएँ उसकी चित्रकारी को स्वागत करते हैं। संपादकगण उसकी 'हाँकार' को सुनने के लिए तड़पते रहते हैं।

उसने पुष्पा का चित्र को बनाया। वह इतना सुन्दर बनाया कि खुद अपनी चित्रकारी पर आश्चर्य किया। पुष्पा चित्र में भी हुबहू पुष्पा लग रही थी। मानो वह कह रही हो—"भैया, मैं ही मुन्नी हूँ, तुम्हारी छोटी बहन मुन्नी — हाँ, मुन्नी" मुन्नी ही तो हूँ। वह मुस्करा दिया। प्यार से उसे चुम दिया। पुष्पा के बगल में अपनी माँ की तस्वीर बना दिया। दूसरे दिन उसे फ्रेम करवा दिया।

जब वह बेचैन हो जाता है। पढ़ाई में मन नहीं लगता है। तब वह तस्वीर निकालता है। पुष्पा और माँ का चित्र को देखता है। देर तक देखता रह जाता है। ऐसा ही साल बित गया। वह भी पुष्पा के साथ एम. एस. सी. फाईनल में पहुँच गया। यह साल भी जल्दी जल्दी बितने लगा। अचानक ही काना-फूसी से बात शोर गुल में परिवर्तित होने लगा। ..'विजय पुष्पा से प्यार करता है। जब देखो तब उसकी तस्वीर से बातें करता है।

यह सुनकर छात्र आश्चर्य करते हैं। विजय के पास आते हैं। उससे पुछने का साहस बटोरते हैं। फिर उनका साहस बिखर जाता है। क्योंकि उन्हें ख्याल आता है। विजय कभी किसी के लिए गम्भीर नहीं हुआ है। इसलिए वे इसकी दोस्ती में अपना गौरव समझा है। उसकी संगति पाने के लिये सब तरसते थे। इसलिये यह अफवाह था या सच था, यह राज उनके लिये राज ही था।

भले ही इस अफवाह का प्रभाव किसी को नहीं पड़ा। लेकिन पुष्पा का दिल में गड़ा। एक काँटे की तरह गड़ा और वह घाव हुआ और बढ़ा। विजय उसको जितना भी प्यार प्रगट करना चहा-उतना ही पुष्पा में उसके प्रति घृणा का तरंग अधिक से अधिक बहा।

उसमें विजय के प्रति इतना अधिक घृणा का तरंग बहाव बढ़ा कि जब कभी वह विजय को सामने देखती, माथे में सिलवटें उभार लेती। वह दूर से ही आता देख कर एक दूसरा पथ ग्रहण कर लेती। कक्षा में बैठता है तो एक बार भी छिपकर नहीं देखती। मन लगाकर पढ़ती है। मन लगा कर सुनती है। आँखें निचे किये वह अपने होस्टल या लाईब्रेरी चली जाती है। विजय के कारण वह, कॉलेज के तमाम लड़कों से बात करना छोड़ दिया।

एक दिन की बात है। कॉलेज का 'ब्रेक' था। सब मेस में लंच पर थे। परन्तु विजय लॉन में फुलवारी के समीप एक बेंच में था। उसका मन उचट गया था।

Gossner Mission

वह चुपचाप बैठा था। तभी वह कुछ सुना। यह किसी की आवाज थी। महीन परन्तु सुखी थी। उसके कान खड़े हो गये।

"मिस्टर विजय !'...

चौंक कर वह पिछे पलटा। सामने पुष्पा खड़ी थी। होठ में क्रोध था। आँखों में दर्द था।

"मैं आप को अन्तिमबार चितावनी देने आई हूँ।" उसका दिल मनो घायल था। बोली—'यदि आपने फिर किसी प्रकार की हरकत की तो याद रखिये, मैं सीधे प्रिंसिपाल के पास रिपोर्ट करूँगी।"

"लेकिन...मेरा अपराध...?" विजय आश्चर्य से पुछ बैठा।

"अपराध आप का नहीं, मेरी है।" पुष्पा तड़प कर बोली—"न मैं इस कॉलेज में प्रवेश लेती और न ऐसी बदनामी होती।"

"परन्तु मेरा अपराध भी तो कुछ हो।"

और तभी पुष्पा ने मुड़ा हुआ एक कागज उसके आगे बढ़ा दिया—"यह क्या कम अपराध आपने किया है, जो बिना किसी अधिकार के मेरी तस्वीर बनानी आरम्भ कर दी।"

विजय कागज को हाथ में ले लिया। खोला और देखा और चौंका। शायद कोई 'स्केच' किताब या कापी में से निकल कर गिर गया था और किसी लड़की के हाथ लग गया था और पुष्पा को दे दिया हो। कॉलेज में जो अफवाह फैल रहा था, शायद यही कारण हो। वह कुछ बोला नहीं। सोचता ही रह गया।

"मैं आप को अच्छी तरह समझती हूँ।" पुष्पा उसे लाजवाब पा कर बोली; "आप एक बड़े घर के लड़के हैं। शायद इसी का आप को गर्व है।"

"पुष्पा जी..." विजय तड़प कर रह गया।

आपको आरम्भ से ही परख रही हू। 'उसका बात को काटकर बोली—" क्या आप चाहते है कि मैं बादनम हो कर कॉलेज छोड़ दूँ।

नहीं, नहीं, पुष्पा जी... वह तड़प कर बोला "आप क्यों कॉलेज छोडें ? मैं स्वयं ही यहाँ से चला जाऊँगा। और वह खुदही वहाँ से हट गया।

पुष्पा आज-कल बिलकुल खुश रहती थी। क्योंकि उसे विजय नहीं दीखता था। वह शायद कहीं गया हुआ था। इसलिए अब वह जिन जिन से बात करना छोड़ दिया उनसे बात करना आरम्भ कर दिया। लड़कों को एक प्रकार का खड़का लगे रहता था। उनको ऐसा लगता था जैसे कोई जरूरत चीज खो गयी है। वह था विजय। विजय के बिना कॉलेज में सूनापन आ जाता है। उनको मालूम न थी कि विजय कहाँ गया। अखीर वे होस्टल में उनके रूम में गये। वहाँ उसका बेड खाली थी। वहाँ उसका एक भी समान दिखाई नहीं दिया तो अखीर वे उसके 'रूममेट' से पूछ ही लिया। वह बोला वे किसी काम बस घर चले गये और वे यहाँ नहीं पढ़ेंगे। वे अपने ही शहर में पढ़ेंगे। यह सुन कर लड़कों को बहुत दुःख हुआ। यह खबर बिजली की तरह सारा कॉलेज में फैल गया। यह सुनते ही पुष्पा खुश हो गयी और उमांग के साथ होस्टेल जाने लगी।

होस्टेल के बरामदे में लड़कियों का झुण्ड था। क्योंकि डाकिया आया हुआ था। पुष्पा भी उधर ही बढ़ी। क्योंकि डाकिया ने उसका नाम पुकारा था। और सच-मुच उसके नाम का एक लिफाफा था। वह उसको लिये हुए रूम में आई और फाड़ कर खोली। लिफाफे के अन्दर से एक खत और तस्वीर निकला। खत विजय का लिखा हुआ लगता था वह धड़कते दिलों से सांस रोक पढ़ने लगी।

पुष्पा जी,

यह मेरा दुर्भाग्य है, जो मेरे कारण आपको अपने गौरव पर आंच आने का भय महसूस हुआ। वेसे मैंने आपसे कभी कुछ मांगी नहीं—चाहा नहीं—सिर्फ आपको मेरी एक बहन, 'लता', जो पाँच वर्ष के उमृ ही में मेरी माँ के साथ एक ट्रेन एक्सीडेंट का शिकार हो गयी थी, उसी के यादों में एक बहन के रूप में देखा। न जाने क्यों मेरा मन आपको एक बहन के रूप में ग्रहण कर लिया। मुझे जब कभी अपनी बहन की याद आती है तब आप की छवि मेरे मनसपटल पर अंकित हो जाती है। उम्मीद है आप मुझे इस अपराध के लिए माफ कर देंगी।

Gossner Mission

जब यह पत्र आपके हाथ होगा, तो मैं यहां से दूर, बहुत दूर हूँगा……अब तो आप को मेरे कारण अपनी बदनामी का कोई भय नहीं रहा न……?

आप का जितना भी चित्र बनाया था सब फाड़ डाला केवल एक को छोड़ कर। इसमें मेरी मां की तस्वीर भी है। मैं चाह कर भी इसको फाड़ न पाया। इसे अपनी ही हाथों से टुकड़े टुकड़े कर दीजिये।

आपका
विजय

खत पढ़ने के बाद वह तस्वीर को देखने लगी। यह उसी की तस्वीर थी। लेकिन तभी वह बुरी तरह चौंक पड़ी। क्योंकि उसके बगल में जिसकी तस्वीर थी वह उसी की माँ की थी। वह आश्चर्य से देखने लगी। वह इस लिए चकित हो रही थी कि अखीर विजय उसकी (पुष्पा की) माँ का चित्र कैसे बनाया। जब कि वह बचपन ही से पुष्पा को छोड़ कर इस दुनियाँ से चली गयी थी। वह अपनी मां की तस्वीर घर में देखी थी जो कि फ्रेम किया हुआ था। उस तस्वीर और इस चित्र में एक भी फर्क न था। फिर उससे ख्याल आया—कभी उसके चाचा कहा करते थे। "पुष्पा मैं तुझको एक ट्रेन एक्सीडेंट के मामले में पाया था। शायद वह तुम्हारी माँ थी जो तुम को छाती से चिपकाए रखी थी। पर वह मर चुकि थी और तुम रो रही थी……"

"तो…तो…क्या विजय मेरा ही भाई है…नहीं नहीं…" वह पत्र को और तस्वीर को देखती रह गयी।…खमोश असहनीय दृष्टि से…। होंठ खुले और बंद हो गये। उसका गला मानों अंदर से रूंध गया। और तभी वह सिसक कर चीख पड़ी। 'विजय…मेरे भैया…मत जाओ…भैया या…म…त…जा……। उसकी आवाज में ऐसा दर्द था, ऐसी तड़प थी…। लेकिन इन बेसहाय आवाजों को सुनने के लिये विजय वहाँ कहाँ था? तब तक वह अपने शहर के दोस्तों से मिल रहा था। विजय बहुत खुश था। मुहल्ले के उसके दोस्त भी खुश थे। विजय को कहाँ मालूम हो सका कि — उसकी बहन लता ऊर्फ पुष्पा उसके लिये तड़प रही है। ठीक इसी समय एक मधुर परन्तु दर्दभरी गीत रेडियो से निकल कर वातावरण में घुमने लगा था।

को —जिंदगी भर गम जुदाई का हमें तड़पायेगा… २

१ हर नया मौसम है पुरानी…२
हर कोई तो देख के जाएगा…

२ देख कर तो आप को…२
आंसू तो आ ही जाते हैं—

धन्यबाद, आप का ग्राहक चन्दा (३० नोवेम्बर तक) मिला

1. Mr. C. M. A. Lakra.
2. Francis Samad
3. Rev. Nicodim Bhuinya
4. Rev. H. M. Bage
5. Mr. Anjor Dungdung
6. Cat Jaimasih Surin
7. Mr. Martin Kerketta
8. Mr. Heran Kandulna
9. Mr. Suleman Dang
10. Mr. P. D. Lakra.
11. Mr. Niaran Topno
12. Mr. A. D. Topno
13. The Warden KNH Jashpur
14. Mr. Yakub Kerketta
15. Mr. Yakub Kandulna

Gossner Mission

जन्म की वह रात !

Basant Kumar Surin
D. U. Mission Boys' Hostel, Hazaribagh

याद आती है अक्सर मुझको यीशु के जन्म की वह रात
खुशी की मस्ती में डूबी अलबेली मतवाली रात ।

तेरे जन्म का समाचार फैला या बिजली-सी कौंद गई
कुछ तो ऐसे बात हुई जो जाग उठी तारों-भरी उजियाली रात ।

दूर-दूर से आकर लोग सोना, गंधक, लोबन से तेरी स्वागत की
मीठे सपनों की दुनिया में करती है गड़ेरियों द्वारा रखवाली रात ।

सुबह का सूरज माँग रहा था उजियाला रुख्मारों से
लोगों को मुक्ति मिलेगी आई बन के सवाली रात ।

जन्म-खुशी की बात पे धड़के दिल नादान सितारों का
खुशी से दुनिया नाच उठी नाचे यह मतवाली रात ।

हम तुम आवो यह शुभ-संदेश सुनाएँ, लोगों की दुनिया में
खुशी का आँचल फैलाये फिरती डाली—डाली रात ।

हम यीशु की जन्म का 'ऐ प्रभु' यह मतलब देते हैं
हम सभों का उद्धार होगा, यीशु की जन्म की वह रात ।

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष—४३ राँची, जनव[री] १९७९, संख्या नं०—१

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न० पी० टी० १७

वार्षिक मूल्य ४ रु०

विशेषांक

वर्ष — २१ रांची, दिसम्बर १९७३ संख्या न० — १२

EINGEGANGEN
11. FEB. 1974
Erledigt

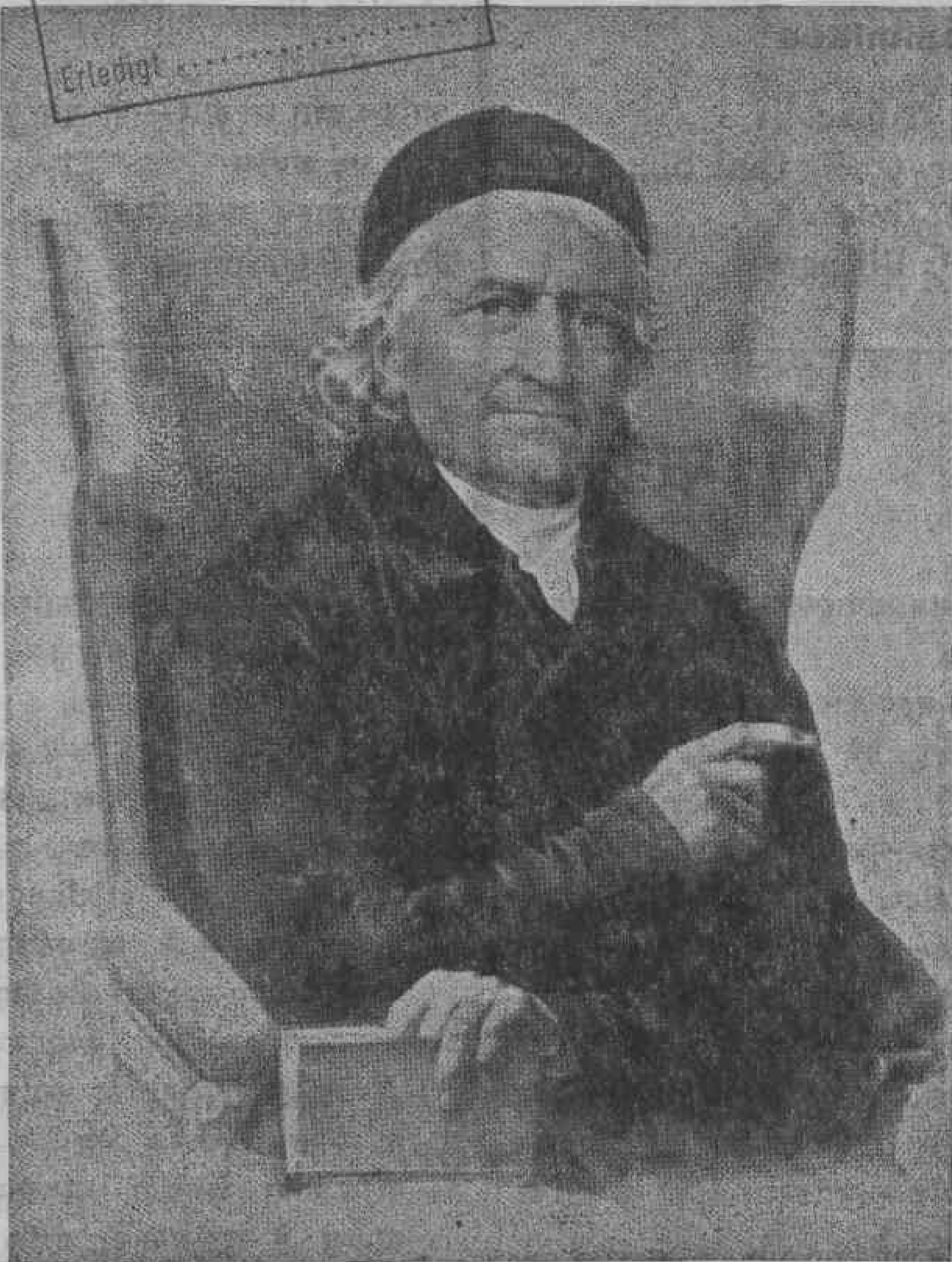

फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर
के २०० वाँ जन्मोत्सव

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका ।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — —	३
अडवेन्ट काल — —	४
उपदेश की तैयारी — रेभ एम· टेटे —	५
कलीसियाई समाचार—देश विदेश —	८,११
फादर जोहानेस्स एवंजेलिस्ता गोस्सनर —	१२
शोक समाचार — —	१३
औद्योगिक विकास के लिये — —	१४
बढ़ती आबादी — —	१४
आर्थिक दशा की ओर—डा· एम· बागे —	१६
सूचना एवं अपील —	१६
आप का ग्राहक चन्दा मिला —	१६
Tirkee Enterprises	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये है।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [क० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और रचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पंहुच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज र सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें. इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओ १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत था आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्यका टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये. लेख क खा जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"आनेवाला"

घरबन्धु के इसी अंक को पाने के साथ ही साथ हम अडवेन्ट काल में प्रवेश पाते हैं। अडवेन्ट काल में हम विशेष कर यीशु बालक के आने विषय वचनों पर मनन करते हैं, गीत गाते हैं, और उसी अनुसार आनन्द की तैयारी करते हैं। पर बहुतों का मनन, एवं आनन्द २५ वीं दिसम्बर के बाद समाप्त हो जाता है। परन्तु इस माह का पथ प्रदर्शक पद का और ही महत्व है। प्रभु यीशु मसीह के अडवेन्ट का काल जन्म पर्व से ही समाप्त नहीं होता है (देखें प्रकाशित वाक्य २२:२०)। यह विचार प्रकाशित वाक्य में प्रकट कर दिया गया है कि जो यीशु मसीह आया, वह फिर आयेगा, मनुष्य के लिए आवश्यक है, कि वे उस दिन की तैयारी में ध्यान और मनन करें और उसके लिए चौकस रहें।

प्रभु यीशु का आना आनन्द की बात है, पर वह बहुतों के लिये विनाश की बात भी हो सकती है, क्योंकि पुनरागमन न्याय की ओर संकेत करता है। यीशु मसीह के आने के लिये प्रार्थना और गान होते हैं पर तैयारी नहीं दीखते हैं और न उस प्रकार का जीवन ही नजर आता है। "शीघ्र आनेवाला हूँ", इसमें प्रतिज्ञा है, पर ऐसी प्रतिज्ञा के लिये प्रतीक्षा की आवश्यकता है, कब तक ? यह प्रश्न आता ही नहीं; प्रतिज्ञा को जो प्रतीक्षा नहीं करता है, वह प्रतिज्ञा की आशीष नहीं पा सकता है, उसके लिये प्रतिज्ञा परीक्षा हो सकती है और मनुष्य परीक्षा में गिर कर सत्यनाश हो सकता है। अतः उसकी आशीष में शामिल होने के लिए प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा करें ! "शीघ्र आनेवाला हूँ" सप्रसंग के आधार पर एक धमकी की चितौनी है, जो उसकी प्रतिज्ञा में ही निहित है। अतः हम मसीह लोग 'आये हुए' यीशु मसीह का केवल स्मरण न करें पर 'आने वाले' यीशु मसीह की बाट जोहें। बाट जोहना आनन्द की बात है, पर देरी होने में अधीरता आती है और अधीरता में लोग क्या न क्या कर बैठता है; बाट जोहना छोड़ कर आलस हो कर अनावश्यक बातों पर ध्यान लगाते हैं, इस तरह जो विशेष बात है वह न केवल निश्चिन्त हो जाता है, पर वह अन्य कामों में भी लग जाता है जो मनुष्य के जीवन को बरबाद कर देता है, पर ऐसी बरबादी व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित नहीं है, वह पारिवारिक मंडलीय और कलीसियाई जीवन के भी प्रभावित करता है। अतः 'मैं अपना करता हूँ, 'अपना खाता हूँ' कहना गलत होगी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी निश्चिन्तता और बाट जोहने की, अधीरता में बहुतों को हानि और खतरा पहुँचा सकता है। मसीही जीवन के सानन्द व सार्थक बनाने के लिये आवश्यक है कि मसीही न केवल आये हुए यीशु मसीह के दिन को स्मरण करते हुए आनन्द मनाये, तैयारी करें, पर 'आनेवाले मसीह यीशु' की प्रतीक्षा में रहें और तदनुसार काम व व्यवहार करें। यह किसी एक सीमित समय की बात नहीं है पर यीशु मसीह के पुनरागमन तक की बात है, कि हम मसीह उस समय तक जाग्रत रहें और बाट जोहते रहें। इससे न केवल हम आप आशीष एवं आनन्द के भागी होते हैं, पर दूसरों को आशीष एवं आनन्द प्राप्त करने का अवसर देते हैं, ताकि वे भी आनेवाले यीशु मसीह के आगमन के महत्व को जाने और उसके लिये तैयार हो जावें। (स॰ स॰)।

अडवेन्ट काल आनन्दमय एवं आषीशमय हो !

Gossner Mission

अडवेन्ट काल

आज से दो हजार वर्ष पूर्व यीशु ख्रीष्ट सच्चा ईश्वर और सच्चा मनुष्य होकर, चुना हुआ देश पलिस्टाईन में और चुनी हुई जाति इस्राएल के बीच प्रगट हुआ।

इस्राएली लोगों को ईश्वर नबियों, राजाओं और न्यायियों के द्वारा चार हजार वर्ष यीशु के आने का सन्देश दिया। लेकिन इस्राएली अपने राजा की स्वागत नहीं कर पाये। वे सोचते थे कि हमारा राजा राज आभूषण से विभूषित हो अपने बलवन्त सैनिकों के साथ आएगा, और हमको रोमी सम्राट से छुटकारा देकर, समस्त संसार को हमारे बस में कर देगा और आप युग युग हमारे उपर राज्य करेगा। लेकिन उनका विचार और आशा व्यर्थ हुई; वे यीशु को जब वह आया ग्रहण नहीं किये। यीशु सामर्थी होकर नहीं, पर दीन होकर बालक रुप में आया। गलाती ४:४+५। चार हजार वर्ष का अडवेन्ट मानना उनके लिये ठोकर का कारण बना। वे यीशु के कारण ईश्वर के सामने दोषी ठहराये गये। मत्ती २३:३७-३६। आज यीशु अपने आने का समाचार न केवल पलिस्टाईन में इस्राएलियों को देता है पर संसार के समस्त कलीसिया को राजाओं, नबियों के द्वारा नहीं पर खुद आप ही वचन के रुप में प्रगट होकर सन्देश दे रहा है। मत्ती १८:२०। मंडली साल के अनुसार हम चार सप्ताह साल में अडवेन्ट काल का मनन करते अपने आयु की गिनती करते जा रहे हैं। इस साल भी हमको अडवेन्ट काल का मनन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तो क्या हम अडवेन्ट काल को जन्म पर्ब मानने वा यीशु के पुनरागमन के विषय मनन करते हैं? सच कहा जाय तो हमारी कलीसिया के बहुत लोग शारीरिक खान-पान का मनन करते हैं। इस को हम सभी प्रत्यक्ष रुप से देखते आ रहे हैं; कि कब २४-२५ दिसम्बर पहुंचे तो हाँड़िया, दारु और मांस मछली का भोज लगा कर अपने परिवारों से मिल-जुल कर आनन्द मनाएं। यही हमारी कलीसिया के अन्दर के बहुत लोगों की तैयारी रहती है। ऐसे तैयारी करने वालों या बाट जोहने वालों को प्रभु पौलुस प्रेरित के द्वारा कहा है कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिश न होंगे (गलाती ५:१६-२१)। अडवेन्ट का माने ही "आना" है; यीशु प्रत्यक्ष रुप से एक ही बार आया और स्वर्ग चला गया; फिर दूसरी बार आने की चर्चा भी हम सभों को देते आ रहा है, जैसे सरदीस की कलीसिया को कहा; यदि तू जाग्रत न रहेगा, तो मैं चोर की नाई आ जाउँगा और तू कदापि न जान सकेगा, कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा (प्र० वा० ३:३)। इस्राएली लोग चार हजार वर्ष अडवेन्ट काल का मनन किये; हम यही समझते हैं कि साल में चार सप्ताह अडवेन्ट काल मानते हैं। इस्राएलियों को प्रभु अपने आने की तिथि नहीं बतलाया था और न अभी हम को भी बतलाता है; धर्म शास्त्र के किसी पन्ने में भी नहीं है कि प्रभु २४ दिसम्बर को आएगा। इसलिए जीवन के हर पहलू, हमारे लिये अडवेन्ट काल है। यदि हम अपने जीवन के हर पहलू में गलाती ५:२२-२४ को धारण किये रहेंगे तो अडवेन्ट काल हमारे लिये लाभ होगा और न हम यीशु के कारण ईश्वर के सामने दोषी ठहराये जाएंगे, पर हमारा नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से नहीं कटाएगा। प्र० वा० ३:५। जैसे फिलेदेलफिया की कलीसिया को प्रभु कहा, हमें भी कहता है—"मैं शीघ्र आने वाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है, उसे थामे रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले। प्र० वा० ३:११। अडवेन्ट काल हमारे लिये शुभ हो !!

प्रचारक जोर्ज केरकेट्टा
जी० ई० एल० चर्च गरजा
सिमडेगा (राँची)

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

[मार्टिन टेटे]

अडवेंट का १ला एतवार

मत्ती २१ : १-६

आज के बचन के अनुसार यीशु राजा होकर यीरूशलीम में प्रवेश करता है। लोगों ने उसे राजा के समान ग्रहण किया। लादू के बच्चे पर पहले कोई सवार नहीं हुआ था। (गिन्ती १६ : २; व्यवस्था २१ : ३; १ शमु ६ : ७) यीशु के आगमन में हम यीशु के विषय कई बातों को देखते हैं।

"देखो यीशु राजा आता है"

१. वह साहसी होकर आता है—वह जानता था कि नगर के लोग उसे नहीं चाहते थे। लोगों ने उसे राजा ग्रहण किया। पर अधिकारी लोग उसे नहीं चाहते थे। वह जानता था कि लोग उसे पकड़ लेंगे। पर उसे हिम्मत के साथ लोगों का उद्धार करना था। आज यीशु हमें भी जगत में भेजता है। हम यीशु के नाम में साहसी होकर प्रत्येक परिस्थिति में मनुष्यों को बचाने के लिये जावें। हम ऐसा ही जावें जैसा मिशनरी लोग कई देशों में सुसमाचार सुनाने के लिये गये थे।

२. वह अधिकार के साथ आता है—उसका अधिकार मंदीर पर था। उसका अधिकार था कि कि वह मंदीर को शुद्ध करे। उसका अधिकार था कि लादू के बच्चे को अपनी महिमा के लिये व्यवहार करे। वह हम पर भी अधिकार रखता है। वह हमें भी शुद्ध करता है। वह हमारे पास भी अधिकार के साथ आता है। हम उसके अधिकार को स्वीकार करें।

३. वह निवेदन के साथ आता है:—वह हम से निवेदन करता है कि हम अपना हृदय उसे दे दें। वह हम से लादू का बच्चा नही परन्तु हृदय मांगता है। वह नाश करने के लिए नहीं परन्तु सहायता करने के लिये आता है। हम उसकी अपील और निवेदन को ग्रहण करें।

आज हम और हमारी कलीसिया के पास यीशु राजा आता है हम उसे ग्रहण करें और उसके निवेदन को ग्रहण करें।

अडवेन्ट का २रा एतवार

लूका २१ : २५-३६

यीशु का प्रथम अडवेन्ट व्यतीत हो गया है। हम उसके द्वितीय आगमन की आशा देखते हैं। द्वितीय आगमन के पूर्व अनेक घटनाएँ घटेंगी। द्वितीय आगमन का समय नहीं दिया गया है। (मत्ती २४ : लूका २१ : ३५)।

"यीशु के द्वितीय आगमन के पूर्व के चिन्ह"

१. सामाजिक जगत में:—(लूका २१ : १०) जाति पर जाति······चढ़ाई करेगा अकाल और सताहट होंगे। कलीसिया सतायी जायगी।

२. सृष्टि में:—बाढ़ होगा। भुईंडोल होगा। सूरज चाँद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे।

३. कलीसिया में:—झूठे शिक्षक प्रगट होंगे। खृष्टत विरोधी उत्पन्न होंगे। (१ यूहन्ना २ : १८ मत्ती २४ : २०; यूहन्ना ८ : ३१-३२; १७ : २०; १ पतरस ४ : ११; १ तिमो० ६ : ३; २ थि० २ : ३-१२)।

४. सुसमाचार प्रचार किया जायगा:—मत्ती २४ : १४; इसलिये हम सवधान रहें। जागते रहें। प्रार्थना करें। यीशु का द्वितीय आगमन अचानक होगा।

Gossner Mission

अडवेंट का ३रा एतवार

मत्ती ११ : २-१०

यीशु मसीह आया था और वह फिर आने वाला है। इस विषय पर गत रविवार हम ने उपदेश सुना है। परन्तु बहुत बार हम उसके पुनरागमन पर सन्देह करते हैं। यूहन्ना ने भी सन्देह किया था (११ : ३)।

"यीशु आनेवाला है"

१· यीशु का प्रथम आगमन प्रमाणित करता है कि यीशु आनेवाला है:—यीशु ने प्रथम आगमन में क्या किया ? देखो ११ : ५+६। सुसमाचार प्रचार किया जाता है। इसका संकेत है कि यीशु आनेवाला है। कलीसिया सुसमाचार सुनाती है। इसका कारण यही है कि यीशु आवेगा। सुसमाचार प्रचार में यदि आप का विश्वास नहीं है तो अपने जीवन को यीशु को दे दो। वह आप को बदल डालेगा यूहन्ना ने क्रूश के सामर्थ को नहीं देखा था। इसलिये वह नहीं समझ सका था कि क्रूश में मनुष्य को बदल डालने की सामर्थ है।

२· यीशु न्याय के लिये आनेवाला है:—सम्भवत: यूहन्ना का धीरज टूट गया था। वह तो विनाश का समाचार देता था। वह योना नबी के समान ही अपने जीवन में अपने संवाद को पूरा होता हुआ देखना चाहता था। (मत्ती ३ : ७-१२) यीशु कब न्याय के लिये प्रगट होगा ? यीशु अपने वैरियों को दण्ड देगा ? आदि अनेक प्रश्न यूहन्ना के मन में थे। जितने लोग यीशु को क्रोधित न्यायी के रूप में देखना चाहते हैं वे तो निराश होंगे परन्तु जितने लोग यीशु के प्यार को देखना चाहते हैं उनकी आशा बनी रहेगी। यीशु आवेगा। हमारा धीरज न टूट जावे।

३. हम विश्वास करें कि यीशु फिर आनेवाला है:—यीशु हमारे जीवन में आता है। वह बपतिस्मा के समय हमारे पास आता है। वह प्रभुभोज के समय हमारे पास आता है। इसलिये संकट के समय हम विश्वस्त बने रहें। बैबल की गवाही है कि यीशु आनेवाला है।

"हे ईश्वर हमारे विश्वास को दृढ़ा"

अडवेंट का ४था एतवार

यूहन्ना १ : १९-२८

यूहन्ना एक सत्य प्रचारक था। इसलिये वह कह सकता था कि मैं मसीह नहीं हूं। मैं केवल यीशु का हथियार हूं। यीशु मेरे पीछे आने वाला है। मैं केवल उसका शब्द हूँ।

"यीशु आनेवाला है"

१· यूहन्ना की गवाही है कि यीशु आनेवाला है—(१ : २७) यूहन्ना प्रचार द्वारा यीशु के आगमन के लिये मार्ग तैयार करनेवाला था। आज भी विश्वस्त प्रचारक यीशु के पुनरागमन के लिये मार्ग तैयार करते हैं।

२· धर्म्म शास्त्र की गवाही है कि यीशु आने वाला है:—(यूहन्ना १ : २३) पुराना और नया दोनों नियम यीशु के प्रथम एवं द्वितीय आगमन की गवाही देते हैं।

३· कलीसिया वा विश्वासियों के झुंड की गवाही है कि यीशु आनेवाला है:—देखिये प्रेरितों के विश्वास वाक्य का दूसरा भाग वह विचार करने को फिर आवेगा। वह वचन और साक्रामेन्तों के साथ हमारे बीच खड़ा है।

हम विश्वास, प्रचार, एवं गवाही देने के द्वारा यीशु के आगमन की तैयारी करें।

पुण्य रात

लूका २ : १-१४

रोमी सरकार दो विशेष अभिप्राय से जनगणना करती थी। प्रथम अभिप्राय कर निर्धारण के लिये और दूसरा अभिप्राय सैनिक सेवा के लिये था।

Gossner Mission

यहुदी लोग सैनिक सेवा के विषय स्वतंत्र थे। युसुफ और मरियम भी नाम लिखाने के लिये गये हुए थे। इसी समय प्रभु यीशु का जन्म हुआ। स्वर्ग दूतों ने यीशु के जन्म का इस्तिहार दिया।

"यीशु के जन्म का इस्तिहार"

१ उद्धार कर्त्ता जन्मा है:—मसीह प्रभु वा यीशु आप ही उद्धारकर्त्ता है। वह लोगों को पाप से बचाता है। वह लोगों को मृत्यु से छुड़ाता है।

२. चरनी में पड़ा है:—वह जग में हीन हो गया है ताकि हमें बढ़ावें। वह अज्ञान को ज्ञान देता है। थके को शक्ति देता है। बन्धुओं को त्राण देता है। वह हम सभों को बढ़ाने के लिये छोटा बन गया। यह तो ईश्वरीय भेद है। अर्थात ईश्वर ने अपने आप को सीमित किया ताकि हम उसे समझने सकें और उसके पास आने सकें।

३. सराय में उसके लिये जगह नहीं थी:—लोमड़ियों की जगह होती है। परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये जगह नहीं थी। क्योंकि यीशु के लिये तो क्रूश में जगह रखी गयी थी। वह क्रूश के द्वारा सब लोगों के लिये जगह तैयार करता है।

४. वह भीड़ से भरे मानव हृदय में जगह ढूंढ़ता है:—बैतुलहाम में भीड़ थी। आज भी मनुष्य का हृदय चिन्ताओं अर्थात भीड़ से भरा हुआ है। हमारे चिन्ता भरे मन में यीशु डेरा चाहता है।

आकाश में परमेश्वर की महिमा होवे। पृथ्वी में लोगों के बीच मेल और शान्ति होवे।

प्रभु का जन्म पर्व

लूका २ : १५–२०

स्वर्ग दूतों ने यीशु के जन्म का इस्तिहार दिया। गड़ेरियों ने जन्म पर्व का इस्तिहार सुना। जन्म पर्व का इस्तिहार संसार के सब लोगों के लिये है।

"जन्म पर्व का इस्तिहार"

१. सर्वप्रथम गड़ेरियों को दिया गया:—गड़ेरिये पलस्तीन के साधारण जनता में से थे। वे दीन एवं भोले भाले लोग थे। आज भी जन्म पर्व का इस्तिहार साधारण भाई बहनों को सर्व प्रथम दिया जाता है।

२. परमेश्वर का सुसमाचार सर्वप्रथम मैदान के साधारण लोगों को दिया गया:—ऐसा बतलाया जाता है कि पलस्तीन में गड़ेरिये लोग निम्न वर्ग से थे। निम्न वर्ग के लोगों के लिये ही परमेश्वर ने यीशु को भेजा था। ईश्वर का प्यारा दीनों के लिये है।

३. मेमनों के रखवालों ने सर्वप्रथम परमेश्वर के मेमना का दर्शण किया—यीशु आप ही परमेश्वर का मेमना है। मेमना का लोहू प्रायश्चित के लिये छिड़का जाता था। यीशु का लोहू संसार के सब लोगों के प्रायश्चित के निमित बहाया गया।

यीशु मनुष्य बन गया। मनुष्य बन कर वह हमारी परिस्थिति में प्रवेश करता है। उसने हममें और हमारे बीच डेरा किया।

जन्म पर्व के पीछे १ला एतवार

लूका २ : ३३–४०

यीशु हमें बचाने के लिये मनुष्य बन गया। शमौन यीशु के जीवन एवं काम के विषय भविष्यवाणी करता है।

"यीशु के जीवन एवं कार्य के विषय भविष्यवाणी"

१. बहुतों के गिरने और उठने के लिये ठहराया गया है:—यीशु को स्वीकार करने वाले जीवन पाते हैं और अस्वीकार करनेवाले विनाश को प्राप्त करते हैं। देखिये यहुदा इस्कारियोती का जीवन।

२. यीशु के विरोध में बातें कही जावेंगी:—इस विषय का प्रकाशन यीशु के जीवन में है।

३. यीशु के कारण मरियम को भी दुःखित होना पड़ेगा।

४. यीशु के जीवन के विषय अनेक विचार प्रकट किये जावेंगे।

उद्धार की आशा देखनेवालों के निमित यीशु ही शान्ति है वह हमारे लिये भी आप ही शान्ति है।

Gossner Mission

कलीसियाई समाचार

रांची : इस वर्ष रांची में गोस्सनर कलीसिया के महिला संघ की ओर से बेथेस्दा ट्रेनिंग स्कूल बेथेस्दा बालिका मिडिल स्कूल में शिक्षा शिविर का आयोजन था, उपस्थिति ३०० से उपर थी। असाम-अंचल को छोड़ सभी अंचलों से प्रतिनिधि होकर बहनें / माताएं आयी हुई थीं। आधुनिक समस्याओं के विभिन्न पहलुओं पर शिक्षा-भाषण दी गयी। एक शाम को मिशन क्षेत्रों की झांकी में चित्र भी दिखाये गये और बहनों को सुसमाचार-प्रचार कार्य के लिए प्रोत्साहित किया गया।

आमगाँव / रौरकेला : डाइरेक्टर, पास्टर एम· जेबेर्ग गोस्सनर मिशन (बर्लिन), के भारत आगमन की चर्चा तो पहले से थी, पर कहां, कब, और कैसे वे भारत भूमि पर आ रहे हैं यह साफ नहीं था अतः आमगाँव अस्पताल एवं रौरकेला में उनके स्वगत करने वालों को काफी परेशानी हुई पर आखिर तो वे आ ही गये। वे २९ वीं सेप्तेम्बर को ही आ गये थे और बिना किसी के जाने वे रांची से टकरमा की जीप गाड़ी में दक्षिणी उड़िसा का भ्रमण करते हुए ६ ओक्टोबर को आमगाँव पहुँचे थे। ८ वीं ओक्टोबर को रौरकेला में उनका पहला कलीसियाई होने का था, जहां से वे ट्रेन पकड़ कर रांची आनेवाले थे, समय और जरिया का ज्ञान न होने से मसीही भाई-बहन खुब दौड़ धूप किये, अन्त में कुछ सुराख मिलने से आमगाँव अस्पताल की ओर गाड़ी दौड़ाये; मिशन डाईरेक्टर साहब बिगड़ी गाड़ी को चलाते आ रहे थे, दरअसल में आमगाँव की गाड़ी खींच रही थी। फिर तो उन्हें दूसरी गाड़ी में बिठा कर रौरकेला लाये जहां उनका शानदार स्वगत किया गया।

रौरकेला केम्प रख कर मिशन डाईरेक्टर भिन्न-भिन्न मंडलियों में गये। रौरकेला, बान्डामुन्डा, आमगाँव, बरसावां, टेनसा, देवगढ़ कुचिडा, बोडोरमा, सम्बलपुर आदि जगहों के मसीही भाई बहनों ने उनका स्वागत किया। इसी केम्प से मनोहरपुर के इर्द गिर्द की मंडलियों के भाई बहनों से भी मुलाकात हुई ! रौरकेला केम्प से वे लुड़ेग होते हुए अम्बिकापुर (सूरगुजा भी) पहुंच गये। इर्द गिर्द के मसीहियों से मुलाकात करने के बाद वे कुनकुरी, जशपुर, चैनपुर, शिलम, लोहरदगा होते हुए रांची १८ वीं ओक्टोबर को पहुंचे ! [खकपस]।

रांची : मिशन डाइरेक्टर पास्टर जेबेर्ग के आगमन की जानकारी में यहां अनेक कार्य क्रम रखे गये थे। कलीसिया में विद्यालयों के प्रधानाध्यापक/अध्यापिका लोगों का सम्मेलन था, जिसमें विभिन्न विद्यालयों के "प्रधानों" की उपस्थिति थी। सम्मेलन में शैक्षाणिक समस्याओं और उनके समाधानों पर विशेष विचार विमर्श हुए।

२० वीं से २६ वीं ओक्टोबर तक गोस्सनर कलीसिया के पाद्री एवं कन्डीदात लोगों के लिये शिक्षा क्लास का आयोजन था; अनेक आधुनिक एवं दिलचस्प विषय रखे गये थे, बैबल अध्ययन दोनों बेला हुआ करता था। मिशन डाईरेक्टर के अतिरिक्त डा· फेन्स भी और एक मेहमान जर्मनी से आये हुए थे; अन्य और शिक्षकों में रेभ· आर· डांग, रेभ· डा· एन· मिंज, रेभ· एम· टेटे; रेभ· डा· सी· के· पॉल सिंह थे। डा· ख्रिस्तोफर सिंह ने पशु तथा मुर्गी-पालन आदि विशेष बातों पर प्रकाश डाला। कई सन्ध्या में मिशन क्षेत्र तथा जर्मनी के चित्र और राजाओं का राजा चलचित्र डा· सिंह के द्वारा दिखाये गये। शिक्षा क्लास में हाजरी ११२ थी।

२१ वीं ओक्टोबर को तीन कन्डीदातों का पदाभिषेक भी हुआ। कन्डी· एम· कुजूर [उड़िसा), एस. केरकेट्टा (मध्य अंचल) तथा एस· कोनगाड़ी (द. पू.)।

२१ वीं तारीख ही को मिनिस्टेरियम की भी बैठकी हुई जिसमें पाद्री सोरेंग नये मिनिस्टेरियम सेक्रेटेरी चुने गये। प्रचारकों तथा लैमेन लोगों के पदाभिषेक पर विशेष बात चीत हुई सैद्धान्तिक रूप में स्वीकृत हुई, कि पदाभिषेक होवे, पर कार्यान्वियन के लिये अभी मिनिस्टेरियम सम्मिति कार्यकारिणी के ही हाथ रहे, छान-बीन कर देखे कि कौन, किस आधार पर चुन कर अभिषेक किया जा सकता है।

Gossner Mission

२७-३० वीं ओक्टोबर तक के॰ एस. एस. समिति की बैंठकी थी। इस बार की बैंठकी में के. एस॰ एस. के केन्द्रीय आर्थिक परिस्थिति पर विशेष छान-बीन करनी थी; गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर पा. एम॰ जेवेर्ग की सलाह और सिफारिश पर कई निर्णय के॰ एस॰ एक. समिति ने ली। के. एस. एस॰ खतम कर दिया गया और के॰ एस. एस॰ के अफसरों ने भी स्तीफा दे दी। नया संविधान के लिये एक सम्मिति बनायी गयी। इस अन्तरिम समय के लिये पा. डा॰ सी के पॉल सिंह को कार्यबाहक प्रमुख अध्यक्ष बनाया गया। आशा और उमीद की जाती है कि यह अन्तरिम काल ३१ वीं मार्च तक में समाप्त हो जायगा। इन सभी बातों की सूचना यह केन्द्र से दिया जायगा पाठकगण उसके लिए अपने पाद्री से पूछ ताछ करें— आगे भविष्य में लोगों को घरबन्धु पढ़ने के लिये आग्रह करें—इन उपरोक्त विषयों पर प्रगति का समाचार घरबन्धु में ही छपेगा, अतः आप भी घरबन्धु के ग्राहक बनायें और कलीसिया के विशेष समाचारों की जानकारी प्राप्त करें।

मिशन डाइरेक्टर पा. एम. जेवेर्ग अपने भ्रमण के पीछले दौर में फुदी, टकरमा, खुटीटोली सिमडेगा और अम्बापानी तक पहुंचेगे। वे ७ वीं नोवेम्बर को दिल्ली होते हुए स्वदेश को लौट जायेंगे।

बन्डामुन्डा, ता० ६-१०–७३

इस बार Mission Director Rev Pastor M. Seeberg का कार्य्य-क्रम हमारे कलीशा में विस्तृत रूप में रखा गया है। तथा ६ - १० - ७३ से कार्य्य-क्रम किया गया जो उड़ीसा अंचल से आरम्भ होता है। इसी सिलसिले में वे हमारे बन्डामुन्डा मण्डली में ता: ६ - १० - ७३ को हमारे कलीशा के प्रमुख अध्यक्ष, कलीशा के सुसमाचार विभाग के Director Dr· Singh, उड़ीसा अंचल अध्यक्ष एवं रौरकेला पेरिश Pastor के साथ पधारे।

उन्हें पूरी मण्डली मिल कर शानदार स्वागत किया। उन्हें अपने बीच में पाकर हम बहुत आनदित हुए क्योंकि हम अपने छोटी मण्डली में एक महापुरुष को पा सके। ऐसा ही और खुशी की बात कि इस बार का उनका कार्य्य-क्रम जो हमारे कलीशा में है हमारी मण्डली से आरम्भ होता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि इस बार का उनका कार्य्य-क्रम के लिए हमारी मण्डली Gate of Gossner Church ठहर रही है।

गिरजा घर में प्रवेश कर पूरी मण्डली मिल कर मण्डली का इतिहास एक मानपत्र के रुप में रखा गया; तथा सारी परिस्थिति से अवगत कराया गया।

उनके थोड़े तथा बहुमूल्य उपदेश से बहुत ही सुन्दर सुन्दर बात सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी तरह से उनसे और भी कितनी बात हम जानने सके।

उसी तरह से हमारे प्रमुख अध्यक्ष तथा Dr· Singh से बहुत सी बातें सीखने और सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। अन्त में चायपान से आज का हमारा कार्य्य-क्रम समाप्त किया गया। ईश्वर पिता उनके सारे कार्य्य-क्रम को पूरा होने दे। तथा जैसा वे हमारे बीच सकुशल आ सके अपना कार्य्य-क्रम समाप्त कर सकुशल स्वदेश लौट सके।

B. Kujur
Bandamunda.

बुड़जु, टोकाद, अमलेशा :—

अति हर्ष के साथ सूचित करते हैं कि संयुक्त इलाका (बुड़जु, टोकाद, अमलेशा) युवासंघ का वार्षिक सम्मेलन तु:जूर में ३ से ५ अक्टोबर ७३ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। प्राकृतिक विघ्न बाधाओं के बावजूद भी कलीशिया के कई धर्मागुवों और सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग ले कर इसे सफल बनाया।

यह, संयुक्त इलाका युवासंघ का चौथा वार्षिक सम्मेलन था। इन चार सम्मेलनों के पूर्व इसे बुड़जू सिनोड युवासंघ के नाम से जाना जाता था, परन्तु कलीशिया की नियमावली में हुई तब्दीलियों के कारण इसके नामकरण में भी परिवर्तन आ गया।

सम्मेलन का मूल विषय "इफिसि ५ : १६ अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं" रखा गया था। सम्मेलन को अच्छी शिक्षा देने उसकी अगुवाई और युवा वर्ग को प्रोत्साहित करने के लिए प्रमुख वक्ता के रुप में

Gossner Mission

पा· एन· भूईंया-अंचल अध्यक्ष, पा· एम. तोपनो खूंटी, पा· एस· बरजो-तपकरा, पा· जे. डांग करंजटोली और पा. पी. सुरिन तु:जूर उल्लेखनीय हैं। संवाद का मूल था कि समय बहुमोल है - अनमोल है। इसका मूल्य आंकना कठिन है समय रहते हर आवश्यक कामों को कर लेना जरूरी है। समय की महता को स्वीकारते हुए हमें चाहिए कि हम जिस अनन्त मीरास के लिये कदम बढ़ाये हैं, उस पर निडरता, शुद्धता और विश्वास के साथ अग्रसर हों। अपने मनों को शुद्ध और साफ करें। अपने पापों के लिये सच्चे-हृदय से प्रायश्चित करें। हम ज्योति के पथ में सतर्कता और बुद्धिमानी से चलें, चूंकि शैतान जो हमारा शत्रु है, चुप नहीं है। वह कार्यरत है। वह गफलत में पड़े हर कोई की टोह में है कि उसे भरमा कर अपना बना ले। अत: हम समय की महता को समझें। पवित्र वचन का अनुसरण करें। ताकि अन्त में हम नये यरूशलीम में प्रवेश पा कर उसके अनन्त सुख का स्वाद ले सकें।

इस अवसर पर आर्थिक और सामाजिक पहलुओं पर भी बातें सुनने को मिलीं। श्री सुसारन तोपनो की अगुवाई में आदर्श भजन का नमूना पेश किया गया, जिसके लय में सभी कोई झूमने लगे। पके बाल वालों को तो अपनी जवानी के दिन स्मरण आने लगे।

युवक युवातियों को प्रोत्साहित करने के लिये भजन -होड़ का आयोजन था, जिसमें – बुड़ंगकेल' टोकाद और तु:जूर मण्डलियों ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किये।

यीशु की माता-मरियम के विषय में एक लेख प्रतियोगिता आयोजन था। इसमें श्री जकरिया बरजो-तु जूर को प्रथम और प्रचारक ई· पुर्ती-डुडरी को द्वितीय पुरस्कार मिला।

अन्त में सभों से अर्जी है कि आप अपनी प्रार्थनाओं में इसे स्मरण करें। ताकि वह सदा फला फूला रहे और कलीशिया की सच्ची सेवकाई कर सके।

एन० पुरण प्र० बरजो
सचिव - सं० इ० युवासंघ
(बुड़जू, टोकाद, अमलेशा)

अन्डामन समाचार

अन्डमान में लुथेरन कलीशा अखरी श्वास ले रही है। कलीशा की स्थिति दायनीय है। यहाँ सन् १९६२ ई० से कलीशा को सम्भालने के लिए Committee बनाया गया, पर काम सुचारू रूप से नहीं हो रहा है। कलीशा के भाई-बहन अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। किसी के अधीन रहना नहीं चाहते हैं। कलीशा के कामों को दिल से नहीं अपितु एक दिखावा के तौर पर कर रहे हैं। राज्यनीति का पुट इस संस्था में दीख रहा है। चन्दा जमा प्राय: नहीं के बराबर है। कलीशा के भाई-बहन आपस में मेल-मिलाप से नहीं रहते हैं। दूसरे कलीशा के भाई-बहनों के साथ मेल-मिलाप तो बढ़ा रहे हैं पर अपने कलीशा के भाई बहनों के साथ क्या सम्बन्ध बनाये रखे हैं? यह तो कलीशा के भाई-बहन ही जानते हैं।

यदि अन्डामन की कलीशा को जिन्दा रखना है तो हम लुथेरन कलीशा के भाई-बहनों को एक सूत्र में आना है। कलीशा के नियमों को पालन करना है, ताकि हमारा यह सिसकता कलीशा अन्डमान में टिक सके।

हमारे अंचल अध्यक्ष तथा K.S.S. के अधिकारीगण इस ओर ध्यान दें। सन् १९५८ ई० से Rev. Babulal Topno, Andaman & Nicobar Islands में सेवकाई काम के लिए भेजे गये हैं, पर उनकी स्थिति क्या है? एक भीखमंगा साधु के बराबर है। यहां उनका इज्जत नहीं किया जाता है। तन्खा तो करीब पांच-छ: साल का बकाया है। पर वे अपना काम कर रहे हैं अडिग-अविचलित। विश्वास और साहस इनका ढाल है। किन्तु इनका सेवकाई कितने दिनों तक टिक सकेगा? माता कलीशा अन्डामन की कलीशा को यदि अभी से नहीं संभालेगी तो अन्डामन में लुथेरान कलीशा का सूर्य्यास्त निश्चित है।

कलीशा के भाई-बहन अन्डामन कलीशा को अपनी प्रार्थना में याद करें और हमारे अगुवे परिस्थिति को समझें और अन्डामन कलीशा का उद्धार करे।

प्रभु में आप लोगों का विश्वस्त,
मरसल केरकेट्टा
अन्डमान।

Gossner Mission

समाचार देश - विदेश

जेनेवा : पश्चिम एशिया की लड़ाई से, जिसमें अरब - इस्राइल आपस में लड़ पड़े, यीरूशलीम में एल. डब्ल्यु. एफ. का सेवा केन्द्र है कुछ प्रभावित नहीं हुआ; लड़ाई के बावजूद भी परिस्थिति सामान्य जैसे ही लगती है विशेष कर वहां के सेवा केन्द्र के कार्य को देखते हुए।

ढाका / बंगलादेश : पाकिस्तान से लौटने वाले बंगाली परिवार को बसाने के लिए एल. डब्ल्यू. एफ. को अपनी ओर से विशेष प्रबन्ध और उपाय किया है; यह काम पहला बंगाली परिवार के लौटते लौटते ही किया है जो रंगपुर/दीनाजपुर के पुनर्वास क्षेत्र में हो रहा है।

प्रिन्सटन (यू. एस. ए.) : यहां लुथरन, रिफोर्म्ड तथा ओर्थोडोक्स मसीहियों के साथ अनेक विचार विमर्श हुए; नोबेम्बर माह में फिर ऐसी बैठकी होने वाली है, जिसमें प्रत्येक कलीसियाई समुदाय से छः प्रतिनिधि होंगे, इस प्रकार की प्रथम बैठकी में "मसीही सुसमाचार और सामाजिक जबाबदेही" पर विशेष विचार विमर्श होने का है।

वाशिंगटन : रोमन कैथोलिक के कट्टरपन्थी जिस प्रकार "कुपन्थी" की धमकी देते थे, उसी प्रकार वर्तमान में मिसुरी सिनद लुथरन के "कट्टरपन्थी" के बीच में चल रहा है। पाठक गतांकों के घरबन्धु से जानते हैं कि किस प्रकार मिसुरी सिनोड धर्म सभा के फैसलानुसार ड. जोन तील्जेन को कॉलेज के प्रोफेसर और प्रेसीडेन्ट होने मूल शिक्षा का आरोप लगा कर पदच्युत कर दिया है। इस कार्रवाई के चलते पक्ष व विपक्ष में बातें चल रही हैं।

फिलाडेल्फिया : लुथर चर्च इन अमेरिका बारह सदस्यीय सम्मिति 'युवा-सेवकाई' के लिये बनायी गयी है, इस में सभी सदस्य १४-१७ वर्षीय हैं; आशा और विचार है कि युवा - सेवकाई के लिये युवा ही लोगों को दिया जाय ताकि उनके द्वारा कलीसिया की पहुंच युवा वर्ग तक स्मरण रहे कि इस समिति में एक भी वयस्यक या बुजुर्ग नहीं हैं।

बार्लिन : 'वर्ल्ड एशोसियेशन फोर क्रिश्चियन कम्युनिकेशन' की बैठकी यहां हुई जिसमें ४६ सदस्यों ने भाग लिया! विचार विमर्श का विषय था कि किस प्रकार उद्धार का समाचार कृत्रिम ग्रह से भी प्रसारित किये जांय। एशोसिएशन एल. डब्ल्यु एफ. के साथ साथ काम करती है।

बनोनी (ट्रान्सवाल) ; : दक्षिणी अफ्रिका के प्रेसबीटेरियन कलीसिया ने डब्ल्यु. सी. सी. की सदस्यता जारी रखने की मंजूरी दे दी है; रेभ. एडविन पोन्स ने इस निमित विशेष पाट अदा किया, वह बीते बार केन्द्रीय समिति (डब्ल्यु. सी. सी.) की बैठकी में, जो जेनेवा में हुई भाग लिया और वहां भी अपनी ओर से विशेष अंशदान दिया और महसूस किया, कि द. अफ्रिका के प्रेसबीटेरियन कलीसिया का डब्ल्यु. सी. सी. में रहना आवश्यक है! सदस्यता के विरोध में कोई आवाज नहीं थी।

जोनेसबुर्ग : चार्लेटॉनविले के खान के नजदीक ११ जनों को गोली से उड़ा दिये जाने की घटना एक घटना केवल नहीं है, परन्तु राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक उथल-पुतल का विशेष संकेत है; दक्षिण अफ्रिका के क्रिश्चियन कौंसिल के महासचिव जॉन रीश ने इस बात की ओर चिन्ता व्यक्त की है।

जेनेवा : इथियोपिया के अकाल का दमन कार्यक्रम जारी ही है। मेकाने येशु चर्च ने सहायता की विशेष अपील की थी, एल. डब्ल्यु एफ, वर्ल्ड सर्भिस ने साहाय कार्य के लिये अल्पकालीन एवं दीर्घ कालीन योजनाएं बनायी है। [एल. डब्ल्यु. एफ. ईनफोर्मेशन के सौजन्य से : डा. सिंह]

फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर
२००वाँ जन्मोत्सव

(रेभ· डा· सी· के· पॉल सिंह)

फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर, जिनके नाम पर हमारी कलीसिया का नामकरण आता इसी साल दिसम्बर १४ को २०० वर्ष हो जायेंगे। वह स्वयं जीवित नहीं हैं, पर उनकी बात और काम का प्रभाव आज भी मौजूद हैं और हमें उनका जीवन प्रत्यक्ष दीखता है, अत: इस शुभ तिथि को हम गोस्नर कलीसियो होकर १४ दिसम्बर स्मरण करें; यह उत्साह रांची में २री नवम्बर को गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर पास्टर एम जेवेर्ग से उद्घाटन किया जाता है आप भी आने वाले दिनों में अपनी सुविधानुसार इस दिन (१४ दिसम्बर) को स्मरण करें। और फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर की बातों एवं कामों से प्रेरणा लेवें तथा उनके काम से जो गोस्सनर एवंजेलिकल लुथरन कलीसिया स्थापित की गयी उसकी प्रगति एवं बढ़ती में ऐसा योगदान देवें कि उससे फादर गोस्सनर भी याद किया जावे, लोगों की भी सेवा और सहायता होवे तथा परमेश्वर पिता की महिमा होवे।

अत: आप फादर गोस्सनर की जीवनी का अध्ययन करें सम्भव हो तो इसका फोटो भी अपने घर में रखें ताकि उसके द्वारा यीशु मसीह की जो साक्षी हुई उसके लिये आप प्रेरणा पावें।

फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्नर का जन्म १४ वीं दिसम्बर १७७३ को जर्मनी के दक्षिणी भाग हौजेन नामक स्थान में एक रोमी परिवार में हुआ था। दिलीगेन और और इंगोलस्टाट अध्ययन के पश्चात् वह १७९६ ई· में पुरोहित बनाया गया। वह एक बुद्धिवादी पुरोहित था लेकिन १७९७ में उसको जीवित मसीह का अनुभव हुआ, उसके बाद वह 'मसीही जाग्रत' आन्दोलन में कार्य करने लगा; इस निमित उसको पुरोहिताई सजा भी मिली, फिर भी वह करीब १६ वर्षों तक सुसमाचार प्रचार के काम में लगा रहा। १८२० से वह फीटर्सवुर्ग (रूस) बुलाया गया, पर वहाँ से भी उसके क्रान्तिकारी कामों के कारण देशान्तर किया गया (१८२५)। वह रूस देश से फिर जर्मनी आया और कई वर्षों तक "राही और कोठरी" उपदेशक होकर काम किया। १८२६ ई· में वह रोमी कलीसिया से एवंजेलिकल कलीसिया में आ गया और अपने काम में लगे रह कर बर्लिन के बेतुलहाम मंडली का पाद्री हो गया। इसी स्थान से वह अपने विभिन्न कार्यों का आरम्भ किया "बाह्य-मिशन" तथा "आन्तरिक मिशन" में उसने जोर-शोर से कार्यारम्भ किया। उसने "मिशन संघ" के लिये अपना योगदान दिया तथा सुधि-सेवा-कार्य में विशेष हाथ बढ़ाया। एलीजाबेथ अस्पताल उसकी सेवा का आज भी बर्लिन प्रतीक रह गया है। उसके सेवा और कामों से उसके अनेक मित्र बन गये।

Gossner Mission

गोस्सनर साहब ने न केवल अपने उपदेशों और सेवा कार्यों से लोगों की सेवा की, उसने अनेक पुस्तिकाएँ भी लिखीं। सब विख्यात और प्रचलित पुस्तिका जो जगत के अनेक भाषाओं में अनुवाद की गयी है वह आज भी बहुतों के लिये अनोखी पुस्तिका बन गयी है; वह है; 'मन दर्पण'।

गोस्सनर साहब अपने सेवा काल के आरम्भ से ही 'मिशन-कार्य' में लगा हुआ था। वह कैथोलिक पुरोहित हो कर बासेल के "मसीही समाज का सदस्य था। पीटर्स-वुर्ग में भी वह एक संघ का सदस्य था जो फीनलैंड में मिशन काम करता था। बार्लिन में वह पहले "वर्लिन-मिशन" संघ की सम्मिति का सदस्य था। १८३४ ई॰ में वह एक मिशन-पत्रिका "दी बीने ऑफ देर मिशियोन्सफेल्डर" (मिशन क्षेत्र की मधुमक्खी) का प्रकाशक हुआ! गोस्सनर ही पहला व्यक्ति था जिसने एक 'महिला सेविका' को बाहर (विदेश) भेजा। गोस्सनर मिशन की स्थापना उसी दिन हुई जब गोस्सनर ने ६ हस्तकार्य कारी मिश्नरी हो कर भेजे जाने के लिये आये हुओं के साथ प्रार्थना की और स्वीकार किया वह १२-१२-१८३६ ई॰ था। सब पहली बार मिश्नरी अस्ट्रेलिया भेजे गये (१८३७ ई)॰ लेकिन फिर भी गोस्सनर मिशन का नियमित रूप में संगठन १८४२ ई० में हुआ, जिस निमित राजकीय स्वीकृति भी मिली और तदनुसार कुछ अधिकार भी मिले।

लगभग एक सौ बर्ष पश्चात् करीब २८८ मिशन विभिन्न देशों में भेजे गये; अस्ट्रेलिया, न्युगिनीया, दक्षिण सागरीय देश, इन्डोनेशिया, हिन्दुस्तान, अफ्रीका, अमेरिका, आदि देशों में गोस्सनर के मिशनरी गये।

गोस्सनर साहब के सेवा काम व परिश्रम का फल वर्तमान में विशेषकर हिन्दुस्तान की गोस्सनर कलीसिया में ही दीखता है। पर गोस्सनर मिशन का काम अभी अपने देश जर्मनी, नेपाल तथा अफ्रिका के कुछ देशों में भी है। अपने देश जर्मनी में विशेषकर शहरी एवं उद्योगी मिशन में विशेष काम हो रहा है; जो लोग शहरों एवं विभिन्न उद्योग केन्द्रों में काम करते हैं पर यीशु मसीह से अलग हैं, उसको नहीं जानते हैं या नहीं जानना चाहते हैं ऐसे लोगों को यीशु मसीह के पास लाने का उपाय और तरीका करते हैं।

जब गोस्सनर साहब के मिशनरी छोटानागपुर भूखंड में आकर सुसमाचार प्रचार किया और कई बर्षों के बाद भी फल नहीं पाया, तो वे निराश होकर गोस्सनर साहब के पास अपना मत व अर्जी प्रगट किया कि वे यहां से दूसरी जगह भेजे जांय। गोस्सनर साहब ने लिख भेजा कि वे अपना कार्य में रत रहें, यदि फल नहीं दीखता है तो वे निराश न होवें भूखंड के निवासी यदि त्राण के लिये बचन नहीं सुनते हैं तो न्याय (विनाश) के लिये भी तो बचन सुनायें जांय। गोस्सनर साहब का धैर्य और विश्वास की दृढ़ता का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है: "मैं शीघ्र आनेवाला हूँ" (प्रका॰ २२:२०); आशा, विश्वास एवं न्याय की ओर संकेत है। फादर गोस्सनर की जन्मतिथि १४वीं दिसम्बर १७७३ ई॰ न केवल स्मरण का दिन है, पर उसकी जीवनी से और विश्वास से कुछ भी तो लेकर भविष्य की ओर तार्कें — उजवल भविष्य की ओर। अत: पुन्य तिथि के स्मरण में विभिन्न तरीके व साधन से सफल बनावें और प्रत्येक अपने जीवन में मनुष्यों के लिये सेवा कार्य करने की ठान लें और परमेश्वर पिता की महिमा करें।

शोक समाचार

टकरमा इलाका के जोन्हाटोली गाँव की श्रीमती हन्ना बागे को जो पादरी स्वर्गीय याकूब बागे की धर्म पत्नि थी तारीख २५-१०-७३ बृहस्तपतिवार करीब दस बजे सुबह को ईश्वर पिता ने ८५ वर्ष की उम्र में वृद्धावस्था के कारण अपने पास सनातन विश्राम के लिए बुला लिया।

उनकी पति के कार्यमुक्त के बाद वह जोन्हा टोली में ही रहती थी, बुढ़ापा की भार से दबी जा रही थी, फिर भी धार्मिक कामों में हाथ बटाती थीं।

जैसे कि :— माता समाज, साप्ताहिक संध्या समाज इत्यादि। ईश्वर पिता उनकी सनतानों को शांति देवे।

विजय कुमार
राऊरकेला

Gossner Mission

औद्योगिक विकास के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम

उन युवकों के लिये जो उद्योग करना चाहते हैं किन्तु तकनीकी प्रशिक्षण की कमी के कारण नहीं कर पा रहे हैं — विकास मैत्री की ओर से चार महीने के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। **यह प्रशिक्षण राँची में ३ जनवरी १९७४ से ३ अप्रिल १९७४ तक होगा।** प्रशिक्षण के दौरान में प्रशिक्षणार्थियों के लिये ५० रुपये प्रति माह की आर्थिक छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गई है। प्रशिक्षण की सफल समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों को अपना उद्योग स्थापित करने के लिये भी आवश्यक पूंजी की व्यवस्था करने का प्रयत्न संस्था करेगी।

इच्छुक युवक विकास मैत्री के कार्यालय में १ रुपया देकर आवेदन-पत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के लिये कोई शुल्क नहीं लिया जायगा।

पता :—

निर्देशक
औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
विकास मैत्री
पुरुलिया रोड, राँची।

बढ़ती आबादी एक समस्या

चलती बसों के पीछे, घरों की दीवारों पर चिपके पोस्टर "एक दो और तीन बस" — पढ़कर हम हँस पड़ते हैं। पर गम्भीरता से देखें और सोचे तो कथन सत्य है कि "छोटा परिवार सुखी परिवार"।

आज प्रतिदिन की बढ़ती जनसंख्या ने हर प्रगतिशील देश को इस ओर सोचने के लिए विवश कर दिया है और इस समस्या के समाधान का उपाय भी खोज निकाला गया है। "परिवार नियोजन" ही एक उत्तम उपाय है जो बढ़ती आबादी को रोकती है। "परिवार-नियोजन" सिर्फ कम बच्चों की पैदाईश ही नहीं पर जो बच्चे हैं उनके उचित देख भाल और शिक्षा-दीक्षा पर भी जोर देता है। हमारा देश इस ओर प्रयत्नशील है कि बढ़ती आबादी को रोके ताकि जन-जीवन का स्तर सामान्य रहे। अवश्य ही ध्यान देने योग्य विषय है कि हमारे देश में उत्पादन कम होता जा रहा है बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में। प्राकृतिक थपेड़ों से चोट खाया हुआ मनुष्य जब पेट की ज्वाला शान्त नहीं कर पाता है तो तिलमिला उठता है। भूख, बीमारी हमारे लिए अभिशाप बनकर एक ही साथ आते हैं।

हमारे सहयोग से निश्चय यह बढ़ती जनसंख्या कम की जा सकती है। आईये हम भी अपना सहयोग इसमें दें एक कर्त्तव्य समझकर और वर्त्तमान परिस्थिति को देखते हुए, भविष्य की चिन्ता करते हुए। उन्हीं घरों में बच्चों की संख्या अधिक है जो गरीब हैं न खाने पीने को कुछ है और न पहनने ओढ़ने को वस्त्र हैं और न ही उनकी शिक्षा-दीक्षा की कोई गुंजाईश। माता-पिता अपनी अवस्था

Gossner Mission

देख बच्चों की अवस्था पर तरस खाते हैं। इसी विषय पर डा॰ डब्ल्यु होरो ने पाद्री-शिक्षा-क्लास में अपना एक भाषण भी दिया। क्यों नहीं उसी गरीबी अवस्था में रह कर जिससे कम लोगों का गुजार आसानी से हो — हम बच्चों की बढ़ती संख्या को रोकें ?

"सन्तान" भगवान का वरदान मना जाता है। यह सत्य है। बहुतों का विश्वास है कि बच्चों के जन्म को रोकना पाप है, जो हमारी किसमत है वह होगा। पर असंख्या बच्चे पैदा करके उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी न करना भी तो पाप हुआ किसी दल का ये भी कहना है कि बच्चे के जन्म को रोकना जीव हत्या है — पर नहीं ! इसके पहले कि जीवधारण गर्भ में आए उसको रोकना जीव हत्य न होगी। गर्भपात कराने को जीव हत्या कहा जा सकता है चूँकि तब जीवधारण गर्भ में आ जाता है।

गाँवों शहरों में रहते हुए भी परिवार नियोजन के साधन प्राप्त किए जा सकते हैं। हिचकिए नहीं, शर्माइए नहीं किसी डाक्टर से सलाह लेने के लिए ? चूँकि ऐसा करने से आप एक बहुत बड़ी मदद अपने परिवार एवं राष्ट्र को देते हैं।

परिवार नियोजन के साधनों द्वारा कम बच्चों को जन्म देने के साथ-साथ दो बच्चों के बीच का समय (gaping) भी बढ़ाया जा सकता है। माताओं के स्वास्थ्य पर जो बुरा असर जल्दी-जल्दी गर्भवती होने से पड़ता है, वह भी रोका जाता है।

नीचे संक्षिप्त में कुछ उपाय दिए जाते हैं विस्तार पूर्वक जानने के लिए डाक्टर या परिवार नियोजन के कर्मचारियों से मिलें।

(१) पिल :— यह एक गोली है जिसकी व्यवहार प्रतिदिन करने से गर्भ रोका जाता है। इसे प्रति मास २०-२१ दिनों के लिए खाया जाता है। इसके व्यवहार में नियमितता नितान्त आवश्यक है।

(२) लूप :— यह प्लास्टिक का बना एक घुमावदार यंत्र है जिससे गर्भाशय में रख दिया जाता है। और बच्चे की कामना करने से इसे निकाल दिया जाता है।

(३) फोम, कोन्डोम, डायाफ्राम जो आसानी से किसी भी दवाखाने में मिल जाते हैं। पर इनके व्यवहार जानने के लिए अपने डाक्टर या परिवार नियोजन कर्मचारियों से सलह लेनी आवश्यक है।

स्थाई रूप से बर्थ कंट्रोल के निमित्त ऑपरेशन हैं जो स्त्री या पुरुष किसी एक में किया जाता है। स्त्री में होनेवाले ऑपरेशन को ट्यूबेकटोमी (Tubectomy) और पुरुष में होनेवाले ऑपरेशन को नसबन्दी (Vasectomy) कहते हैं।

आपके समक्ष कुछ उपाय आ गए। और अब आप इस पर अमल कीजिए और योजना को सफल बनाइए। मिशन अस्पतालों ने इन दिशा में बहुत सहयोग दिया है सरकार को और दे ही रहे हैं सिर्फ रोमन काथलिक अस्पातालों को छोड़कर। अपनी किस्मत या भाग्य को न कोसें। और धार्मिक कुंठाओं से अपना मन संकीर्ण न करें। क्रिश्चियन मेडिकल एसोसियन भारत की ओर से परिवार नियोजन का एक प्रोजेक्ट है जो भिन्न-भिन्न अस्पातालों को मदद करते हुए भिन्न-भिन्न जगहों में कई संस्था बना चुकी है।

यह हमारे लिए एक ललकार है। इस बढ़ती आबादी की समस्या का समाधान हमारे पास है। आईए हम जीवन को सुखमय बनाने में अपने राष्ट्र की मदद करें।

डा॰ होगेस्
जी॰ ई॰ एल॰ चर्च अस्पताल
आमगाँव भाया बारकोट, सम्बलपुर

गोस्सनर कलीसिया सोचनीयआर्थिक दशा...

[गताँक से आगे]

डा० एम० बागे

पेरिश भी यत्र-तत्र ऐसे अधिकार का व्यवहार करते हैं। कलीसिया के इनेगिने पेरिसों एवं इलाकाओं को छोड़ अधिकतर इलाकाओं में आर्थिक लंगड़ापन है। उनको जो आमदनी माहवरी अथवा वर्ष में प्राप्त है वह इलाका स्तर के खर्च के लिए भी पर्याप्त नहीं है। प्राय: ऐसा पाया जाता है कि इलाकाएं ऐसी परिस्थिति से लाचार होकर ऐसे रकमों को भी खर्च कर देती हैं जिन्हें उन्हें सदस्यों एवं मंडलियों से पाकर सीधे केन्द्रीय खजाने को भेज देना है। अब जब उन स्तरों की एसी बुरी स्थिति है तो उन पर जो आर्थिक बोझ केन्द्र की ओर से लादा जाता है वह सार्थक कैसे होगा ? उन पर निर्धारित रकम काल्पनिक मात्र हो जाता है।

२. कलीसिया के अधिकारियों और प्रशासन-समितियों का यथोचित सम्बन्ध कलीसिया के अन्य सदस्यों के साथ प्रर्याप्त रूप में सुदृढ़ न होना:— किसी भी स्तर या संस्था के खजाने की गंभीर स्थिति पर संस्था के प्रधान एवं खजान्ची को विशेष चिन्ता होना स्वाभाविक है। किन्तु आवश्यक है कि यह चिन्ता कलीसिया के अन्य सदस्यों की भी हो। गोस्सनर कलीसिया के स्वपालित होने के सम्बन्ध में कलीसिया की यह बुनियादी नीव अमान्य नहीं की जा सकती है। यदि इस ओर समय पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए तो कलीसिया की आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं हो पाएगी।

३· व्यावहारिक वजेट का न बनना :—गोस्सनर कलीसिया के विभिन्न स्तरों का वजेट और विशेषत: के० एस०एस०, अंचल एवं इलाकाओं का वार्षिक वजेट अनुमान मेरे विचार से व्यावहारिक नहीं बनता है वहां के० एस० एस० हर साल अपने वार्षिक खर्च के निमित्त एक निश्चित रकम का निर्धारण करती है। इस अनुमानित रकम को साधारणत: अंचलों एवं उनके अन्तर्गत के जायदादों से प्राप्त करने की आशा करती हैं। इलाकाओं के अर्थिक लंगड़ेपन के कारण यह अनुमानित रकम वर्ष के अन्त तक न प्राप्त होने से अंचल एवं केन्द्र के खजाने में घाटा हो जाता है। नए वर्ष में पुराना बकाया के भरे जाने एवं नए वर्ष के लिए निर्धारित रकम को पाने की आशा की जाती है, पर यह स्वप्न मात्र ठहरता है।

मैं और एक दृष्टिकोण से वजेट को अव्यावहारिक मानता हूँ। पूरे वर्ष के आमदनी का जो अनुमानित रकम निर्धारित होता है उसका आधार अंचलों एवं इलाकों की दृढ़िकृत संख्या अथवा परिवार संख्या होती है। उन्हीं संख्याओं पर आधारित अनुमान लगाया जाता है कि प्रति जन से कितना मंडली पैसा आएगा और प्रति परिवार से कितना घड़ा दान प्राप्त होगा। वास्तव में ये दान अनुमानित परिमाण के आधा से भी कम प्राप्त होते हैं। किन्तु उपरोक्त अनुमान वजेट के सिद्धान्त को आधार मानने के कारण हर के० एस० एस०, अंचल समिति एवं ईलाका बैठकी में आर्थिक आमद-खर्च के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए बैठकियों का अन्त इसी सुझाव एवं संकल्प के साथ होता है कि आनेवाले दिनों में अधिक वसूली का घोर प्रयास किया जायगा। अनुमानित आमदनी के आधा से भी कम आने के भिन्न भिन्न कारण हो सकते हैं। प्रश्न है कि क्या यह सोच कर वजेट बनाना बुद्धिमानी है कि बहुत प्रयास करने पर अपेक्षित रकम पूरे नहीं तो दो तिहाई अवश्य प्राप्त हो जाएंगे, अथवा क्या यह अधिक व्यावहारिक न होता कि हम पहले तीन वर्षों में प्राप्त आमदनी के रकमों का औसत निकाल कर उस औसत को संभवत: अपेक्षित रकम निर्धारित करें और खर्च के निमित्त उससे भी जो अधिक रकम आवश्यक हो उस अतिरिक्त रकम को अन्यान्य प्रकार से प्राप्त करने का प्रयास करें? यह विचारनीय है!

४· समितियों द्वारा अनुमोदित वजेट के अनुसार सख्त कार्य न होना :—जो भी रकम किसी

Gossner Mission

मद विशेष के लिए वर्ष के खर्च निमित्त निर्धारित रहता है, उससे साल के अन्त तक में वास्तविक खर्च अधिक हो जाता है। साधारणत: यह कुछ ही मदों के विषय में दर्शाया जा सकता है, फ़िर भी इस प्रकार से थोड़ा थोड़ा घाटा जो विभिन्न मदों में होता है वह पूरे खजाने के घाटे को और बढ़ा देता है।

ऊपर मैं ने कुछ ऐसे संभव कारणों को दर्शाया है जिससे केन्द्र की आर्थिक स्थिति आज सोचनीय हो गई है। परन्तु कारण जो भी हों, समस्य-समाधान आवश्यक है। मेरे विचार से इस समस्या के समाधान निमित्त कलीसिया में आर्थिक विषय को दृष्टि में रखते हुए एक क्रान्तिकारी व्यवस्था करना अनिवार्य होगा।

केन्द्रीय आर्थिक समस्या समाधान के निमित्त सुझाव

मैं ने के. एस. एस. द्वारा १९७४ के लिए अनुमोदित बजेट को इसलिए अव्यवहारिक बतलाया है क्योंकि इसमें अंचलों एवं इलाकाओं से जितना रकम पाने का अनुमान किया है वह वस्ताविक नहीं है और इस तरह से आर्थिक घाटे की वृद्धि की संभावना है। इससे १९७३ साल के अन्त तक में जो करीब १०००००) रू० के घाटा होने की अनुमान किया जा रहा है वह घाटा इतना बढ़ जाएगा कि परिस्थिति भयङ्कर हो जाएगी। अतएव मैं समस्या-समाधान के निमित्त निम्न सुझाव पेश करता हूं :-

अ:- सर्वप्रथम यह कदम लिया जाए कि १९७४ एवं उसके बाद वाले वर्षों में वार्षिक घाटे की संभावना न रहे। इसके निमित १९७४ साल के लिए आमदनी मंद में उतना ही रकम अपेक्षित हो जो १९७०, ७१ और ७२ साल में प्राप्त रकमों का औसत हो। इस तरह से उक्त वर्षों में जो भी रकम अंचलों से के. एस. एस. के नाम से केन्द्र को प्राप्त हुए उसका औसत करीब १४०००) रू० होता है और इसी प्रकार उक्त वर्षों में लिफाफा चंदा द्वारा जो रकम प्राप्त हुए उसका औसत १६०००) रू० होता है। दोनों को मिला कर कुल ३००००) रू० के. एस. एस. को उसके खर्च के निमित अधिक से अधिक प्राप्य रकम के रूप में अनुमानित किया जा सकता है। इसी पर के. एस. एस. के खर्च को आधारित होना है। यह एक बड़ी कसौटी है पर तदनुकूल कार्य करना अनिवार्य होगा। यह कैसा संभव हो इसका सुझाव नीचे दिया जाता है:-

१. जायदाद और डेवेलोपमेन्ट (विकास कार्य) के बजेट का एकीकरण हो और दोनों मदों के खर्च के लिए जायदाद ही आमदनी का श्रोत माना जाए और तदनुकूल कार्य भी सम्पन्न हो। इसी प्रकार शिक्षा विभाग और राज्यवृद्धि विभाग अपने ही मद के श्रोतों पर पूर्ण रूप से निर्भर करें, चाहे उनको रकम विदेश से प्राप्त हो अथवा गोस्सनर कलीसिया से, वे के. एस. एस. खजाने पर निभर करें।

२. आध्यात्मिक प्रशिक्षण विभाग के निमित जैसी व्यवस्था की जा रही है वही आगे भी रहे। इसलिए कि १९७४ के बजेट में ७९४६) रू० के सम्बन्ध में आमदनी का वैदेशिक श्रोत स्पष्ट नहीं हैं, यदि उक्त सहायता विदेश से प्राप्त न हो सके तो अंचलों के साथ मिल कर ही इसके लिए ठोस व्यवस्था की जा सकेगी।

३. विशेष प्रश्न आता है कि के. एस. एस. के वार्षिक खर्च को किस प्रकार ३००००) रू० तक ही सीमित किया जाए क्योंकि उससे अधिक रकम पाने की संभावना नहीं है। कुछ ऐसे कदम लिए जा सकते है:-(क) के. एस. एस. अपने आप को इस परिस्थिति को दृष्टि में रख कर निलम्बित घोषित करे अथवा उसकी बैठकिमों का पूरा खर्च अंचलें बहन करें। यदि के. एस. एस. निलम्बित हो तो उसके द्वारा होने वाले कार्य हमेशा प्रमुख अध्यक्ष और अन्य पांच अध्यक्षों द्वारा किए जाएं। उनकी बैठकियों का खर्च अंचलें वहन करें। हरेक कार्य सभों की सम्मति से हो।

(ख) प्रमुख अध्यक्ष को हेड क्वाटर्स मंडली के पाद्री होने के नाते उसी मंडली के आमदनी से वेतन प्राप्त हो। हो सकता है कि उन्हें उनकी शिक्षा पर आधारित वेतन भर हेड क्वाटर्स मंडली से प्राप्त हो। चाहे जो भी के. एस. एस. खजाने उन्हें माहवारी सिर्फ १००)रू० प्रमुख पद अथवा जिम्मेदारी के लिए एल्लौवेन्स स्वरूप दिया जाए। जब कभी अंचलों में उनका दौरा हो, उसके यात्रा का खर्च अंचलें वहन करें।

Gossner Mission

(ग) कलीसिया के कर्म्मचारियों के प्रोविडेन्ट फन्ड एवं पेन्सन फन्ड में के. एस. एस. को जो भी देन वर्ष में देना पड़ता है उसे इलाकाओं, अंचलों एवं सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा ही दिये जाने की व्यवस्था हो ।

(घ) केंद्र में के. एस. एस. के कार्य को करने एवं प्रमुख अध्यक्ष, सेक्रेटेरी और खजांची की सहायतार्थ जितना काम हो कर्म्मचारियों की संख्या के. एस. एस. आफिस के लिए हों। नीचे दर्शाये कार्य करने वाले व्यक्ति रह सकते हैं:-

(१) एक सचिव जो पत्राचार में प्रमुख की सहायता करें एवं पूरे कागजात और फाइलों के लिए जिम्मेदार हो। (२) एक जन जो रूपैया-पैसा के हिसाब के लिए जिम्मेदार हों। उनकी विशेष जिम्मेदारी होगी विदेश से प्राप्त रकम को विभिन्न विभागीय व्यक्तियों के हिसाब में स्थानान्तरित करना और प्रॉविडेन्ड फान्ड एवं पेन्सान फन्ड का हिसाब रखना और आवश्यकतानुसार संबन्धित व्यक्तियों को चुकाना। (६) एक टाइप करने वाले जो टाइप करने के पूरे कार्य को संभालेंगे। (४) एक पीओन ।

इस विषय में सुझाव है कि ड्राइवर सिर्फ एक रहे और फिलहाल उनके वेतन की व्यवस्था राज्यवृद्धि मद में की जाए। सभी आफिसों के सफाई, नाइट-गार्ड एवं माली के खर्च का वहन जायदाद विभाग करे ।

(ङ) उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए १९७४ में जो रकम के० एस० एस० के खर्च के निमित निर्धारित हैं उनमें विशेष कटौती की जाए। इस तरह की कटौती संभव हो सकती है :-

	बजेट- का वार्षिक रकम	कटौती के बाद का वार्षिक रकम
(१) वेतन———	२१२६४-००	१२०००-००
(२) आफिस खर्च———	११५००-००	२००० -००
(३) गाड़ी खर्च——	१०००८-००	३०००-००
(४) यात्रा खर्च——	१०५००-००	३००० -००
(५) बैठकियां——	१६४००-००	२००० -००
(६) एफिलिएशन——	६७८७ -००	६७८७ -००
(७) विविध खर्च———	३००० -००	१२१३ -००
जमा		३००००-००

नोट:- आंकड़े बदल सकती हैं, किन्तु ध्यान इस बात पर रहे कि कुल रकम ३००००) रू० से अधिक न हो और यदि अधिक हो तो उस अधिक रकम को प्राप्त करने कीनिश्चयता हो अनुमानित नहीं।

यह भी ध्यान रहे कि एफिलिएशन खर्च में बदलाहट न हो क्योंकि उसके द्वारा गोस्सनर कलीसिया का संबंध बैदेशिक या अन्य बहन कलीसियाओं के साथ जोड़ा जाता है और यह अनिवार्य है।

ब :- जो भी घाटा १९७३ दिसम्बर तक में होगा उसको एक मुस्त भरना असंभव होगा। यह लम्बे अर्से में ही भरा जा सकेगा। अतएव उचित सोच विचार कर और अंचलों से परामर्श लेकर इसको भरने के लिए सार्थक व्यवस्था की जाए।

स :- इसलिए कि भविष्य में केन्द्रीय बजेट वास्तविक रूप ले सके और उसको बनाने में अंचलों एव इलाकाओं का तथा संम्भव सहयोग प्राप्त नीचे उल्लेखित तरीका अपनाया जा सकता है :—केन्द्रीय अफसर हर वर्ष फरवरी के अन्त तक में आगामी वर्ष के लिए बजेट अनुमान तैयार कर अंचल आफिसों में भेज दें। अचल अधिकारी उसे प्राप्त कर उसमें अचल से अपेक्षित रकम को मिला कर अपने अंचल का बजेट तैयार करें और उस अचल के बजेट अनुमान को अचल के इलाकाओं को मार्च के अन्त तक में भेज दें। इलाका अधिकारी उसे प्राप्त कर इलाका से अपेक्षित रकम को मिला कर अपने इलाका का बजेट तैयार करें और उसे इलाका समिति या सभा के समक्ष पेश करें ऐसी इलाका बैठकी में अचल के एक अफसर या

Gossner Mission

उनके द्वारा प्रेषित जन अवश्य रहें। तर्क वितर्क के पश्चात जो बजेट इलाका का बने उसे अंचल आफिस भेजा जाए। अंचल अफसर इलाका बजेट में स्वीकृत अंचल को प्राप्त रकमों के आधार पर अंचल का बजेट तैयार कर अंचल समिति में पेश करें और इस स्वीकृति बजेट की सूचना केन्द्र को दी जाए। अंचल द्वारा स्वीकृत के· एस. एस· को प्राप्त रकम के आधार पर केन्द्र के व्याहारिक बजेट तैयार हो। इस प्रकार बजेट बन जाने पर यह प्रयत्न सभों का हो कि किसी स्तर पर वार्षिक घाटा न हो।

द :-- केन्द्र में कटौती का क्रान्तिकारी कदम लेने के बाद अंचलों को आदेश दिया जाए कि इलाका में आर्थिक परिस्थितियों में सुधार लाने का विशेष कदम लिया जाए। जो भी उपाय सोचे जाएं वे व्यावहारिक हों।

सूचना एवं अपोल

गोस्सनर एवंजेलिकल लुथरन कलीसिया के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि १४ वीं दिसम्बर १९७३ को फादर जोहानेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर साहब का २०० वां जन्मदिवस है। इस दिन को धन्यवाद व स्मरण का दिवस बनाने और मानने के लिये देश विदेश की अनेक संस्थाओं ने विशेष कार्यक्रम रखा है कि यह दिवस परमेश्वर को धन्यवाद के लिये होवे, कि उसने गोस्सनर साहब को खड़ा किया, जिसके द्वारा और जिसकी प्रेरणा से देश-विदेश में परमेश्वर की महिमा एवं लोगों की सेवा व उन्नति के लिये काम किये गये और आज भी काम किये जा रहे हैं।

अतः आप सभों से अपील है, कि १४ वीं दिसम्बर १९७३ को आप भी "गोस्सनर-दिवस" मानने के लिये कार्य क्रम रखें : उपासना.—आराधना, भाषण, खेल-कूद आदि केन्द्री सी· सी· पी· एन्छ· से फादर गोस्सनर का फोटो खरीद सकते हैं। पाद्री प्रचारक व कलीसिया की संस्थाओं के अगुवे तथा कलीसिया के माननीय व्यक्ति विशेष ध्यान दें, कि यह दिवस आनन्दमय आशीषमय व शिक्षादायक हो। उस दिन की आमदनी आप केन्द्रीय सुसमाचार प्रचार विभाग के लिये भेज देवें।

'गोस्सनर दिवस' (१४ वीं दिसम्बर) का उद्घाटन रांची में मिशन डाईरेक्टर पाद्री मार्टिन जेबेर्ग (गोस्सनर मिशन, बर्लिन) के द्वारा २ री नोवे· १९७३ को किया जा चुका है; अतः यह दिवस मंडली व अन्य स्तरों में सुविधानुसार दिन तिथि ठहरा कर आप अवश्य मानें। 'गोस्सनर दिवस' को गोस्सनर कलीसिया में सफल बनाने के लिये जर्मनी से अतिथि भी आने वाले हैं; अब तक डा· फोन स्तीग्लीत्स और पा· ब्रुनो शोस्टेड एवं दल ने आने की खबर दी है। 'गोस्सनर दिवस' मानने का संक्षिप्त-खबर आप घरबन्धु के माध्यम से कलीसिया को देवें।

आप के लिये गोस्सनर-दिवस आशीषमय एवं आन्दमय हो,

मसीह में आप लोगों का सेवक
रेभ· डा· सी· के· पॉल सिंह
कार्यवाहक प्रमुख अध्यक्ष
जी· ई. एल· चर्च, रांची।

धन्यबाद आप का ग्राहक चन्दा (३१ वीं अक्टोबर तक) मिला

1. Miss Mandhyani Tiru
2. ,, Joana Horo
3. Mr· Anandmasih Purti
4. ,, Gladson Bage
5. ,, S. Lakra
6. ,, A. Kerketta
7. ,, Sudhir Kerketta
8. ,, Masihdas Minz
9. ,, Premprakash Minz
10. ,, Johan Bhengra

Gossner Mission

11. Mr. D. Tiru
12. " Samuel Hemrom
13. Pracharika Esran Herenz
14. " Narmi Samad
15. Susri Dulari Bage
16. Cand C. B. Kujur
17. Mr. Nehemiah Topno
18. Miss Mukta Lugun
19. Cat. Royan Hemrom
20. " J. Kerketta
21. " S. Topno
22. Mr. J. Surin
23. Mrs. Hiraphulmani Minz
24. Mr. I. D. Kujur
25. " P. D. Kandulna
26. Mr. P. S. Murmu
27. Rev. Innocent Aind
28. Mr. A. Topno
29. P. Minz
30. " Ph. Jojo
31. Mr. Martin Topno
32. " Marshal Barla
33. " Halan Topno
34. " B. Dangwar for 14 copies
35. Rev. Gossner Kerketta for 6 copies
36. Mr. M. Indwar for 100 copies
37. Rev. H. M. Bage for 14 copies
38. " C. D. Kujur
39. " Suleman Jojo
40. Mr. N. Surin
41. " Binod Beck
42. Rev. Asian Kandulna
43. " Junas Bage
44. " I. Guria
45. " K. D. Kerketta
46. " Junathan Lugun
47. Cat. Barnabas Dhan
48. Shri Abhiram Soy
49. Rev. Shem Lakra for 59 copies
50. " Julius Surin
51. " Arun Kumar Punoria
52. " Halan Samad
53. Mr. X B.N. Topno for 14 copies
54. Rev. Suresh Toppo
55. " Dharmdas Toppo
56. Mr. C H Horo
57. Cpl. Mate Matias Topno
58. Rev. E. Surin
59. Mr. Dh. D. Topno Musif Magistrate. Patna City, Patna-7

MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO ; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—

School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १४
वर्ष—६३ राँची, [illegible]म्बर १९७३, संख्या नं०—१२

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ पी॰ टी॰ १५.

वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ९३ रांची, जुलाई १९७३ संख्या न० — ७

EINGEGANGEN
25. JAN. 1974
Erledigt ....

आत्मपालन एवं आत्मशासन
यहोवा के बचन से होता है।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — — — ३
उपदेश की तैयारी — — — ४
गवाही — — — — ८
"अद्भुत आश्चर्य प्रेम" का अनुभव — ९
मनसुख का हार और हाल छूने का दण्ड — ११
सच्ची शांति — — १२
भक्त की प्रार्थना — — १४
भजन — — — १४
समाचार देश-विदेश — — — १६
प्रचारकों का पेनसन — — — १७
बंदरों की कहानी — — — १८
ग्राहक चन्दा — — — १९
Advertisement-Tirkee Enterprises—२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

मंडली साल के अनुसार हम त्रिनितातिस काल में प्रवेश कर चुके हैं। परमेश्वर ने अपने आप को एक परमेश्वर और एक परमेश्वर में तीन व्यक्ति करके प्रकट किया है। पिता सृष्टिकर्त्ता करके, पुत्र उद्धारकर्त्ता करके तथा पवित्रात्मा शान्तिदाता तथा सहायक आत्मा करके प्रकट किया है। इससे अपनी मानवी बुद्धि से समझना अत्यन्त कठिन है। जगत के उदाहरण समझने के लिए दिये जा सकते हैं परन्तु वे भी जगतीय होने के नाते साफ नहीं हो सकते हैं। सूर्य एक है इस एक ही सूर्य से मनुष्य रोशनी और गर्मी पाता है। पानी, पानी ही है, परन्तु आकाश का पानी बादल कहा जाता है, हिमालय ऐसे पर्वत का पानी वर्फ कहे जाते हैं। पानी के अलग रूप, पानी के अलग कार्य को हम देखते हैं परन्तु सच कहा जाय वे पानी ही हैं। परमेश्वर एक है और उनकी इच्छा हुई कि अपने आप को इसी रूप में मानव जातियों के लिए प्रकट करे। हम उनके धन्यवादी हैं कि उन्होंने अपना पैत्रिक प्रेम हमारे लिए प्रकट किया तथा आज भी अपने आत्मा के द्वारा हमारी अगुवाई वचन और सक्रमेन्त के द्वारा कर रहा है। परमेश्वर की यह इच्छा है कि कोई भी प्राणी नाश न हों परन्तु अनन्त जीवन पावे। वचन में लिखा है यशायाह ५४:१० - पहाड़ सरक जायेंगे और पहाड़ियां हिल जायेंगी परन्तु मेरी दया तेरे पास से न सरकेगी और न मेरे कुशल की वाचा हिलेगी परमेश्वर तेरा दया कहनेहारा कहता है। इस काल में रहते, जीवन बिताते उपदेशों को सुनते, परमेश्वर का वचन अध्ययन करते हम परमेश्वर की इच्छाओं को अच्छी तरह देखें, पहचाने और मन फिरावें और प्रार्थना करें कि हम बचाये जावें।

दूसरी बात कि यह वही महीना है जब हमारे पुरखों ने १० वीं जुलाई १९१९ को ओटोनोमी लेने की घोषणा किई। हमारे पुरखे सुसमाचार की निराली शिक्षा में यूं रोपे गये थे कि ऐसी कठिन परिस्थिति में भी जब कि कोई कदम उठाना अत्यन्त कठिन था परमेश्वर पर विश्वास एवं भरोसा रख कर यह निर्णय लिया। हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लोगों को अपने आत्मा के द्वारा यह अगुवाई दी कि लोग ओटोनोमी ले सके। हम उनके सन्तान हैं, हमारे सामने भी समस्यायें हैं जिसके कारण हम एक दूसरे को कोसते आ रहे हैं मैं समझता हूं कि इस रीति से हम लोग आगे नहीं बढ़ पावेंगे न तो कलीसिया को मजबूत बना सकेंगे। हमारा फर्ज है कि हम सब कोई मिल जुल कर परमेश्वर पर विश्वास एवं भरोसा रखते हुए काम करे यदि ऐसा कर सके तो कलीसिया की समस्याओं को दूर कर सकेंगे और मजबूत बना सकेंगे तथा परमेश्वर की अधिकाधिक महिमा होगी। हम अपनेपन का ख्याल छोड़ें एक दूसरे से सहयोग रखें और प्रभु यीशु को मुख्य महान स्थान दें तो ओटोनोमस कलीसिया के सारे कामों को चला सकेंगे।

ह० जे० तोपनो

सम्पादक घरबन्धु

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

(मार्टिन टेटे)

त्रिनितातिस के पीछे २रा एतवार

लूका १४ : १६-२४

यहुदी लोगों का विचार था कि यीशु प्रगट होगा। यीशु का प्रगट होना ईश्वर का इतिहास में प्रगट होना होगा। यीशु में ईश्वर प्रगट होकर एक बड़ा भोज देगा। उस बड़ी जेवनार में केवल यहुदी लोग आमंत्रित रहेंगे। इस दृष्टान्त में बड़ी जेवनार की योजना करनेवाला परमेश्वर आप ही है। नेवताहारी शब्द यहुदियों के लिए व्यवहार किया गया है। कंगाल, लंगड़ा, अन्धा आदि शब्द के द्वारा पापियों एवं तहसिलदारों का वर्णन किया गया है। यहुदियों के बीच नेवता पाकर भोज में उपस्थित न होना नेवता देनेवाले का बेइज्जत करना था। साथ-साथ ऐसी भी रीति थी कि जेवनार का दिन बतलाया जाता था परन्तु समय नहीं।

'परमेश्वर के निमंत्रण को ठुकराना"

१· मैं ने खेत मोल लिया है—प्रथम मनुष्य खेत को ईश्वर का स्थान देता है। वह खेत को ईश्वर बनाता है। आज भी हम में से कितने ऐसे हैं जिनके पास प्रार्थना वा आराधना के लिये समय नहीं है। परमेश्वर की मांग की जगह खेत की मांग को प्रथम स्थान देते हैं। ईश्वर के लिये समय नहीं है पर खेत के लिये समय है। परमेश्वर का निमंत्रण ठुकरा दिया जाता है।

२· मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं— मनुष्य को जब ईश्वर की ओर से नयी चीजें वा अधिकार दिये जाते हैं तब वह ईश्वर को भूल जाता है। चीजों को ही ईश्वर का स्थान देता है। आज भी हॉकी खेल, फुटबॉल खेल आदि हमारे मन को ईश्वर की ओर से भटका देते हैं। खेलना बुरा नहीं है पर खेल में हृदय देकर ईश्वर को भूलना पाप है।

३. मैं ने ब्याह किया है—इस सम्बन्ध में पुराने नियम में लिखा गया है :—"जो पुरूष हाल का ब्याहा हुआ हो, वह सेना के साथ न जाय और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए; वह वर्ष भर अपने घर में स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे (व्यवस्था विवरण २४ : ५) यह सत्य है कि नियम मनुष्य के मन में था। परन्तु जीवन की उत्तम बातें वा उत्तम दयाओं में मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। घर का बनाने वाला ईश्वर आप ही है। पुरूष और स्त्री के जोड़े जाने से परिवार बनता है। परिवार का घर ईश्वर की ओर से आशीष की बात है। परन्तु परिवार वा घर स्वार्थ के लिये नहीं बनाया गया। ईश्वर के संग जो परिवार चलता है वही धन्य है। जो परिवार पड़ोसी के लिये चिन्ता करता है सो ही आशीषित है। वही घर अनुग्रह से पूर्ण है जिसके सदस्य यह सोचते हैं कि वे भी परमेश्वर के घर के एक अंग हैं।

परमेश्वर अनुग्रह से सभों को निमंत्रण देता है। इसलिये अपना समय एवं अपनों को हम ईश्वर के लिये दे देवें।

त्रिनितातिस के पीछे ३रा एतवार

लूका १५ : १-१०

कट्टर यहुदियों का विचार था कि स्वर्ग में आनन्द होता है जब कोई पापी ईश्वर के सामने से दूर किया जाता है। कट्टर यहुदी पापी के विनाश का प्रचार करता था। परन्तु उद्धार कर्त्ता यीशु का सुसमाचार था कि पापी के मन फिराने एवं बचाये जाने से स्वर्ग में आनन्द होता है।

Gossner Mission

"स्वर्ग वा परमेश्वर के राज्य में आनन्द"

१. पापी के मन फिराने से स्वर्ग में आनन्द होता है। (११-३२) उड़ाऊ पुत्र ने मन फिराया। उड़ाऊ पुत्र का संकेत पापियों की ओर है। पापियों के मन फिराने से स्वर्ग में आनन्द होता है। हम भी जब मन फिराते हैं तब स्वर्ग में और धरती पर भी आनन्द होता है। ईश्वर प्रेम के द्वारा आग्रह करता है कि हम मन फिरावें।

२. खोये हुए पापी के मिल जाने से आनन्द होता है—मनुष्य पाप, झूठ, घमण्ड, मोहमाया, क्रोध, मतवालपन आदि के जंगल में खो गया है। इस प्रकार के पापियों को ईश्वर यीशु में ढूंढ़ता है। बचन के द्वारा पुकारता है। उपदेश के द्वारा जागृत करता है। ईश्वर यीशु के द्वारा पापियों को पा लेता है। इसी समय स्वर्ग में स्वर्ग दूतों के बीच आनन्द होता है। यीशु का पृथ्वी पर आना पापियों को ढूंढ़ना था।

हम भी खोये हुए थे। यीशु में ईश्वर ने हमें बुलाया, चुन लिया एवं अपना बना लिया है। स्वर्ग दूतों एवं ईश्वर का आनन्द इसमें है कि हम पापी लोग मन फिरावें एवं बचाये जावें।

ओटोनोमी पर्ब्ब

यूहन्ना ४ : २७-४२

आज तो ओटोनोमी त्योहार है। आज के पर्ब्ब में स्वपालन एवं स्वशासन दो विशेष बातें हैं। बचन में यीशु एवं सामरी स्त्री के बीच बात-चीत होती है। यीशु के बचन के प्रकाश में सामरी स्त्री देख सकती है कि वह कितनी दूर तक स्वपालित एवं स्वशासित है।

"स्वशासन एवं स्वपालन का प्रमाण"

१. सामरी स्त्री अपने को देख एवं पहचान सकती थी। इसी प्रकार पतरस भी अपने को देख एवं पहचान सकता था (लूक ५ : ८) आज हम कलीसिया होकर अपने को देख सकते हैं अथवा नहीं—इसी में स्वपालन एवं स्वशासन है। यीशु के बचन के दर्पण में हमें अपने को देखने का प्रयास करना है।

२. सामरी स्त्री ने यीशु को पहचान ली। वह जान गई कि यीशु सब कुछ जानता है। भजन गाने वाला जानता है। कि ईश्वर सब कुछ जानता है (भजन १३९ : १-४) मनुष्य के मन से जब बुराई निकाल दी जाती है तब वह स्वपालित एवं स्वशासित हो जाता है। हमारे मन से जब बुराई नहीं निकाली जाती है तब हम स्वशासित एवं स्वपालित नहीं हैं।

कलीसिया जब यीशु को पहचान लेती है तब बुराई में फिर कदम नहीं रखती है। कलीसिया के विश्वासी लोग जब यीशु को पहिन लेते हैं तब फिर उनमें बुराई राज नहीं करता परन्तु वे आप स्वशासित हो जाते हैं।

३. सामरी स्त्री यीशु को पा जाती और उसका प्रचार भी करती है। वह अनुभव करती है कि वह यीशु में स्वपालित एवं स्वशासित है। यीशु में स्वपालित एवं स्वशासित होने के कारण स्त्री में से लाज और भय दूर हो जाता है। वह समाज से निकाली गयी थी तौभी प्रचार करने लग जाती है।

मनुष्य जब पाप में जीता है तब वह लजाता है परन्तु ज्यों ही पाप से छूट जाता है वह अपनी स्वतंत्रता वा स्वशासन के विषय प्रचार करता है।

४. ईश्वर की इच्छा पूरी करना ही स्वशासन एवं स्वपालन है। (३४) ईश्वर ने हमें स्वतंत्र किया है कि हम उसकी इच्छा पूरी करें। जितने लोग स्वशासित एवं स्वपालित हैं उनके बीच शान्ति आनन्द एवं सामर्थ है। ओटोनोमी का आनन्द केवल उनका है जिनके बीच ईश्वर की इच्छा पूरी की जाती है।

Gossner Mission

५. बचन का प्रचार करना ही स्वपालन एव स्वशासन है। यीशु ने प्रकाश किया था—"मैं क्रूश से प्रेम का बीज बोता हूँ। क्रूश के प्रेम में सामर्थ है। इसी प्रेम के सामर्थ का प्रचार तुमको करना है। मैं ने बीज बोया है। तुम कटनी काटोगे। एक दिन आवेगा कि तुम प्रेम का बीज छींटोगे परन्तु कटनी दूसरे लोग काटेंगे। क्योंकि तुम में से कितने प्रचार करते हुए मार्तिर हो जाओगे। तुम्हारा प्रचार करना व्यर्थ नही होगा।"

६. यीशु पर विश्वास करना एवं उसमें जीना ही स्वपालन एवं स्वशासन है। सामरियों ने यीशु पर विश्वास किया एवं अपने स्वपालन एवं स्वशासन का प्रमाण दिया। हम वचन रूपी दर्पण में देखें कि कहाँ तक हमारा यीशु पर विश्वास है और हम कहाँ तक स्वपालित एवं स्वशासित हैं।

त्रिनितातिस के पीछे ४था एतवार

लूका ६ : ३६-४२

प्रभु यीशु मसीह मनुष्य के जीवन के लिये कई नियमों को प्रदान करता है। वास्तव में यीशु का वचन ही मनुष्य के सारे जीवन के लिये नियम है।

"मसीही जीवन के व्यवहारिक नियम"

१. दोष मत लगाओ—मनुष्य स्वभाव से ही छली है। इसलिये दोष ढूँढ़ता है। मनुष्य आप ही दोषीदार है! इसलिये उसे टीका टिप्पणी से दूर रहना है। बचन के प्रकाश में हम पाते हैं कि सब कोई पापी हैं। ईश्वर की प्रशंसा हम नही करते हैं।

२. क्षमा करो—मनुष्य के लिये क्षमा करना भी कठिन नियम है। पतरस के लिये क्षमा करना कठिन था। इसलिये उसको आदेश दिया गया था कि वह जीवन भर अपने भाई को क्षमा देवे। आज हमें भी आदेश दिया जाता है कि हम अपने अपराधियों को जीवन भर क्षमा देवें। क्षमा देने पर ही हम क्षमा की आशा कर सकते हैं। हम लोगों से जैसा व्यवहार करेंगे वैसा ही वे हम से करेंगे।

३. उत्तम गुरु की खोज करो (३६+४०) उसी गुरु की सुनो जो सचमुच में अगुवाई दे सकेगा। उसी बात को बताओ जिसे तुम जानते हो और ऐसी बातों को न बोला करो जिसे नहीं जानते हो।

४. आलोचना से अलग रहो (४१+४२) यह आदेश इस लिये दिया जाता है कि हम स्वंय पापी हैं। हम आप ही दोषीदार हैं इस लिये आलोचना करने से परे रहें।

हमारे दैनिक जीवन के लिये वचन में यह नियम दिया गया है। हम इस नियम के अनुसार जीवन व्यतीत करें।

त्रिनितातिस के पीछे ५वां एतवार

लूक ५ : १-११

यीशु गलील में पतरस के नाव पर उपदेश दे रहा था। इस उपदेश के सिलसिलेवार पतरस को एवं अन्य शिष्यों को यीशु अपनी ओर खींच लेता है। यीशु बचन के द्वारा शिष्यों को अपना बना लेता है।

"बचन के द्वारा यीशु शिष्यों को अपने पीछे कर लेता है"

१. यीशु के आश्चर्य्य कर्म्म को शिष्य देख सकते थे। पतरस जाल डालता है। बहुत मछलियाँ फंस जाती हैं। शिष्यों को देखकर विश्वास करना पड़ा कि यीशु में सामर्थ है। आज भी कलीसिया के जीवन में यीशु के आश्चर्य्य कर्म्म को हम देख सकते हैं। दुनिया में भी अनेक आश्चर्य्य कर्म है उनको हम देख सकते हैं और यीशु के पीछे हो सकते हैं।

२. आश्चर्य्य कर्म्म के प्रकाश में पतरस अपने आप को पहचानता है। "हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं" (८) इत्यादि। पतरस देख सकता था कि वह आप तो पापी है। परन्तु यीशु पवित्र है। जितने लोग अपने आप को

Gossner Mission

पहचानते हैं, उन्हीं लोगों के जीवन में यीशु अपना काम करता है और वे यीशु के पीछे हो लेते हैं।

३. यीशु के वचन को पतरस मानता है—"तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।" पतरस यीशु की आज्ञा पालन करता है। आज्ञा पालन का फल दिखायी देता है। बचन का फल शिष्य देखने सकते हैं।

४. यीशु के बचन के कारण शिष्य उसके पीछे हो लेते हैं। (११) यीशु उन्हें सुसमाचारक बनाता है। वे सुसमाचार रूपी जाल को पृथ्वी में डालते हैं और मनुष्यों को यीशु के लिये पकड़ते हैं।

आज व्यक्ति वा कलीसिया होकर हम निराश दिखायी देते हैं। कभी-कभी परिश्रम करते-करते थक जाते हैं। पर यीशु का कहना है—परिश्रम करो। गहिरे में जाल डालो। मेरे पीछे हो लेओ।

त्रिनितातिस के पीछे ६वां एतवार

मत्ती ५ : २०-२६

यीशु का बचन मांग करता है कि हम शास्त्रियों एवं फरीसियों से अधिक धर्म्मी हो जावें। अन्यथा हम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं सकेंगे। शास्त्री और फरीसी बाहरी रूप से आज्ञा पालन में निपुण थे। परन्तु बचन के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करते थे। (देखो मत्ती २३)

"कौन फरीसी और शास्त्री से अधिक धर्म्मी है?"

१. वही मनुष्य जो हत्या नहीं करता है। देखो २१ पद। ६वीं आज्ञा अर्थात काम वा हथियार से हानि नहीं पहुँचाता है।

२. वही जो मन से अपने भाई को प्यार करता है। (२२) भाई पर क्रोध करना मनुष्य हत्या है। क्रोध एवं डाह मन में हैं। क्रोध एवं डाह के द्वारा बहुतों को हम मृत्यु के घाट में उतार डालते हैं।

३. वही जो बचन से अपने भाई से प्रेम रखता है। जो कोई अपने भाई को मूर्ख वा निकम्मा कहता है वह मनुष्यघाती है। मत्ती (१५ : १८-२०) आज हम भी शब्दों के द्वारा बहुत लोगों को मार डालते हैं।

मनुष्य घाती लोग ईश्वर के राज्य में प्रवेश करने नहीं पावेंगे। इसलिये हम ५ : २३-२६ पद की बातों पर ध्यान देवें।

सूचना

सूचित किया जाता है कि सन् १९७३–१९७६ के प्रेस-सम्बन्धी सरकारी/एवं प्रेस की ओर से प्रशिक्षण का आरम्भ जुलाई १९७३ से होगा। अतः जी०ई०एल० चर्च प्रेस रांची में शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए प्रवेश चाहने वाले छात्रों के लिखित आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं। आवेदन-पत्र ३०-६-१९७३ तक अधीक्षक जी०ई०एल० चर्च प्रेस के कार्यालय में पहुंच जाना चाहिए। लिखित और मौखिक जांच ता० १४-७-७३ को आठ बजे सुबह होगी। प्रशिक्षणार्थी को कम से कम मैट्रिक पास होना चाहिए।

हर प्रशिक्षणार्थी को हर माह ६०) साठ रूपए छात्रवृत्ति, सरकार की ओर से प्राप्त होगी। रहने का प्रबन्ध विद्यार्थी स्वयं करेंगे। विशेष परिस्थिति में "प्रेस-छात्रों" के साथ रहने का प्रबन्ध किया जा सकता है।

विशेष जानकारी, कार्यालय जी० ई० एल० चर्च प्रेस में मिल सकती है।

भूषण खेस्स
अधीक्षक
जी० ई० एल० चर्च प्रेस, मेन रोड, रांची

Gossner Mission

॥ गवाही ॥

मेरा जन्म एक संसार परिवार में हुआ था, पर सभी दृष्टिकोण मे मेरा परिवार आर्दशमय था। हम सिर्फ चार ही प्राणी थे, माता-पिता और दो पुत्री। बड़ी बहन की शादी सँसार धर्म में हो गया था, और मैं लाली मिशन स्कूल में पढ़ रही थी। मैं ५ वर्ष से पर्दल बिमारी से पीड़ित थी। सँसारिक विश्वास के अनुसार दवा-दारू के अतिरिक्त मुर्गी-चेंगना, भेड़-बकरी, आदि सब पूजे गए, लेकिन बिमारी ज्यों का त्यों ही रहा। अन्त में पिताजी ने उदास होकर कहा — बेटी! शायद इस दुनिया में तुम्हारे लिए कोई दवा नहीं है, तुमको इस दुनिया से बिदा होना ही है। इस बात को मैं अपनी मिस्ट्रेस को बताई। मिस्ट्रेस ने मुझे सलाह दिया कि तुम एक बार अस्पताल जाने के लिए पिताजी को राजी करो। बहुत मुश्किल से पिताजी ने मुझे S.D.A. अस्पताल में भर्त्ती करा दिया। एक दिन की बात है, शनिवार का दिन था, अस्पताल बन्द था। वहाँ एक नर्स बिमारियों को एक जगह एकत्रित करके ईश्वर का बचन सुनाने लगी। उसने यूहन्ना ११:४४ पद को पढ़ा, उसमें यही वचन था कि यीशु ने मरे हुए लाजर को जिलाया। इस वचन ने मेरे मन में विश्वास उत्पन्न किया कि यीशु जब मुर्दों को जिला सकता है; मैंने सोचा मैं तो मुर्दा नहीं पर बिमार हूँ। यदि सचमुच यीशु ईश्वर का पुत्र है तो वह जरुर ही मुझे चँगा करेगा। उसी समय से मैंने प्रतिज्ञा किया कि यदि मैं चँगी हो गयी तो जीवन भर यीशु की सेवा करूँगी। पाँच साल का बिमारी, १८ दिन मैं अस्पताल में थी, १९ दिन में मुझे अस्पताल से छुट्टी मिली। मैं पूर्ण रुप से स्वस्थ हो चुकी थी, और प्रभु को अपना उद्धारकर्त्ता मान चुकी थी। उसके बाद मैं १९५९ ई० में ५ वाँ पास की और दामी मिडल स्कूल में ७ वाँ क्लास पास की।

प्रिय पाठक गण मैं एक धर्म खोजक लड़की हूँ। प्रभु अपना वचन मत्ती २८:१९-२० में कहता है कि तुम सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और; और उन्हें पिता पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। पर जब मैं गिर्जा जाना शुरु करने लगी तो खृस्तान लोग ही मुझे खृस्तान होने से मना करने लगे। यहाँ तक कि सँसारिक निन्दा को सहना मेरे लिए असह्य हो गया। तब मैं ३ महीना ईश्वर के सामने से भाग खड़ी हुई। परन्तु वहाँ भी प्रभु ने दो बार दर्शन देकर आश्चर्य रीति से कठिन विपति में मुझे बचाया, जिस्ते मैं जीवित यीशु की गवाही दे सकूँ। १९६५ ई० में मैं ताबिता बेबल और बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोबिन्दपुर गयी, वहीं पर मेरे धर्म पिता पाद्री डा० एम० बागे द्वारा बपतिस्मा हुआ। अन्त में मैं अपने धर्म पिता आदरणीय पाद्री डा० एम० बागे को सपरिवार हृदय से धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे निज पुत्री के रूप में मेरा पालन-पोषण एवं विदाई का सारा भार लिया। अब मैं ईवश्र की कृपा से कुशलमय जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

जिनिद विश्वासी होरो
लाली कोयनार टोली
२६-५-७३

—:o:—

Gossner Mission

"अद्भुत-आश्चर्य प्रेम" का अनुभव

Anand Masih Tirkey
Howrah RMS.
Howrah-1

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक। इस कारण हम को भय नहीं; चाहे पृथ्वी उलट जाए और पहाड़ समुद्र के बीच डाल दिया जाय। भजन संहिता ४६:१-२।

मनुष्य के जीवन में कभी ऐसी घटनाओं का समावेश होता है जो चिरस्मर्णीय होता है। कभी-कभी मनुष्य जीवन-मृत्यु जैसे कठिन परिस्थितियों के बीच गुजरता है। हम बच जाते हैं। लोग कहते हैं; वह बच गया। हम मसीही कहते हैं; वह बचाया गया।

मैं एक रेलवे मेल सर्विस (RMS.) कर्मचारी हूँ। चक्रधरपुर रेलवे जंक्सन के पास रेलवे दुर्घटना के फलस्वरूप मेरे रीढ़ की हड्डी पर चोट आ गई थी। भीतरी चोट थी। पहले-पहल तो मुझे इसका कोई भान नहीं हुआ। समय बीतता गया। चोट थी कमर में और दर्द पैर में होता था। चिकित्सकगण परेशान थे। इलाज का कोई फल नहीं हो रहा था।

दिन बीतता गया। अब वेदना अधिक बढ़ गयी और शरीर भी कमजोर होता जा रहा था। कलकत्ता के बहुत से बड़े डाक्टरों से इलाज करा चुका था पर सही इलाज नहीं होने से मर्ज बढ़ता चला गया। रीढ़ की हड्डी के सही स्थिति पर नहीं रहने के कारण आपस घर्षण होता था और अन्दर ही अन्दर सूज कर बोन टी० बी० का रुप धारण कर लिया था।

मेरी दशा अब चिन्ताजनक हो गई थी। मुझे कलकत्ता से रांची लाया गया। बरियातू के डाक्टर ने, डाक्टर आर० प्रसाद से जो उन दिनों रांची सदर होस्पिटल में न्युरो सार्जन थे, चिकित्सा कराने की सम्मति दी। उन्होंने ओपरेशन के लिए सलाह दी। मैं जीवन के इस दुखद, अत्यन्त दर्दनाक भागों से ऊब चुका था। जीवित रहने की लालसा समाप्त हो चुकी थी अतएव परिवार वालों की सहमति न पाने पर भी कठिन ओपरेशन के लिए राजी हो गया।

ओपरेशन का दिन ठीक हुआ। कल मेरा ओपरेशन होने वाला है। मैं चंद घड़ियों के लिए घर जाने की अनुमति मांग लेता हूँ। होस्पिटल से अचानक घर पहुंचने पर परिवार के लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। मैं उन्हें मेरे आने का कारण बतलाता हूँ। मान्यवर जीवन तिर्की उन दिनों पथलकुदवा ख्रुस्ट मण्डली के पादरी पद पर नियुक्त थे, बुलाये जाते हैं। मैं अपने आप को प्रभु मसीह के चरणों में अर्पण कर देता हूँ और पवित्र-ब्यारी में भागी होता हूँ।

आज ओपरेशन का दिन है। सुबह से ही परिवार के लोग, बन्धु-बान्धव होस्पिटल में जमा हो रहे थे। मैं मसीह में खोया हुआ था और प्रार्थना के द्वारा लगातार आश्रय मांग रहा था।

घड़ी आ पहुंची थी। मुझे ओपरेशन थियेटर में ले जाया गया। बेहोशी आने लगी थी। बेहोशी आने के पहले मैं इतना कह पाया था," प्रभु मैं अपने को तेरे हाथों सौंपता हूँ, मेरे गुनाहों को माफ कर देना।"

लगातार ढ़ाई घंटे का यह ओपरेशन था। पैर की हड्डी निकाल कर रीढ़ की हड्डी में जोड़ दी गई थी। यह एक खतरनाक ओपरेशन था। होस्पिटल के कर्मचरियों का कहना है कि, इस तरह का ओपरेशन, शरीर की काट-छांट इस अस्पताल में पहले कभी नहीं हुआ था।

बड़ा ओपरेशन के बाद का यह तीसरा कठिन, दर्दनाक, असाह्य रात थी। दर्द-दर्द, वेदना-कराहना, इसके सिवा मेरे पास कुछ नहीं था। आधी रात के निस्तब्धता में अचानक मेरे मन में एक ख्याल जाग्रत होता है, — प्रभु

Gossner Mission

पापियों को बचाने के लिए इस जगत में आया। उनको तरह-तरह की ताड़नाएँ दी गई, सिर्फ इसलिए कि जगत् का उद्धार हो। मेरा यह कष्ट तो थोड़ा है जबकि प्रभु को जान-बूझ कर विषम् से विषम् यातनाओं का सामना करना पड़ा। इसके तुरन्त बाद मैं इस प्रकार प्रार्थना करता हूँ,—प्रभु मैंने अब तक जितने भी अपराध किये हैं; तेरे सम्मुख लाता हूँ। प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें क्षमा कर दे। हो सके तो तेरे राज्य में मुझे.........। मैं प्रार्थना पूरा नहीं कर पाता हूँ और मुझे उसी समय नींद आ जाती। जब मेरी आँखे खुलती है तो अपने आप को दर्द-मुक्त और बहुत सुधार पाता हूँ। मुझे अनुभव होता है कि जीवन दान मिला है।

इस घटना के उपरान्त मैं दिन प्रति-दिन अपने में सुधार पाने लगा। कुछ ही दिनों में सारा जख्म् भर गया। अब मैं स्वास्थ हो गया था। लगातार चार साल का, इस पुराने रोग से मुक्ति मिली थी। मेरे चिकित्सक भी आश्चर्य किये वगैर रह नहीं सके, क्योंकि इतनी जल्दी इस बिमारी से रोग-मुक्त होना सम्भव नहीं था।

आज मैं पूरे विश्वास और सम्पूर्ण भरोसे के साथ, जगत् के हर प्रकार के रोग से पीड़ित—दु:खियारों को विश्वास दिलाता हूं और यह दावा करता हूँ कि प्रभु मसीह के नाम पर, उस पर सम्पूर्ण भरोसा रखने के द्वारा, आप भी अपने कठिन से कठिन रोग से छुटकारा पाइये।

प्रभु सब का सहायक हो।

गोस्सनर कॉलेज

(रांची विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त)

नये सत्र के लिये ५-७-१९७३ को खुलता है। बहाली जारी है। Admission Form और Prospectus कॉलेज आफिस से २) (दो रुपैये) देने पर मिलता है। छात्रावास का बन्दोबस्त है। आदिवासी एवं पिछड़ी जाति के लिये क्षात्रवृति प्राप्य है। आदिवासी भाषाओं की पढ़ाई होती है। भोर ६—१० बजे क्लास होता है। जगह की कमी है। बहाली के लिये जल्द आवें।

डा० एन० मिंज
प्राचार्य।

※ गोस्सनर कॉलेज ※

प्राध्यापकों की आवश्यकता है। योग्य प्रत्याशी आवेदन पत्र देवें।

१	हिन्दी के लिये—	१ प्राध्यापक
२	राजनीति विज्ञान के लिये	१ ,,
३	अर्थ शास्त्र के लिये	१ ,,
४	वाणिज्य ,, ,,	१ ,,

आवेदन पत्र को अन्तिम तिथि २०-६-७३
इन्टरव्यु की तिथि ३०-६-७३

मंत्री :- गोस्सनर कॉलेज।

Gossner Mission

मनसुख का हार और हल छूने का दण्ड

बैसाख का कड़ाके का धूप। आग कह रहा था मुझे देख - सूर्य कह रहा था मुझे देख। दोनों के बीच प्रतिद्वंदिता चल रहा था कि कौन जीतेगा। ऐसा ही दोपहर में 'लपंगा' स्टेशन के मुसाफिरघर में लोग, सूर्य के प्रताप से बचने के लिए भगवान को पुकार रहे थे और साथ ही इच्छा करते थे कि लोकल ट्रेन जल्दी आता और वे अपने अपने मंजिलों पर जल्दी पहुँच जाते।

'मनसुख' भी गाड़ी ही के इंतजार में मुसाफिर खाना में कितना देर से अकेला चुपचाप बैठा था। 'प्रितम' भी तो स्टेशन तक पहुंचा कर वापस घर जा चुका था। तभी एक अधेड़ पुरुष जो मनसुख ही का उमर का था, सामने आया। उसके हाथ में एक बड़ा-सा किताब था।

"क्या, आप यह पुस्तक पढ़ना पसंद करेंगे?" वह मनसुख ही को सवाल किया था। इसलिये उसे कुछ न कुछ तो कहना ही था — बोला — "क्यों नहीं पढ़ने लायक हो तो जरूर पढ़ूँगा। मगर कौन-सा किताब है? ...बच्चों का है?

"जी नहीं, यह आप लोगों का धर्म पुस्तक है। मेरा मतलब — बाइबल है बाइबल।"

'ओह! आप भी मसीही हैं?"

"जी नहीं, मगर मुझे हरेक धर्म की किताबें पढ़ने का शौक है। इसलिए इसे अभी हाल ही में खरीदा हूँ और पढ़ रहा हूँ।"

"जी..., लेकिन आप को कैसे पता चला कि मैं मसीही हूँ?"

"आप के साथ जो साहब आये थे न! जब वे जाने लगे तो आपलोग आपस में हाथ मिलाये और एक साथ दोनों के मुँह से "यीशुसहाय" शब्द निकला। इसी से मुझे पता चला कि आप मसीही हैं।

'आप का अनुमान बिल्कुल ठीक है, मैं मसीही ही हूँ" यह कहते हुए उसने उसके हाथ से बाईबल ले लिया और उलट पुलट कर देखने लगा। मनसुख के बिचार से वह पुरुष धार्मिक पुस्तकों का इज्जत करता है।

बाईबल को उलट पुलट करते वक्त एक जगह आपसे खुल गया। मनसुख को ध्यान आया वहां मोर के पंख के चिन्ह लगाया गया था। यह युहन्ना के पुस्तक का १२ वां अध्याय था। मनसुख का नजर वहां चला गया जहां लाल पेनसील से लकीर खींचा हुआ था। लिखा था — "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, पर जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है और जो इस जगत् में अपने प्राण को अप्रिय जानता है वह अनंत जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा।" यह पढ़कर मनसुख न जाने क्या सोचने लगा मगर तत्काल ही चौंका। वह आदमी कह रहा था — "कैसे लगा?"

"कौन-सा चीज?" मनसुख गड़बड़ा गया।

"यही २४ और २५ वां पद।"

"अच्छा लगा......।"

'लेकिन आज की दुनिया में सभी कोई अपना प्राण को प्रिय जानते हैं' — उस व्यक्ति ने कहा — 'देखिये, मैंने बहुतों से सुना; मसीही लोग चाल व्यवहार में अपना जबाब आप ही है। मगर बहुत से जगहों पर देखा और मुझे लगता है संसारिक और मसीही लोगों में ज्यादा फर्क नहीं है। क्योंकि संसार लोग शराब पीते हैं और मसीही भी। मसीही लोग संसार लोगों की मनिंद झगड़ते हैं तथा असभ्य भाषाओं का धुआँधार आदान-प्रदान करते हैं। ये लोग ससार लोगों की तरह ही शुभ-अशुभ मानते हैं। कहीं कहीं तो मसीही लोगों को पुजा-पाठ करते हुए पाए जाते हैं। आप ही कहिये न मसीही होने व, न होने में क्या अंतर है। संसार लोगों का व्यवहार में बल्कि अनेक अच्छाई है। कम से कम ससार लोग, धर्म को मानें या न मानें, लेकिन माता पिताओं को जरूर मानते, आदर करते, पैर छुते हैं। लेकिन मसीही लोग तो माता-पिताओं के उपर हाथ उठाने से नहीं हिचकिचाते, और मसीही लोगों में भी आजतक अंधविश्वास है, है न?" मनसुख और

क्या कहता। उसका मुँह में एक हिसाब से ताला-सा लग चुका था।

तभी स्टेशन में जोर का हल्ला उभरा। लोग उठ-उठ कर प्लेट फार्म की ओर जाने लगे। गाड़ी आ चुकी थी। मनसुख उस व्यक्ति के साथ एक ही कम्पार्टमेंट में चढ़ गया। थोड़ी देर बाद गार्ड ने सिटी बजाई और हरा झंडा दिखाया। फिर गाड़ी प्लेटफॉर्म पर रेंगने लगा।

* * * * * *

आज गांव भर में एक ताजा खबर फैला हुआ था। गांव के प्रत्येक स्थान पर एक ही चर्चा था — 'आज 'फूलमनी' ने हल को छु दिया है।" उसने हल को खेत के बीच से बाहर निकाल दिया। यह घटना से गांव वाले अप्रसन्न नजर आ रहे थे। उनका कहना था लड़की लोग हल छुने से नहीं जोगाता है। यह गांव के लिए एक घोर अपमान है।

बस क्या था, सांझ होते होते 'सुगड़' का खलिहान के सामने वाले बरगद के पेड़ के नीचे सारे गांव के पंच जमा हो गये। पंचों ने भी फुलमनी को दोषी साबित कर दिया। फलस्वरूप फुलमनी को एक दण्ड के रूप में एक खस्सी, २० पैला चावल, ५ पैला दाल और तेल मशाला आदि देना पड़ा। उस दिन रात को गांव वाले खुब धूम-धाम के साथ खा-पीकर सो गये।

सुबह हुआ तो गांव में एक प्रकार से खलबली मचा हुआ था। गांव में पुलिस आया हुआ था और उन लोगों को, जिन लोगों ने रात को भोजी भात खाये थे, पकड़-पकड़ कर ले जा रहे थे। उन पर ठग होने का अपराध लगा हुआ था।

मनसुख जब पुलिस लॉरी में चढ़ने लगा तो इंसपेक्टर को मुस्कराते हुए देखा। उसको लगा यही आदमी 'लफंगा' उससे बाईबल पढ़ने को कहा था।

दूसरे दिन लोगों ने देखा फूलमनी के घर के सारे लोग दिखाई नहीं दे रहे हैं। वे गांव छोड़ कर कहीं जा चुके थे। लोगों का कहना है, "अब फूलमनी तथा उसके घर के लोग संसार हो गये हैं। वे अब मन फिराकर फिर से मसीही होना नहीं चाहते।"

SUSHIL, IIND B. SC

सच्ची शान्ति

(सलमोन आईन्द)

मनुष्य स्वभाव से सुख शान्ति और आनन्द चाहता है। मानव-जीवन का चरम ध्येय ही आत्मानुभूति है अर्थात् ईश्वर से साक्षात्कार। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आत्मिक नियम के मार्ग पर विधिवत चलने के लिए प्रेरणा न केवल शिक्षित वरन अशिक्षित को भी मिलती है। सत्य के मार्ग पर चलने ही से ईश्वरीय ज्ञान की उपलब्धि है। सत्य ज्ञान बिना मुक्ति की प्राप्ति असंभव है।

ईश्वरीय निर्मित सृष्टि के अध्ययन करना वचन द्वारा परमावश्यक है। सृष्टि नियमों का मान लेना ही ज्ञान बोध होता है। अनुभव ही से यर्थार्थज्ञान की वृद्धि होती है। ईश्वर ही एक मात्र बुद्धिमान, सामर्थवान और ज्ञानवान है। उसका पवित्र प्रकाश जगत में सर्वत्र फैला हुआ है। यदि कोई जगतीय जीवन में स्वर्गीय विधिवत् कार्य नहीं करता, वह पवित्र ज्ञान को कभी प्राप्त नहीं कर सकता और न तो अवर्णनीय सच्ची शांति और परमानन्द प्राप्त कर सकता है। मानव जीवन का सही ज्ञान कराने वाला प्रभु यीशु है। परमेश्वर की ओर से समस्त मानव जाति के लिए ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म जीवन, पवित्र एवं छुटकारा (१ कुरिन्थियों १:३०) और उसी में बुद्धि और ज्ञान से सारे भण्डार छिपे हुए हैं (कुलुस्सियों २:३)। समस्त भला, बुरा और ज्ञान की बातें जगत के सभी विविध भाषाओं

Gossner Mission

में पायी जाती हैं। धर्मग्रन्थ को जिसमें सुख, आनन्द और प्रेम का सही मार्ग बताया गया है; पढ़ने में असामर्थता अथवा उपेक्षा के कारण मानव-समाज पारस्परिक दुर्भावना और अज्ञानता को मिटाने में वंचित है। क्योंकि सच्ची शान्ति की ज्योति ज्ञान द्वारा प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है। इस अर्थहीन धर्मसंस्कार द्वारा मनुष्य अपनी दृष्टि में प्रारब्ध के निर्णायक हैं। आंतरिक के अपेक्षा पदार्थिक में अधिक पवित्र मानते हैं। संसारिक ज्ञानमार्ग कर्ममार्ग एवं भक्तिमार्ग में विश्वास करके ईश्वरोपसना और संगीतोपसना करते हैं। मानव ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान से भिन्न एवं अधुरा है। आत्मजन्म ही से आत्मज्ञान का प्रकाश और आत्मसम्मान होता है। क्योंकि ईश्वर आत्मा है (यूहन्ना ४:२४.)। प्रकाशोपरान्त मानव जीवन सक्रिय तथा समृद्ध हो जाता है। समस्त विवादपूर्ण मानव सिद्धांत को ज्ञानी ईश्वर ने निपटा दिया है। सत्य सौंदर्य और प्रेम को भी आलोकित कर दिया गया है। सच्चा ज्ञान का वास्तविक प्रतिफल प्रेम, आनन्द, शान्ति, सहनशीलता, दयालुता, हितकामना, विश्वास्तता, नम्रता एवं आत्मसम्मान है (गलतियों ५:२२,२३.)। सच्चाई और ज्ञान मानव जीवन में अभाव के कारण वर्तमान युग अत्यन्त क्षुब्ध, दुःख और अशान्त वातावरण में होती जा रही है। मानव का जीवन इस जगत में मानव के लिए ही प्रकाशमान एवं ज्योतिस्तम्भ है। मानव जीवन ज्योति है (यूहन्ना १:४.)। वह अंधकार में प्रकाश करती है। अब उस ज्योति से जीवन का अंग प्रत्यंग, कलीसा में व्याप्त असन्तोष, ईर्ष्या, द्वेष, अशान्ति के घनान्धकार एवं अज्ञानता को अर्थानुसन्धान करके सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करना है। सचाई से ज्ञान, और ज्ञान से शान्ति होती है, और मानव जीवन को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है; और जन-जन को पवित्र बनाती है। मानसिक रूप से मानव की एकता को सची शान्ति की सम्भव नहीं कही जा सकती है। जब तक आध्यात्मिक जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ (बैबल) जो ईश्वर का है और वह मानव जाति के लिए है (यशायाह ३४:१६, यूहन्ना ५:३९.) अधिकाधिक मानवीय प्रथा एवं संस्था नियमावली परित्याग करके प्रचार एवं प्रसार नहीं किया जाता तब तक जन समाज को सुख शान्ति और आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता है। मानव जाति शान्ति का मार्ग जानते ही नहीं और न तो उनके व्यवहार में न्याय है; उनके पथ टेढ़े हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा (यशायाह ५९:८.)। मनुष्य का ज्ञानरहित रहना अच्छा नहीं, (नीति वचन १९:२.)। आध्यात्मिक ज्ञान इस जगत की विज्ञान मे श्रेष्ठ है। वाह्यज्ञान आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है, और जहाँ अंधकार है; वहाँ परमेश्वर का 'दर्शन' अथवा 'ज्ञान' प्राप्त नहीं हो सकता है। मानव के अज्ञानता के कारण अनेक प्रकार का धर्मोपर्जन किया जाता है। जिससे वर्तमान अशान्त और भयाक्रन्त विश्व को सच्ची शान्ति एवं निर्भयता प्रदान करनेवाला जीवनदायक और आत्मा भी है, और यह पवित्र शास्त्र ईश्वर के प्रेरणा से रचा गया है। उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक हैं। धर्म निहित विज्ञान से प्रकाशदीत होती है किन्तु विनाश का साधन भी है। इस देश में सच्चाई, करुणा और न तो कुछ परमेश्वर का ज्ञान ही है (होशे ४:१.)! मेरे ज्ञान न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है (आयत ६)। जिससे आनन्दमय जीवन का ज्ञान प्रदान किया जाता है, तो आओ हम ज्ञान ढूँढ़ें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यत्न भी करें; (होशे ६:३) क्योंकि ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है (मत्ती ११:१९)। ताकि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो (लूका २:१४)।

—:o:—

Gossner Mission

"भक्त की प्रार्थना"

हे, हमारे प्रभु ! प्रणाम करता तुझको,
ठहरा पुजारी आपका, धन दे मुझको,
धन दे मुझको, कुछ तो दया कीजिये,
लड्डुओं को चख, 'कोकाकोल' पीजिये ॥१॥

हे हमारे प्रभु ! भक्त बहुत हैं आपके,
गटागट चढ़ा जाते, गिलास भरा पापके,
भक्त सबके बड़ा ठहरा, करता हूँ कामना,
आज कहीं न देवी से, करना पड़े सामना । २॥

देख हालत मेरी, कुछ तो दया लाईये,
मुद्रा को थैलियाँ हो, झट भर लाईये,
पैसे नहीं पास में, देवी जी ताड़ेंगी,
घर पहुचूँ, बेलन की ऐसे मार मारेगी ॥३॥

देवी जी आज जाएंगी, 'दुनिया की सैर',
साड़ी फॉस्ट क्लास पहनी, नहीं ऐर गैर,
बैठी होंगी देवी जी, लगाए सुबह से आस
कुछ दया कीजिये, फिल्म लगी है खास ॥४॥

बहुत विलम्ब ! इन्तजार करूँ न आपका,
मेरे बचनों से, नाश हो आप का,
भक्त जनों की आप, पूर्ण करते आशा,
यहाँ तो कुछ और, लगा दिया तमाशा ॥५॥

आँखों से मेरी अब, दफा हो जाइए,
मेरे पवित्र घर में, पैर आप न लाइए,
मैं तो मांग लूँगा, नोट थोड़े यारों से,
बच जाऊँगा आज मैं, देवी जी की मारों से ॥६॥

"SUSHIL" IInd B. Sc.

भजन

जय ध्वनि, शुभध्वनि, प्रतिध्वनि हो
यीशु की जय जय जग में कुशल हो
मसीह का होशाना—२ जहाँ पे सदा
कोरस—मसीह का होशाना—२ जहाँ पे सदा
पिता को हलेलूयाह—२ करो निरंतर
पिता को हलेलूयाह—२ करो निरंतर
करो निरंतर, करो निरंतर।

१ क्योंकि प्यारा मसीह,
प्यारे मसीहियों को बचन दिया है
कि मैं फिर से आनेवाला हूँ
कि जो कोई मेरा प्रतिक्षा करे
सो मृत्यु को न देखेगा
जय ध्वनि.........

२ क्योंकि प्यारा पिता,
प्यारे विश्वासियों को वचन दिया है
कि जो मसीह (पुत्र) पर विश्वास करे
और विश्वास पर अटल रहे
सो अनंत जीवन पायेगा
जय ध्वनि.........

३ धन्य पिता का पूत
पापियों के वास्ते पाप क्षमा निमित्त
कलवरी पर अपने को किया बलिदान
जिस्ते सारे पापी पाप से फिर कर
पाक हो, जीवन के भागी हों
जय ध्वनि.........

आई० डी० कुजूर
डिबरुगढ़

गोस्सनर थियोलोजिकल कालेज

१९७३ ई० में निम्नांकित विद्यार्थियों की पढ़ाई समाप्त हुई है

१ निन्यानन्द बोरगोयारी — एन० ई० एल सी।
२ सामुएल खाखा — एम० पी० एल सी।
३ अल्फ्रेद डांग — दक्षिणी पूर्वी अंचल
४ खीस्तोदास जोजो — उड़िसा अंचल
५ नेम्हास एक्का — उत्तरी पश्चिमी अंचल
६ निर्दोस लकड़ा — ,, ,, ,,
७ सामुएल मुन्डु — दक्षिणी पूर्वी अंचल
८ थियोदोर एक्का — उत्तरी पश्चिमी अंचल

१९७४ में निम्नांकित विद्यार्थी पढ़ाई समाप्त करेंगे—

१ असीम बेलस बड़ा — उत्तरी पश्चिमी अंचल
२ सुशील कुमार होरो — दक्षिणी पूर्वी अंचल
३ योहन मिंज — ,, ,, ,,
४ याकूब सोरेंग — मध्य अचल
५ प्रभुदान सामुएल बुढ़ — उड़िसा अंचल
६ सामसोन कन्डुलना — दक्षिणी पूर्वी अंचल
७ पैकस खेस्स — उत्तरी पश्चिमी अंचल
८ सुड़ा सागेन इलियास तोपनो —दक्षिणी पूर्वी अचल
९ सुलेमान लुगुन — ,, ,, ,,
१० विनोद नाग — उत्तरी पश्चिमी अंचल
११ जोलेन तोपनो — दक्षिणी पूर्वी अंचल
१२ अधीन कन्डुलना — ,, ,, ,,
१३ आनन्द मसीह मिंज — उत्तरी पश्चिमी अंचल
१४ करीम युसुफ बनोबास — एम०पी०ई०एल०सी
१५ भी० पी० मेष्मुज — ,, ,, ,,
१६ एस के० घोष — ,, ,, ,,
१७ नेलसन सनातन मुर्मु — उत्तरी भारत की कलीसिया

१९७५ में निम्नलिखित विद्यार्थियों की पढ़ाई समाप्त होगी :—

१ चंचल कुमार नाथ — एम० पी० एल० सी
२ खीस्तोराय तीगा — उत्तरी पश्चिमी अंचल
३ गोस्सनर केरकेट्टा — मध्य अंचल
४ जयमसीह सुरीन — दक्षिणी पूर्वी अंचल
५ मनमसीह एक्का — दक्षिणी पूर्वी अंचल
६ निमिया सन्डी गुड़िया — असम अंचल
७ ओनोन डुंगडुंग — उत्तरी पश्चिमी अंचल
८ सुदर्शन डांग — दक्षिणी पूर्वी अंचल

१९७६ में निम्नांकित विद्यार्थी पढ़ाई समाप्त करेंगे :—

१ सबन तिर्की — उड़िसा अंचल
२ रिमोन सुरिन — दक्षिणी पूर्वी अंचल
३ विश्वास अब्रहाम सुरीन — ,, ,, ,,
४ फिलमोन टोप्पो — उत्तरी पश्चिमी अंचल
५ नरेन्द्रनाथ कन्डुलना — उड़िसा अंचल
६ हरमान टोप्पो — एम पी० ई० एल सी
७ अनील कुमार मेथ्यु — ,, ,, ,, ,, ,,
८ जवियर फ्रान्सिस — ,, ,, ,, ,, ,,
९ खीस्तोफर अनिल कुमार— ,, ,, ,, ,, ,,
१० थोमस विश्वास — ,, , ,, ,, ,,
११ जोर्ज भर्गीस — मार थोमा कलीसिया केराला

१९७३ में निम्नांकित नये विद्यार्थियों की बहाली हुई है :—

ग्राम —पी० ओ०— जिला

१ रोयन पतरस मुन्डु — भोबरा —कुसुमडेगी— सुन्दरगढ़
२ आनन्द सेबेयान
हेम्ब्रोम — रानीबांध—राजगांगपुर—सुन्दरगढ़
३ सिलास डुंगडुंग — जमादोहर — गर्जा — रांची
४ सीरील हेम्ब्रोम
—करांनजिया—करांजिया—सिंहभूम

Gossner Mission

५ ताईरस एक्का — अमगांव — अमगांव – रांची
६ विश्वास जोगेन्द्रा बोरून—
ग्राम बागमुन्डी पी०ओ बागमुन्डी जिला पुरुलिया
७ योहन कन्डुलना—
ग्राम कुसुमटोली पी०ओ० लोम्बोई जिला रांची
८ डेविड दास— मध्य प्रदेश लूथेरान कलीसिया
९ इम्मानुएल पंचु " " " "
१० नथानियेल अब्राहाम " " " "
११ समसुन दयादान " " " "

विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि २६-६-७३ शाम तक में रांची पहुंच जावें। नये सत्र का आरम्भ २६-६-७३ से है।

प्राचार्य

तन मन धन से धन्यवाद देने में प्रकाशमान हो

उठ मसीही हो प्रकाशमान,
धन्यवाद देने में हो प्रकाशमान।
इस्राएल का पतन हो गया,
मन हो गया जब अधन्यवादी।
तुम मसीही जरा इसे सोचो,
अपने मन में दे पूरा ध्यान॥
बपतिस्मा में नया जीवन,
प्रभु ने तुझे दी यह जान।
इसी लिये उसकी ही सेवा में,
तन-मन-धन से हो प्रकाशमान॥
यह तन जो है ईश्वर की देन,
यह मन भी है उसी की देन।
धन भी है यहोवा ही की देन,
इसी लिये इनको कर दे तू दान।
यह तेरा मन है बड़ा चंचल,
जो इसे खोए रहेगा हाथ मल।
मन को पवित्रता से शुद्ध कर,
उठ मसीही हो प्रकाशमान॥
पार्थिव धन का तू है भंडारी,
यहोवा ने तुझे नियुक्त किया जान।
कलीशा निमित्त उस धन से धन्यवाद देने,
उठ मसीही हो प्रकाशमान॥

डी० एम० खेस्स
बानो

समाचार देश-विदेश

समाचार:—

१, दक्षिणी-पूर्वी अंचल युवा संघ द्वारा आयोजित सम्मेलन मरचा में तिथि २२ एवं २३ मई को हुआ। सम्मेलन शानदार रहा। लगभग अढ़ाई हजार लोग इक्ट्ठे थे। मुख्य विषय "उठ प्रकाशमान हो" था जिस पर प्रमुख अध्यक्ष पादरी जुनुल तोपनो, डा० मरसलन बागे सिरामपुर एवं पादरी निकोदिम भुइयां अध्यक्ष द० पू० अंचल द्वारा प्रकाशन दिया गया। भाई-बहनों ने इस निमित्त अच्छा इन्तजाम किया था।

२, २४ वीं मई १९७३ को टकरमा इलाका का १०० वर्ष पूरा हुआ। शत् वर्षीय जुबिली बड़े धूम धाम से मनाया गया। लगभग दस हजार लोग इस निमित्त परमेश्वर का धन्यबाद करने के लिए आये हुए थे। जुबिली का उद्‌घाटन पादरी निकोदिम भुईयां अध्यक्ष द० पू० अंचल द्वारा, जुबिली स्मरण पत्थर का संस्कार पादरी जुनुल तोपनो प्रमुख अध्यक्ष तथा गिर्जे में उपदेश डा० मरसलन बागे द्वारा दिया गया। पवित्र बियारी में भी बहुत लोग सम्भागी हुए। दूसरी बेले के कार्यक्रम में विशेष वक्ता बिशप

Gossner Mission

दिलबर हस, श्री निरल एनेम होरो, प्रमुख अध्यक्ष, अध्यक्ष द० पू० अंचल, श्रीमती एनोला एक्का रहे जिन्होंने अपने भाषण द्वारा परमेश्वर के महान कार्यों के निमित्त उसे धन्यवाद दिया तथा लोगों को परमेश्वर की मंडली में अधिक परिश्रम के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहन दिया। इस जुबिली सभा में भाग लेने वालों को बड़ा आनन्द मिला, सचमुच लोग आशीषित किये हैं। इस अवसर पर उन्होंने एक इतिहास की पुस्तिका भी प्रकाशित किया है। संवाद पाद्री मार्टिन सिवेर्ग, डाइरेक्टर गोस्सनर मिश्न बेर्लिन, डाक्टर स्टिकलिट्स, डा० ग्रोटहाऊस, पाद्री बरूवा, प्रोफेसर पी० सी० होरो पटना, ऐसे महान व्यक्तियों से मिला।

३, पानीसानी इलाका युवा संघ द्वारा इलाका युवा संघ सम्मेलन का आयोजन ता०२४ और २५ मई १९७३ को पकरटोली में किया गया था लगभग ४०० लोग उपस्थित थे। श्री जस्टिन एक्का कंडिदत अलबर्ट मिंज, रांची, प्रमुख अध्यक्ष जी० ई० एल० चर्च रांची विशेष रीति से निमंत्रित थे जिन्होंने अपने उपदेशों द्वारा लोगों को उत्साहित किया।

४, ता० २९ एवं ३० मई को गोविन्दपूर इलाका युवा संघ द्वारा गोपालपूर में युवा संघ सम्मेलन का आयोजन किया गया था। लगभग डेढ़ हजार लोगों की जमायत वहां थी। उनके द्वारा कालजे गांव में साक्षी देने का कार्यक्रम बनाया गया था जहां सम्मेलन के भाई बहन भजन करते आये, वहां पाद्री जुनुल तोपनो प्रमुख अध्यक्ष जी० ई० एल० चर्च रांची, डा० मरसलन बागे सिरामपूर, पाद्री सन्तोष तोपनो कचनपूर द्वारा गवाही के उपदेश दिये गए। सम्मेलन के कार्यक्रम भी अच्छे थे। उपर्युक्त व्यक्तियों तथा पाद्री एन० भुईयां अध्यक्ष द० पू० अंचल, पाद्री जुनस सोय हेडमास्टर प्रचारक ट्रेनिंग स्कूल एवं पाद्री लुकस तोपनो इलाका चेयरमेन गोविन्दपूर द्वारा सम्मेलन में भिन्न-भिन्न बचनों पर प्रकाशन दिया गया। प्रश्नोतर भी हुए जिसका सही जवाब भी दिया गया।

५, मई महीने में प्रमुख अध्यक्ष अपने दौरे में व्यस्त थे। उक्त सम्मेलनों को छोड़ वे विशेष तौर से उड़िसा अंचल दौरा किये। उनका दौरा राजगागपूर, सुन्दरगढ़, रौरकेला तथा बन्डामुन्डा नामक स्थानों में हुआ। प्रमुख अध्यक्ष होने के बाद उड़िसा के लिए यह पहला दौरा था।

● जेनेवा — "कलीसिया" की अपनी अपनी समझ पर लुथेरन और रोमन कथोलिक महान लोगों की समिलित बैठक मार्च २१-२४ को हुई जिसमें मालता के रिपोर्ट पर ध्यान करते हुए कहा गया – कलीसिया की नवीकरण की आशा है।

● पेरिस – जर्मनी म्युनिक का लुथेरन विशप हेरमन दिएत्सफेलबिंगर-फ्रांस के पेरिस की मडलियों को देखने गये तथा मडली के अगुओं और पाद्रियों से बैठकियां किये एवं उनको आत्मिक जागृति दिये।

● हंगारी — अप्रेल २४ को हंगारी मंडली ने ४५० वर्षवीं-महोत्सव बुडावर में मनाया। विशप जोल्तन कल्दी सुन्दर उपदेश दिये। पुराने विशप एरनो ओटलिक ने ४५० वर्षीय यात्रा पर सुन्दर उपदेश दिया। देश विदेश से प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस अवसर पर रीगा के अर्च विशप जेनिस मतुलिस को ओ जर्मन फेडरल रिपबलिक के डा० हेनफ्रीद क्रूगर को डाक्टर का पदाभिषेक किया गया।

● पेरिस — मलागासा की एक स्त्री (नेनी लाभ=नानी) पेरिस आकर चंगाई का काम की (चंगाई के लिये यह सुख्यात है) अपनी यात्रा अमेरिका और नोरवे के लिये भी बनायी है।

प्रचारकों का पेनसन

जून महीना के घरबन्धु में प्रकाशित किया गया है कि अब प्रचारकों का भी पेनसन फण्ड खोलने का नियम बनाया जा रहा है ताकि उनको भी अवकाश ग्रहण करने पर पेनसन दिया जा सके। इसका नियम बनाने के सिलसिले में निम्न बातें आवश्यक हैं जो इलाका चेयरमेनों द्वारा अवश्य मिलना चाहिये, अर्थात् :—

Gossner Mission

१· प्रचारक का नाम।
२· प्रचारक की जन्म तिथि।
३. प्रचारक की योग्यता।
४· प्रचारक की नियुक्ति तिथि।
५· प्रचारक ,, ,, ,, का दृढ़ाव तिथि।
६· १-१-७३ को प्रचारक का बेतन।
७· प्रचारक का गृह पता (Home address)

उपरोक्त बातों के लिये फार्म बना कर सभी इलाका चेयरमेनों के पास २५-४-७३ को भेजा गया है किन्तु अब तक किसी इलाका चेयरमेन से उपरोक्त फार्म नहीं लौटाया गया है, जब कि २०-५-७३ तक में लौटाने कहा गया था। मुझे ऐसा दीखता है कि इलाका चेयरमेनों में इस विषय पर कोई दिलचस्पी नहीं है।

मैं फिर सभी इलाका चेयरमेनों से अनुरोध करता हूँ कि फार्म को भर कर जल्द भेजने की कृपा करें। फार्म भरने में ध्यान दें कि सिर्फ उन्ही प्रचारकों का नाम हो जिनका अंचल या इलाका में प्रोभिडेण्ट फण्ड खोला गया है। कोशिश करें कि वह फार्म मुझे २४-६-७३ शाम तक में मिल जाय।

पाद्री बिमल मिंज
जी· ई· एल· चर्च, राँची।

"बंदरों की कहानी"

एक लाखपति अंग्रेज को बन्दरों से बड़ा प्रेम था। उसने उनके लिये पक्का-पुख्ता, सुन्दर मकान बनवाया और उनकी देखभाल के लिये दर्जनों नौकर रखे थे। उनके लिये बाजार से उत्तम से उत्तम फल खरीदे जाते थे और हप्ते में तीन दिन उन्हें नहलाने-धुलाने के लिये निश्चित था। अपने प्रति, साहब का यह निराला प्रेम ताड़ कर बन्दर बड़े शरारती और निडर हो गये थे। वे नौकरों के कपड़े खींचते, पैरों में नाखून गड़ाते, तथा उनके कंधों पर बैठ कर सिर के बाल नोचते थे। ओफ! बेचारे नौकर-चाकर चूँ तक नहीं करते, या अगर कोई किया तो साहब उन्हें नौकरी से छुट्टी दे देता था।

दाऊद और उसके साथी तो बन्दरों की हरकत और अत्याचार से तबाह हो कर गहरी स्वांस ले रहे थे। एक बार साहब को इंगलैंड जाना पड़ा। उसने अपने सरदार "दाऊद" को बन्दरों की देख-भाल के लिये पूरी ताकीद कर दी और कहा कि अगर बन्दरों की देख-भाल की कमी हुई तो लौटने पर सबको छुट्टी दे दूंगा। इतना कह कर वह इंगलैंड चला गया। साहब के जाते ही नौकरों ने काफी बाद-बिवाद के बाद बन्दरों को ठीक रास्ते में लाने का उपाय ढूंढ निकाला। एक दिन "दाऊद" टोकरी में भोजन और फल लिये हाथ में एक लाठी धरे बन्दरों के कमरे में जा घुसा। घुसते ही बन्दरों ने अपना हरकत शुरू कर दी। दाऊद ने लाठी चलाना शुरू किया तो बन्दरों में एक भारी भगदड़ तूफान मची और उस कमरे में एक भी बन्दर न रहा। दूर से सब बन्दर अनोखे ढंग से देख कर भोजन के पास आने का साहस एक भी न किया। दाऊद के चले जाने के बाद ही बन्दर धीरे-धीरे जुट कर भोजन खाये।

तीन चार दिनों के बाद दाऊद ने लाठी चलाने के पहिले अपने ही सीने पर बड़ा सा "क्रूश" का चिन्ह बनाया जो साहब का धार्मिक चिन्ह था। लेकिन बन्दरों को इसकी क्या चिंता, वे पहले ही की तरह उसकी ओर लपके कि दाऊद ने जोरों से लाठी चलाना शुरू किया। अब बन्दरों की हालत खराब हो गई। अब से सब बन्दर उसको क्रूश का निशाना बनाते देख फौरन भाग खड़े हो जाते, तब ही से दाऊद और उसके साथियों को बन्दरों की हरकतों से फुरसत मिली, क्योंकि अब सब बन्दरों की सही दुरुस्त हो चुकी। अब दाऊद तथा उसके साथी आराम की जीवन काटने लगे। कहाँ का बन्दरों की देख-रेख या उन्हें नहलाना-धुलाना, खिलाना, पिलाना। इस तरह साहब का फार्म बिलकुल नष्ट हो गया। सब बन्दर गंदे और कमजोर दिखने लगे।

इंगलैंड से अचानक साहब वापस लौट आये और बन्दरों को दुबला-पतला और गंदा देख कर नौकरों पर

Gossner Mission

बहुत बिगड़े और "दाऊद की दाढ़ी उखाड़ने ही जा रहा था कि वह साहब के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगा, हुजूर आप मुझे जो भी करें, पर पहले मेरी एक बात तो सुन लें। ये बन्दर नहीं शैतान हैं। साहब भरे क्रोध से, सिंह की तरह गरज पड़ा "— तुम झूठ बोलते हो। इसका सबूत दो — नहीं तो गोली मार दूंगा। दाऊद ने धीमे स्वर से कहा — आईये, और अपने ही आंखों से पूरी सबूत देख लीजिये। उसने उत्तम फलों से टोकरी भरी और उसे लेकर कमरे के भीतर गया। बन्दर धीरे-धीरे टोकरी के निकट आने लगे और एक-दो ने हाथ डाला ही था कि दाऊद ने 'टोकरी पर बड़ा-सा क्रूश का चिन्ह बनाया। क्रूश का चिन्ह बनाना था कि सब बन्दर देखते ही देखते चंपत हो गये। यह देख कर "साहब गंभीर चिन्ता में पड़े कि सचमुच ये तो" शैतान हैं। अब साहब सब नौकरों को प्रेम से बुलाकर इनाम के साथ-साथ दूसरा-दूसरा काम दिया और सब बन्दरों को जंगल में छुड़वा दिया।

नोट :- यह वास्तव में विचारों के साहचर्य का एक उदाहरण है। यही हमारे छोटे-छोटे अबोध बच्चों में भी होता है। उनको सीधी राह पर चलाने का भार उनके बड़े-बूढ़ों तथा आत्मिक जीवन की देखरेख के लिये चुने गये 'प्रचारकों पादियों की है। भले कार्य्यों का संबन्ध ऐसे विचारों से करें जिनसे बच्चों को प्रेरणा और साहस मिले; और बुरे कार्य्यों और बुरी आदतों का संबन्ध ऐसे विचारों से जोड़, जो उन्हें डर या हानि के भय से ऐसे कार्य्यों से दूर भगाए। इसके लिए हर एक गाँव-गाँव में, मडलियों में, "सन्डे स्कूल" स्थापित करें और आने वाली पीढ़ी के लिये "मसीही जवान-युवती पैदा कर मसीही "कलीसिया फार्म" को सुचारू रूप से चलाने में प्रभु की आज्ञा को पूरा कर सकें। "जड़ाकुदार इलाका के कई मन्डलियों में सन्डे-स्कूल नहीं हैं। इलाका तथा पेरिश के अधिकारी गण इस पर ध्यान रखें। — जैसे पहिली आज्ञा से दसवीं आज्ञा तक के "मूल" अर्थ में (इसका क्या अर्थ है ? — लिखा है — हम ईश्वर का भय और प्रेम रखें। इसको प्रत्येक बच्चों के हृदय में बीज बोवें।

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा (३१वीं माई तक) मिला।

1. Youth Fellowship Centre.
2. Shasibhusan Khess
3. Cat. Augustus Toppo
4. Rev. Matias Bhengra I
5. Rev. S. Bakhla
6. Mr. Amus Guria
7. Rev. S. Kujur
8. Rev. Samuel Barla
9. Cat. Mansukh Samad
10. ,, Benjamin Lakra
11. ,, Ruben Toppo
12. Mr. Jusaph Kongari
13. ,, Benjamin Topno
14. ,, Emil Tirkey
15. Mr. B. Lakra
16. ,, M. Indwar
17. ,, Benjamin Topno Kurmuring
18. Rev. Jete Suleman Soy
19. Mr. Santosh Soy
20. ,, A. M. Lugun
21. 4245031 Sep. Abraham Kispotta
22. Mr. Khalkho H.
23. ,, A Kullu
24. ,, Lucas Topno
25. Cat. George Kerketta
26. Prof. S. Kerketa
27. Mrs. Corolina Tirkey

Gossner Mission

क्रान्ति

प्रो० पी० सी० होरो का संवाद न केवल प्रशंसनीय है बल्कि समस्त गोस्नर लूथेरान कलीसिया के लिये अनुकरणीय है। अत: अभी भी समय है कि हम अपनी गलतियों को सुधारते हुए नया कदम लें। समस्त लूथेरान गोस्नर कलीसिया के अन्य इलाका तथा अंचलों के अधिकारी वर्ग का कर्त्तव्य है कि शीघ्र अतिशीघ्र हजारीबाग इलाका के सुन्दर नमूने को अपना कर कार्यरूप में परिणत करें अन्यथा गोस्सनर कलीसिया, का भविष्य अंधकारमय होगी।

जहाँ ईश्वर का डर भय होता है वहाँ ईश्वर प्रभु परमेश्वर का पवित्र आत्मा काम करता है। अपने लोगों को बुद्धि ज्ञान सोच समझ देता उनकी अगुवाई करता और अपनी पवित्र कलीसिया की रक्षा रखवाली करता है। होरो साहब के संवाद में हम इसका जीवता प्रमाण पाते हैं। प्रभु की वाणी है "पहले तुम परमेश्वर के धर्म और राज्य की खोज करो तो वे सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जायगी।" मत्ती ६:३३। क्या प्रभु की यह वाणी अथवा आदेश झूठा है? सच देखा जाए तो समस्त गोस्नर कलीसिया में यही देखने में आ रहा है कि पहले पेठ पूजा उसके बाद ईश्वर पूजा। यही मूल जड़ है जिससे समस्त लूथेरान कलीसिया पतन की ओर जा रही है। रूपया बटोरने के ख्याल से खीष्ट की पवित्र जमीन को गैरमसीहियों के हाथ लीज में देकर अपवित्र किया जा रहा है। क्या जलन रखनेवाला पिता परमेश्वर इसमें हमें आशीष देगा?

मैं होरो साहब के उस कथन का बड़े जोर से समर्थन करता हूँ और इलाका अंचलों से यही अनुरोध करता हूँ कि वही नियम को हर जगह व्यवहार में लावें"

[शेष अगले अंक पर]

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO ; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—

School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष—४३ राँची, जुला[illegible] १९७३, संख्या नं०—७

EINGEGANGEN
25.
Erledigt ....

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ पी॰ टी॰ १५.

वार्षिक मूल्य ४ रु॰

वर्ष — ६३ | रांची, अगस्त १९७३ | संख्या न० — ८

सो यदि पुत्र तुम्हे स्वतंत्र करेगा,
तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

यूहन्ना ८ : ३६

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — — —	३
उपदेश की तैयारी — — —	४
कुम्हार-दर्जी-मोची — — —	६
सूचना — — —	७
प्रचारकों के लिये शुभ-सन्देश — —	८
जर्मन जनवादी गणतंत्र (पूर्वी जर्मनी) —	८
टकरमा इलाका जुबिली उत्सव —	९
कलीसियाई समाचार — — —	११
समाचार देश विदेश — — —	१३
विशेष सूचना — — —	१६
मसीही युवक एवं युवतियां — —	१४
आप का ग्राहक चन्दा — — —	१४
अपमान — — —	१७
Advertisement-Tirkee Enterprises—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रुपये है।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

अगस्त पन्द्रह १९४७ को भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता पाने के निमित्त उन दिनों के अगुवों को बहुत परिश्रम करना पड़ा। कभी भूख और प्यास सहने पड़े, जेल में डाले गये परन्तु उन्हों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त अन्दोलन करना न छोड़ा। अहिंसा परमोधर्मा निशान रख कर इस कठिन कार्य को आगे बढ़ाया, सारे देश में इसी बात की पुकार थी। समय ऐसा आया, देश को आजादी मिली। प्रसन्नता से लोग झूम उठे। परमात्मा को धन्यवाद होवे कि ऐसे सुन्दर देश में उन्होंने हमें भी रखा है जहाँ आजादी के साथ हम रहते, अपनी इच्छानुसार जिस धर्म को मानना चाहते, मानते तथा उसका प्रचार भी करते हैं। इतना होते हुए भी हमारे बीच अबतक समानता नहीं है। ऊंच नीच, धनी गरीब, अज्ञानता और ज्ञान के बीच लोगों में बहुत बड़ा अन्तर है। कुछ लोग खाने भर के लिये लाजर की नाई मुंहताज हैं तो कुछ लोग धनवान मनुष्य के ऐसे बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनते और दिन-दिन सुख बिलास और धूमधाम के साथ रहते हैं। शिक्षा दीक्षा की बातों को लेकर कुछ लोग बहुत आगे बढ़ गये हैं और कुछ लोग अभी भी गरीबी के कारण अपने बच्चों को इस ओर बिलकुल नहीं बढ़ा पाये हैं। मेरे देखने में कमी इस बात की है कि लोगों में दिखावे का धर्म है, सच्चे तौर से धर्म मानने वालों की कमी है। यही वजह है कि सभी भाई-बहन हैं यह समझ नहीं इसलिये मदद दे सकनेहारा भी एक दूसरे को मदद नहीं पहुंचाता। देश के अगुवों को चाहिये कि देश में धर्म की शिक्षा, नैतिक शिक्षा देने की व्यवस्था करें ताकि हम पतन की ओर जाने से बचें।

हमारी कलीसिया भी आत्मशासित कलीसिया है। हमारे बीच विदेशी शासन नहीं है। हम स्वतंत्र किये गये हैं। यह तो बड़े प्रसन्नता की बात है, परन्तु इतना होते हुए भी वही व्यक्ति यीशु मसीह में दी गई शान्ति और आनन्द को अनुभव कर सकता है जो यह निश्चयता के साथ जानता है कि यीशु ने हमें शैतान, संसार और शरीर की कुअभिलाषा रूपी (पाप की दासत्व) से स्वतंत्र किया है। कभी-कभी हम तो स्वयम जो चाहते सो करते हैं, हर हमेशे अपने बिचार को सभों के बिचार से भला मानते हैं। पाप की गुलामी से स्वतंत्रता पाया हुआ व्यक्ति सभों का आदर करता, एक दूसरे को भाई-बहन कर जानता, एक दूसरे पर अनर्थ दोष न लगाता, एक दूसरे को सम्भालने की चेष्टा करता, भ्रातृय प्रेम के साथ पेश आता। परमेश्वर के बचन में लिखा है — जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता १ ला योहन ४:२० : इसलिये कलीसिया होकर इस उतरदायित्व को यदि हम नहीं समझ पाये हैं तो सम्भवत: मसीहियत को भी नहीं समझे हैं अर्थात अपने पापों में बने हुए हैं, पाप की दासत्व में रह कर जीवन बिता रहे हैं। भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ, कलीसिया को भी स्वतंत्रता मिली परन्तु सच्ची स्वतंत्रता जो यीशु मसीह में है, इसका अनुभव हमें नहीं हुआ है। धर्म के निकट रह कर भी धर्म से कोसों दूर हैं। देश की आजादी से हमें जगतीय आनन्द मिलता है, कलीसिया की आजादी भी हमें तभी स्वर्गीय आनन्द दे सकती है जब हम यह विश्वास करेंगे "यदि पुत्र (यीशु मसीह) तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे। यूहन्ना ८:३६।

पाद्री जे० तोपोनो।

Gossner Mission

उपदेश की तैय्यारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे ७ वां एतवार

मरकुस ८ : १-६

वचन में दो विशेष बातें हैं। यीशु भीड़ के लिए तरस खाता है। न केवल वह तरस प्रगट करता परन्तु शिष्यों के पास एक ललकार रखता है।

— "यीशु का तरस और ललकार" —

१· यीशु का तरस :— यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूँ, तो मार्ग में थक कर रह जाएगे क्यों कि इन में से कोई कोई दूर से आए हैं। (३) यीशु समस्त मानव जाति के लिये तरस खाता है। वह दया करता है न केवल हमें रोटी देता है परन्तु हमारी प्रत्येक आवश्यकता पर ध्यान करता है। वह स्वर्ग से आया कि हमारा उद्धार हो।

२· यीशु की ललकार :— यीशु की दया ललकार में बदल जाती है। "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? यीशु की ललकार का यही संकेत है कि :— "तुम को सहायता करना है। सहायता का भार दूसरों पर न डालो—क्योंकि तुम को सहायता करना है। थोड़ी एवं अधिक वस्तु से तुम को सहायता का काम करना है। भोजन वस्तु के अभाव में भी तुम को सहायता देनी है। सहायता देना असम्भव है—मत कहो! तुम सहायता कर सकते हो और तुम्हें सहायता देना है।

पूरीम यहुदियों का विशेष त्योहार है। यह त्योहार १४ वीं मार्च को माना जाता है। त्योहार में यहुदी लोग अपने छुटकारा के विषय स्मरण करते हैं। जैसा कि एस्तेर की पुस्तक में वर्णन है। पूरीम पर्व्व यहुदियों के लिये दान देने का अवसर है। दरिद्र से दरिद्र यहुदी पूरीम पर्व्व के अवसर पर अपने से अधिक दरिद्र यहुदी को खोजता और सहायता देता है।

यीशु साफ साफ कहता है कि सहायता के लिये अवसर न ढूंढ़ों परन्तु सहायता के लिये तैय्यार रहो।

यीशु के तरस एवं ललकार के प्रकाश में हम देखें कि हम और हमारी कलीसिया कहाँ पर है? हम सहायता के लिये कितनी दूर तक तैय्यार हैं। भारतवर्ष आज सहायता मांग रही है। लोग रोटी की आवश्यकता में हैं। हम कहाँ तक रोटी देने के लिये तैय्यार हैं।

×

त्रिनितातिस के पीछे ८ वां एतवार

मत्ती ७ : १३-२३

मनुष्य के जीवन में चयन का बेला बहुत बार आता है। सकेत फाटक एवं चौड़ा फाटक के बीच चयन करना है। सत्य एवं झूठे नबियों के विषय भी चयन करना है।

१· कठिन मार्ग एवं सरल मार्ग में भिन्नता है। जीवन का मार्ग कठिन है। इसमें क्रूश है यीशु के जीवन को देखिये। पौलुस के जीवन को भी देखिये।

२· अनुशासित एवं मनमाना जीवन में भी भिन्नता है। अनुशासित जन कठिन मार्ग को चुनता है। मनमाना मनुष्य सरल मार्ग को चुनता है। मनमाना मनुष्य चौड़ा मार्ग चुनता एवं विनाश की ओर कदम बढ़ाता है।

३· झूठे एवं सत्य नबी में भिन्नता है। झूठे नबियों के विषय देखिये—यिर्म· ६ : १४ ; ८ : ११; यहेज २२ : २७ ; सपन्याह ३ : ३ ; क्रिया २० : २६ ; मत्ती १० : १६ ; यूहन्ना १० : १२ ;

४· झूठे एवं सत्य नबी के कार्य्यों में भिन्नता है :— इस की गवाही कलीसिया का इतिहास है। धर्म्म शास्त्र में भी झूठे एवं सत्य नबियों का वर्णन है।

Gossner Mission

हम को चुनने का मौका दिया गया है। हम चुन लेवें कि किस ओर जाना है। चयन के विषय देखिये—व्यवस्था विवरण ३० : १५-२० ; यहोशु २४ : १५ ; यिर्म· २१ : ८।

× ×

त्रिनितातिस के पीछे ६ वां एतवार

लूका १६ : १-६

इस दृष्टान्त में बतलाया जाता है कि पलस्तीन देश में अविश्वस्त भंडारियों की कमी न थी। धनवान लोगों का देश के बाहर आना जाना लगा हुआ था। कर मुद्रा में केवल नहीं परन्तु बहुत बार अन्न में चुकाया जाता था। इस दृष्टान्त द्वारा निम्नांकित उपदेश दिया जाता है।

उपदेश व शिक्षा का विषय

१· सत्य मसीही धर्म्म वही है जहां लोग दुनिया दारी विषयों से अधिक समय धर्म्म के लिये देते हैं। (८) संसार के लोग धन और आराम के लिये अधिक समय देते हैं। मसीहियों को धन और आराम से अधिक समय मसीह के लिये देना है। क्योंकि मसीह भविष्य में अनन्त विश्राम देने वाला है। मसीही लोगों को मसीह के विषय की बातों में अधिक चतुर हो जाना है।

२. अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो (६) : यीशु कहने चाहता है कि दुनिया दारी सम्पत्ति से अपने लिये मित्र बना लो अर्थात लोगों की भलाई करो। यहुदी नबियों का कथन था कि—'इस दुनिया में धनी लोग दरिद्रों की सहायता करते हैं परन्तु परलोक में दरिद्र लोग धनियों की सहायता करते हैं।

३. जो थोड़े में सच्चा है वह बहुत में भी सच्चा है। (१०+११) . जो कोई छोटे काम में विश्वस्त है वह बड़े बड़े कार्य्यों की योग्यता रखता है। जो छोटे से छोटा पदवी में काम कर सकता है वह बड़े पद की योग्यता रखता है। दुनिया की वस्तुएं हमारी नहीं हैं। हम इन वस्तुओं पर भंडारी ठहराये गये हैं। हमारी मृत्यु के उपरान्त ये वस्तुएं हमारे पीछे छुट जाती हैं। परन्तु स्वर्ग की वस्तुएं हमारे साथ स्वर्ग में रह जाती हैं। इसलिये हम अपने भंडारीपन में विश्वस्त रहें।

यह दृष्टान्त हमारे लिये एक ललकार है। हम इस ललकार पर ध्यान देवें।

× ×

त्रिनितातिस के पीछे १० वां एतवार

लूका १९:४१-४८

आज के वचन से प्रगट है कि यीशु अपने पृथ्वी पर के जीवन की यात्रा समाप्त करने वाला था। वह क्रूश की मृत्यु के पहले भी उपदेश देना और लोगों को चितौनी देना नही छोड़ता है। हम उसके पवित्र क्रोध दया एवं साहस को भली भांति देख सकते हैं।

"यीशु का तरस - क्रोध - एवं साहस"

१ यीशु का तरस :— यीरूशलीम मंदिर के लिये रोता है। जैतून पर्वत से वह यीरूशलीम के सुन्दर दृश्य को देख सकता था। यीशु यीरूशलीम के लिये आया। परन्तु यीशु की बातों पर यीरूशलीम ने ध्यान न दिया। इसका फल यह हुआ कि ७० ई० में यीरूशलीम नाश हो गया। आज भी यीशु के वचन पर ध्यान नहीं देने वालों की ऐसी ही दशा होती है। अर्थात वे नाश हो जाते हैं।

२· यीशु का क्रोध:—(४५) यीरूशलीम मंदिर व्यापार का अड्डा बन गया था। यीशु व्यापारियों को निकाल डालता है। मंदिर को शुद्ध करता है। हमारा मन भी परमेश्वर का मंदिर है। हमें भी यीशु शुद्ध करने चाहता है। हम भी नाना प्रकार के कुविचारों द्वारा अपने मन मंदिर को मैला कर डालते हैं। अतः सावधान रहें।

३· यीशु का साहस:— यीशु के सामने क्रूश था। लोग उसे नाश करने का अवसर ढूंढ़ रहे थे। परन्तु वह हिम्मत के साथ प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश देता था। आज मसीहियों को तथा यीशु की कलीसिया को यीशु के समान साहसी होना है।

हम यीशु के जीवन को ध्यान से देखें और उसके वचन के अनुसार जीवन व्यतीत करें।

Gossner Mission

कुम्हार-दर्जी-मोची

(Hony Capt A.D. TOPNO, Retd, CCPH)

कुम्हार मिट्टी के बर्तनों को बनाने का अच्छा ज्ञान रखता है और मुखतलिफ किस्म के बर्तनों को सुन्दर ढंग से बना कर अपना कारीगरी दर्शाता है। कुम्हार ही अपने बनाये हुए चीजों को ज्यादा समझ सकता है।

धर्म्म शास्त्र से हम लोगों को मालूम है कि परमेश्वर ने भी हम मनुष्य जातियों को मिट्टी से बनाया है (उत्पत्ति १:७)। वही हमारा कुम्हार है (यशा ६४:८)। परमेश्वर ने मनुष्य जाति को अपने ही स्वरूप में बनाकर अपने नजदीक ले आया (उत्पत्ति १:२७) और जब मनुष्य ने उसकी आज्ञाओं को उलंघन किया, उसने अपने पुत्र को पवित्र खून से खरीद कर अपने परिवार में फिर मिलाया। परमेश्वर एक एक इन्सान के नस-नस को, रग रग को, दिल दिमाग को, मन-अन्तःकरण को, जो कुछ उसके अन्दर या बाहर दृश्य या अदृश्य अंग हैं, सब को अच्छी तरह जानता है, क्योंकि उसी के हाथों से बनाये गये हैं।

शैतान की बरावर यह इच्छा है कि परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि को नाश करें और इस अभिप्राय को पूरा करने के लिये जब इन्सान अपनी माँ के गर्भ ही में होता है उसी समय से उस पर आक्रमण शुरू कर देता है। फलस्वरूप इन्सान लंगड़ा, लूला- काना, बहरा आदि कई विरूपता के साथ पैदा होता है। परमेश्वर ही इन्सान को मरम्मत कर सकता है। यह उसकी जिम्मावारी है क्योंकि उसी ने बनाया और इन्सान को वही ज्यादा समझ सकता है।

प्रभु यीशु बिन सिअन कुरता जो ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था, पहना करता था (यूहन्ना १९:२३)। कुम्हार भी बिना जोड़ाई के किसी बर्तन को बनाता है। परमेश्वर भी इन्सान को बिना जोड़ाई के बनाया।

व्य. वि. २९:५. मैं तो तुम को जंगल में चालीस वर्ष लिए फिरा और न तुम्हारे तन पर वस्त्र पुराने हुए।

इस पवित्र बचन पर जब धर्मोपदेश दिया जाता है तो सुनने वाले अपने मनों में कहने लगते हैं कि यह जरूर "झूठ बात" है क्योंकि इस बचन में इस बात पर जोर दिया गया है कि "न तुम्हारे तन पर वस्त्र पुराने हुए"। फटने का कोई सवाल नहीं, चालीस वर्ष तक। इस बचन का तुलना यहोशु २३:१० से कीजिये जहां लिखा है कि तुम में से एक आदमी हजार को भगाएगा-इसको कोई झूठ नहीं कहता। इन हजार आदमियों को अगर परमेश्वर उसकी ओर से काम न करे तो हरगिज नहीं भगा सकता है। व्या वि: २९:५ को झूठ कह कर हम परमेश्वर की शक्ति को कम करते हैं। दर्जी किसी चीज को मरम्मत करता है और वह कुछ दिन और काम में लाया जाता है। पर परमेश्वर के विषय यह कहने चाहते हैं कि वह एक दर्जी (इन्सान) से भी नलायक है, पर पौलुस कहता है कि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों की ज्ञान से ज्ञानवान है —उसके ज्ञान कोई थाह का नहीं है और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है—उसके बल का कोई नाप नहीं (१ को. १:२५)

यह एक भारी आश्चर्य्य की बात है कि इस्राएल लोग चालीस वर्ष तक रास्ते में रहे जब कि सिर्फ तीन रोज का रास्ता है। जो मिश्र से निकलते वक्त पैदा हुए थे उनका उम्र रास्ते ही में चालीस वर्ष हो गया और वचन कहता है "उनके तन पर वस्त्र पुराने न हुए। यह निःसन्देह सच है कि उनकी शरीर के साथ उनके बदन के कुरते भी बढ़ते गये। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं ? ....और न तेरी जूतियां तेरे पैरों में पुरानी हुई (व्य० वि० २९:५) इस पवित्र वचन में भी जूतियां फटने की जिक्र नहीं

पर पुराने होने की हैं। जूतियों को तो हिन्दुस्तान के कानून अनुसार एक Scheduled Caste का आदमी बनाता है। जूतियों में जब फिर सोल लगा दिया जाता है तो एकाध साल फिर चल सकता है। एक मोची जूतियों का उम्र (life) बढ़ा सकता है और उसके काम की प्रशंसा की जाती है पर परमेश्वर की शक्ति पर हमारे दिल में सवाल उत्पन्न होता है और सोचते हैं कि यह भी एक झूठ बात है। लेकिन यह झूठ बात कभी नहीं हो सकता है। परमेश्वर जब कहता है तब हो जाता है और जब आज्ञा देता है, तब वास्तव में वैसा ही हो जाता है (भ० स० ३३:६) इन दोनों पवित्र बचनों में परमेश्वर की आज्ञा है और वैसा हो गया।

अपने को बड़े घर के समझने वालों में प्रेम के व्यापार की बुरी आदत है।

सूचना

पाद्री सामुएल बागे तथा पाद्री थियोदोर डुंगडुंग कारीमाटी उड़ीसा अंचल ने हमें खबर किया है कि प्रचारक साधु पौलुस मिंज, धंगरीनचा, किंबेल ईलाका चंगाई प्रार्थना कार्य के लिए बार बार लोवारोम पेरिश के भिन्न-भिन्न मंडलियों में सम्बन्धित पाद्रियों एवं प्रचारकों को खबर दिए बिना जाते हैं, अन्य-मिशन के कार्य्यकर्त्ताओं को साथ में ले जाते हैं जो हमारे मंडलियों एवं मसीहियों का तिरस्कार करते हैं सिरनी दान वगैरह जो कुछ जमा होता उठा कर ले जाते हैं। पाद्री भाईयों ने तथा लोवारोम पेरिश सेक्रेटरी पी० डी० लुगुन ने भी यह समाचार दिया है कि जून १९७३ के घरबंधु में उनके विषय बेड़ा इचिन्डा राज आनन्दपूर की कुमारी मुकता लुगुन (जे० लुगुन) ने जो कुछ भी पौलुस मिंज के विषय लिखा है वह लेख सही नहीं है। अतएव उस क्षेत्र के अधिकारियों की सलाह है कि अधिकारियों के अनुमति बिना मंडलियों में उनका कोई प्रोग्राम न बनाया जावे। मेरी अपील आप सभों से यह है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए कलीसिया के नियम के अधीन सब कोई रहें। हम इससे आनन्द न करें कि आत्मा हमारे बस में है परन्तु इससे आनन्द करें कि हमारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं। ऐसे व्यक्ति जो हमारी मंडली का तिरस्कार करते, कहां तक हमारी मंडली के साथ हैं अतएव मंडली के भाई-बहनों को सचेत रह कर, पूरी सावधानी के साथ चलना एवं जीवन बिताना है। मैंने सुना है कि उक्त झुंड ने हमारी मंडली के बहुत से भाईयों एवं बहनों को डाईन एवं टोन्हा ठहराया जो कि सही बात नहीं हो सकती है। भाईयो तथा बहनो इस प्रकार आँख बन्द कर हम किसी के पीछे चलने हारे न बनें। निवेदन आप से है कि आवेश में आकर आप कोई काम न करें। शान्त होकर सोच-विचार करें तथा कलीसिया के अधीनता में रह कर चलें ताकि किसी को किसी पर कुछ कहने की जगह न हो। हमारा निशान हो कि हमारे द्वारा किसी व्यक्ति विशेष की नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह की महिमा होवे।

प्रमुख अध्यक्ष,
रांची।

Gossner Mission

प्रचारकों के लिये शुभ-सन्देश

आनन्द की बात है कि पेनसन फण्ड कमिटी ने अपनी दो दिन की बैठकी (२४+२५ जून. ७३) में प्रचारकों का पेनसन फण्ड नियम कुछ सुधार के साथ २६—२६ जून की के. एस. एस. बैठकी में पेश की। के. एस. एस. ने नियम को पास कर दिया जो १-१-१९७४ से लागू किया जाएगा। इस बीच में आवश्यक काम पूरा करना है जिसके लिये मैं फिर सभी इलाका चेयरमेनों से अनुरोध करता हूँ कि निम्न बातों की जानकारी तुरन्त मुझे दें:—

१-प्रचारक का पूरा नाम।
२- „ की जन्म तिथि।
३- „ „ योग्यता।
४- „ „ नियुक्ति तिथि।
५- „ „ „ „ का दृढ़ाव तिथि।
६- १-१-७३ को प्रचारक का बेतन।
७ प्रचारक का गृह पता (Home address)

उपरोक्त बातों के लिय फार्म बना कर सभी इलाका चेयरमेनों के पास २५-४-७३ को भेजा गया है, किन्तु अब तक कुछ ही इलाका चेयरमेनों द्वारा फार्म लौटाया गया है। उपरोक्त सात बातों की निहायत ही अवश्यकता है। सो सभी इलाका चेयर-मेन भाई लोग जल्द भेजने की कृपा करें।

प्रचारकों का पेनसन फण्ड नियम प्राय: उसी प्रकार का है, जैसा पाद्रियों का। इस नियम के अनुसार प्रचारकों को अपने बेतन रूपया में चार पैसा के दर से चन्दा देना होगा, और इलाका भी उतना ही देगी। के.एस.एस. रूपया में एक पैसा के दर से देगी। इसी तरीके से सभी प्रचारकों के नाम से फण्ड बनेगा और पेनसन दिया जाएगा। इस नियम की अन्य जानने योग बातें अगले अंक में प्रकाशित किया जायगा।

पाद्री बिमल मिंज
जी. ई. एल. चर्च, रांची।

जर्मन-जनवादी गणतंत्र (पूर्वी जर्मनी) का दौरा

डा० सी० के० पॉल सिंह

पूर्वी जर्मनी के गोस्सनर मिशन तथा अन्य संस्था के द्वारा मिशन डाईरेक्टर के नाते निमंत्रित होकर मैं अप्रील १८ को जर्मनी पहुंचा, पहले मुझे कुछ दिनों तक पश्चमी बर्लिन में "भीजा" (प्रवेश अनुमति) के लिये ठहरा हुआ था। इसी बीच गोस्सनर मिशन बर्लिन के अधिकारियों का मेहमान होकर रहा एव अनेक विषयों पर व्यक्ति विचार विमर्श भी किया। २री मई से २५वीं मई तक पूर्वी जर्मनी के भिन्न-भिन्न मंडलियों में, पाद्रियों एवं कलीसियाई अगुवों एवं मसीही भाई-बहनों से मिला। अनेक मंडली के भाई-बहनों, संस्था एवं कलीसिया के अगुओं से बात-चीत एवं विचार विमर्श का अच्छा मौका मिला। प्रत्येक घटनाओं एवं बात-चीत आदि का यहां वर्णन देना जगह एवं समयाभाव के कारण असम्भव है। मैं सारांश में इस प्रकार कहुंगा :

पूर्वी जर्मनी की मेरी यात्रा वहां के मसीहियों के लिये सेवा समझी गयी। मेरे भाषणों एवं हमारे प्रश्नोत्तरों के विषय दिखलाते हैं, कि वे न केवल जानकारी के लिये थे, पर एक दूसरे को साहस एवं सामर्थ देने के लिये भी थे कि किस प्रकार हम, हमें दी गयी परिस्थिति मसीही होकर जाना है।

पूर्वी जर्मनी के मसीही यहां तक स्वतंत्र हैं जितना वे अपने देश में मसीही जीवन में रह कर वे विशेष अच्छे

Gossner Mission

मसीही जीवन का आदर्श पेश कर सकते हैं।

पूर्वी जर्मनी के मसीही दूसरे देशों के लोगों को सहायता पहुंचाना चाहते हैं और तैयार हैं, इसको हम उनके अतिथि सत्कार एवं दान के जमा किये जाने से देख सकते हैं।

पूर्वी जर्मनी के मसीही जौभी अल्प संख्यक हैं तौभी वे भिन्न तरीकों एवं साधनों के द्वारा कोशिश करते हैं कि अपने देश की दी गयी परिस्थिति में मसीही जीवन बिता सकें, हालांकि इस निमित कलीसियाई अगुओं एवं कर्मचारियों को भारी दाम चुकाना पड़ता है।

वहां के मसीही तथा अगुवे दूसरे देशों के मसीहियों के साथ सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इस तरह के संकल्प बर्लिन।ब्रान्डेनबुर्ग की कलीसिया ने कर भी दिया है कि वे हमारी गोस्सनर कलीसिया के साथ "साझेदारी" (Partnership) का सम्बन्ध रखना चाहते हैं। इसी प्रकार अनेक संस्थायें भी हैं जो हमारे साथ विशेष योजना में मिलकर काम करना चाहते हैं।

इस प्रकार के सम्बन्ध एक दूसरे के यहां आने जाने, विशेष प्रकार के प्रशिक्षणादि में भाग लेने, अन्तर्देशीय शान्तिप्रयास में काम करने, स्वास्थ-कार्य की योजना में साथ देने आदि प्रयास एवं प्रबन्ध किये जा सकते हैं। इसी १९७३ साल में फादर योहानस गोस्सनर के जन्मदिन [१४ दिसम्बर] की दो सौवीं जयन्ती मनायी जायगी, ऐसे आनन्द अवसर में यदि पूर्वी जर्मनी से भी अगुवे बुलाये जायें और हमारे साथ आनन्द मनायें तो हमारे आनन्दोत्सव की विशेषता और भी बढ़ जायगी।

पश्चमी बर्लिन में गोस्सनर कलीसिया के चार सदस्य एक साथ मिले : डा० डब्ल्यु० होरो, श्रीमती (डा०) ए० होरो, रेभ० डा० एन० मिंज अपने कार्यक्रम के दौरे में वहां पधारे थे, डा० श्री एवं श्रीमती होरो आमगाँव अस्पताल के डाक्टर होने के नाते गोस्सनर मिशन (प० बर्लिन) के द्वारा निमंत्रित थे। रेभ० डा० एन० मिंज एल० डब्ल्यु० एफ० की विभागीय बैठकी के लिये जेनेवा गये हुए थे और वहां से बर्लिन में गोस्सनर मिशन-अधिकारियों से मिल कर बात चीत करने आये हुए थे। हमारी आपसी बात चीत तो हुई ही पर अन्य लोगों से भी बात चीत हुई जो हमारे सम्बन्ध को बढ़ाने के विशेष काम हो सकते हैं।

टकरमा इलाका जुबिली उत्सव

श्री ए० डाँग; बी० ए०; बी० एल०; सकरा

२३ मई की शाम, स्थान टकरमा, चारों ओर से स्त्री पुरुष और बच्चों के झुंड टकरमा की ओर आते दिखाई दे रहे थे। किसी के हाथ में झंडा, किसी के हाथ में ढोलक, क्या ही मनोरम दृश्य था वह। बरबस समों के ध्यान को आकृष्ट करने वाला वह दृश्य मुझको मेरे बचपन के दिनों की याद दिला रहा था। एक समय था टकरमा शिक्षा का केन्द्र था। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान तो यहाँ राँची और खूंटी तक के लोग पढ़ने आते थे। जब स्कूल खुलता था तब उस समय भी टकरमा के चारों ओर से विद्यार्थी झुंड के झुंड यहाँ पढ़ने आते थे। शाम को सभी खेल के मैदान विद्यार्थियों से भरे रहते थे। आनन्द और उल्लास भरे वे दिन पुन: आज वापस लौट आए प्रतीत हो रहे थे।

इस महोत्सव के लिये न केवल टकरमा इलाका के मसीही भाई बहन या टकरमा के पुराने विद्यार्थी ही परन्तु अनेक अतिथि भी आमंतित्र थे। इन में से विशप दिलबर हंस मुख्य अतिथि थे। जब ये यहाँ शाम को पधारे तो पूरी सभा ने उनका आदिवासी संस्कृति के अनुसार स्वागत किया। प्रमुख अध्यक्ष, अंचल अध्यक्ष एवं डा० एम० बागे भी पहुंच गये।

शाम का समारोह था उद्घाटन एवं अतिथियों का परिचय भी हुआ।

दूसरे दिन २४ मई को सुबह साढ़े चार बजे एक बड़ा जुलूस जिसकी अगुवाई हमारे मुख्य अतिथि विशप दिलबर हंस, प्रमुख अध्यक्ष - अंचल अध्यक्ष तथा डा० एम० बागे

कर रहे थे, टकरमा मिशन अहाते के दक्षिण की ओर की सड़क से गुजरती हुई अस्पताल के चारों ओर घूम कर सभास्थल की ओर मुड़ी। इस लम्बे जूलूस में हरएक पेरिश के अपने रंग बिरंगे झंडे लहरा रहे थे। गान और भजन के साथ आगे बढ़ती हुई जुलुस का दृश्य बड़ा ही सुहावना लग रहा था। प्रमुख अध्यक्ष ने सौ वर्ष के जुबिली के उपलक्ष में जो स्मरण पत्थल गाड़ा गया था उसका विधिवत संस्कार एवम् उद्घाटन किया। इस अवसर पर झण्डोत्तोलन भी हुआ जो हमारे मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

पहली बेला गिरजा आराधना तथा पवित्र प्रभुभोज का अनुष्ठान हुआ। दूसरी बेला दो बजे से आम सभा था। आम सभा डा० एम० बागे की अध्यक्षता में हुई। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि हमें अपनी संस्कृति को भूल नहीं जाना चाहिये। यद्यपि हम दो कलीसियाओं से आए हुए हैं फिर भी मूलतः हम एक हैं। उन्होंने अपनी भाषा को न भूल जाने का भी आहवान किया। प्रमुख अध्यक्ष ने अपने भाषण में टकरमा के अतीत की ओर सभों का ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि टकरमा हमारी कलीसिया में मुख्य स्थान रखता है क्योंकि यही वह स्थान है जहाँ से शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कदम उठाया गया। देहाती क्षेत्र में शिक्षा के क्षेत्र में पहले इसी ने किया। टकरमा इलाका न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में पहल किया वरन सामाजिक एवम् धार्मिक क्षेत्रों में भी पहल किया और अच्छे-अच्छे अगुवों को जन्म देकर कलीसिया की अगुवाई की है। डा० एम० बागे और मृत पादरी सबन सुरीन का नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। घड़ा सिरजी की शुरूवात भी इसी इलाके से हुई है। लोयोंगकेल मण्डली को इसका श्रेय प्राप्त है। उन्होंने आहवान किया कि अपने परम्परा के अनुकूल आज भी टकरमा इलाका कलीसिया की अगुवाई करने में पीछे न हटे। आम सभा के बीच आदिवासी नाच का भी आयोजन था। टाटी मण्डली से मुण्डा नाच और पोटेया टोली मण्डली से खड़िया नाच दिखाया गया। आम सभा के बाद २४ तारीख रात को विदाई आराधना हुई तथा नाटक एवम् गान भजन का कार्य-क्रम रात भर चलता रहा।

अब तक मैंने उत्सव के सिर्फ एक पहलु को दर्शाया। इस उत्सव में शरीक होने के लिए बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हुई थी। ऐसी भीड़ जो शायद पहले टकरमा में देखने को नहीं मिली थी। उनके सुख सुविधा को ध्यान में रखते हुए स्थानीय अधिकारियों ने हरएक पेरिश का अलग-अलग खाने-पीने का इन्तजाम किया था। इलाका के बाहर से जो भी आए थे उनके लिए एक अलग मेस था। जिसका संचालन श्री उम्बुलन मड़की कर रहे थे आमंत्रित व्यक्तियों के लिए दूसरा मेस था। इसका संचालन श्री भानु तोपनो शिक्षक कर रहे थे। इन दोनों शिक्षकों के कुशल नेतृत्व में दोनों मेस सुचारू रूप से चल रहे थे। महिलाएं अलग होटेल खोलकर लोगों की सेवा कर रहीं थीं। महिला समाज के एक अधिकारी से मुलाकात करने पर उन्होंने बताया कि उनका अनुमान यह था ; कि गरीबी के कारण लोगों की जमायत कम होगी। पर यहाँ की भीड़ को देखकर थोड़ा वे घबराए जरूर। अतः सेवा में त्रुटि तो अवश्य हुई पर यथा संभव उन्होंने कोशिश की कि किसी को विशेष तकलीफ न हों। उतने बड़े उत्सव का समापन बिना किसी विशेष बड़े त्रुटि के हो गया इसका श्रेय वहाँ के सभी भाई बहनों को, जिन्होंने जी लगा कर उत्सव को सफल बनाने में अपना हाथ बटाया।

मैंने शुरू ही में लिखा है कि इस बार की यह जमायत अभूतपूर्व थी और उन दिनों की याद दिला रही थी जब कि टकरमा अपने चरमोत्कर्ष पर था। सभी दूर अथवा नजदीक के जिनका संबंध टकरमा से चन्द अरसे तक था इस अवसर पर पहुँचने की कोशिश किये थे। बहुत ऐसे थे जो टकरमा का दर्शन विद्यार्थी जीवन के बाद पहली बार कर रहे थे। स्वाभाविक था कि उनके मन में वही टकरमा की वही पुरानी यादें ताजी थीं। क्या वर्तमान टकरमा उनके मन वही खुशी उत्पन्न कर सकी जो खुशी उनको उनके विद्यार्थी-जीवन में मिली थी ? प्रतिक्रियाएं भिन्न-भिन्न थीं। कितने ऊपर से खुश पर भीतर से गम्भीर थे। उत्सव स्थल से सटे गिरजा घर का दृश्य मन में एक टीश पैदा करने वाली थी। गिरजा घर की सभी खिड़कियाँ टूटी हुई दिखाई दे रही थीं। पूरे अहाते में

Gossner Mission

वह रौनक नहीं था जो आज से बीस पचीस वर्षों पहले वहां था। सभवत: इन्हीं सब बातों को लक्ष्य कर प्रमुख अध्यक्ष ने यह बात कही थी कि हम गरीब अवश्य हैं पर फिर भी हम बढ़ते जा रहे हैं। धर्मखोजकों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह हमारे लिए खुशी की बात है। पर प्रश्न यह है कि क्या हम अपनी इस स्थिति पर उपरोक्त कारणों से संतोष कर लें? प्रश्न विचारनीय है। क्या यह हमारी कमियों एवम् खामियों को नहीं दर्शाता है? आइए हम अपनी खामियों और कमजोरियों को ढूंढ़ने का प्रयास करें और उन्हें यथा संभव दूर करने का प्रयास करें।

कलीसियाई समाचार

राजाबहार/तेजपुर (असम): विलम्बित समाचार है, कि अपर असम इलाका के राजाबहार पेरिश अन्तर्गत गोराजान मंडली में फरवरी २३-२५ तक एक धर्म सभा हुई थी। सभा का मूल विषय था, "हे सोनेवाले जाग और मुर्दों में जी उठ और मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी" (इफि॰ ५:१४)।

धर्म सभा के लिये एक बड़ा मंडप तैयार किया गया था। सभा का खर्च पूरे इलाका के भाई बहनों के द्वारा सम्भाला गया। पड़ोस के अन्य मसीही भाई बहन भी आमंत्रित थे और उन्होंने आकर आनन्द को और भी बढ़ा दिया। नागालैंड से भी भारी तायदाद में आये थे और परमेश्वर की साक्षी अपने ढ़ग से दी; उनके गाणों ने सभों के मन को मोह लिया। मिकिर पहाड़ी मिशन क्षेत्र से भी हमारे मिशनरी रेभ॰ एम॰ बा: अपने दल बल के साथ आकर परमेश्वर की महिमा करने में सम्भागी हुए। भाई बहनों की उपस्थिति चार हजार से कम नहीं थी। गोराजान चाय बगान के मैनेजर श्री सोफियुर रोहोमान ने अपनी ओर से बिजली बत्ती व पानी का प्रबन्ध दिया एवं दान देकर विशेष सहायता पहुंचायी।

शिक्षा के साथ ही साथ साक्षी एवं खाने-पीने की संगति भी अच्छी थी। खाने पीने में कोई खास त्रुटि नहीं थी। बचन की शिक्षा एवं साक्षी के लिये विशेष कार्यक्रम थे। इस तरह रिशेपशन सम्मिति ने अपनी तत्परता से अपनी जबाबदेही निभायी और सभों की सराहना के पात्र हैं। (असहन तोपनो)।

● अमगांव पेरिश संडे स्कूल क्रूश-बीर सम्मेलन;
२रा वर्ष १९७३

यह सम्मेलन बच्चों का था, पर कुछ संख्या में जवान युवति भी भाग लिये थे। अमगांव पेरिश के सकतार मण्डली में दिनांक १९·५·७३ को बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया। बच्चों के विशेष साथी गण रोमन कलीशा से बारडीह पारिश भर के बच्चे तथा जवान युवति आये थे। दोनों कलीशिया से मिलकर १२०० के लगभग थे। सभी एक साथ गीत भजनों के द्वारा सम्मेलन को सफल बनाये। सम्मेलन के विषय व शिक्षक यों थे।

१· पाद्री एम. किण्डो चैनपुर (हजकेल नवी)
२· पाद्री एल॰ टोप्पो जदी (विश्वास दर्पण)
३· ब्रदर अलबिनुस मिंज बारडीह पेरिश (खस्तीये एकता)
४· डी॰ एच्छ बड़ा प्र॰ अध्यापक पगुरा हाई स्कूल। (बच्चों में आज्ञाकारिता)
५. एन॰ बखला प्र॰ अध्यापक सुरसांग हाई स्कूल। (संडे स्कूल में बच्चों का स्थान)
६· एस॰ एन॰ जे टोप्पो शिक्षक नोवाडीह मसीही बच्चे)
७· ए॰ मिंज शिक्षक नोवाडीह (यीशु का जीवन चरित्र)
८· जे॰ बखला गुमला कॉलेज (वर्त्तमान संडे स्कूल में आर्थिक स्थिति)

विशेष अतिथि रोमन कलीशिया बारडीह पारिश से १· ब्रदर अलबिनुस मिंज २· ब्रदर अगुस्तुस मिंज ३· हेड प्र॰ मिखेल बड़ा ४· श्री·बी· एक्का प्र॰ अध्यापक

और भी विशेष अतिथि भाई लोग थे जिन्होंने सहर्ष गीत भजन में सहयोग दिया।

Gossner Mission

ईश्वर आशीष देवे कि इस संस्था के द्वारा बच्चों में आत्मिक जागृति दिनों दिन बढ़ता जाय।

कुमारी सुशीला तिर्की
संडे स्कूल सेक्रेटेरी

• जोलडा खृस्त गिरजे का पवित्र संस्कार

रौरकेला पेरिस के अन्तर्गत जोलडा मण्डली में एक नया गिरजा घर बनाया गया। दिनांक १३ मई १९७३ ई० को इसका पवित्र संस्कार बड़े धूमधाम के साथ समाप्त हुआ। १९७१ई० के पहले यहाँ एक छोटा गिरजा घर था। मण्डली में खृस्त विश्वासियों की बढ़ती के कारण बड़े गिरजे घर की आवश्यकता महसूस हुई। निश्चय ही ईश्वर पिता का महान अनुग्रह और पवित्रात्मा की सहभागिता से प्रेरित होकर मण्डली के भाई बहनों ने हठात ही इस कठिन काम को आरम्भ किया। मण्डली में पैसे की कमी थी। कुछ ही दिनों में चन्दा के द्वारा पैसा जमा किया गया। चन्दा द्वारा जमा किया हुआ पैसा गिरजा घर बनाने के लिये काफी नहीं था। अतः भाई बहनों ने श्रमदान के द्वारा भी अधिक योगदान दिया। इस मण्डली के अधिकांश लोग रौरकेला स्टील प्लान्ट और फार्टिलाइजर प्लान्ट के कर्मचारी हैं। कारखानों में काम करने के बाद थका मंदा रहते हुए भी गिरजा घर बनाने में हाथ बटाते थे। माता समाज की महिलाओं ने भी अपने बच्चों को घरों में छोड़कर अपनी शक्ति के अनुसार इस गिरजा घर के लिये काम किया। सन्डे स्कूल के बच्चे भी पीछे नहीं रहे। गिट्टी सब जमा कर श्रमदान द्वारा काफी योगदान दिया।

पवित्र संस्कार के शुभअवसर पर उड़िसा अंचल के अध्यक्ष माननीय पादरी म० जोजो, झारसुगदा के पेरिस चेयरमेन पादरी शान्तिएल बूढ़, रौरकेला के पेरिस चेयरमेन पादरी जे० बागे उपस्थित थे। इनके अलावे रौरकेला पेरिस के अन्तर्गत की मंडलियों के पंचगण तथा भाई बहन भी उपस्थित थे। इस अवसर पर बोलते हुए अंचल अध्यक्ष ने मण्डली के भाई बहनों के कठिन परिश्रम एवम् सहयोग पूर्ण कार्य्यों की प्रशंसा की। उन्होंने गिरजा घर को देखते हुए कहा कि इतना बड़ा और अच्छा गिरजा घर सिर्फ साढ़े तीन हजार रूपैये में बना इससे पता चलता है कि इस मण्डली के भाई बहनों ने इसको बनाने में कितना बड़ा योगदान दिया होगा।

पूरे साज श्रृंगार के साथ तैयारियाँ किई गई थीं। गाजा बाजा के साथ कार्य्यक्रम का आरम्भ हुआ और गाजा बाजा के साथ ही अन्त भी किया गया। जोलडा मण्डली के लिये ईश्वर पिता ने ही इस आनन्दमय दिन को चुना था। गोस्सनर कलीशा का एक गिरजा घर संस्कार किया गया और इसके द्वारा इस मण्डली के लोगों को आशीष मिली। ईश्वर पिता आप ही मण्डलियों को बनाता और बढ़ाता है। इससे बहुत से अन्धियारे में पड़े लोगों को मुक्ति का प्रकाश मिलता है। ईश्वर पिता को धन्यवाद होवे। — नुअस तोपनो —

• रांची : पूर्ण के॰ एस॰ एस॰ की बैठकी जून २६–२९ तक हुई, इसी बैठकी के पूर्व भिन्न भिन्न विभागों की अपनी बैठकियां भी हुई। प्रायः सभी विभागी बैठकियों में विशेष विशेष फैसला किये गये। सुसमाचार प्रचार विभाग को छोड़, प्रायः सभी विभागों में नयी नियुक्तियां की गयीं। जायदाद विभाग में मैनेजरों, की, शिक्षा विभागों में दो अफसरों की और अध्यात्मिक विभाग में थेओलोजिकल के नये प्रिंसिपल एवं एक नये शिक्षकों की नियुक्ति की गयी और आगे के॰ एस॰ एस॰ में इनकी स्वीकृति भी हुई। सुसमाचार प्रचार विभाग की बैठकी में १९७४ के बजट प्रस्तुतीकरण की तिथि पर बातचीत हुई। डा॰ सिंह के पूर्वी जर्मनी के रिपोर्ट सुनाया गया। फिर इस बार फैसला किया जाकर सिफारिश की गयी, कि विभाग के डाइरेक्टर को अंचल इलाकाओं के अन्तर्गत की मंडलियों में भी कार्यक्रम बना कर घूमने एवं ऐसे अवसरों पर चन्दा उठाने एवं साथ में ले जाने की अनुमती एवं अधिकार दिया जावे, जैसे बाइबल सोसाइटी आदि को दिया जाता है, के॰ एस॰ एस॰ में इसकी भी स्वीकृति हुई।

२६वीं जून को यथा समय के. एस. एस॰ की बैठकी आरम्भ हुई। इस बार विशेष कर केन्द्रीय खजाने की दुर्दशा पर विलाप और उसके लिये प्रबन्ध या उपाय निकालना ही

Gossner Mission

विशेष विषय था। बात चीत में भिन्न प्रकार की बाते आयीं हमारी कमजोरी, निश्चितता, एवं अनियमित आदि पर प्रकाश डाला गया। खजाने को बढ़ाने के लिये विशेष चिन्ता की गयी। आर्थिक दशा बिगड़ने और लोगों का इस दिशा की ओर अविश्वस्तता का भी जिक्र किया गया। लोगों का हमारे प्रति जो विश्वास खो गया, पुर्नप्राप्ति के लिये भी उपाय और रास्ते बतलाये गये। हिसाब-किताब की जांच (ओडिट) कराना लेन-देन के जो नियम हैं उनका पालन करना, इत्यादि।

पादियों की कमी को पूरी करने के लिये कुछ नये कन्डीदातों के पदाभिषेक एवं अवकाश प्राप्त पादियों के सेवाकाल वृद्धि का भी फैसला हुआ। ऐसे लोगों के लिये जो आध्यात्मिक शिक्षा पाने के बाद भी अभिषेक नहीं लेते है प्रशिक्षण काल में उनके लिये किये गये खर्च की वापसी के लिये भी सिफारिश की गयी। प्रचारकों के लिये पेन्सन-फंड के लिये भी नियमावली बनायी गयी जो के०एस०एस० से स्वीकृत हो गयी है. साथ ही साथ इसी के० एस० एस० की बैठकी में नया वेतनमान भी बनाया गया है।

उड़ीसा अंचल के विक्षुब्ध दलों की समस्या को हल करने, कराने के लिये उत्तर पश्चिम अंचल ने अपने अंचल में मिला कर उनकी चिन्ता करने का फैसला की थी, के० एस० एस० के द्वारा कहा गया कि वह (उ० प० अंचल) इस फैसला को रद्द करे। समस्या को सुलझाने के निमित एक कमीशन का गठन हुआ।

इसी साल के ओक्टोबर माह में छुट्टी के दिनों में और जब गोस्सनर मिशन के डाइरेक्टर हमारे बीच रहते हैं पादियों का शिक्षा क्लास का आयोजन होगा। इसी साल फादर योहनेस गोस्सनर की दो सौ वर्षीय जयन्ती के मनाये जाने की भी फैसला की गयी और इस अवसर पर पूर्वी जर्मनी के दो विशेष अतिथियों को भी निमंत्रण करने का फैसला किया गया। इस निमित कार्य-क्रमादि बनाने के लिये समिति का भी गठन हुआ।

समाचार देश-विदेश

● जेनेवा—एल० डब्ल्यु० एफ० 'छात्रवृति-विभाग' ने कुछ नया मोड़ लिया है, अब विदेश जाकर ही प्रशिक्षण लेने की बात नहीं है, अब स्वदेश में और सामान संस्कृति वाले देशों में भी प्रशिक्षण छात्रवृति मिलेगी एक और नया कदम भी है, कि अब गैर लुथरन को भी ऐसी छात्रवृति दी जायगी, जब इस निमित एक लुथरन कलीसिया सिफारिश करती है।

● ताइपेई-—ताइवान के छः लुथरन कलीसियाओं के पादी एवं सुसमाचारक ने अपने शिक्षा शिविर के दरमियान कलीसिया से यह मांग की है कि पेरिश के कार्य-क्रमों में रेडियो, टेलीविजन तथा परचों, लेखों आदि को साधन काम में लाये। यह शिक्षा शिविर एक बड़ा सम्मेलन था जिसमें देश के सभी लुथरन प्रतिनिधि आये हुए थे।

● टाम्परे (फीनलैंड) :— तेरह देशों के प्रतिनिधि यहां आयोजित एक शिक्षा शिविर में आये हुए थे, यह फीनलैंड के वाई डब्ल्यु सी. ए. द्वारा आयोजित था। यहां विशेष कर विचार-विमर्श हुआ कि आधुनिक युग में किस प्रकार "मानव अधिकार" की बातों में प्रगति आ सकती है।

● जोहानेसबेर्ग (द. अफ्रिका):—यहां के एफ. एल. सी. (एस. ए.) की कार्यकारिणी समिति ने छान बीन आरम्भ कर दी है कि किस प्रकार उनके बीच एकता की भावना बढ़ायी जा सकती है। कुछ दिनों से काले एवं गोरे मसीहियों के बीच के तनाव के कारण कलीसिया की एकता में भी धक्का लागी है।

● न्यूयोर्क यू. एस. लुथरन कलीसियाओं ने अपने बीच और ८३ शरणार्थियों को जो यूगान्डा से निकाले गये हैं, जगह दी है, कोशिश है कि शरणार्थियों को सेवा देने का कार्य और भी बढ़ेगा। यू. एस. ए. के लुथरनों की कौंसिल के आध्यात्मिक शिक्षा विभाग ने अपना विस्तृत अध्ययन जो शान्ति-युद्ध एवं विवेक का विषय है। इसी कौंसिल ने यु. एस. ए. के सभी लुथरनों से अर्जी की है कि वे इनका गहराई से अध्ययन करें।

(एल. डब्ल्यू एफ. के सौजन्य से : डा. सिंह)

Gossner Mission

मसीही युवक एवं युवतियाँ

२ तीमुथि २:२२ जवानी की अभिलाषाओं से भाग.......

हर रोज सुबह होती है, दोपहर आता है और शाम होती है। यूँ ही दिन, साल एवं युग बीतते जाते हैं। मनुष्य का जीवन भी ऐसा ही है। वह भोर में आता है दिन में पनपता है और दिन ढलते ही प्रस्थान कर जाता है। किसी के रोके वह रुक नहीं सकता। यही क्रम जारी रहता है, मनुष्य के जीवन में। हम मसीह के अनुगामी भी तो मनुष्य हैं और इससे अछूते नहीं रह सकते। बालक थे, युवा हुए और यरदन के उस पार चले गये।

प्राण और देह सुन्दर हैं अच्छे हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने हाथों बनाया है और एक मसीही तो ठीक ही मसीह में गर्व करता है कि प्रभु ने उसे जगत की उत्पति के पहले से ही चुन लिया और बुलाया और जिन्हें बुलाया उन्हें अपने बचनों के अनुसार महिमा भी दी। इस पृष्ठभूमि में हमें, विशेष करके मसीही युवकों को क्या करना उचित है, किधर जाना है किस मार्ग पर चलना है, यह भी पहले ही से परमेश्वर ने निर्धारित कर दिया है। हमारा मसीह ने अपना बालकपन देखा और अपनी जवानी पर पहुंचकर परमेश्वर के द्वारा ठहराये गये काम को, जो उत्पत्ति से लेकर नया नियम में अंकित है, कर गुजारा और समप्रति परमेश्वर के दहिने बैठा है अनुग्रह के सिंहासन पर। मसीही युवको एवं युवतियों के लिए आज यही अह्वान है कि वे भी उसी के बताये सकेत फाटक में प्रवेश कर सकरे मार्ग पर आगे बढ़े।

मसीह ने कहा था कि सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है और बहुतेरे उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। मसीहियो (जिसमें युवक भी शामिल हैं) साफ साफ जान लें कि हमारा मार्ग प्रभु ने स्वंय निर्धारित कर दिया है और वह है सकरा मार्ग। इसका तात्पर्य यह है कि न्यारा है हमारा मार्ग। विशेष रीति से मसीही युवकों से कहना है कि वह चौड़ा मार्ग दुनियाँ के लिए है, हमारे लिए नहीं। शरीर की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड—ये हमारी देह को दूषित करते हैं और आँखों पर परदा डालकर हाथ में अंधे की लाठी थमा देते हैं। क्या हम इसी के लिए बुलाए गये हैं?

पावल प्रेरित हमारे मसीही युवक युवतियों को आवाज देकर कहते हैं "जवानी की अभिलाषाओं से भाग.......।" लोग कहते हैं कि जवानी अंधी होती है और ठीक ही कहते हैं। आये दिन आप दृष्टि उठा कर देखें तो क्या देखेंगे - समय की बदलाहट, जगत के नाम नकशे पर रंग रंगों का चढ़ना उतरना और देखेंगे कि जगत में रहने वाले प्राणी जिसे मनुष्य कहते हैं उस बदलती हुई दूनियाँ के साथ कदम मिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। कहते—है नया फैशन निकला है, नयी सभ्यता उभरी है। भाई वह नया फैशन और सभ्यता निकले कहाँ से – अंधेरी कोठरी से और उन्हें अपने जीवन में खरा उतारना ही उनका कर्त्तव्य-कर्म हो गया है। ऐसा नहीं करने से अज्ञाना एवं असभ्यता की संज्ञा दी जाती है। कहते है समय के साथ कदम पर कदम मिलाकर चलना ही जीवन धारा है। अरे देख, वे पुराने जीर्ण लोग पीछे ही रह गये हैं। इसी उधेड़ में हमारे मसीही युवक भी फंस जाते हैं पर ये सब गलत है, धर्म अनुकूल नहीं है। हम इसके लिए नहीं बुलाये गये है। प्रभु अपने दास पावल के द्वारा कहता है कि इन सब चीजों से भागो। मसीही युवकों एव युवतियों के लिए आवश्यक है कि अपनी जवानी की अभिलाषाओं से भागना सीखें अन्यथा अनर्थ होगा। लूत और उसके घराने को याद करें। उन्हें आज्ञा मिली कि भागो और मुड़ कर पीछे न देखना। वे सब के साथ भाग निकले पर एक बेचारी मुड़कर देख ली और आप जानते हैं कि उसकी क्या दुर्गति हुई।

मसीह युवको और युवतियो, आप सब अभी अपने अपने जीवन की चर्म बिन्दु पर आ पहुंचे हैं जहाँ सब कुछ सुन्दर ही सुन्दर है अच्छा है, मनभावन है। गौर

Gossner Mission

फरमाएँ, देह नख से शीर्ष तक सब कुछ सुन्दर है पर यह मत भुलिए कि ठीक इसी बिन्दू के बाद जीवन का उतराव भी शुरू होता है और देह का असली रूप निखर आता है—सड़न गलन और बाद में मृत्यु। तो पूर्व का वह गर्व और अंधापन जो आँखों पर छायी थी, किस मोल का होगा। अत. जीवन की अभिलाष ओं से भाग वरना धोखा है।

आप को भागना तो जानना आवश्यक है पर इसके साथ साथ और कुछ करना है। उसके साथ धर्म और विश्वास और प्रेम और मेल मिलाप का पीछा करना है। यही मार्ग आप के लिये निर्धारित किया गया है, यही वह सकरा मार्ग है जिस पर चलना है। धर्म तो यह है कि प्रभु की आज्ञाओं को माने गिरते, पड़ते, रोते, हंसते। विश्वास यह कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है (Saving faith) और उसपर पूरी रीति से टिक जांय। प्रेम और मिलाप से मसीही जीवन की स्वांस है। इस मार्ग पर चलते चलते हम शुद्ध होकर परमेश्वर के लिए आदर का पात्र बन जाते हैं। कभी कभी आप सोचेंगे "मैं कितना गिर गया हूँ, अशुद्ध हो गया हूँ कि उठ नहीं सकता।" पर आप हमेशा गांठ बांध कर रखलें कि हमारे यीशु मसीह का लोहू इतना कमजोर नहीं है कि हमें शुद्ध नहीं कर सकता। उसका लोहू अतिशक्तिशाली है। उसने हमें अपने लोहू से खरीदा है और दुनियाँ की कोई शक्ति हमें उसके हाथ से छीन नहीं सकती है। मसीही यदि पाप में गिर गया है तो केवल मसीह की सहभागिता से अलग हो जाता है पर मसीह के दायरे अलग नहीं होता है और ज्यों ही वह अपने पापों को प्रभु के समक्ष मान लेता है तो फिर वही पहले के स्थिति आ जाती है। कृपया स्मरण रखें अपनी जवानी में कि कैसा वर्ताव करना चाहिए। सुलेमान ने भी जो अपने जीवन काल के अन्त में उपदेशक बन गया था अपने पुत्र से कहा" हे जवान अपनी जवानी में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह, अपनी मनमानी कर और अपनी आँखों की दृष्टि के अनुसार चल, परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।

प्रभु करे कि आप सब जगत में रहते हुए जगत से अछूते रहें और मूर्ख न बने क्योंकि सुन्दर कफन ओढ़ने के लिए क्या कोई मरना पसंद करेगा ?।

एस्यान एक्का
रोड न. २, क्वाटर न.५/सी ६/६७३
पुनारीचक, पटना।—

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [३० वीं जून तक] मिला

1 Shri Siyon Baba
2 Rev. A. Horo
3 Rev. P. U. Kujur for 11 members.
4 Rev. L. Topno
5 Shri. B. Topno
6 Mr. Hardugan Guria
7 ,, C. J. Dahanga
8 ,, Marshal Aind
9 Cat. Surjugan Surin for 7 members.
10 N/Sub. O. S. Guria
11 Mr. Samuel Mundu
12 Rev. B S. Bage
13 Shri M. Aind
14 Mr. Y. S. Ekka
15 Cat. Michael Toppo
16 Cat. Keora Kullu
17 Rev. P C. Minz
18 Mr. S. P. Topno
19 Shri Tairas Minz
20 Rev. S. Barjo
21 Shri Samuel Herenz
22 Mr. John Horo
23 Shri S. Tete
24 Mr. Pritammasih Topno
25 Shri C. K. Herenz
26 Shri N. Aind
27 Mr. Michael Tirkey
28 Rev. C. A. Kindo
29 Mr. Benjamin Lugun for 2 members.
30 Rev. Dr. M. Bage
31 Mr. M. M. Topno
32 ,, U. Barla
33 Shri E. Barwa
34 Rev. S. S. Dungdung
35 Mr. A. Lakra
36 Mr. Jakariah Hobbo
37 Rev. M. Barjo
38 Mr. Santosh Kandulna

Gossner Mission

विशेष सूचना

जून माह में हुई सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग की बैठकी में महसूस की गयी हमारे विभाग के कार्य में परिस्थितियों के बदलने से कठिनाइयां होने वाली है। अतः इस कार्य को सम्भालने व चलाने के लिये पूरी कलीसिया के भाई बहनों को एक साथ मिल कर काम करना है, इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि इस काम को पूरी कलीसिया में जागृत किया जाय। विभाग के डाइरेक्टर को पूरी कलीसिया में घूमने और इस काम के लिये भाई बहनों को उत्साहित करने एवं साथ ही साथ ऐसे अवसरों में चन्दा उठाने कहा जाय और आधिकार भी दिया जाय, जैसे कि बाइबल सोसाइटी को ऐसा करने दिया जाता है।

अतः अंचलों, इलाकाओं, पेरिशों एवं मंडलियों के सभी अधिकारियों, अगुओं एवं भाई बहनों से अर्जी है कि इस प्रकार का कार्यक्रम बनाने में सहयोग दें। जब वे डाईरेक्टर को अपने यहां बुलाने चाहते हों तो ठीक समय में खबर दें।

डा· सी· के· पॉल सिंह
डाइरेक्टर,
सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग।

WANTED.

Applications are invited for a post of a Lower Division Clerk on the prescribed scale of Pay of the G. . L. Church, for the Office of the Manager, Board of Properties, G. E. L. Church, Ranchi

QUALIFICATION :—

1. Educational:—Must be atleast a Matriculate or above.
2. Preference will be given to the candidate with knowledge of typing (English).
3. Age:—Upto 30 years.
4. Must be the confirmed member of the G. E. L. Church.

Applications with testimonials / Certificates must reach the undersigned by 31st July, 1973,

J. Topno
(Pramukh Adhyaksh)
GEL. Church Ranchi.

अपमान

'आनन्द' एक बड़ा ही गबरीला सा नौजवान जिसके जीवन में उमंग है. मस्ती है और आनन्द है। गोरा, छल-हरा बदन और भरा चेहरा। इतना सजीला कि हरकोई उसके बांकेपन से ईर्ष्या करता है। उसे न मौत से डर है, न जिन्दगी से प्यार। बात बात में 'एडवेंचर' मचाता। खतरों से जानबुझ कर ऐसे जुझ ज.ता है जैसे कोई भूखा शेर।

आई० ए० की परीक्षा देकर वह घर आया हुआ था। गांव से थोड़ी दूर पर एक चौक है जहां हरदिन गाड़ी में आने-जाने वालों की हल्की-सी भीड़ लगी रहती है। प्रति-दिन की तरह आज भी वह यहीं घुम रहा था।

शनिवार का दिन था, दोपहर का समय। सड़क किनारे एक गाड़ी खड़ी थी। आनन्द को यह समझते देर न लगी कि यह सुनारों की भाड़े में ली गई शादी वाली गाड़ी है। अन्दर से संगीत के स्वर सुनाई पड़ रहे थे। ऊपर नगाड़ा बज रहा था। गाड़ी के दरवाजे के समीप आकर उसने एक सरसरी-सी दृष्टि अन्दर के बारा-तियों पर डाली, लेकिन सब के सब अजनबी ही जान पड़े। उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब उसे एक सीट पर बैठा 'लिलि' दिखाई पड़ी। एक अजनबी युवक के हाथ में उसका बायां हाथ पड़ा था, किंतु आंखें दूसरी ओर थीं। एक हाथ से वह अनुरोध-भरे स्वर में लिलि को 'कोका-कोला' की एक खुली बोतल थमाने की कोशिश कर रहा था—

"क्यों, स्वीकार कर लेने में कोई हानि है क्या ?"

"जनाब ! लेना नहीं चाहती हैं तो बलात देने की क्या पड़ी है आपको ?" यह आनन्द की आवाज थी। लिलि जिसकी आंखें अबतक दूसरी ओर थीं, सामने आनन्द को पाकर शर्म से गड़ गई।

"किंतु, बीच में हस्तक्षेप करने की भी क्या पड़ी है आपको ? अपनी बारातिया को मैं जबरदस्ती दे सकता हूँ।"

आनन्द को यह उत्तर बुरा लगा। क्रोध में आकर उसने उसे गाड़ी के नीचे खींच लाया। उसका मुंह शोला उगलने लगा—

"सुनार के बच्चे ···शर्म आनी चाहिये कि यह तुम्हारी बारातिया है। दिन-दहाड़े हमारी बेटी-बहनों की इज्जत पर हमला करते डर नहीं क्या तुम्हें······

कहते-कहते आनन्द ने उसके बायें गाल पर एक जोर का थप्पड़ मारा। कोका-कोला की बोतल हाथ से छुट कर नीचे गिर पड़ी, किन्तु टूट नहीं गई। कोका-कोला जमीन पर बिखर कर रह गया। बेचारा सुनार अब तक गाल को सहला भी नहीं पाया था कि तड़ातड़ चार-पांच थप्पड़ों की बौछार और पड़ गई।

"बस, भैया······माफ करें······क्षमा चाहता हूँ। हाथ जोड़ता हूँ, फिर से ऐसी गलती कभी नहीं होगी।" आनन्द के पैरों में आकर वह गिड़गिड़ा रहा था। इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ जमी थी, लेकिन सब खमोश थे, आनन्द चिल्ला रहा था, "गर्दन तोड़ दूंगा······ हम आदिवासियों पर इसीलिए अत्याचार किया जाता है कि हम गरीब हैं असभ्य हैं। यही समझा जाता है कि हम कुछ नहीं कर सकते। आज के लिए छोड़ देता हूँ; आगे अगर तुम फिर से यही सब करने लगा, तो याद रखो, 'ईश्वर' की आंखें तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी।

'ईश्वर' शब्द शायद ही कभी आनन्द के मुँह से निकलता होगा, लेकिन उस गुंडे सुनार के लिए आज निकल पड़ा। आनन्द मसीही तो है, मगर गिर्जा और सन्डे-स्कूलों में वह बहुत ही कम दिखाई देता है। उसका मसीही विश्वास तो उस मकान के समान है जिसे किसी मूर्ख ने बालु की नेंव पर बनाया था। मसीही होने का उसे

Gossner Mission

सिर्फ अभिमान है—एक ऊँची भावना भी है। अन्य-जातियों का अपनी जाति के प्रति दुर्व्यवहार उसे कतई पसन्द नहीं।

सुनार युवक वहां से जाकर गाड़ी में बैठ चुका था। जमी भीड़ जब छंट चुकी तो आनन्द ने लिलि को गाड़ी के दरवाजे के नीचे सहमी-सी खड़ी देखा। लिलि! अपने ही गाँव की एक भोली भाली पड़ोसिन। गाँव के मिडिल स्कूल के हेडमास्टर की बेटी! इस वर्ष १०वीं कक्षा, बैथसदा गर्ल्स हाई स्कूल की छात्रा है। गर्मी की छुट्टी की समाप्ति पर वह राँची लौट रही थी। नजदीक आकर आनन्द ने पूछा—

"कहाँ जा रही हो?
"रांची, सोमवार को स्कूल खुलने वाला है।"
"गजब की तुम लड़की लोग भी होती हो, जातीयता का जरा भी ख्याल नहीं होता।"

"लेकिन बताईये, मैं अकेली क्या कर सकती थी? हां, जरा-सी सहायता चाहती हूँ। मेरा सामान गाड़ी से उतरवा दीजिए मैं इस गाड़ी में नहीं जाना चाहती।'

बहुत ही कठिनता से आनन्द लिलि को उसी गाड़ी में बैठा पाया। 'ड्राइवर' ने जब अपने ऊपर सारी जिम्मेवारी ली तो लिलि बैठने को राजी हुई।

शाम तक यह घटना आनन्द के गांव में फैल चुकी थी। सबने उसके जातीय-प्रेम को सारा‍हा।

दूसरे दिन रविवार को जब गिर्जे की अंतिम घंटी बज रही थी। आनन्द साइकिल पकड़कर घर से निकलना ही चाहता था, कि उसे उसके पिता के स्वर सुनाई पड़े, "क्यों, गिर्जा छोड़कर कहां जा रहे हो?"

"सैलून, जरा बाल ठीक करवाने हैं?"

"देखो, आनन्द! तुम्हें समझाते मैं हार गया। तुम तो गांव भर में शिक्षित हो। तुम्हें चाहिये कि धार्मिक कामों में भी सबकी अगुवाई करते। मैं मंडली का प्रचारक हूँ..... प्रचारक के बेटे होकर तुम्हीं गिर्जे, सन्डे-स्कूलों से घृणा करो.....सोचो लोग मुझे क्या कहेंगे?"

"कुछ भी कहेंगे, मुझे स्वर्ग में नहीं जाना है।" हमेशा की तरह इसका यही उत्तर रहता था। सुनकर प्रचारक गिर्जा की ओर चला जो सामने, थोड़ी ही दूर पर था। पिता के जाने के बाद आनन्द वहीं थोड़ी देर कुर्सी पर बैठ गया। अब घंटी की आवाज थम गई, किंतु उसके स्वर अब भी आनन्द के कानों में गूंजने लगे। थोड़ी देर बाद उसे गिर्जे की गीत के स्वर सुनाई पड़ने लगे। उसके मन में एक हलचल-सी उठी। वह उठ बैठा और साइकिल रख गया। अब उसके पांव गिर्जा-घर की ओर बढ़ने लगे।

द्वार पर आकर उसे अंदर झांकने की सूझी। पिछली बेंचें भरी हुई थी, लेकिन आगे भाग में जहां चट्टाईयां बिछीं थी, कुछ भरी, कुछ खाली सी थीं। आकर आनन्द चट्टाई पर बैठ गया। उसने चाहा कि मन को स्थिर कर लें, परन्तु लगा जैसे कोई भारी पत्थर के नीचे उसे दबा रहा हो।

उपदेश की समाप्ति पर जब प्रार्थना की अगुवाई करने में आनन्द का नाम कहा गया। उसे लगा जैसे पांव तले की जमीन खिसक गई। गिर्जा घर की दीवारें घुमती दिखाई देने लगीं। सांस उखड़ गयी, किन्तु साहस बटोर कर उसने आंखें मूँद लीं—हे, प्रीतम पिता परमेश्वर! हम तेरी स्तुति और धन्यवाद करते हैं। तेरे सामर्थ्य हमारे सोच से बाहर हैं......हम सोच......भी नहीं सकते कि तू कितना महान?......कितना अद्‌भुत है?......तेरे सम्मुख......हम......एक......।

अब उसे और अधिक कहा न गया। कांपते जबान पर जैसे ताला पड़ गया। चाहा कि जोर से रो दे, किन्तु गला रूंध गया। आंखें खुलीं, तो देखा, हर स्त्री-पुरुष की आंखें उसे घुर रहीं थीं। मानों आंखों ही आंखों में उसे पूछा जा रहा था—'क्या, ईश्वर ठट्ठों में उड़ाया जा

सकता है ?" देखने वालों की परवाह किये बिना वह द्वार की ओर मुड़ा और जैसे आया था वैसे ही लम्बे डग भरता हुआ गिर्जा घर से निकल गया।

इससे पहले कि गिर्जा छुट्टी हो जाय, वह गांव से दूर उस सड़क पर निकल पड़ा जो शहर 'चाईबासा' की ओर जाती है। गांव के किसी आदमी को अब मुँह दिखाने का साहस उसमें न रह गया था। गिर्जा के बाद सारा गांव उसकी हंसी उड़ा रहा था। किसी बुढ़े ने कहा, "पढ़े-लिखे नौजवानों में भी कोई अक्ल नहीं रह गयी।"

खुद उसका बाप कह रहा था—"ईश्वर और गिर्जा से घृणा करने का नतीजा आज आनंद को मिल गया।"

× × ×

अपमान का अहसास बुद्धिमान और शक्तिशाली व्यक्ति में भी हीन भावना भर देता है। आनंद को जिंदगी में कभी भी इतना अपमान न मिला था। उसे लग रहा था कि वह जान बूझ कर अपमानित किया गया था।

चाईबासा आकर उसे एक कपड़े की दुकान पर एक-सौ-बीस रूपये मासिक पर काम मिल गया। अब वह अपना गांव किसी भी मूल्य पर नहीं लौटेगा।

एक महीने बाद, एक दिन उसे लगा, उसके मन में दिनों-दिन अशान्ति बढ़ती चली जा रही है। कोई कारण है जो उसे अंदर घुन की तरह खा रहा था। अब न पहले जैसी मस्ती है न उमंग है। समाचार पत्र में आई० ए० का परीक्षाफल निकल चुका था। द्वितीय श्रेणी में वह पास कर चुका था, किन्तु इससे भी वह आनन्दित नहीं हुआ। उसे लगा जैसे वह अंधकार में भटक रहा है।

एक रात उसने स्वपन्न में देखा कि एक क्रूश जो ठीक उसके सामने गाड़ा हुआ है। उससे एक आवाज निकल रही थी—"अपनी सारी चिंता मुझपर डाल; क्योंकि मैं तुम्हारी सोच करता हूँ।" अंधकार में उसे एक ज्योति की किरण दिखाई पड़ी। नींद में वह उठ बैठा। उसे १ पतरस ५ : ७ के बचन याद आने लगे। उसमें उसे आपार शक्ति महसूस होने लगी। क्यों, नहीं वह इस शक्ति के द्वारा अपने जीवन में परिवर्तन लाये ?

उसकी आँखों से पश्चाताप के आँसू बह निकले। उसने प्रार्थना किया कि ईश्वर उसके पापों को क्षमा करे। उसके मन में अब शंका न थी।

दूसरे दिन वह घर लौट आने को निकल पड़ा। आकाश में काले बदल छाये हुए थे और बिजली चमक रही थी। घर पहुंचते तक उसके सारे वस्त्र बरसात में भींग चुके थे। आते ही उसकी माता उससे लिपट गई। 'मन के मैल', जो सावन की रिमझिम फुहारों में भी धुलने न पायीं थीं, माँ के आँसुओं ने धो दिये।

अगले रविवार को सन्डे-स्कूल अगुवाई करने का भार आनन्द ने अपने ऊपर लिया। उसके मुँह से ईश्वर के बचनों को सुनकर सारा सन्डे स्कूल मुग्ध हो उठा। आज वह सचमुच बहुत खुश था। पूरी मंडली आनन्दित थी।

अब उसके मन में निर्णय था—एक अटल निर्णय, कि वह अपना जीवन ईश्वर को समर्पित कर देगा। बी०ए० करने के बाद वह अपना जीवन प्रभु के मंडली की सेवा में लगायेगा—एक पादरी बन कर।

मंगल सोय 'अनमोल'
बोंगराम
२७-६-७३

Serampur University
B. th. Results 1973

Gossner Theological College
RANCHI

SECOND CLASS

(I) Nirdosh Lakra, (II) Nirmal Tiga, (III) Dhanmasih Baa, (IV) Nityananda Borgoary, (V) Christodas Jojo, (VI) Nemhas Ekka, (VII) Alfred Dang.

THIRD CLASS

(I) Rev. Obed Toppo, (II) Theodore Ekka, (III) Samuel Khakha.

सूचना

सूचित किया जाता है कि आर्थिक समस्या के कारण निम्नांकित पुस्तकों की छपाई अभी तक नहीं हो सकी है। प्रयास की जा रही है कि तीन साल के अन्दर सभी किताबें छप कर आप की सेवा में सुपुर्द किए जांए।

१ दुरंग पुथि
२ कुड़ुख डण्डी
३ साक्षी वाणी
४ खड़िया आलोंग

× × ×

A. Topno
सेल्स मैनेजर
बुक लैंड (सी०सी०पी०एच०)

४ जुलाई '७३

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—
School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष—६३ राँची, अगस्त '७३, संख्या नं०—८

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६३ | रांची, ओक्टोबर १९७३ | संख्या न० — १०

EINGEGANGEN
25. JAN. 1974
Erledigt ....

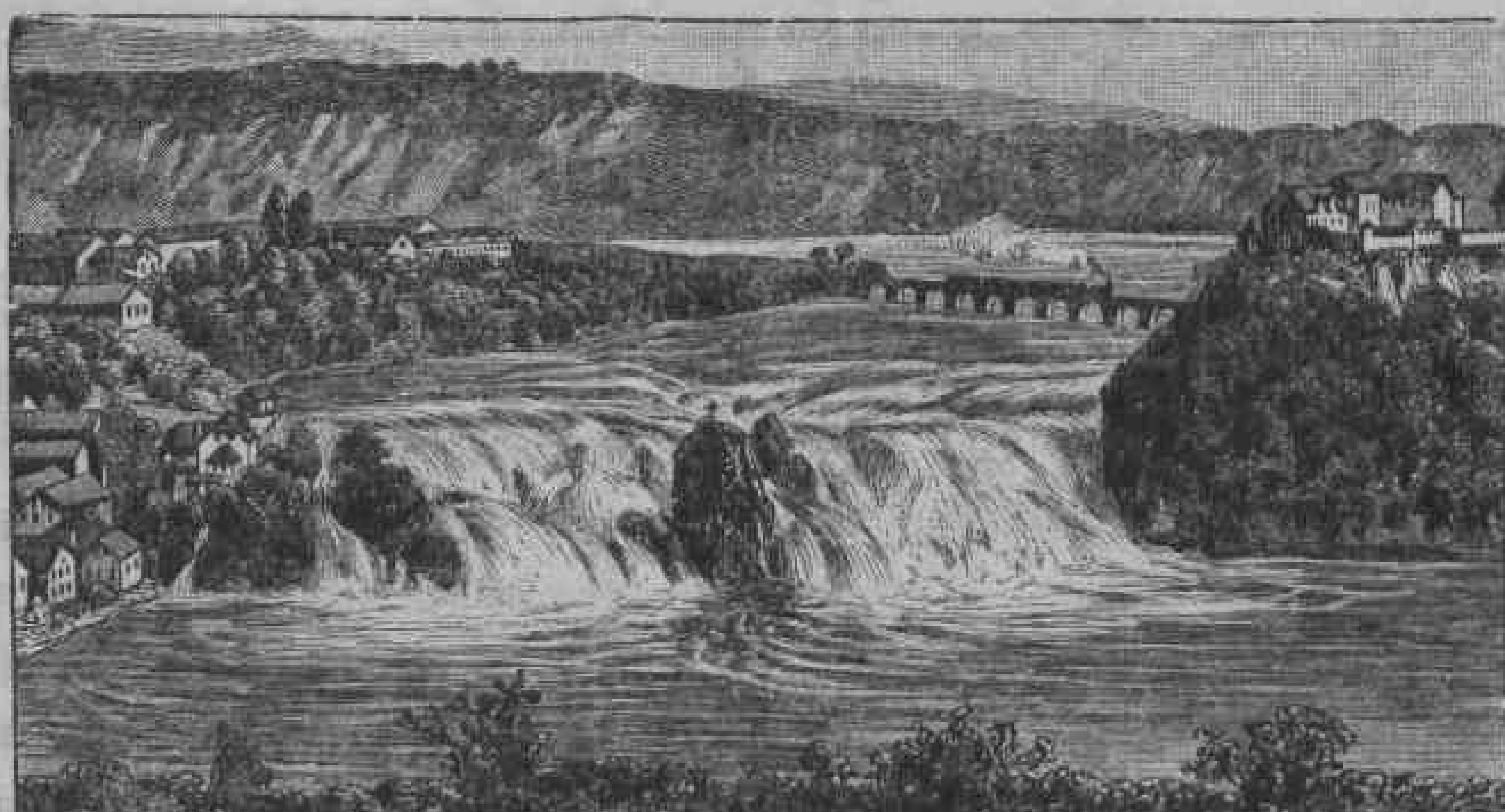

"च्यूंटियों के पास जा.......... और बुद्धिमान हो।
उनके न न्यायी, न प्रधान होता........तौभी अपना
आहार धूप काल में संचय करती और कटनो के
समय अपनी भोजन वस्तु बटोरती हैं।

(नीतिवचन ६:६-८)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — —	३
उपदेश की तैयारी — रेभ एस· टेटे —	४
कलीसियाई समाचार—देश विदेश —	७
शोक समाचार —	११
मूल सुधार — —	११
World Sunday School day —	१२
जी· ई· एल· चर्च प्रचारक प्रोभिडेन्ट फंड —	१?
हेथाकोटा—अनुरोध पत्र — —	१५
हृदय सदन में — —	१७
आशा — —	१६
मसीही युवक-युवतियां —	१७

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआडर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

३१ वीं ओक्टोबर १५१७ ई० में डाक्टर मार्टिन लुथर ने बितेनबर्ग के प्रसिद्ध गिर्जा घर में पन्चानबे सूत्रों को लटकाया। ऐसा कदम उनके द्वारा इसलिये उठाया गया कि उन दिनों रोमी कलीसिया के द्वारा सुसमाचार की शिक्षा नहीं, अपनी निजी शिक्षा दी जाती थी जैसे पापक्षमा पत्री का बेचा जाना। डाक्टर मार्टिन लूथर को सुसमाचार से प्रेम था। सुसमाचार की वाणियों को प्रभु की बाणी समझता था और जब उनको यह देखने को मिला कि रोमी कलीसिया की शिक्षा सुसमाचार के अनुसार नहीं है तो यह मानो आन्दोलन किया कि हमारा प्रचार, हमारी शिक्षाएँ, हमारे उपदेश सुसमाचार पर आधारित हो। उनके आन्दोलन का फल यह हुआ कि लुथेरान कलीसिया का जन्म हुआ जिसका मूल सिद्धान्त उद्धार पाने का बैबल की शिक्षानुसार यह है रोमी ३:२८। इसलिये हम सिद्धान्त करते हैं कि मनुष्य व्यावस्था के कामों के विना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। यह वचन हमें दिखलाता है कि मनुष्य अपने कामों से नहीं, व्यावस्था के कामों से नहीं परन्तु परमेश्वर की दया, विश्वास के द्वारा त्राण और उद्धार पाता है। हमारे कलीसिया की सब से बड़ी और मुख्य शिक्षा यही है। मनुष्य जब उद्धार पाता है तब उसके जीवन के द्वारा ईश्वर की महिमा के लिये भले कार्य भी लोगों के सामने प्रकट होते हैं। सो हम इसलिए अच्छे और भले कार्य नहीं करते कि हमारा त्राण हो परन्तु इसलिये कि हमारे जीवन में बदलाहट यीशु ख्रीष्ट के कारण आई। जैसे जंगली आम का बृक्ष जब कलम कर दिया जाता है तो कलमी फल देता है वैसे पवित्रात्मा की अगुवाई और सहायता से भले, अच्छे और उत्तम कार्य प्रकट होने लगते हैं। मनुष्य जब तक ईश्वर की दया से नया नहीं हो जाता वह यदि कुछ भले कार्य करता भी तो इसलिये कि परमेश्वर उनसे प्रसन्न हो परन्तु वह यह नहीं जानता कि मनुष्य दुर्बल और पापी है उसके भले कार्य भी मैले चिथड़े के समान है। अतएव हमें स्मरण दिलाया जाता है कि मनुष्य का उद्धार केवल परमेश्वर की दया से विश्वास के द्वारा होता है जिसका फल यह है कि वह लोगों के बीच अच्छे कार्यों को करता, सेवा कार्य में अपने जीवन कार्य लगाता। निशान यह रखता कि उनके कार्यों द्वारा परमेश्वर की स्तुति और महिमा हो। क्या हम इस बात से परिचित थे ? यदि नहीं, तो प्रार्थना करें, कि परमेश्वर हमें ऐसी अगुवाई अपनी आत्मा के द्वारा दे, कि हम सुसमाचार की निराली शिक्षा को जानें, उसका मनन करें उसके अनुसार चलें और जीवन बितायें।

सम्पादक
प्रमुख अध्यक्ष

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

(मार्टिन टेटे)

त्रिनितातिस के पीछे १६वां एतवार

लूका ७ : १—१७

बचन में साक्षी की गयी है कि यीशु रोग एवं मृत्यु पर प्रभुता करता है । सुबेदार का दास बीमारी के कारण मृत्यु के मुख में था। नाईन के जवान को मृत्यु निगल चुका था। प्रभु यीशु अपने बचन एवं काम के द्वारा प्रगट करते है कि बीमारी एवं मृत्यु उसकी अधीनता में है।

"यीशु रोग एवं मृत्यु पर प्रभुता करता है"

१· यीशु बचन से सुबेदार के दास को चंगा करता है :—(१-१०) दास के लिये प्रार्थना की गयी थी। यीशु दास के लिये की गयी प्रार्थना को सुनता है। और चंगा भी करता है। आज हमारे देश में अनेक रोग ग्रस्त लोग हैं। हम उनके लिये प्रार्थना करें। यीशु हमारी प्रार्थना सुनेगा और उन्हें चंगा करेगा।

२· सुबेदार साक्षी है कि यीशु रोगों पर प्रभुता करता है :—सुबेदार ने प्रार्थना किया था। उसकी प्रार्थना सुनी गयी थी। दास चंगा किया गया।

३· यीशु बचन एवं काम से मृतक जवान को जिलाता है :—यीशु ने अर्थी को छूआ, और उठने के लिये आदेश दिया। मुरदा उठा और बोलने लगा। आज भी हमारे देश में ऐसे अनेक जवान मुर्दा के समान पड़े हुए हैं। यीशु बचन के द्वारा उन्हें छुने चाहता है। हम ऐसे मुर्दे जवानों को यीशु के पास लावें। वह मुरदों को उठाने के लिये तैय्यार है।

४· मुरदा उठाने वाले साक्षी हैं कि यीशु मृत्यु पर राज करता है :—(१२—१७) भीड़ ने कहा कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है। आज की कलीसिया भी गवाही देती है कि यीशु मुरदों को जिलाता है।

हम मुरदों एवं रोगियों को यीशु के पास लावें। वह चंगापन देने के लिये तैय्यार है।

त्रिनितातिस के पीछे १७वां एतवार

लूका १४ : १—११

सुसमाचारों में सात उदाहरण हैं जो यह प्रदर्शित करते हैं कि यीशु सबत के दिन का प्रभु है। सबत मनुष्य के लिये है न कि मनुष्य सबत के लिये। (लूका ४ : ३८; ६ : ६; १३ : १४; यूहन्ना ५ : ९; ६ : १४; मरकुस १ : २१) आज के बचन में यीशु सामाजिक विषयों पर हमें शिक्षा देता है।

'यीशु की शिक्षा"

१· यीशु सब लोगों के निमंत्रण को ग्रहण करता था :—बचन के अनुसार वह किसी सरदार के यहाँ भोज के लिये गया था। निमंत्रण ग्रहण करने के द्वारा वह आप गवाही देता है कि वह सब लोगों के लिये जगत में आया है।

२· सामाजिक अवसरों को यीशु भलाई करने में लगाता है :—यीशु का भोज में जाना एक सामाजिक अवसर था। इसी अवसर पर वह एक रोगी को चंगा करता है। हम भी ऐसे अवसर पर भलाई करना न भूल जावें।

३· सामाजिक अवसर को यीशु शिक्षा देने के काम में लाता है :—देखो १४ : ५ सबत के दिन धर्म, प्रेम एवं आवश्यक काम हमें करना है।

Gossner Mission

४. सामाजिक अवसर में यीशु दीनता की आवश्यकता को बतलाता है :—(७–११) हम दीन बनें। दीनता सन्तों का गुण है। मसीही जीवन में दीनता की आवश्यकता है।

हम सामाजिक जीवन में भी यीशु की सुनें और उसी का अनुकरण करें।

त्रिनितातिस के पीछे १८वां एतवार

मत्ती २२ : ३४–४६

बचन में प्रभु यीशु खृस्त सत्य धर्म्म पर प्रकाश डालता है। फरीसियों से उससे पूछा था कि—"व्यवस्था में कौन सी बड़ी आज्ञा है ?" अथवा व्यवस्था के आधार पर सत्य धर्म क्या है ? यीशु प्रश्न का उत्तर पद ३८+३९ में देता है।

"सत्य धर्म क्या है"

१. सत्य धर्म परमेश्वर से प्रेम रखना है :—यीशु व्यवस्थाविवरण ६ : ५ की चर्चा करते हैं। यह तो यहुदियों का विश्वास वाक्य था। इसी बचन के साथ यहुदी अपनी आराधना आरम्भ करता है। यहुदी बालक इस बचन को मुखस्थ करते हैं। इसका अर्थ है कि हम ईश्वर से पूर्ण रूपेण प्रेम रखें।

२ सत्य धर्म पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है :—यीशु लैव्यवस्था १९ : १८ की चर्चा करते हैं। परमेश्वर को प्यार करने का प्रमाण पड़ोसी को प्यार करने में प्रदर्शित होता है। परमेश्वर का प्रेम हमें पड़ोसी को प्यार करने के लिये बाध्य करता है। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया है (उत्पत्ति १ : २६+२७)। इसलिये वह तुच्छ न किया जाय। सभों से हमें प्रेम रखना है। मनुष्यों को ईश्वर ने बनाया है। इसलिये हम उनसे प्रेम रखें।

३. सत्य धर्म यीशु के क्रूश में है :—क्रूश के द्वारा ईश्वर का महान प्रेम दिखाया गया। यहुदियों का विचार था कि दाऊद के वंश से मसीह आवेगा और बड़ी सेना इकट्ठा कर संसार को जीत लेगा। इसी कारण वह दाऊद का पुत्र कहलाया (मत्ती २० : ३०; मत्ती २१ : ९) वास्तव में उसे दाऊद का प्रभु कहना चाहिये।

यीशु ने आप ही कहा था—"मेरा राज्य इस पृथ्वी का नहीं है।" इसी कारण उसने सत्य धर्म का प्रदर्शन क्रूश पर किया। सत्य धर्म में बलिदान की आवश्यकता है। यीशु ने अपने आप को बलिदान कर दिया।

सत्य धर्म ईश्वर को प्यार करने में है। ईश्वर का प्रेम मनुष्य को चलाता है कि वह पड़ोसी से प्रेम रखे। यीशु अपने क्रूश में ईश्वर से प्रेम करने और मनुष्य से अपने समान प्रेम रखने के विषय साफ साफ समझाता है।

त्रिनितातिस के पीछे १९वां एतवार

यूहन्ना ८ : ३१—३६

बचन में सच्ची शिष्यता एवं स्वतन्त्रता के विषय प्रकाश डाला गया है। यीशु आप ही कहता है कि चेला बचन बद्ध रहता तथा यीशु मसीह में स्वतंत्र होता है।

"शिष्यता और स्वतंत्रता"

१. शिष्यता बिश्वास के साथ प्रारम्भ होता है :—विश्वास यीशु के बचन पर किया जाता है। मनुष्य बचन पर विश्वास करता है और यीशु का शिष्य हो जाता है। यीशु का शिष्य प्रेम के विषय समझता है। पतरस ने विश्वास किया और यीशु का चेला हो गया था।

२. शिष्यता का अर्थ यीशु के बचन में बना रहना है :—शिष्य यीशु का बचन सुनता और उसके अनुसार जीता है। शिष्य यीशु का बचन

Gossner Mission

सीखता है। मसीही अपने जीवन में बराबर यीशु का बचन सीखता रहता है। शिष्य यीशु के बचन की गहराई ढूंढ़ता है। शिष्य न केवल सुनता और सीखता परन्तु यीशु के बचन का पालन भी करता है।

३. शिष्य सत्य को जानता है :—यीशु से सीखने का अर्थ है सत्य को सीखना। यीशु कहता है—तुम सत्य को जानोगे। यीशु आप ही हमें बतलाता है कि बुराई और भलाई क्या है।

४. शिष्य स्वतंत्र होता है :—वह भयमुक्त होता है। वह स्वर्थ से स्वतंत्र होकर भलाई में लग जाता है। वह पाप से छुटकारा पाता है। पाप बुरी आदत, मानसिक कमजोरी आदि से उसकी मुक्ति हो जाती है।

हम यीशु के शिष्य हैं क्योंकि उसने हमें स्वतंत्र किया है।

बिहार राज्यपाल गोस्सनर कॉलेज में

(मार्टिन टेटे)

अगस्त १६, १९७३ गोस्सनर कॉलेज के इतिहास में स्मरणीय तिथि है। लगभग १० बजे दिन बिहार प्रान्त के राज्यपाल श्री आर० डी० भंडारे पधारे हुए थे। उनका शानदार स्वागत आदिवासी नाच एवं नगाड़ा के द्वारा किया गया। स्वागत के अवसर पर आर्चबिषप पी० केरकेट्टा, बिषप हंस, जी० ई० एल० कलीसिया का प्रमुख अध्यक्ष पाद्री जुलुस टोपनो तथा रांँची विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री रामसेवक मंडल उपस्थित थे। पुष्पहार के उपरान्त राज्यपाल जी को आदिवासी साहित्यों से परिचय कराया गया। मुन्डारी, कुड़ुख, खड़िया, हो संताली तथा नागपुरिया भाषा में पुस्तकें प्रदर्शन के निमित्त रखी गयी थीं। आदिवासी पुस्तकों के निरीक्षण के उपरान्त एक विराट सभा हुई। सभा के सभापति रांँची विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री रामसेवक मंडल थे। सभा में गोस्सनर कॉलेज गवर्निंग बाडी के सभापति पाद्री जुलुस तोपनो ने राज्यपाल जी को स्वागत दिया। तदोपरान्त कॉलेज के मन्त्री तथा प्राचार्य डाक्टर मिंज ने कॉलेज का संक्षिप्त विवरण दिया। राज्यपाल जी ने शुभकामना प्रगट करते हुए आदिवासियों के प्रगति के बारे प्रभावशाली लिखित भाषण दिया और अन्त में उन्होंने **"आदिवासी तथा नागपुरिया भाषा की पढ़ाई के निमित उद्घाटन किया** राज्यपाल जी का भाषण रोचक था। सभों ने बड़े ध्यान से सुना। भाषण में उन्हों ने खेद व्यक्त किया कि अब तक रांँची विश्वविद्यालय ने आदिवासी भाषाओं की पढ़ाई आरम्भ नहीं की है। गोस्सनर कॉलेज ही पहला कॉलेज है जिसमें आदिवासी भाषा की पढ़ाई आरम्भ हुई है।

शुभागमन के उपलक्ष में राज्यपाल जी को एक पाड़िया तथा एक आदिवासी करया दिया गया।

—:०:—

Gossner Mission

कलीसियाई समाचार

रांची : गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी राँची में हमारे अहाते में स्वतंत्र दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया गया। सभी शिक्षा-संस्थाओं के छात्र-छात्राओं की ओर से परेड को सफल बनाने का इन्तजाम था। जिला शिक्षा पदाधिकारी ने झंडोत्तलन कर १५ अगस्त १९४७ की भारतीय स्वतंत्रता और भारतीय नागरिकों की व्यक्तिगत तथा सामूहिक जवाबदेही का स्मरण दिलाया। १६ वीं अगस्त में और एक विशेष घटना हमारे अहाते में हुई जब कि बिहार के गवर्नर श्री भन्डारे गोस्सनर कॉलेज में छोटानागपुरीया भाषाओं का विभाग के उद्घाटन निमित यहां आ पधारे! उनके आगमन से कॉलेज के लिये तो विशेष लाभ का दिन था ही पर अनेक नागरिकों को भी उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

खूंटीटोली : मध्य अंचल के अन्तर्गत और मध्य अंचल के द्वारा सुसमाचार प्रचार करने की विशेष जबाबदेही को निवाहने के एक पहलू पर विचार विमर्श के लिये एक संयुक्त बैठकी का आयोजन अंचल अफसरों के साथ और मिस्स इल्जे मार्टिन एवं डा० सिंह के साथ खूंटीटोली में किया गया। इसमें विशेषकर एक दवाखाना खोलने के लिये बात चीत की गयी और इसी निष्कर्ष में पहुंचे मध्य अंचल के अन्तर्गत इस प्रकार के और एक दवाखाना की आवश्यकता है जो विशेषकर सुसमाचार प्रचार क्षेत्र में खोला जाय। इसी सम्बन्ध में अंचल के लिये विशेष जवाबदेही है कि गृह तथा कुआं का यथासम्भव जल्द निर्माण करने तथा एक नर्स की नियुक्ति करने पर काम चालू किये जाने में अन्य अड़चने नहीं दीखती हैं। यह दवाखाना बधिमा क्षेत्र ही में होगा।

(खकपस)

रांची : रेभ० सी० ए० बी० तिर्की, जो हमारे थिऑलोजिकल कॉलेज के एक अध्यापक हैं अमेरिका में अध्ययनार्थ रांची छोड़ चूके हैं। वे अमेरिका के कलीफोर्निया युनिवर्सिटी में अध्ययन करेंगे। कॉलेज कौंसिल ने अपनी २९ वीं अगस्त की बैठकी कन्डीदात बिराज टोप्पो को फिलहाल के लिये कॉलेज में नियुक्त करने का संकल्प किया है।

रांची : विभिन्न कलीसियाओं से समाचार मिला है कि विश्व कलीसिया परिषद का २५ वां वर्ष गांठ २६ अगस्त के विभिन्न मंडलियों में मनाया गया। अफशोष की बात है कि यह हमारे मंडली में किसी प्रकार का कार्य-क्रम नहीं था।

रांची : ३१ वीं अगस्त को हमारे के. एस. एस. अहाते में विकास मैत्री का विस्तृत सदस्यों की समिति बैठकी हुई जिसमें स्थानीय धर्म अगुओं के अतिरिक्त बिहार के अन्य जगहों से भी धर्म अगुवे आ पधारे हुए थे। बैठकी में विशेष कर विभिन्न विकास-कार्यों में बेहतरीन सहयोग की सम्भावनाओं के विषय विचार विमर्श किया गया कि इस इलाके के विकास में उचित प्रगति लायी जा सके। (खकपस)

राउरकेला : राउरकेला क्रिश्चियन कौंसिल की ओर से ७-११ जनवरी १९७४ में छोटानागपुर और छतीसगढ़ क्षेत्र के सभी पादिरयों के सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें ५००-६०० तक पादिरयों तथा ले-लीडरों के एकत्रित होने की आशा की जाती है। आने-जाने तथा खाने-पीने का खर्च "वर्ल्ड विजन अन्तराष्ट्रीय" की ओर से लगभग ७०,०००.०० (सतर हजार) रूपये की मांग की गई है। इस क्षेत्र से संबन्धित विषय पर भाषण देने के लिये दुनियाँ के हर हिस्से से चुने हुए विद्वान आ रहे हैं। भाषण हिन्दी में अनुवाद किये जायेंगे। इसकी तैयारियाँ जोरों से की जा रही हैं। सभी कलीसियाओं से इसकी सफलता के लिये प्रार्थना की अपील की जाती है।

धर्म प्रदेश से गोस्सनर कलीशा में :—राउरकेला फार्टिलाइजर प्लान्ट के समीप पूरब में झारसुगुडा नामक

Gossner Mission

एक छोटी मंडली है। इस मंडली के भाइयों तथा बहनों ने देखा कि धर्म प्रदेश केवल एक जाति याने उराँव लोगों का संगठन है जो खुस्तान कलीशा की मूल शिक्षा तथा उद्देश्य के विरुद्ध है। अतः १ जुलाई ७३ को इस मंडली ने यह निर्णय किया और घोषणा कर दी कि वे आगे को के० एस० एस० की अधीनता में हो जाएँ। घोषणा पत्र की एक प्रति प्रमुख अध्यक्ष, अंचल अध्यक्ष तथा पेरिश पाद्री को भेज दी। इसी बीच धर्म प्रदेश की ओर से उन्हें समझाने के लिये २६ जुलाई ७३ को कमीशन भेजी गई। परन्तु उन्होंने साफ जवाब दिया "कि तुम हमें कितने अखाड़ों में नचाओगे। एक बार नार्थ जोन फिर धर्म प्रदेश और न जाने पीछे और क्या क्या बनाओगे। गोस्सनर कलीशा एक है। यह सब जातियों के लिये है। तुमने जाति पाति का भेद भाव कलीशा में ले आया है। हम आगे को तुम्हारी एक भी सुनना नहीं चाहते हैं।"

अतः उनकी अर्जी पर १५ अगस्त ७३ को अंचल अध्यक्ष और पेरिश पाद्री ने जाकर उन्हें गोस्नर कलीशा का अंग स्वीकार कर लिया।

जुनास बागे, पाद्री
राऊर केला

लोहरदगा :— अति हर्ष से सूचित करते हैं कि लोहरदगा में जुलाई ७३ में "युवा मैत्री संघ" की नवस्थापन पाद्री पी० बागे की अध्यक्षता में हुई। संघ को क्रियाशील बनाने के लिये पांच उपशाखाओं (समितियों) में बाँटा गया है। हर समिति एक-एक कार्यपालक सचिव के विशेष जिम्मेवारी में है। संघ के पदधारी निम्न प्रकार हैं :—

श्री सजीत कुमार लकड़ा ... सभापति
सुश्री इन्दु एक्का ... उपसभापति
श्री हिलारियुस तिर्की ... महा सचिव
श्रीमती फुलमनी मिंज ... सह सचिव
सुश्री बहालेन तोपनो ... कोषाध्यक्षा
श्री जीवनमसीह लकड़ा ... कार्यपालक सचिव, अध्ययन परिषद
श्री अरुण किन्डो ... कार्यपालक सचिव, नाट्य परिषद
श्री नीलम किन्डो ... ,, ,, वादविवाद परिषद
श्री सलील लकड़ा ... ,, ,, क्रीड़ा विभाग
श्री याजरस मिंज ... ,, , समाज कल्याण

हर परिषद में चार-चार सदस्य हैं। साथ ही संघ में पांच अभिभावक सलाहकार हैं। संघ का साधारण कार्य-क्रम है साप्ताहिक समाज, वादविवाद, नाटक, समाज सेवा, खेल कूद, समाज कल्याण, संगीत अध्ययन, कार्य शिविर इत्यादि। इस समय संघ द्वारा श्री विनकस एक्का, राँची के सुसहयोग से फूटबॉल लीग मैच चलाया जा रहा है। इसमें सिल्ड रखा गया है। सिल्ड का नाम हमारे अति, आदरनीय प्रथम चर्च प्रेसीडेन्ट स्वर्गीय पाद्री हनुक दत्त लकड़ा के स्मरणार्थ "H. D. Memorial Shield" रखा गया है। यह मैच संघ के क्रीड़ा विभाग द्वारा लूथरन उच्च विद्यालय मैदान में खेलाया जा रहा है।

पाठकों से नम्र निवेदन है कि इस युवा मैत्री संघ को दैनिक प्रार्थना में याद करें एवं मार्ग दर्शन के सुझाव भी दें।

हिलारियुस तिर्की
महा सचिव यु० मै० सं०, लोहरदगा

चाईबासा : चाईबासा युवामंडल की झांकी :— कलीशा के सभी भाई बहनों को मसीही नमस्कार! यों तो चाईबासा मण्डली का नाम तो सभों ने सुना होगा। शायद बहुतों को यहाँ की परिस्थिति की जानकारी भी होगी। जिन्हें यहाँ की जानकारी है और वे यदि गहराई तक उतरने की कोशिश करते हैं तो वे यह समझ पाते हैं कि यहाँ की समस्य बहुत ही जटिल है। वास्तव में है भी ऐसा ही। फिर भी यहाँ के भाई-बहनों, बुजुर्गों एवं बच्चों का जोश आत्मिक रीति से बढ़ता ही जा रहा है। मण्डली के सदस्यों का आत्मिक तथा धार्मिक जोश देखने से ऐसा लगता है कि यहाँ की परिस्थिति से सभी अनभिज्ञ हैं। जी नहीं, ऐसी बात नहीं है। यहाँ की परिस्थिति को मण्डली का बच्चा बच्चा जानता है किन्तु किसी के हृदय में धार्मिक जोश की कमी नहीं आई है अपितु बढ़ती ही जा रही है।

मण्डली के जवान-युवतियों का धार्मिक जोश भी अनूठा है। हर्ष के साथ मुझे बताना पड़ रहा है परिस्थिति बिल्कुल विपरीत होने पर भी युवामंडल अति

सुचारू रूप से चल रहा है। इसका संगठन युवक एवं युवतियों के अनुपम जोश, एकता और सहयोग के बल पर ही हुआ है। १९६९ ई० के पहले यहां की युवामंडल बहुत ही सुचारू रूप से चल रही थी। इसकी स्थापना 'ज्योति सेना' द्वारा हुई। मण्डली के युवक-युवति एवं बच्चे ज्योति सेना के रूप में ही संगठित थे। १९६६ में केंद्र अर्थात युवा विभाग की ओर से ऐसा सुझाव दिया गया कि युवक-युवतियों की एक अलग संस्था कायम की जाय और उसका नाम "युवा मंडल" रखा जाय। उसी सुझाव के अनुसार १९६६ में युवा-वर्ग की अलग संस्था बनी और इस प्रकार चाईबासा मण्डली में सर्वप्रथम 'युवा मंडल' की स्थापना की गई। किन्तु उसके बाद यह संस्था टूट सी गयी और युवा दल भी छिन्न-भिन्न सा हो गया।

१९७१ में कुछ युवकों द्वारा निर्णय किया गया कि युवा मंडल को फिर से स्थापित किया जाय। अतः उसी वर्ष युवा मंडल की पुनः स्थापना की गयी। शुरु में इसकी अवस्था ठीक नहीं थी। सदस्यता संख्या बहुत कम थी। किन्तु इसे किसी प्रकार टूटने न दिया गया। १९७३ के फरवरी माह से धीरे-धीरे स्थानीय एवं बाहर से आये शिक्षार्थियों में एक अजीब सी जोश पैदा हुई। धीरे-धीरे सदस्यता संख्या में वृद्धि होने लगी। सर्वप्रथम युवा मंडल का उद्देश्य सिर्फ प्रार्थना समाज करना, सभाएँ बैठना एवं एक्समस गेदरिंग ही था। किन्तु धीरे-धीरे युवा वर्ग में धार्मिक जोश की वृद्धि हुई और युवा मंडल को बुजुर्गों का सहयोग एवं उचित निर्देशन भी मिलता गया।

वर्तमान परिस्थिति को बताते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि इसकी सदस्यता संख्या बढ़ती ही जा रही है। समय-समय पर मण्डली एवं पेरिस के अन्य-कार्यकर्ताओं द्वारा भी सहयोग एवं निर्देशन हमें मिलती जा रही है। युवा मंडल का नया नया सत्र जुलाई माह से शुरू होता है और हमने २९-७-७३ दिन रविवार को नये कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का चुनाव किया। चुनाव में बहुत से युवा सदस्य, जे० एम० बी० के सुपर भाईजर रेभ० आई० गुड़िया, मण्डली के प्रचारक एवं पंच और सण्डे स्कूल के बच्चे उपस्थित थे। नये कार्यकारिणी समिति के सदस्य इस प्रकार हैं :—

१ अध्यक्ष—श्री याकूब सोय मुरूम।
२ उपाध्यक्ष—श्री मनोहर कुजूर।
३ सचिव—श्री जोर्ज समद "अकेला"।
४ उपसचिव—श्री विल्फ्रेड तिड़ू "राज"
५ कोषाध्यक्ष—सुश्री पूर्णिमा टोप्पो।
६ मंत्री—श्री आसफ टोपनो।
एवं ७ मंत्री—श्री जोसेफ एक्का।

पेरिश के आदेश अनुसार युवा मंडल अपना प्रतिनिधि मंडली एवं पेरिश सभा में भी भेजती है जो निम्न प्रकार है :—

१ प्रचारकपन में—(क) श्री मनोहर कुजूर
(ख) श्री जोर्ज समद
२ पेरिश सभा में—(क) श्री जोर्ज समद
(ख) श्री कुलन गुड़िया
३ स्थानीय प्रोपर्टी बोर्ड सब कमिटि में—श्री याकूब सोय मुरूम

संस्था का प्रधान उद्देश्य है—युवक-युवतियों में आत्मिक जोश पैदा करना और आत्मिक जीवन को विकसित करना, सन्डे स्कूल एवं प्रार्थना समाज चलाना, मण्डली के कामों में सहयोग देना, मण्डली तथा दूसरे युवकों में मसीही सहभागिता तथा सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना आदि। वर्तमान में युवा मंडल हर शनिवार को टोलों में प्रार्थना समाज चलाती है, अपना रविवारीय आराधना करती है एवं सण्डे स्कूल चलाती है। मण्डली के कामों में भी अपना सहयोग दे रही है।

कलीसा के सभी भाई-बहनों से निवेदन है कि हमारे युवामंडल को अपनी प्रार्थनाओं में याद करें ताकि प्रभु अपनी पवित्र इच्छानुसार इसकी अगुवाई करे, यह संस्था फुले, फले सुदृढ़ बने एवं प्रभु की साक्षी का कारण बने।

प्रभु में आप सभों का विनीत
ज० समद 'अकेला', सचिव
चाईबासा युवा मंडल

Gossner Mission

समाचार देश-विदेश

काठमांडु/नेपाल : प्राप्त समाचार से मालूम होता है कि विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं के बावजूद वहां का मिशन काम प्रगति में है, धर्मखोजक बढ़ते ही जा रहे हैं।

खबर कागजों में छपे समाचारों के अनुसार नेपाल की सरकार ने घोषणा की है, कि युनाइटेड मिशन टू नेपाल द्वारा स्थापित सभी अस्पताल सरकार के द्वारा ले लिये जायंगे। घरबन्धु के पाठकों को स्मरण दिलाते हैं कि नेपाल में ३० मिशन सोसाइटी मिलकर काम कर रहे हैं, यू. एम. एन. से ये जाने जाते हैं इसमें गोस्सनर मिशन भी एक है। अब देखना है कि उपरोक्त सरकारी घोषणा से काम पर क्या प्रभाव पड़ेगा। (खकपस)

आइजेनाख (पूर्वी जर्मनी) : एल. डब्ल्यू. एफ. के २३ सदस्यीय कार्य-कारिणी समिति की बैठकी इस लुथर शहर आयजेनाख में हुई। सभा-उद्‌घाटन आराधना में १५०० से अधिक लोगों ने भाग लिया। डा. मिको युवा प्रेसीडेन्ट ने इसी आराधना में एक प्रभावशाली उपदेश दिया।

सन्तलुइस (यु. एस. ए.) : डा० तीत्जेन जो कॉनकोर्डिया सेमीनरी प्रेसीडेन्ट (प्रिंसिपल) भी थे, सिनोड सभा के द्वारा उनकी कथित कुशिक्षा के कारण निष्कासित किये जाने पर कॉन्कोर्डिया के ५० शिक्षक-दल ने इसके विरुद्ध एक घोषणा की है और सिनोड सभा के फैसले को अनियमित कर दिया है।

टोकियो : जापान की लुथरन कलीसिया की दृढ़ आशा है, कि वे शीघ्र ही स्वपालित हो जायेंगे रेभ: साचिवो होशियामा, प्रेसीडेन्ट का कथन है कि वे (१७६७८ सदस्य) अपनी जवाबदेही पहचान कर स्वपालित की ओर जाना चाहते हैं। उन्होंने कहा "हमारा बल सुसमाचार के निर्भय प्रचार में ही है, हम बिना किसी से डर कर सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं"।

जेनेवा : नामिबिया में अब भी काले-गोरे का तनाव बना हुआ है। काले-गोरे की एकता पर जोर देने और उसके लिये आहवान करने वाले एक जर्मन पादरी वोल्फ गांग कुठार को नामिबिया से सरकार द्वारा निष्कासित कर दिया गया है।

जेनेवा में कोशिश की जा रही है कि लुथरन और पेन्तीकोष्टल लोगों के साथ कथोपकथन की सम्भावनाओं पर अनुसन्धान किया जाय। यह विशेष कर ब्राजील के पेन्तीकोष्टल प्रेसीडेन्ट रेभ० मानुएल डे० मेलो के प्रयास से आरम्भ किया गया है।

टोकियो : जापान के लुथरन मसीहियों ने जापान के पवित्र-स्थानों के राष्ट्रीयकरण के विरुद्ध आवाज उठायी है। यह विधेयक १९७२ ही से पड़ा हुआ है बीच में रुक गया, अभी इस पर फिर बात चीत शुरू हुई है। शिन्टोइज्म को छोड़ प्रायः सभी धार्मिक दलों ने इस सम्भावित विधेयक की कड़ी आलोचना करते हुए विरोध प्रगट किया है। (एल डब्ल्यु के सौजन्य से डा. सिंह)।

नागपुर : मारथोमा कलीसिया ने मत प्रकट किया है कि कलीसिया की सेवकाई के लिये और अधिक विशप नियुक्त किये जायँ।

मारथोमा कलीसिया के थिऑलॉजिकल कॉलेज (कोटायम) में भी अब बी. डी. स्तर की पढ़ाई होगी, और सिराम कॉलेज (विश्वविद्यालय) से सम्बन्धित होकर इस स्तर तक बी. डी. परीक्षा भी करायेगी।

बम्बई : विशप ए. डब्ल्यु लुथर ने जो चर्च ऑफ नोर्थ इन्डिया के विशप थे अपनी स्तीफा दी ताकि "कोढ़ रोग मिशन" विभाग में काम कर सके। वे अब बम्बई से पुना आ जायेंगे और वहीं से इस मिशन के कार्य को सम्भालेंगे, वे आगे भी विशप रहेंगे पर किसी डियोकीस उनके अधीन नहीं रहेगा।

Gossner Mission

नागपुर : पाद्री माथरादास जो भारतीय मिश्नरी हैं, जापान की जुवा (फीजे) से लिखते हैं कि वे वहां सकुशल पहुंच गये हैं और अपना काम भी आरम्भ कर दिया है। वे वहां के मसीहियों के सहयोग और सहायता की भी चर्चा करते हैं। स्थानीय मसीहियों के सहयोग और जोश से पाद्री दास को भी बड़ी खुशी है।

नागपुर : पाचमढ़ी में मसीही लेखकों का एक शिक्षा शिविर सम्मिलन का आयोजन था यह नेशनल क्रिश्चियन कौंसिल की ओर से आयोजित था, विभिन्न कार्य दलों में अनुभव किया गया कि मसीही लेखकों को भारत के समाज एवं संगठनों के लिये विशेष पाठ अदा करना है।

बिलम्बित शोक समाचार

पानीसानी इलाका मिशन-क्षेत्र बघमा (बाँधटोली) के श्री पौलुस कुला को ईश्वर पिता ने ८० वर्ष की उम्र में पैंखाना ओ बुखार से २६-५-७३ को सनातन विश्राम के लिये इस संसार से बुला लिया।

वे गैरमसीही नगसिया और रौतिया भाइयों के बीच बजरा के रहने वाले थे। वहीं रहते उन्होंने जवानी उम्र में १९२२ ई॰ में प्रभु को त्राणी ग्रहण किया एवं काफी दूर होने पर भी पानीसानी गिर्जा आते थे। उन दिनों के हितचिन्तकों ने पालकोट राजा के मिस्ट्रेस की बेटी से १९२४ में उनकी शादी करा दी।

तत्पश्चात वे १९२५ में बघमा आकर जंगल ठिकेदारी करते करते जगह-जमीन बन्दोबस्त कर लिये और सुन्दर मकान भी बनवा लिये। बघमा (बाँधटोली) के तीन मसीही परिवार नवाटोली (उमड़ा) गिर्जा जाते थे। वे कई बार इलाका सभा के सदस्य हो कर विश्वस्तता से मंडली एवं इलाका की सेवा किये।

जब बघमा मिशन कार्य का केन्द्र बनाया गया तब पा॰ सामुएल डुंगडुंग की अगुवाई में वहीं गिर्जा खड़ा किया गया। बुढ़ापे की उम्र में होने पर भी उन्होंने तनमन से मंडली की सेवा की। मसीही सेवकों के प्रति उनकी भक्ति थी। पा॰ अ॰ मिंज उन्हीं के मकान में रहते थे तथा वर्तमान मिशन-क्षेत्र के प्रचारक इलियास केरकेट्टा भी उन्हीं के मकान में रहते हैं। उनकी एकलाही बेटी श्रीमती हुलासी की शादी टकरमा के मास्टर श्री युनाथान तोपनो के बेटे श्री विजय तोपनो से हो गई है। अब परिवार में उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कुला बुढ़ापे की अवस्था में है। ईश्वर परिवार ओ कुटुम्ब को शान्ति देवे।

Rev. H. M. Bage
Panisani

भूल सुधार

घरबन्धु सेतम्बर अंक पृष्ठ १४ में दो जगह छपाई भूल हुआ है, उसका सुधार नीचे दिया जाता है :—

I २ पेनसन दर :— (क) पहली जनवरी १९७४ को प्रचारक/प्रचारिका, जिनका उम्र ६५ वर्ष हो जायगा, कार्य मुक्त (रिटायर) कर दिये जाएँगे, तथा उन्हें पेनसन दिया जायगा। पेनसन पाने वालों में उन प्रचारक/प्रचारिकाओं को भी सामिल किया जायगा जो १ ली जनवरी १९६८ से आज के दिन तक में कार्य मुक्त हो चुके हैं। चूंकि उन प्रचारक/प्रचारिकाओं को पेनसन फण्ड में चन्दा देने का अवसर नहीं होगा, उनको निम्न दर से पेनसन मिलेगा :—

II ३- (१) मृत्यु के बाद पेनसन :— ऐसे प्रचारक/प्रचारिका जो १५ साल या उससे अधिक काम किया हो पर ६५ वर्ष उसकी उमृ न हुई हो और अवकाश ग्रहण

Gossner Mission

करने के पहले मर जाय, तो प्रचारक/प्रचारिका का अपना निज चन्दा तुरन्त उसके वारीसन को दे दिया जायगा, और प्रचारक/प्रचारिका का माहवारी पेनसन जो भी हो, उसका एक तिहाई उसके वारीसन को दिया जाएगा।

पाद्री विमल मिंज
जी· ई· एल· चर्च, रांची।

WORLD SUNDAY SCHOOL DAY

Sunday, November 4th, 1973

Under the auspices of the India Sunday School Union this day will be observed by numerous Sunday Schools all over the country as a day of prayer and thanks-giving for the Christian nurture of the young and for supporting the services of the I. S. S. U. to the Church in India. The I. S. S. U· is printing a .Worship Programme including *a play* entitled

"EMMANUEL"
(God with us)

One copy of the programme *free*; additional copies at 50 p. World Sunday School Day *Seals* at Rs. 3·00 for an album of 20 seals. Ask us for these immediately. On behalf of the India Sunday School Union, will you help to make the Day widely known in your area and urge your Church to observe it ?

Administrative Secretary
India Sunday School Union
Post Box No. 9
Coonoor, Nilgiris
South India.

जी· ई· एल· चर्च प्रचारक्स प्रोभिडेन्ट फण्ड

आज दुनिया में सभी विभाग के कर्मचारियों के हित के लिये प्रोभिडेन्ट फण्ड का इन्तिजाम किया गया है। इसका मूल अभिप्राय है कि जब कोई अपनी नौकरी से कार्य्य-मुक्त हो जाय, तो अपने बाकी जिन्दगी के लिये प्रोभिडेन्ट फण्ड रुपया से जीविका के लिये कुछ प्रबन्ध कर सके। इस आवश्यकता को महसूस कर हमारी कलीसिया ने भी पाद्रियों, प्रचारकों, प्रचारिकाओं एवं अन्य कर्मचारियों के लिये प्रोभिडेन्ट फण्ड का इन्तिजाम किया है। प्रोभिडेन्ट फण्ड की शुरुवात जब से हुई, हिसाब किताब चर्च कौंशिल ओफिस में और अब के· एस· एस. औफिस में रखी जाती, एवं समय की पूर्णता में चुकायी भी जाती है। परन्तु प्रचारक प्रचारिकाओं का प्रोभिडेन्ट फण्ड का हिसाब किताब, कलीसिया में अंचल नियमावली के आने पर अंचलों को दे दिया गया। उत्तरी-पच्छमी में तो किसी किसी इलाका को दे दिया गया है। इस प्रकार यह फणड एक ही औफिस में केन्द्रित नहीं है जैसा भी हो,

Gossner Mission

परन्तु प्रचारक/प्रचारिकाओं का प्रोभिडेन्ट फण्ड कलीसिया में है।

चूँकि कलीसिया में प्रचारक भाई लोग कई वर्ग के हैं नियम ऐसा बनाया गया है कि सिर्फ वे ही प्रचारक प्रोभिडेन्ट फण्ड के सदस्य हो सकते हैं जो उठालू प्रचारक (जो घर छोड़ दिया है) हैं। पर आनन्द की बात है कि ऐसे प्रचारकों की संख्या हमारी कलीसिया में कम नहीं है। इसी वर्ग के प्रचारक लोग कलीसिया की सेवा के निमित कठिन बलिदान किया है। वेतन बहुत कम है, जिस से परिवार सम्भालने और मण्डली की चरवाही करते हैं। समझ में नहीं आता कि किस प्रकार गुजर-बसर करते हैं। क्या इन प्रचारकों के लिये सम्भव है कि अपने वेतन से माहवारी पांच रुपया भी अपने अवकाश प्राप्त जिन्दगी के लिये बचा रखें? कदापि सम्भव नहीं है। इसी कारण कलीसिया ने इनके लिये भी प्रोभिडेन्ट फण्ड का प्रबन्ध किया है कि वेतन के अनुसार हर एक रुपया में आठ पैसा इस फण्ड में देवे। इलाका भी उतना ही देती है। इस प्रकार एक प्रचारक के प्रोभिडेन्ट खाता में वेतन अनुसार रूपया में सोलाह पैसा प्रति माह जमा होता है।

मान लिया जाय कि सोहन सुरिन नाम का एक प्रचारक है जिसका वेतन माहवारी ७५ रूपया है, तो उसके प्रोभिडेन्ट फन्ड खाता में कितना रूपया जमा होगा? १-१-१९७० से काम आरम्भ किया है। नियम अनुसार १-१-१९९५ में कार्य्य मुक्त होगा : —

	निज चन्दा	इलाका चन्दा
(क)	१ महीना में-६-००.	६-००.
(ख)	१ साल में-६×१२=७२-००,	६ ×१२=७२-००,
(ग)	२५ ,, में-७२×२५=१८००.००,	७२×२५=१८००-००

जोड़ — १२ -००.
१२ ×१२=१४४ -००
१४४×२५=३६००-००.

बूँद बूँद से तालाव भरता है। इसी प्रकार मिडिल ट्रेंड प्रचारक सोहन सुरिन, २५ साल की सेवा के बाद अपने प्रोभिडेन्ट खाता से ३६००-०० रुपया पा सकता है जो उसके अवकाश प्राप्त जिन्दगी के लिये कुछ सहायता हो सकता है। चूँकि प्रोभिडेन्ट फण्ड रुपया बैंक में रखा जाता है, सोहन सुरिन को कुछ सूद भी मिलेगा।

इन दिनों में मैं सभी अंचलों से उन प्रचारक प्रचारिकाओं का नाम मंगा लिया हूँ, जिनका प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोला गया है। अंचल अनुसार नाम इस प्रकार हैं :—

१.	मध्य (खुटीटोली) अंचल	—	—	—
२.	असम अंचल	—	—	—
३.	उड़ीसा अंचल	— ५७ +	७ =	६४
४.	उत्तरी-पच्छमी अंचल-	३२ +	९९ =	१३१
५.	दक्खनी-पूर्वी अंचल —	१४ +	९ =	२३
	जोड़	— १०३ +	११५ =	२१८

उपरोक्त आंकड़े से आप देख सकते हैं कि मध्य और असम अंचल में एक भी प्रचारक प्रचारिका नहीं है जिनका प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोला गया हो। क्या इन अंचलों में उठालू प्रचारक/प्रचारिका नहीं? उत्तरी-पच्छमी अंचल में, सच कहा जाय, तो केवल ३२, और दक्खनी-पूर्वी में १४ हैं। क्रमशः ९९ और ९ तो मिशन फील्ड के प्रचारक हैं। प्रशसा योग्य उड़ीसा अंचल है जहां मिशन फील्ड को छोड़ ५७ हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो पूरी गोस्सनर कलीसिया में, मिशन फील्ड को छोड़, कुल १०३ प्रचारक प्रचारिका है, जिनका प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोला गया है।

अब सवाल उठता है कि इतनी बड़ी कलीसिया में प्रोभिडेन्ट फण्ड के सदस्य इतने थोड़े क्यों? इसमें किसका दोष है? क्या प्रचारकों का, या अधिकारियों का? मेरे पास एक इलाका से रिपोर्ट आया है, जिसके अनुसार तो उस इलाके के प्रचारकों का है। इसी प्रकार अन्य इलाकाओं में भी हो सकता है। परन्तु प्रचारकों का दोष, एक छोटा दोष है। असली और बड़ा दोष कहाँ और किसका है, सो मैं प्रकाश करता हूँ।

जून १९४२ में मैं कण्डिदात होकर टकरमा में काम आरम्भ किया। उस समय मेरा इलाका चेयरमेन

माननीय पादरी सुलेमान कुला थे। उस समय मुझे मालूम नहीं था कि प्रोभिडेन्ट फन्ड क्या को कहते हैं, तथा उसके लिये मुझे क्या करना था। परन्तु मेरे इलाका चेयरमेन ने मुझको बिना पूछे मेरा प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोल दिया और बाद में मुझको सुना दिया। मैं आज भी उनका धन्यवादी हूँ, कि उन्होंने जुन १९४२ से मेरा प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोल दिया जो आज तक लगातार जारी है और मेरे खाता में ३१-१२-७२ को कुल १०,४५६.६५ जमा हो गया है।

मुझे कलीसिया में १७ साल इलाका चेयरमेन होकर कलीसिया की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस अवधि में मैं दो इलाके में काम किया। प्रोभिडेन्ट फण्ड के विषय में मैं ने दोनों इलाका में वही नीति अपनाई जो मैं ने अपने इलाका चेयरमेन पादरी कुला से सीखी। सभी उठालू प्रचारकों का प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोला। सभी प्रचारक खुश थे।

कलीसिया के मेरे संगी इलाका चेयरमेन भाई लोग मुझे क्षमा करेंगे, कि प्रचारक/प्रचारिकाओं के प्रोभिडेन्ट फण्ड के सम्बन्ध में पहली और बड़ी भूल तो इलाका चेयरमेनों द्वारा हो रही है। यह बिलकुल गलत तरीका है कि प्रचारक/प्रचारिकाओं को पूछना कि प्रोभिडेन्ट फण्ड के सदस्य बनना चाहते हैं अथवा नहीं। इस विषय में इलाका चेयरमेनों को अपने प्रचारक/प्रचारिकाओं से पूछना ही नहीं चाहिये, बरन सभी उठालू प्रचारक/प्रचारिकाओं का प्रोभिडेन्ट फण्ड खाता खोल कर उन्हें बाद में बता दें। चूँकि प्रोभिडेन्ट फण्ड उन्हीं के भविष्य जीवन के लिये है, मैं विश्वास करता हूँ कि कोई प्रचारक/प्रचारिका आप से नराज नहीं होंगे, बरन सराहेंगे। पूछने पर तो अनेक प्रकार की कठिनाईयों का वर्णन करेंगे ही, परन्तु जानना चाहिये कि कठिनाई तो सब समय रहेगा ही। यदि कोई कहे कि कठिनाईयों का समाधान करने के बाद मैं सदस्य बनूँगा, वह कभी भी पी० एफ० का सदस्य नहीं बन सकेगा। अत: सभी इलाका चेयरमेनों से मैं अपील करता हूँ कि जितने उठालू प्रचारक/प्रचारिका, जिनकी नौकरी का दृढ़ावा (Confirmation) हो गया है, उन्हें बिना पूछे उनका पी०एफ० खाता जल्द से जल्द खोल दें। आप के इस शुभ काम के लिये जो प्रचारक आप से नाराज होंगे और पी० एफ० खाता को बन्द करने के लिये दबाव डालेंगे उन्हें बदली कर अपने निज गाँव में स्थानीय या ओनरेरी प्रचारक बना कर उसका पी० एफ० खाता बन्द कर दीजिये यह मेरी सलाह है। पर मुझे विश्वास है कि कोई प्रचारक प्रचारिका, जैसे मैं पहले कह चुका हूँ, नराज नहीं होंगे बरन आप को सराहेंगे।

पादियों का पी• एफ• १९४१ से खोला गया। किसी-किसी अगुवे पादियों के मन में उन्हीं दिनों से यह भी मन में था कि पेनसन भी हो। अत: चर्च कौंसिल, लुथेरन वर्लड फेडरेसन से रूपया लेकर अवकाश प्राप्त पादियों को माहवारी १०-००, और कुछ वर्ष बाद में बढ़ा कर १५-०० देती थी। परन्तु यह पेनसन योजना के अन्दर से नहीं था। जब एल• डबल्यु• एफ• की सहायता बन्द होने का दिन आ गया, के• एस• एस• ने एक पेनसन समिति बनाई जिसका मैं ही कनवीनर था। पेनसन नियम बनाया गया तथा १-६-१९६६ से लागू हुआ और अब इसी योजना के अन्दर से अवकाश प्राप्त पादियों को पेनसन दिया जाने लगा है।

पादियों के पेनसन योजना लागू होने के प्रायः साढ़े सात बरस बाद १-१-१९७४ से अब प्रचारक प्रचारिकाओं के लिये भी पेनसन योजना लागू होने वाला है। के• एस• एस• द्वारा पास होकर अब अंचल समितियों की मंजूरी के लिये भेजा गया है। अंचल समितियों का फैसला ३०-९-७३ तक में के• एस• एस• औफिस में आना है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि सभी अंचल समिति द्वारा पास हो जायगा।

प्रचारक/प्रचारिकाओं के पेनसन नियम में एक धारा है कि पेनसन फण्ड का सदस्य होने के लिये यह अनिवार्य है कि वह प्रोभिडेन्ट फण्ड का सदस्य हो। अत: सिर्फ २१८ प्रचारक/प्रचारिकाओं को ही पेनसन दिया जा सकेगा जिनका अंचलों या इलाकाओं में पी• एफ• खाता है। अत: मैं सभी इलाका चेयरमेनों से और एक बार

Gossner Mission

अपील करता हूँ कि जितने उठालु प्रचारक प्रचारिकाओं का पी· एफ· खाता नहीं खोला गया है, उन्हें बिना पूछे उनका पी· एफ· खाता जल्द खोल दें कि वे भी पेनसन योजना से लाभान्वित हो सकें।

पाद्री बिमल मिंज
जी· ई· एल· चर्च, रांची

हेथाकोट्टा ईश्वरोपासनालय भवन

निमार्ण हेतु अनुरोध पत्र।

भाइयो एवं बहनों,

यीशु सहाय।

हर्ष की बात है कि छोटानागपुर में मसीही कलीसिया का उद्‌गम स्थान हेथाकोट्टा में एक आधुनिक ईश्वरोपासनालय का निर्माण किया जा रहा है। यह उपासनालय छोटानागपुर में मसीही धर्मोदय का प्रतीक होगा जो भविष्य में भी जीवते, सामर्थी प्रभु की गवाही देगा। इसके दृष्टि मात्र से ही दर्शक के मानस-पटल में दयालु परमेश्वर के प्रति भक्ति की अभिवृद्धि होगी। एवं श्रद्धा से उसका सर स्वतः झुक जायगा। क्योंकि इसी जगह से परमेश्वर की ज्योति छोटानागपुर की घोर अंधकार को फाड़कर प्रकाशमान हो रही है। इस जगह की महत्ता का आवलोकन कर जर्मनी की जनता ने नगद (१८,०००) अठारह हजार रूपैये की एक राशि राँची भेज दी है। ताकि यहां एक उपासनालय का निर्माण हो। इससे प्रोत्साहित हो कर रानीखटंगा पेरिश के बाजपुर गांव का एक गरीब भाई श्री स्तिफन लकड़ा ने बीस हजार ईंट का अनुदान दिया है। इस भवन का अनुमानित लागत ६०,०००) साठ हजार रूपैया है।

अतः आप से नम्रता पूर्वक अनुरोध किया जाता है कि इस भवन के निर्माणार्थ अपना व्यक्तिगत /मंडली/ पेरिश/ इलाका से स्वइच्छा दान पाद्री शिमोन बखला जी० ई० एल० चर्च, नोर्थ वेस्ट अंचल राँची के पते से भेज कर हमें कृतार्थ करें।

निवेदक-

पाद्री शिमोन बखला
हेथा कोट्टा बिल्डिंग कमिटि
चेयरमेन।

श्री गिलबर्ट मिंज़
हेथाकोट्टा बिल्डिंग कमिटि
खजांची।

श्री सुलेमान खलखो
हेथाकोट्टा बिल्डिंग कमिटि
सेक्रेटेरी।

कृपया इस प्रकार का फर्म को भर कर भेजें।

.................काटें.................काटें.................

हेथाकोट्टा ईश्वरोपासनालय निर्माणार्थ।

श्री / मंडली / पेरिश / इलाका............स्थान..........
पोस्टऑफिस.............जिला...............से नगद
.........रूपैया.........पैसा पाया।

सही

तारीख...............................प्राप्तकर्त्ता

—:x:—

Gossner Mission

सूचना

यह सूचित करते मुझे हर्ष हो रहा है कि "Bread for the world" (CASA) कासा के माध्यम से छोटानागपुर डिवीजन में सूखा और अकालग्रस्त क्षेत्रों को राहत पहुँचाने के लिए सक्रिय कदम उठाया जा रहा है। तदानुसार कासा (CASA) की यह तीव्र इच्छा है कि चूँकि जी० ई० एल० चर्च कलीसिया में "केन्द्रीय रिलीफ एंड डेभलोपमेन्ट कमिटी बन चुकी है और इसके द्वारा कुछ काम भी आरंभ हो चुके हैं एवं कासा (CASA) यह समझती है कि इसी कमिटी के माध्यम से बड़े पैमाने पर ऐसी परिस्थिति में कुछ काम के द्वारा राहत दी जा सके इसलिए कि समस्त छोटानागपुर भूखंड चाहे सूखा की स्थिति में है या तो कुछेक प्राकृतिक कारणों से भूख पीड़ित है।

अतः आप सभी धर्म अगुओं से अर्जी है कि आप अपने-अपने क्षेत्रों के लिए निम्न पाँच प्रकार की योजना तैयार करें।

1.	Big Irrigation Project–(एक के लिए)—1, – –	= 1,50 00 000 = 00
2.	Major Bandh—(मेजर बांध)—	1 000 × 25 000/ = 2,50,00 000 = 00
3.	Minor Bandh (माइनर बांध)—	1,000 × 10 000/ = 1,00 00 000 = 00
4.	Tanks—(तालाब)	100 × 25 000/ = 25 00,000 = 00
5.	Wells—(कुआँ)—	1,000 × 12,000/ = 1.20 00,000 = 00
		Total Rs. 6,45,00,000/-

योजना देते समय पूरे विवरण के साथ, खर्च की लागत धनराशि देना न भूलें। अधिक जानकारी के लिए "रिलीफ एंड डेभलोपमेन्ट कमिटी" के सेक्रेटरी से सम्पर्क करें।

आप का विश्वस्त,
बी० खेस्स
सेक्रेटरी
रिलीफ एंड डेभलोपमेन्ट कमिटी,
राँची

पादियों का शिक्षा क्लास

२०–२६ अक्टोबर, १९७३।

आप सभों को विदित किया जाता है कि पहले के समान इस वर्ष १९७३ में भी पादियों का शिक्षा क्लास राँची में होने का निश्चित किया गया है, अतः सभों से निवेदन है कि उक्त तिथि पर आप अवश्य उपस्थित हों और शिक्षा क्लास में भाग लें। पादरी मार्टिन सिवेर्ग डाइरेक्टर, गोस्सनर मिशन बेर्लिन इस क्लास में उपस्थित रहेंगे।

कृपया ध्यान दें कि मिनिस्टरियम मीटिंग २१ ता० शाम ५ बजे, ख्रिस्त गिर्जा राँची में होगा जिसमें सब को उपस्थित होना है।

Gossner Mission

पादियों के रहने तथा खाने का स्थान गोस्सनर थेयोलोजिकल कालेज रांची अहाते में रहेगा। सभों को मेस ही में खाना खाना होगा, अतः कोई अलग से व्यक्तिगत इंतजाम न करें। अपने साथ थालर, मछड़दानी, मग एवं अन्य आवश्यक चीजें साथ में लेते आवें। के० एस० एस० द्वारा टी० ए०, रेलवे किराया (तीसरे दर्जे) का एवं बस किराया दिया जायगा। भोजन के लिये प्रति व्यक्ति को प्रतिदिन पांच रूपैया के हिसाब से सात दिनों का तथा रजिस्ट्रेशन फी १ रू० प्रति व्यक्ति देना होगा। आप अपने भोजन वगैरह के लिये आवश्यक रूपैया इलाकाओं से बन्दोबस्त कर लेते आवें।

प्रभु में आप लोगों का विश्वस्त,
प्रमुख अध्यक्ष,
जी० ई० एल० चर्च, रांची।

हृदय-सदन में

बी० एस० टुटी, "रँगीला"

प्रवृति गिरने की मुझ में
प्रभुवर, अत्यन्त प्रबल है।
उठता हूं, फिर गिरता हूं,
गिरता-उठता प्रतिपल हूं!

सुख-दुःख मेरे जीवन में,
करते क्रीड़ा मनमानी।
मेरे रँगीला' जीवन की,
है अद्भुत यही कहानी!

मैं दीन अभी रहता हूं,
बनता क्षण में अभिमानी।
मैं भूल तुझे भी जाता,
पापान्ध, मूढ़ अज्ञानी मैं?

जब मन मन्दिर में तेरे,
मन की पीड़ा कटु होगी!
आशा की दुर्बल रेखा;
मिटते-मिटते पर होगी!

कभी भूल प्रभो मत जाना,
उसको भूला जो तुझे भूलूँ,
पर अपने हृदय-सदन में,
प्रभुवर ले लेना मुझ को!!

मसीही युवक और युवतियाँ

स्वतंत्रता का उलझन—

आजादी किस को पसन्द नहीं? चर अचर सभी उसे अपनाना चाहते हैं। चिड़ियें भी पिंजड़े के बाहर खुली हवा में स्वच्छदता पुदकना चाहती हैं। नदियाँ भी कलकल करती स्वच्छंदता से दौड़ना, भागना चाहती हैं, समुद्र की ओर। स्वतंत्रता सच में प्यारी है। मानव तो इसको पाने के लिए सभी कुछ त्याग करने को तैयार रहता है और इसके लिए प्राणों की होली भी कितनी

Gossner Mission

बार खेल चुका है। हम स्वतंत्र हैं, स्वतंत्र देश में रहते हैं जहां आजादी हवा, पानी, सभी चीजों में व्याप्त है। आज.दी है हमें धर्म, भाषा इत्यादि सभी चीजों की। पर आप जरा उस से एक कदम और आगे आईये और १० जुलाई १९१९ के **ओटोनोमी** दिवस को याद करें जिस दिन हमारी नन्ही सी मण्डली को स्वतंत्रता मिली थी और उसी दिन से वह आजादी की स्वांस ले रही है। इतने दिनों की अवधि में परमेश्वर ने हमें अनुग्रह पर अनुग्रह दिया, हम बढ़े, पनपे और हमारा रुपरेखा एकदम बदल गया।

स्वतंत्रता एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ लगाना कठिन है और सम्भवतः कितनों ने इसका अर्थ गलत लगाया है। दुनियाँ की बात लीजिए तो स्पष्ट होगा कि कितनों ने स्वतंत्रता को खिल्ली उड़ायी है और उसका माने गलत लगाया जिसका फलाफल है गंदी साहित्य, मैली फिल्में, उदण्ड छात्र, ध्वंसकारी आवाज और नग्नता की लीलाएं। कहते हैं क्या आजादी में सभी को सभी काम करने की स्वच्छंदता नहीं है। स्वतंत्रता का यह रूप तो सत्य से एक कदम परे है। सच कहिये तो स्वतंत्रता आती है और अपने साथ नियम या बंधन भी लेते आती है जिसको पैरों से कुचल कर स्वतंत्रता का पौधा पनपने का नहीं और न फल देने का। एक हवाई जहाज बनता है और उसे प्राकृतिक नियम (Natural laws) पर आधारित होना पड़ता है। बड़े बड़े इमारत बनते हैं और ये भी प्राकृतिक नियम के अन्तर्गत ही बनते हैं। उस नियम को तोड़ कर ये इमारतें नहीं खड़ी की जा सकती है।

आत्मिक जीवन का भी ऐसा ही रूपरेखा है। १० जुलाई,१९१९ को हमारी मण्डली में आजादी प्राप्त की और अपने बलबूते पैरों पर खड़ी हो गयी। उसे स्वतंत्रता मिल गयी जो अब तक जिसे हासिल है। कितने लोग सोचते हैं कि इस पृष्ठभूमि में हमें कुछ भी करने का हक है चाहे भला हो या बुरा, चाहे उस करनी से मण्डली बढ़े या घटे या हंसने का कारण बने। यह धारणा तो नितांत गलत है। परमेश्वर ने आदि मे मनुष्य को आत्मिक नियम (moral law) दिया और नये नियम में हमारे प्रभु यीशु में उसने हमें अनन्त जीवन दिया। जिसके नियम अभी भी वही हैं।

करीब दो हजार साल पहले प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहा था "...यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"। उसने अपनी यह प्रतिज्ञा अपने चेलों को दी कि सच्ची स्वतंत्रता उन्हें प्राप्त है जो उसपर विश्वास करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है। अतः मसीह पर विश्वास करना ही स्वतंत्रता प्राप्त करने की बुनियादी बात ठहरी जिसके द्वारा हम सत्य को जान सकते हैं और यर्थात् में आजादी पा सकते हैं। मसीह पर विश्वास करना कुछ कठिन बात नहीं है। एक छोटा नन्हा भी यह कार्य कर सकता है। यह काम आसान है और लोग मसीह के सुसमाचार को इस कारण भी दुत्कार देते हैं। मसीह पर विश्वास करने से जीवन पलट जाता है, नई सृष्टि हो जाती है।

मसीह ने जिस स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा दी है उसकी प्राप्ति सत्य के ज्ञान प्राप्ति से होती है। विश्वास तो हम मसीहियों के लिए नेत्र है जिससे हम अनदेखी चीजों को भी देखते हैं मृत्यु के पार स्वर्ग को जिसे दुनियाँ देख नहीं सकती। सत्य उसी को प्राप्य है जो मसीह पर विश्वास करता है। इसको छोड़ और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। मनुष्य न इतना पवित्र या उसकी मानसिक शक्ति इतनी बलशाली है कि सत्य को स्वयं ही जान सके या अपने कर्म से उसके निकट आ सके। सत्य (Formulated revealed reality) प्रगट हुआ यीशु मसीह में। यही सत्य पुराने नियम में प्रकाशित हुआ और इस्राएलियों ने देखा कि परमेश्वर शक्तिशाली है पवित्र और सदा करुणामय है। मसीह के आगमन में हम परमेश्वर को देख सकते हैं छू सकते हैं—यूहन्ना प्रेरित कहता है कि "जिसे हम ने सुना, हमने ध्यान से देखा और हाथों से छूआ"। परमेश्वर की सत्यता मसीह में प्रगट हुआ, इसी दर्पण में मनुष्य अपने आप को देखकर पहचान सकता है और जान सकता है कि मैं कहाँ से आया, कहाँ जा रहा हूँ और कूच कर कहाँ जाउँगा—यथार्त में सच्चा धर्म तो यही बतलाता है।

सत्य मनुष्य को आजाद करती है। "...और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"—इसका अर्थ निकलता है कि एक निर्धारित नियम (regulated principles) है जिस पर चलने से, आज्ञाकारी बनने से सत्य एव स्वतंत्रता प्राप्त होती है। आत्मिक रीति से हम सबके सब पाप के दोष और अपराध के कारण मरे हुए थे, क्रोध के सन्तान और मन से परमेश्वर के बैरी थे। पाप के दास थे और मसीह ने इससे हमारा उद्धार किया। बिना मसीह के स्वतंत्रता नहीं है। उसी के द्वारा जीवन बदलता है और हम स्वतंत्रता के उपासक और भोगी बन जाते हैं।

अतः मसीही युवक और युवतियों से मेरी अर्ज है कि मण्डली, जिसका नेव और सिर प्रभु यीशु स्वयं है, की नियमों और विधियों के अन्दर ही वे अपने को बनाए रखें क्योंकि स्वतंत्रता प्रभु यीशु में ही है। उसके नियमों और विधियों को तुच्छ जान कर या तिलांजली दे कर आकाश में विचरण करने की कदापि यत्न न करें क्योंकि उसने अपनी प्रतिज्ञा दी है कि यदि तुम मेरे बचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। आप सभों का जीवन तो ऐसा स्वच्छ और निर्मल होना चाहिए कि मसीह स्वयं ही आप में दिखाई दे और लोगों ने जिस तरह पतरस से पूछा था। वैसा ही आप के जीवन को देखकर पूछें कि तू भी यीशु नासरी के साथ था, सचमुच तू भी उनमें से एक है क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है और क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी (जगत) में न देखा था? सभी अपने जीवन में खरा और स्वच्छ उतरें पूरी स्वतंत्रता के साथ; प्रभु से मेरी आप सभों के प्रति यही मनोकामना है।

बरदान एक्का
पटना

अपील

कृपया लेखक / लेखिकाएं घरबन्धु के अनुसार लिखें। छोटे व सुन्दर लेख एक ही ओर पन्ने में यथेष्ट जगह चारों ओर कम से कम एक इंच जगह छोड़ कर लिखें जायें। सम्वाद दाताओं से भी अर्ज है कि वे संक्षिप्त ढग से लिखें।

— सह सम्पादक

आशा

अशीयन पुर्ती, जशीपुर

अंधकार का साया बढ़ता ही जा रहा था, तुफान अपनी प्रचण्ड शक्ति का प्रर्दश्न करता रहा। ज्यों-ज्यों अंधेरा बढ़ता, आशा का हृदय किसी आशंका से कांप उठता। अन्य दिनों की भांति अबिनाश आज भी समय पर घर न पहुंच सका। अबिनाश तो सिर्फ नाम ही था वरना सच्चाई तो यह है कि आज अपने परिवार का बिनाश का कारण यही अबिनाश है। अच्छा खासा नामी पिता का पुत्र इंजिनियर का पतन इस हद तक होगा यह किसी की भी कल्पना सहज ही न जाती। प्रत्येक सुबह अबिनाश अपने किये पर पछताता और प्रतिज्ञा करता वह आशा को फिर किसी शिकायत का मौका न देगा। और आशा के हृदय में हर सुबह आशा की एक धुंधली किरण का उदय होता और सूर्य के अन्तिम किरणों के साथ आशा की किरण भी डूब जाती। फिर, चारों ओर अंधेरा छा जाता...... उसे लगता यही तो वास्तविकता है यही अंधेरा तो उसका जीवन है सांस है।

साधारण रूप से आशा बहुत सुन्दर और बुद्धिमान थी। अपना हित अहित भली भांति समझती थी। लेकिन उसकी सुन्दर सपनों का जाल तो शादी की पहली ही रात को टूट गया। अबिनाश ने कहा था.......आशा मैं जानता हूँ कि तुमने कितने सपने सजाए होंगे, कितने

[शेष अगले अंक में]

Gossner Mission

धन्यवाद, आपका ग्राहक चन्दा ३१वीं अगस्त तक मिला

1. Cate Zacharia Dang
2. Dr. W. Horo
3. Mr. Ps. Topno
4. Miss Ch Promila Lugun
5. Mr. H. Kongari
6. Rev. Shem Lakra
7. Rev. C. D. L. Kujur
8. Dr. T. C. Dell
9. Mr. Paulus Soy
10. Mr. Sugar Burh
11. Mr. Ananiah Lugun
12. Mr. Halan Soy
13. Mr. Jaimasih Topno
14. Mr. Elias Ekka
15. Cat S. K. Shal
16. Mr. Abraham Sanga
17. Shri Junas Topno
18. Mr. Nabin Minz
19. Cat. Titus Tete
20. Cat. Manmasih Toppo
21. Mr. C. K. Topno
22. Rev. I. Kiro
23. Mr. J. H. N. Toppo
24. Mr. C. K Minz
25. Mr. Eliazar Topno
26. Mr. Nichodim Hemrom
27. Mr. Enem Dang

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO ; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—

School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष—६३ राँची, [illegible]बर १९७३, संख्या नं०—१०

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ पी॰ टी॰ १५
वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६३ रांची, नवम्बर १९७३ संख्या नं० — ११

EINGEGANGEN
23. JAN. 1974
Erledigt ....

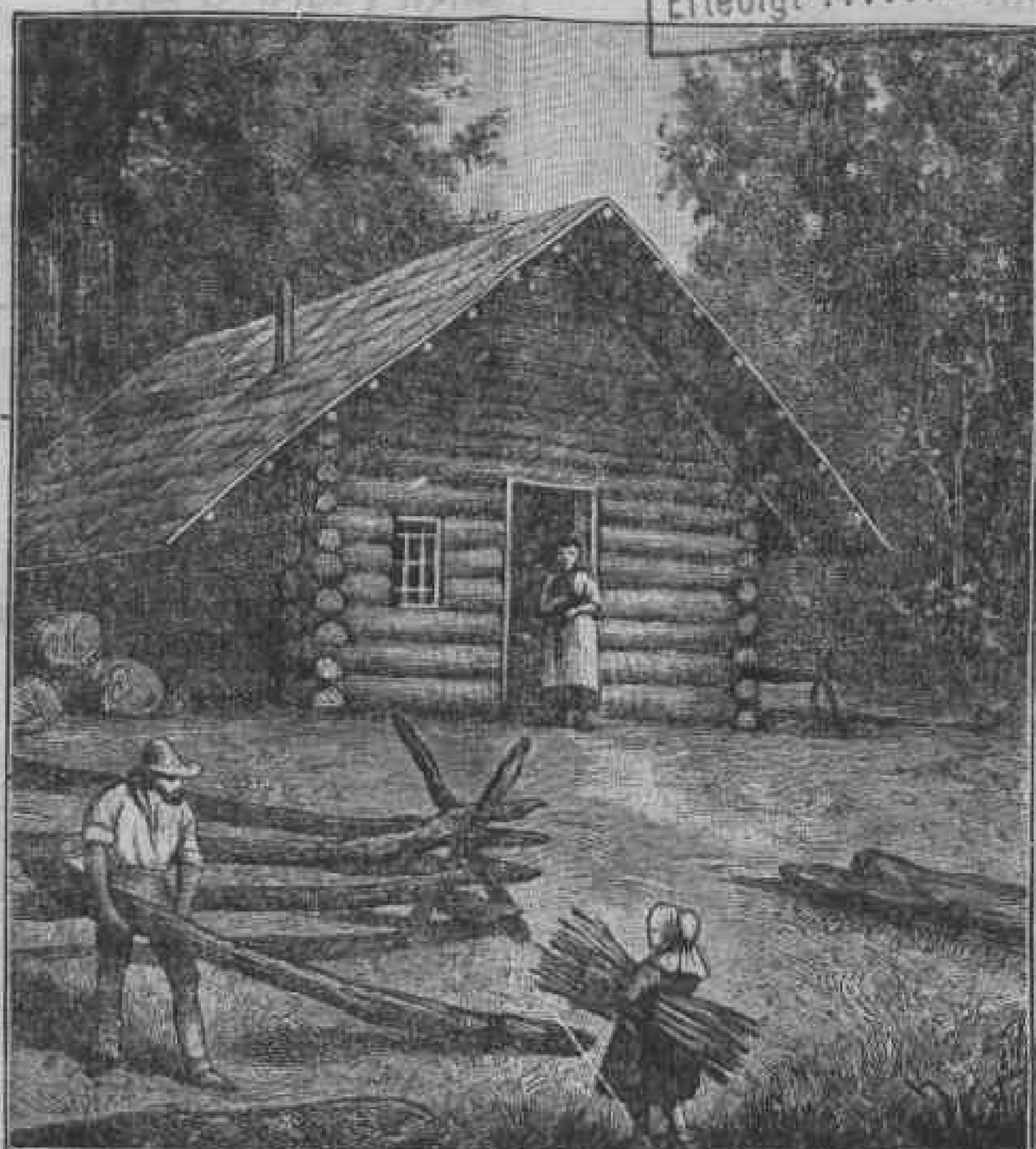

Rot Käppchen trifft den Missionar, der den Wolf erschlagen hat.

धर्मी के परिश्रम से तो जीवन प्राप्त होता है पर
दुष्ट को जो लाभ होता उससे पाप ही होता है।
(नीतिवचन १०:१६)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	— —	—	३
मिशन पर्व	— रेभ एम॰ टेटे	—	४
उपदेश की तैयारी	— मार्टिन टेटे	—	६
प्रतिज्ञात देश	— सबन मार्टिन	—	१०
कलीसियाई समाचार—देश विदेश		—	११
कृषि चर्चा	—	—	१४
शोक समाचार	—	—	१५
सूचना	—	—	१६
आशा (गतांक से आगे)		—	१६
मिशन पर्व		—	१८
गोस्सनर कलीसिया की सोचनीय···		—	१९
ग्राहक चन्दा		—	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता॰ तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी॰ ई॰ एल॰ चर्च [के॰ एस॰ एस॰ ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता॰ के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

सत्स जानके, बच और ब्रान्त नामक चार मिशनरियों ने राँची आकर २ नवम्बर १८४५ को हमारे मिशन अहाते में जहाँ आज भी जुबिली स्मरण पत्थर खड़ा है, डेरा डालने के लिये तम्बु खड़ा किया और सुसमाचार प्रचार कार्य आरम्भ किया। गोस्सनर साहब बड़े ही भक्त और प्रार्थना करने हारे जन थे जिसके वजह पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अगुवाई उनको मिली कि मिशनरी हिन्दुस्तान आएँ और उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु का ज्ञान दें उनको जो अब तक अन्धकार में थे ताकि वे यीशु ख्रिस्त से परिचित हों कि वही निरकेवल जगत के उद्धारकर्ता है और उसपर विश्वास करे और जीवन पावे। इन प्रथम चार मिशनरियों के परिश्रम पर परमेश्वर की बहुत बड़ी आशीष प्राप्त हुई। उनको कार्य करने में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। वे यहाँ की भाषा नहीं बोल सकते थे, यहाँ का भोजन उनके लिये रूचिकर नहीं था, आवागमन की सुविधा नहीं थी। ऐसा होते हुए भी वे धीरज और साहस के साथ यह जान कर कि उनको परमेश्वर ने ही इस कार्य के लिये बुलाया कठिन परिश्रम के साथ काम किया। फल यह हुआ कि मंडलियों की स्थापना होने लगी और आज लगभग दो लाख पचहत्तर हजार लोग इस कलीसिया के सदस्य हैं। इस महीने में हम फादर गोस्सनर को स्मरण करें जिनकी दो सौवां (२००) वर्ष गांठ १४ वीं दिसम्बर १९७३ को बेर्लिन में मनाने को निश्चित है। हम रांची में २ री नवम्बर १९७३ को मनाने जा रहे हैं इसलिये कि पास्टर सीबेर्ग डाईरेक्टर गोस्सनर मिशन बेर्लिन यहां उपस्थित रहेंगे। इस वर्षगांठ के उपलक्ष में रांची की महिलाओं ने जुबिली स्मरण पत्थर के चारों ओर एक घेरा बनवाया है जहां फूल वगैरह लगाया गया है उस छोटे पार्क का नाम गोस्सनर-पार्क रखा जायगा जिसका उद्‍घाटन २ री नवम्बर १९७३ को किया जायगा। यहीं उन चारों मिश्नरियों को भी हम स्मरण करें कि वे सुसमाचार प्रचार के लिये कितना बड़ा त्याग किये। हम कहें कि उन्होंने अपने जीवन को सम्पूर्ण रूप में इस कार्य के लिये बलिदान किया। हम उनके जीवन से प्रेरणा लें तथा २ नवम्बर १९७३ को सुसमाचार प्रचार कार्य के लिये प्रोग्राम बनावें, राज्य-वृद्धि गिर्जा के लिये इकट्ठे होवें तथा जो कुछ भी दान इकट्ठा होता है उसे मिशन कार्य के डाईरेक्टर के यहां जमा करें ताकि आने वाले समयों में भी हम इस कार्य को जो कलीसिया का प्रथम कार्य है कर सकें। कहा जाता है कि यदि मंडली मिशन कार्य नहीं करती तो वह मसीही होना भी बन्द करती है। मैं समझता हूं कि कोई मंडली ऐसा होना नहीं चाहेगी परन्तु यह भी सच्च है कि न चाहते हुए भी हम कभी कभी उसी प्रकार बन जाते हैं। परमेश्वर की आशीष हमें प्राप्त हो कि मिशन कार्य पर हम मन लगायें, प्रार्थना करें, हाथ बटावें ताकि यह पवित्र कार्य हम दुर्बल लोगों के द्वारा बढ़ती जाय।

जे. तोपनो
प्रमुख अध्यक्ष
जी० ई० एल० चर्च, राँची।

Gossner Mission

मिशन पर्व

मत्ती २१ : १८–२२

पलस्तीन देश में अंजीर का वृक्ष विशेष वृक्ष है। इसकी चर्चा बैबल के लेखक विशेष रूप से करते हैं (व्यवस्था ८ : ८, गिन्ती १३ : २३; १ राजा ४ : २५; मीका ४ : ४; जकर्याह ३ : १०) पुराना नियम के अनुसार सुख के समय इसराएल अंजीर के पेड़ तले बैठता था। दुःख के समय इसराएल अनुभव करती थी कि अंजीर का पेड़ ईश्वर के क्रोध के कारण भष्म किया गया है। (भजन १०५; ३३; यिर्मयाह ८ : १३; होशेया २ : १२) अंजीर का पेड़ उन्नति, शांति और उपजाऊपन का द्योतक था। पेड़ देखने में भी सुन्दर दिखायी देता था। पेड़ का धड़ दो फीट होता था। पेड़ की ऊंचाई १५-२० फीट तक होती थी। डालियाँ पेड़ के चारों ओर २५-३० फीट तक फैलती थी। पेड़ छाया के लिये अत्यन्त उपयोगी था। कुप्रस टापू में लोग अपनी झोपड़ियों के दरवाजे पर अंजीर पेड़ छाया के निमित लगाते थे। यात्री लोग पेड़ की ठण्ढी छाया में आराम करते थे। कभी कभी पेड़ की छाया में लोग प्रार्थना के लिये इकत्र होते थे। व्यक्तिगत उपासना के लिये भी अंजीर की छाया अत्यन्त उत्तम थी। नथानिएल अंजीर के नीचे उपासना करता था और यीशु ने उसे वहीं देखा था (यूहन्ना १ : ४८)।

उपरोक्त वर्णन में हम अंजीर के पेड़ की विशेषता देखते हैं। अंजीर का पेड़ यहुदी जाति की ओर संकेत करता है। यहुदी जाति में धर्म का ढोंग तो है पर फल नहीं फलनेवाला पेड़ नही परन्तु नहीं फलनेवाला पेड़ नाश हुआ। यहुदी जाति मसीह को अस्वीकार करने के द्वारा अपने विनाय में छाप दिया। २१ : २१ + २२ पद के साथ साथ हम १७ : २० पर भी ध्यान दें। जो मनुष्य के लिये असम्भव है, उसे परमेश्वर कर सकता है। जितने लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं उन्हें यह प्रतिज्ञा दी जाती है कि वे जो कुछ भी प्रार्थना में विश्वास करके मांगते हैं उन्हें दिया जाता है। इसी में पहाड़ों को हटाने की बात भी है। पहाड़ों का अर्थ असम्भव रोकने वाली बातें वा विषय है। परमेश्वर के अभिप्राय की पूर्णता में पहाड़ों के समान रोकने वाली चीजें वा बातें विश्वास से हटायी जा सकती हैं।

आज मिशन पर्व है। मिशन पर्व परमेश्वर का पर्व है। परमेश्वर मिशन पर्व उस समय मनाता है जब लोग यीशु नाम में बपतिस्मा लेते और ईश्वर के पास आते हैं। अब हम वचन के संदर्भ में गोसनर कलीसिया तथा गोसनर कलीसिया के विश्वास को परखें।

१. अंजीर पेड़ गोसनर कलीसिया की ओर संकेत करती है। गोसनर कलीसिया से यीशु फल चाहता है। क्या गोसनर कलीसिया रूपी अंजीर पेड़ की छाया इतनी ठंढी है कि अन्यजातियां यीशु नाम में आकर आराम कर सकती हैं ? यदि कलीसिया की छाया ठंढी नहीं है तब फल भी नहीं है। क्या गोसनर कलीसिया में आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है ? (गलाती ५ : २२+२३) हम और हमारी कलीसिया में आत्मा का फल नहीं होने से हम नाश होने के जोखिम में हैं।

ईश्वर कलीसिया रूपी अंजीर पेड़ को छोटा-नागपुर में इसलिये रोपा कि छोटानागपुर के लोगों के लिये फल फले। परन्तु ऐसा दीखता है कि कलीसिया सूखने पर है। कलीसिया गवाही के

Gossner Mission

काम में असफल हो गयी है। कलीसिया के लिये गवाही के काम में असफल होना भयानक बात है। गवाही के काम में असफल वा लाचारी दिखलाना मृत्यु को स्वागत देना है। कलीसिया तब तक जीवित है जब तक वह सुसमाचार सुनाती है। ईश्वर चाहता है कि कलीसिया द्वारा गवाही हो। ईश्वर की इस चाह को नहीं पहचानता मृत्यु के मुख में पड़ना है।

अंजीर के पेड़ की पत्तियाँ तो थीं। इसलिये उसमें फल होना चाहिये था। इसी प्रकार गोसनर कलीसिया में लोग हैं। पर गवाही का काम नहीं है। जिस प्रकार यहुदी लोग चुने हुए लोग थे। वैसा ही हम भी चुने हुए लोग हैं। परन्तु ईश्वर के लिये फल फलने में वे लाचार थे। हमारी कलीसिया विश्वास वाक्य उच्चारण करती है पर ईश्वर के लिये काम नहीं करती है। ऐसे विश्वास से लाभ नहीं जिस से फल नहीं होता है।

अंजीर का पेड़ नकाम था। यहुदी जाति भी ईश्वर के सामने नकाम थी। क्या हमारी कलीसिया नकाम तो नहीं हो गयी है? हम जाग जावें। फल लावें ताकि हम और हमारे द्वारा अन्यजातियाँ ईश्वर के पास लायी जावें।

२. हम अपने विश्वास को परखें:—याकूब लिखता है कि विश्वास से मांगने वालों को बुद्धि मिलती है (१:५) सुलैमान ने बुद्धि मांगा और उसे बुद्धि मिल गयी। ईश्वर की प्रतिज्ञा है कि गोसनर कलीसिया भी विश्वास के द्वारा छोटानागपुर में जादू कर सकती है। गोसनर साहेब ने विश्वास की प्रार्थना की थी। उसके भेजे हुए दूतों के लिये रुकावट थी। परन्तु विश्वास की प्रार्थना से रुकावटें दूर की गयी। आज हम अपने विश्वास को परखें। क्या हमारा विश्वास प्रार्थना में है? विश्वास की प्रार्थना में सामर्थ है। मिशन काम में रुकावटें हैं। कठिनाइयां हैं। परन्तु प्रार्थना के द्वारा हम सारी कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं।

विश्वास की प्रार्थना में सामर्थ है। विश्वासी विश्वास की प्रार्थना द्वारा ईश्वरीय सामर्थ को ग्रहण करता है। ईश्वरीय सामर्थ को ग्रहण करने के उपरान्त हम हमारे देश की दया को भी जैसा है वैसा ही ग्रहण करते हैं। यह सत्य है कि हमारे देश की दशा अच्छी नहीं है। इसी देश की बुरी दशा में हम भेजे गये हैं। ईश्वर चाहता है कि हमारे द्वारा छोटानागपुर की बुरी दशा बदल जावे। छोटानागपुर को हरीला और फलमय बनाने के लिये सर्वप्रथम हमें बदल जाना है। जब तक हम नहीं बदलेंगे तब तक छोटानागपुर भी नहीं बदलेगा। योना के प्रचार से निनवे नगर की बुरी दशा अच्छी हो गयी। लोगों ने पश्चाताप किया और लोग नाश नहीं हुए। इसी प्रकार ईश्वर चाहता है कि हम अपने विश्वास, प्रार्थना तथा प्रचार द्वारा हमारे देश की दशा में परिवर्त्तन लावें। जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा। अब तक हमने नहीं मांगा इसलिये नही मिलता है। हम सामर्थ मांगे ताकि हमारे द्वारा गवाही का काम हो।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे २०वां एतवार

मत्ती २२ : १-१४

मत्ती सुसमाचारक ने दृष्टान्त को विवाह भोज से सम्बन्धित किया है। यहुदियों के अगुवे सोचते थे कि मसीह का राज्य भोज के समान होगा जिसमें यहुदी लोग राजा के संग बैठेंगे। परन्तु अन्यजाति उसमें भाग नहीं ले सकेंगे। आज के वचन में यीशु यहुदियों के ख्याल को बदल डालता है और यों कहता है :—

"पापी पाप से नहीं परन्तु – यीशु से छुटकारा चाहता है"

१. पापी आने नहीं चाहता है (३) यहुदियों को परमेश्वर ने यीशु के द्वारा बुलाया था। परन्तु उन्हों ने निमंत्रण को अस्वीकार किया। वे कई बार बुलाये जाते हैं। पर आना नहीं चाहते हैं। बैबल के अनुसार ईश्वर ने यहुदियों को चुन लिया था। परन्तु उन्होंने अपने चुन लिये जाने पर घमण्ड किया। उन्होंने अपना अपना मार्ग लिया। इतना होते हुए भी ईश्वर ने उनसे प्रेम रखा और उनके बीच में यीशु को भेजा। विश्वासियों ने यीशु को ग्रहण किया और यीशु की कलीसिया में आ गये परन्तु यहुदी लोग अपना घमण्ड त्याग कर यीशु के पास आना नहीं चाहते हैं।

२. अपश्चातापी बेपरवाई करके चल देता है:—(५) कोई अपने खेत को और कोई अपने व्योपार को। ऐसा मालूम पड़ता है कि लोग दुबारा बुलाये गये थे, और बुलाहट को बहुत हलका जानते हैं। बहुतों ने न्योता की चिन्ता भी नहीं कीई। यहुदियों के समान ही अपश्चातापी मनुष्य अपने पाप में बना रहता है और कई बार निमंत्रण देने पर भी वह आने नहीं चाहता है। यीशु अनुग्रह से बुलाता है और पापी परमेश्वर के प्रेम को तुच्छ करता है।

३. पापी ईश्वर के दासों को अनादर करते और मार डालते हैं (६):—वे पाप नहीं छोड़ते हैं पर यीशु को छोड़ देते हैं। इसी कारण उनपर न्याय आ पड़ता है। इसका संकेत यीरूशलीम की ओर है। ७० ई० में रोम की सेना ने यीरूशलीम को फूंक दिया (७) अर्थात् नष्ट किया। जितने लोग यीशु के बचन को तुच्छ करते और बचन प्रचारने वालों को सताते वा अनादर करते उनकी दशा यीरूशलीम की दशा के समान होती है।

४. पापी विवाह का वस्त्र पहनने नहीं चाहता है—(११) :—उद्धार के वस्त्र के बिना राजा के भोज में आना कठिन है। (यशायाह ६१ : १०) परमेश्वर के भोज में प्रत्येक अतिथि को वस्त्र दिया जाता है। परन्तु एक मनुष्य विवाह वस्त्र बिना ही भोज में आता है। राजा (ईश्वर) आप ही वस्त्र देता है—इसलिये बहाना नहीं बनाया जा सकता है। उस मनुष्य ने निश्चय कहा होगा—"मेरा वस्त्र है!" परन्तु जब राजा प्रवेश किया तब उसे तुरन्त देख ही लिया (११) राजा (ईश्वर) की उपस्थिति में उसको बहाना करने नहीं बना और न वह अपनी दौड़ को बदल सका (१३)

ईश्वर यीशु के द्वारा सब पश्चातापी पापियों को धार्म्मिकता का वस्त्र देता है। धार्मिकता का वस्त्र पहनना वा न पहनना हमारी अपनी इच्छा है।

राजा ईश्वर है। पुत्र यीशु आप ही है। विवाह ईश्वर एवं विश्वासियों की संगति है। इस वचन में संगति और प्रेम विशेष बात है। एक ओर यीशु अपने लोगों का आड़ और ढाल तथा दूसरी ओर यीशु के लोगों का यीशु पर पूरा भरोसा दोनों ने उन्हें पिता के भवन में इकट्ठा किया।

Gossner Mission

सम्पादकीय

सत्स जानके, वच और ब्रान्त नामक चार मिशनरियों ने राँची आकर २ नवम्बर १८४५ को हमारे मिशन अहाते में जहाँ आज भी जुबिली स्मरण पत्थर खड़ा है, डेरा डालने के लिये तम्बु खड़ा किया और सुसमाचार प्रचार कार्य आरम्भ किया। गोस्सनर साहब बड़े ही भक्त और प्रार्थना करने हारे जन थे जिसके वजह पवित्रात्मा की प्रत्यक्ष अगुवाई उनको मिली कि मिशनरी हिन्दुस्तान आएँ और उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु का ज्ञान दें उनको जो अब तक अन्धकार में थे ताकि वे यीशु ख्रिस्त से परिचित हों कि वही निरकेवल जगत के उद्धारकर्ता है और उसपर विश्वास करे और जीवन पावे। इन प्रथम चार मिशनरियों के परिश्रम पर परमेश्वर की बहुत बड़ी आशीष प्राप्त हुई। उनको कार्य करने में बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। वे यहाँ की भाषा नहीं बोल सकते थे, यहाँ का भोजन उनके लिये रुचिकर नहीं था, आवागमन की सुविधा नहीं थी। ऐसा होते हुए भी वे धीरज और साहस के साथ यह जान कर कि उनको परमेश्वर ने हो इस कार्य के लिये बुलाया कठिन परिश्रम के साथ काम किया। फल यह हुआ कि मंडलियों की स्थापना होने लगी और आज लगभग दो लाख पचहत्तर हजार लोग इस कलीसिया के सदस्य हैं। इस महीने में हम फादर गोस्सनर को स्मरण करें जिनकी दो सौवां (२००) वर्ष गांठ १४ वीं दिसम्बर १९७३ को बेर्लिन में मनाने को निश्चित है। हम रांची में २ री नवम्बर १९७३ को मनाने जा रहे हैं इसलिये कि पास्टर सीबेर्ग डाईरेक्टर गोस्सनर मिशन बेर्लिन यहां उपस्थित रहेंगे। इस वर्षगांठ के उपलक्ष में रांची की महिलाओं ने जुबिली स्मरण पत्थर के चारों ओर एक घेरा बनवाया है जहां फूल वगैरह लगाया गया है उस छोटे पार्क का नाम गोस्सनर-पार्क रखा जायगा जिसका उद्घाटन २ री नवम्बर १९७३ को किया जायगा। यहीं उन चारों मिशनरियों को भी हम स्मरण करें कि वे सुसमाचार प्रचार के लिये कितना बड़ा त्याग किये। हम कहें कि उन्होंने अपने जीवन को सम्पूर्ण रूप में इस कार्य के लिये बलिदान किया। हम उनके जीवन से प्रेरणा लें तथा २ नवम्बर १९७३ को सुसमाचार प्रचार कार्य के लिये प्रोग्राम बनावें, राज्य-वृद्धि गिर्जा के लिये इकट्ठे होवें तथा जो कुछ भी दान इकट्ठा होता है उसे मिशन कार्य के डाईरेक्टर के यहां जमा करें ताकि आने वाले समयों में भी हम इस कार्य को जो कलीसिया का प्रथम कार्य है कर सकें। कहा जाता है कि यदि मंडली मिशन कार्य नहीं करती तो वह मसीही होना भी बन्द करती है। मैं समझता हूं कि कोई मंडली ऐसा होना नहीं चाहेगी परन्तु यह भी सच्च है कि न चाहते हुए भी हम कभी कभी उसी प्रकार बन जाते हैं। परमेश्वर की आशीष हमें प्राप्त हो कि मिशन कार्य पर हम मन लगायें, प्रार्थना करें, हाथ बटावें ताकि यह पवित्र कार्य हम दुर्बल लोगों के द्वारा बढ़ती जाय।

जे. तोपनो
प्रमुख अध्यक्ष
जी० ई० एल० चर्च, राँची।

Gossner Mission

मिशन पर्व

मत्ती २१ : १८–२२

पलस्तीन देश में अंजीर का वृक्ष विशेष वृक्ष है। इसकी चर्चा बैबल के लेखक विशेष रूप से करते हैं (व्यवस्था ८ : ८, गिन्ती १३ : २३; १ राजा ४ : २५; मीका ४ : ४; जकर्याह ३ : १०) पुराना नियम के अनुसार सुख के समय इसराएल अंजीर के पेड़ तले बैठता था। दुःख के समय इसराएल अनुभव करती थी कि अंजीर का पेड़ ईश्वर के क्रोध के कारण भष्म किया गया है। (भजन १०५; ३३; यिर्मयाह ८ : १३; होशेया २ : १२) अंजीर का पेड़ उन्नति, शांति और उपजाऊपन का द्योतक था। पेड़ देखने में भी सुन्दर दिखायी देता था। पेड़ का धड़ दो फीट होता था। पेड़ की ऊंचाई १५-२० फीट तक होती थी। डालियाँ पेड़ के चारों ओर २५-३० फीट तक फैलती थी। पेड़ छाया के लिये अत्यन्त उपयोगी था। कुप्रस टापू में लोग अपनी झोपड़ियों के दरवाजे पर अंजीर पेड़ छाया के निमित लगाते थे। यात्री लोग पेड़ की ठण्ढी छाया में आराम करते थे। कभी कभी पेड़ की छाया में लोग प्रार्थना के लिये इकत्र होते थे। व्यक्तिगत उपासना के लिये भी अंजीर की छाया अत्यन्त उत्तम थी। नथानिएल अंजीर के नीचे उपासना करता था और यीशु ने उसे वहीं देखा था (यूहन्ना १:४८)।

उपरोक्त वर्णन में हम अंजीर के पेड़ की विशेषता देखते हैं। अंजीर का पेड़ यहुदी जाति की ओर संकेत करता है। यहुदी जाति में धर्म का ढोंग तो है पर फल नहीं फलनेवाला पेड़ नही परन्तु नहीं फलनेवाला पेड़ नाश हुआ। यहुदी जाति मसीह को अस्वीकार करने के द्वारा अपने विनाय में छाप दिया। २१ : २१ + २२ पद के साथ साथ हम १७ : २० पर भी ध्यान दें। जो मनुष्य के लिये असम्भव है, उसे परमेश्वर कर सकता है। जितने लोग परमेश्वर पर विश्वास करते हैं उन्हें यह प्रतिज्ञा दी जाती है कि वे जो कुछ भी प्रार्थना में विश्वास करके मांगते हैं उन्हें दिया जाता है। इसी में पहाड़ों को हटाने की बात भी है। पहाड़ों का अर्थ असम्भव रोकने वाली बातें वा विषय है। परमेश्वर के अभिप्राय की पूर्णता में पहाड़ों के समान रोकने वाली चीजें वा बातें विश्वास से हटायी जा सकती हैं।

आज मिशन पर्व है। मिशन पर्व परमेश्वर का पर्व है। परमेश्वर मिशन पर्व उस समय मनाता है जब लोग यीशु नाम में बपतिस्मा लेते और ईश्वर के पास आते हैं। अब हम वचन के संदर्भ में गोसनर कलीसिया तथा गोसनर कलीसिया के विश्वास को परखें।

१. अंजीर पेड़ गोसनर कलीसिया की ओर संकेत करती है। गोसनर कलीसिया से यीशु फल चाहता है। क्या गोसनर कलीसिया रूपी अंजीर पेड़ की छाया इतनी ठंढी है कि अन्यजातियां यीशु नाम में आकर आराम कर सकती हैं? यदि कलीसिया की छाया ठंढी नहीं है तब फल भी नहीं है। क्या गोसनर कलीसिया में आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है? (गलाती ५ : २२+२३) हम और हमारी कलीसिया में आत्मा का फल नहीं होने से हम नाश होने के जोखिम में हैं।

ईश्वर कलीसिया रूपी अंजीर पेड़ को छोटा-नागपुर में इसलिये रोपा कि छोटानागपुर के लोगों के लिये फल फले। परन्तु ऐसा दीखता है कि कलीसिया सूखने पर है। कलीसिया गवाही के

Gossner Mission

काम में असफल हो गयी है। कलीसिया के लिये गवाही के काम में असफल होना भयानक बात है। गवाही के काम में असफल वा लाचारी दिखलाना मृत्यु को स्वागत देना है। कलीसिया तब तक जीवित है जब तक वह सुसमाचार सुनाती है। ईश्वर चाहता है कि कलीसिया द्वारा गवाही हो। ईश्वर की इस चाह को नहीं पहचानता मृत्यु के मुख में पड़ना है।

अंजीर के पेड़ की पतियाँ तो थीं। इसलिये उसमें फल होना चाहिये था। इसी प्रकार गोसनर कलीसिया में लोग हैं। पर गवाही का काम नहीं है। जिस प्रकार यहुदी लोग चुने हुए लोग थे। वैसा ही हम भी चुने हुए लोग हैं। परन्तु ईश्वर के लिये फल फलने में वे लाचार थे। हमारी कलीसिया विश्वास वाक्य उच्चारण करती है पर ईश्वर के लिये काम नहीं करती है। ऐसे विश्वास से लाभ नहीं जिस से फल नहीं होता है।

अंजीर का पेड़ नकाम था। यहुदी जाति भी ईश्वर के सामने नकाम थी। क्या हमारी कलीसिया नकाम तो नहीं हो गयी है? हम जाग जावें। फल लावें ताकि हम और हमारे द्वारा अन्यजातियाँ ईश्वर के पास लायी जावें।

२. हम अपने विश्वास को परखें:—याकूब लिखता है कि विश्वास से मांगने वालों को बुद्धि मिलती है (१:५) सुलैमान ने बुद्धि मांगा और उसे बुद्धि मिल गयी। ईश्वर की प्रतिज्ञा है कि गोसनर कलीसिया भी विश्वास के द्वारा छोटानागपुर में जादू कर सकती है। गोसनर साहेब ने विश्वास की प्रार्थना की थी। उसके भेजे हुए दूतों के लिये रुकावट थी। परन्तु विश्वास की प्रार्थना से रुकावटें दूर की गयी। आज हम अपने विश्वास को परखें। क्या हमारा विश्वास प्रार्थना में है? विश्वास की प्रार्थना में सामर्थ है। मिशन काम में रुकावटें हैं। कठिनाइयां हैं। परन्तु प्रार्थना के द्वारा हम सारी कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं।

विश्वास की प्रार्थना में सामर्थ है। विश्वासी विश्वास की प्रार्थना द्वारा ईश्वरीय सामर्थ को ग्रहण करता है। ईश्वरीय सामर्थ को ग्रहण करने के उपरान्त हम हमारे देश की दया को भी जैसा है वैसा ही ग्रहण करते हैं। यह सत्य है कि हमारे देश की दशा अच्छी नहीं है। इसी देश की बुरी दशा में हम भेजे गये हैं। ईश्वर चाहता है कि हमारे द्वारा छोटानागपुर की बुरी दशा बदल जाये। छोटानागपुर को हरीला और फलमय बनाने के लिये सर्वप्रथम हमें बदल जाना है। जब तक हम नहीं बदलेंगे तब तक छोटानागपुर भी नहीं बदलेगा। योना के प्रचार से निनवे नगर की बुरी दशा अच्छी हो गयी। लोगों ने पश्चाताप किया और लोग नाश नहीं हुए। इसी प्रकार ईश्वर चाहता है कि हम अपने विश्वास, प्रार्थना तथा प्रचार द्वारा हमारे देश की दशा में परिवर्त्तन लावें। जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा। अब तक हमने नहीं मांगा इसलिये नही मिलता है। हम सामर्थ मांगे ताकि हमारे द्वारा गवाही का काम हो।

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे २०वां एतवार

मत्ती २२ : १-१४

मत्ती सुसमाचारक ने दृष्टान्त को विवाह भोज से सम्बन्धित किया है। यहुदियों के अगुवे सोचते थे कि मसीह का राज्य भोज के समान होगा जिसमें यहुदी लोग राजा के संग बैठेंगे। परन्तु अन्यजाति उसमें भाग नहीं ले सकेंगे। आज के बचन में यीशु यहुदियों के ख्याल को बदल डालता है और यों कहता है :—

"पापी पाप से नहीं परन्तु – यीशु से छुटकारा चाहता है"

१. पापी आने नहीं चाहता है (३) यहुदियों को परमेश्वर ने यीशु के द्वारा बुलाया था। परन्तु उन्हों ने निमंत्रण को अस्वीकार किया। वे कई बार बुलाये जाते हैं। पर आना नहीं चाहते हैं। बैबल के अनुसार ईश्वर ने यहुदियों को चुन लिया था। परन्तु उन्होंने अपने चुन लिये जाने पर घमण्ड किया। उन्होंने अपना अपना मार्ग लिया। इतना होते हुए भी ईश्वर ने उनसे प्रेम रखा और उनके बीच में यीशु को भेजा। विश्वासियों ने यीशु को ग्रहण किया और यीशु की कलीसिया में आ गये परन्तु यहुदी लोग अपना घमण्ड त्याग कर यीशु के पास आना नहीं चाहते हैं।

२. अपश्चातापी बेपरवाई करके चल देता है:— (५) कोई अपने खेत को और कोई अपने व्योपार को। ऐसा मालूम पड़ता है कि लोग दुबारा बुलाये गये थे, और बुलाहट को बहुत हलका जानते हैं। बहुतों ने न्योता की चिन्ता भी नहीं कीई। यहुदियों के समान ही अपश्चातापी मनुष्य अपने पाप में बना रहता है और कई बार निमंत्रण देने पर भी वह आने नहीं चाहता है। यीशु अनुग्रह से बुलाता है और पापी परमेश्वर के प्रेम को तुच्छ करता है।

३. पापी ईश्वर के दासों को अनादर करते और मार डालते हैं (६):—वे पाप नहीं छोड़ते हैं पर यीशु को छोड़ देते हैं। इसी कारण उनपर न्याय आ पड़ता है। इसका संकेत यीरूशलीम की ओर है। ७० ई० में रोम की सेना ने यीरूशलीम को फूंक दिया (७) अर्थात् नष्ट किया। जितने लोग यीशु के बचन को तुच्छ करते और बचन प्रचारने वालों को सताते वा अनादर करते उनकी दशा यीरूशलीम की दशा के समान होती है।

४. पापी विवाह का वस्त्र पहनने नहीं चाहता है—(११) :—उद्धार के वस्त्र के बिना राजा के भोज में आना कठिन है। (यशायाह ६१ : १०) परमेश्वर के भोज में प्रत्येक अतिथि को वस्त्र दिया जाता है। परन्तु एक मनुष्य विवाह वस्त्र बिना ही भोज में आता है। राजा (ईश्वर) आप ही वस्त्र देता है—इसलिये बहाना नहीं बनाया जा सकता है। उस मनुष्य ने निश्चय कहा होगा—"मेरा वस्त्र है!" परन्तु जब राजा प्रवेश किया तब उसे तुरन्त देख ही लिया (११) राजा (ईश्वर) की उपस्थिति में उसको बहाना करने नहीं बना और न वह अपनी दौड़ को बदल सका (१३)

ईश्वर यीशु के द्वारा सब पश्चातापी पापियों को धार्मिकता का वस्त्र देता है। धार्मिकता का वस्त्र पहनना वा न पहनना हमारी अपनी इच्छा है।

राजा ईश्वर है। पुत्र यीशु आप ही है। विवाह ईश्वर एवं विश्वासियों की संगति है। इस वचन में संगति और प्रेम विशेष बात है। एक ओर यीशु अपने लोगों का आड़ और ढाल तथा दूसरी ओर यीशु के लोगों का यीशु पर पूरा भरोसा दोनों ने उन्हें पिता के भवन में इकट्ठा किया।

Gossner Mission

अन्तर में पांच मन से दस मन प्रति एकड़ चूना डालना खेत के लिए लाभप्रद है।

कृत्रिम खाद को आवश्यकतानुसार ही डालना चाहिए। पर गेहूं खेत में नत्रजानिए, स्फुर और पोटास तीनों का मिश्रण उत्तम होता है। नत्रजानिए खाद में- यूरिया, अमोनियम सल्फेट, केलशियम अमोनियम नाइट्रेट आदि है। स्फुर में-सिंगल सुपर फासफेट, रोक फासफेट, बोन मिल, रेहानिया आदि है। पोटास में, म्यूरेट आफ पोटास है।

नत्रजानिए खाद को तीन हिस्सा में बांट कर एक हिस्सा को बोवाई के दिन ही स्फुर और पोटास के साथ डाल दें। गेहूं बोवाई के २१ रोज बाद दो हिस्सा में से एक हिस्सा को डाल दें। बाकी तीसरा हिस्सा को गेहूं फूटने के पहले आवश्यकता पड़ने पर डालना चाहिए।

गेहूं बोवाई, एलड्रीन नामक दवा दस किलो ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से करें। इस दवा से दीमक नहीं लगते हैं। गेहूं बीज प्रति एकड़ तीस से चालीस किलो ग्राम खेत की उपजाऊ शक्ति अनुसार डालना चाहिये। सिमडेगा क्षेत्र के लिए बोवाई का समय २० ओकटोबर से २० दिसम्बर तक उपयुक्त मौसम है। कल्यान सोना बोवाई के दिन से पकने तक १२० दिन लेता है। यह प्रति एकड़ साठ मन तक उपज दे सकता है।

अगले माह कीट नाशक दवा (या गेहूं रोग के विषय में) और गेहूं पटावन के बारे लिखा आयगा।

आपका कृषक भाई
एम० एस० कन्डुलना
खुटी टोली रांची

शोक समाचार

यह शोक समाचार देते हुए दुःख हो रहा है जब कि गोबिन्दपूर इलाका के कोटबो पेरिश के अन्तर्गत सुरहू+कजरा मंडली के प्रचारक को पिता ईश्वर ने सेवाकाई की अवधि पर ही लगभग ५५ वर्ष की उम्र में खाँसी एवं भाड़ा बिमारी के द्वारा दिनांक ३०-८-७३ को सूर्योदय के पूर्व अनन्त बिश्राम के लिए अपने पास बुला लिया। वे खांसी बिमारी से गत साल से पीड़ित थे पर मार्च माह से उनके बिमारी की हालत बहुत ही बढ़ती चली गयी। फिर भी इस भयानक खांसी बिमारी के होने पर भी मंडली की सेवाकाई मृत्यु के पूर्व तक करते रहे। उनके मृतक देह को पाद्री पी. एस. तिड़ू द्वारा दिनांक ३१-८-७३ को अपने जन्मभूमि स्थान पकरा में आदरमय साथ मिट्टी दिया गया।

संक्षिप्त परिचय :— इलाका रिर्कोड अनुसार १९५३ ई० से मंडली में सेवाकाई का कार्य आरम्भ किये और लगभग २० वर्ष की सेवाकाई की अवधि में गोबिन्दपूर इलाका के निम्न मंडलियों में सेवाकाई का कार्य रहा। कर्रा, बुढ़नी, कोटबो, इचाः+उकरीमारी, लुँगटू, इड्डु+गाड़ी, बसिया, कुरमुल, मुरहू+कजरा। वे एक संगीत प्रेमी होने के कारण अपने सुस्वर रागों से परमेश्वर के बचनों को स्वर-रागो में मिलाकर लोगों को केन्द्रित किया करते थे।

वे अपने धर्म पत्नि दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों को छोड़कर सनातन बिश्राम के लिए प्रभु में मिल गये। अत: आप सभों से प्रार्थना है कि आप भी उस शोकित परिवार को अपनी प्रार्थनाओं में याद करें ताकि पिता परमेश्वर की आशीष उस शोकित परिवार के आत्माओं को शान्ति प्रदान करें।

(पाद्री पी. एस. तिड़ू कोटबो)

Gossner Mission

सूचना

१९७४ से १९७५ सत्र के लिए भी कितने छात्र-छात्राएँ गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोबिन्दपुर में लिये जावेंगे। प्रशिक्षण अभिलाषी नीचे लिखे पते पर फोर्म मंगाकर अवेदन पत्र भेंजे। अवेदन पत्र पहुँचने की अन्तिम तिथि ३० नोवेम्बर ७३ को है अवेदन कर्त्ताएँ अवेदन पत्र की एक प्रति संबन्धित अंचल अध्यक्षों को दें। अवेदकों की योग्यता कम से कम माध्यमिक इमतिहान उत्तीर्ण तथा कलीशा के कामों में बहुत दिलचस्प रखते हों।

प्रशिक्षण केन्द्र में ठहरने का कुल खर्च ४०) रूपया प्रति माह है जिसमें चुने हुए छात्र-छात्राओं को के० एस० एस० से ३०) रूपया प्रति माह छात्रवृत्ति मिलेगी तथा इलाकाओं वा निज वा अन्य जरियों से १०) रु० प्रति माह देना पड़ेगा। उम्मीद की जाती है कि के० एस० एस० छात्रवृत्ति के लिए सुसमय पर पैसे का बन्दोवस्त करेगी।

प्रधानाध्यापक
गोस्सनर बैबल बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र
पी॰ ओ गोबिन्दपुर
जिला राँची, बिहार।

[आशा गतांक से आगे]

कल्पनाएँ की होगी……मगर…… मैं जानता हूँ कि मुझसे शादी करने के बाद तुम्हारे सभी सपने टूट गये……।" और यह बात सच भी था उसके बाद शायद ही ऐसा कोई अवसर आया हो जब अबिनाश पीकर न आया हो। एक दिन जब आशा ने खीज कर कहा था—यही करना था फिर शादी क्यों की ? उसने आहत होकर उत्तर दिया था—आशा, मानवीय दुर्बलताओं का मुझमें अभाव नहीं; यदि मेरे कोई काम से तुम्हारी भावनाओं को ठेस लगे तो क्षमा करना।" उसके बाद आशा ने चुप रहने की कसम खा ली। यह सच है कि वह आशा को बहुत चाहता था लेकिन कौन सी शक्ति उसे बार की ओर खींच ले जाती……वह स्वयं भी नहीं जानता। जो स्वयं डूबना चाहता हो उसे डूबने से रोक भी कौन सकता है सास और ससुर अपने एकलौटे पुत्र की यह दशा देख न सके और बारी-बारी से उन्होंने भी आँखे मूँद ली। आशा का अन्तिम सहारा भी टूट गया। इसी बीच फूल सी बच्ची का जन्म हुआ—कुछ धीरज हुआ लेकिन अबिनाश में कोई परिवर्तन न हुआ। कहने के लिए तो वे मसीही थे लेकिन पर्व त्योहार को छोड़ शायद ही दूसरे समयों में गिर्जे गये हों। अबिनाश को शराब और दोस्तों से फ़ुरसत न थी आशा दुःखों के बोझ से इतनी दबी हुई थी कि ईश्वर ध्यान में उसका मन ही न लगता। तब भी आशा अपने नाम के अनुकूल आशा करना न भूलती।

अचानक कहीं बिजली गिरी और बादलों के गर्जन से बेबी उठ गई। आशा उसे छाती से चिपकाए सुलाने की कोशिश कर रही थी। तभी तुफान का आवेग कुछ कम हुआ, सहसा ही द्वार की सिकड़ी बज उठी। आशा को समझते देर न लगी कि अबिनाश आ गया है आशा ने बेबी को उठाए ही दरवाजा खोल दिया। सामने अबिनाश मनीष का सहारा लिए खड़ा था। उसने आशा को देखते ही मुस्कराने का असफल प्रयत्न किया। फिर कहा—"आशा तुम अभी तक जाग रही हो ? फिर वह

Gossner Mission

स्वयं भीतर आ गया। आशा के बिपरीत आज अबिनाश नशे की हालत में भी होशी हवास सम्भाले था—आशा को आश्चर्य हो रहा था।

अबिनाश—"कितनी बार कहा कि तुम मेरा इन्तजार न करना लेकिन मानती ही नहीं हो......तुम्हें अपने शरीर का भी ख्याल नहीं।"

आशा — चुप चाप खाना परोसने चली गई।

अबिनाश—"आशा आज मैं एक दोस्त के यहाँ खाकर आया हूँ।"

(फिर कुछ रुक कर) 'ओह! ठहरो, जब तक मैं ना खाऊँ, भला तुम कैसे खाओगी।" भोजन के उपरान्त दोनों अपने अपने बिछौने पर चले गये। आज उसे आशा को चुपी अखर रहा था। वह आशा की नाराजगी का कारण जानता था......वह स्वयं भी जानता था कि वह गलती कर रहा है......लेकिन जाने क्यों अपने आप को रोक ही नहीं पाता......और अपनी इसी गलती के कारण उसे नौकरी से अलग कर दिया गया। अबिनाश नशे में होने के बावजूद इस बात को न भुल सका। अबिनाश ने सोये सोये कई बार आवाज दी, पर हर वक्त सन्नाटा रहा। उसे समझते देर न लगी कि आशा रो रही है। आज अपने प्रतिज्ञा के बाद भी घर न पहुँच सका था। उससे रहा नहीं गया तो नजदीक जाकर उसके सर पर हाथ रख दिया......उसका हाथ जल उठा।

अबिनाश "यह क्या आशा! तुम्हें Fever है? तुमने बतलाया नहीं?"

आशा – (रोष भरे शब्दों में उत्तर दिया) "तुम रहते कहाँ हो जो बतलाती।"

अबिनाश—"मैं न सही तुम्हें तो अपने साथ अन्याय नहीं करना चाहिए।"

आशा – (उसी स्वर में) आप न्याय करने दे तब न?"

अबिनाश - (शान्त स्वर में) मैंने कब रोका है?

आशा —हाँ, तुमने कब रोका है?......रोका तो तुम्हारे पैसों ने है।"

अबिनाश—"तुमने मुझसे कहा होता!"

आशा —"हाँ जिससे माँग लेती......मैं भिखारिनी नहीं।

अबिनाश – "समझने की कोशिश करो।"

आशा – "समझ तो सिर्फ ईश्वर ने आपको ही दी है जो हर महीने, चार सौ रुपये शराब का बिल होता है......यही दिन दिखाना था तो शादी क्यों की थी...—कसमें क्यों खायी थी......और ...।"

मानसिक तनाव के कारण आशा अधिक न बोल सकी बेहोश हो गई। डाक्टर ने बतलाया आशा माँ बनने वाली है......शरीर में खून की कमी है......केश सिरीयस है। आशा को भी मालूम हुआ मगर इस समाचार से उसे कताई खुशी न हुई। आशा जो बेहोश हुई......तो उस दिन से बिछौने से उठ ही न सकी...... अब तो उसमें जीने की भी चाह नहीं थी। अबिनाश दिन भर उसकी सेवा करता......उसे बहलाने की कोशिश करता। उसने आशा को यह नहीं बतलाया कि उससे नौकरी से अलग कर दिया गया।

आज आशा के तबियत में साधारण रूप से सुधार दिखाई पड़ रहा था। अबिनाश को आज लम्बे अरसे बाद बाहर निकलने का मौका मिला। रात में आया तो वह अपने रंग में था। घर में अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था। अबिनाश आशा के नजदीक आया...... उसकी सांसे साधारण रूप से तेज थी......वह बड़बड़ा रही थी......"नहीं नहीं मुझे मत ले जाओ......मैं नहीं जा......सकती बेबी......को छोड़......" ज्यों ही अबिनाश ने द्वार से बाहर कदम रखा......उसे आशा की क्षीण आवाज ने रोक लिया......"अबिनास......मत जाओ......डाक्टर की अब......आवश्यकता नहीं।" ......मेरा......अन्त......निकट है......आह!...... पानी! (अबिनाश ने पानी लाया और सहारा देकर पिलाया)।

अबिनाश—"देखो! ज्यादा बातें मत करो.... मैं अभी आया।"

आशा —नहीं...अबिनाश मत जाओ......मैं नहीं......

अबिनाश—"ऐसा मत बोलो।"

आशा —नहीं अबिनाश! यह सच है......मृत्यु एक चिरंतन सत्य है......मनुष्य का......जीवन तो धोखा है......।

अबिनाश······बेदी (ऐसा लगता था कि वह अपने समस्त शक्ति समेट कर कह रही हो) ख्याल रखना······मैं······मैं तुम्हें कुछ न दे सकी······आज······ईश्वर······साथ

अबिनाश······पानी······

(दूसरे ही क्षण आशा का सिर अबिनाश की गोद में लुढ़क गया। अबिनाश चीख मार कर उससे लिपट गया "आशा......यह क्या किया तुमने......मुझे इस संसार में अकेला छोड़......दिया......लौट आओ......आशा। लेकिन आशा जा चुकी थी ...संसार के समस्त बन्धन तोड़कर वहाँ, जहाँ इन्सान जीते जी पहुंच नहीं सकता।

अबिनाश अब पहले का अबिनाश न रहा उसमें काफी परिवर्तन हुआ। अब उसे शराब के नाम से भी घृणा है। अब पहले से ज्यादा गम्भीर हो गया है। अबिनाश पाया बहुत कुछ इसके लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। ठीक वैसा ही जैसे मसीह ने हमारी कीमत चुकाई है।

मिशन पर्ब १९७३

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी मिशन पर्ब के निमित ठहराया दिन निकट आ ही गया अत: आप अपने अंचल के अन्तर्गत इलाकाओं पेरिशों तथा मंडलियों में इस दिन की विशेषता को बतलाते हुए मिशन पर्ब मानने का कार्य-क्रम अवश्य रखें, वह दिन न केवल स्मरण का दिन होवे, परन्तु आप विशेष कार्य-क्रम बना कर सुसमाचार प्रचार कार्य में अपना पाठ अदा करने का कोई न कोई कदम उठायें। इससे न केवल दूसरों को सुसमाचार से सेवा होगी, पर मंडली में जागृति आयेगी। इसकी साक्षी वे मंडली दे सकते हैं जिनमें ऐसे कार्य-क्रम रखे जाते हैं।

इस वर्ष मिशन पर्ब का उपदेश मत्ती २१ : १८ - २२ पर है। इस वचन को समझने के लिये हम लूक १३ : ६ - ९ भी पढ़ लें और यूहन्ना १५ : ४ - ८ को भी मिलायें।

फलवन्त पेड़ से मालिक की महिमा होती है। यीशु मसीह के साथ जो प्रसंग है इससे इस्राएली जाति की फल रहित परिस्थिति दर्शायी गयी है जिससे परमेश्वर की महिमा के बदले उसका अनादर हुआ, अन्य जातियों के बीच परमेश्वर का अपमान और ठट्ठा भी हुआ।

मसीही बपतिस्मा के कारण मसीह में कलम की हुई दाखलता है। लता या वृक्ष हमारे लिये यह परमेश्वर का अनुग्रह है। यह कलम किया जाना इसी उपदेश से है कि मसीही फल लावें और परमेश्वर की महिमा करें। पर क्या वह फल रहित अंजीर पेड़ बन गया है ? आप ने परिवार, मंडली व इलाका ने कितना फल लाया ? फल लाने के लिये कुछ उपाय और परिश्रम किया ? इस मिशन पर्व में आप अपनी मंडली के भाई-बहनों के साथ अवश्य उपाय व परिश्रम करें कि आप लोगों के द्वारा भी फल लाने के कारण परमेश्वर की महिमा होवे, ऐसा न होवे कि हरा भरा होते हुए भी — जीवित दीखते हुए भी स्राप का दण्ड पड़े - - यह न्याय की भयंकरता है।

आप से अर्जी है कि संक्षेप में [बीस वाक्याओं तक] आप के मिशन पर्ब का समाचार हमारे पास घरबन्धु के लिये लिख भेजें, मिशन पर्ब का चन्दा अवश्य काम के लिये दिया जावे।

मिशन पर्ब आप के लिये आनन्द व आशीषपूर्ण होवे।

आप का विश्वस्त

[सी० के० पॉल सिंह]

डाईरेक्टर,

बी० ई० एल०

Gossner Mission

अन्तर में पांच मन से दस मन प्रति एकड़ चूना डालना खेत के लिए लाभप्रद है।

कृत्रिम खाद को आवश्यकतानुसार ही डालना चाहिए। पर गेहूं खेत में नत्रजानिए, स्फुर और पोटास तीनों का मिश्रण उत्तम होता है। नत्रजानिए खाद में- यूरिया, अमोनियम सल्फेट, केलशियम अमोनियम नाइट्रेट आदि है। स्फुर में-सिंगल सुपर फासफेट, रोक फासफेट, बोन मिल, रेहानिया आदि है। पोटास में, म्यूरेट आफ पोटास है।

नत्रजानिए खाद को तीन हिस्सा में बांट कर एक हिस्सा को बोवाई के दिन ही स्फुर और पोटास के साथ डाल दें। गेहूं बोवाई के २१ रोज बाद दो हिस्सा में से एक हिस्सा को डाल दें। बाकी तीसरा हिस्सा को गेहूं फूटने के पहले आवश्यकता पड़ने पर डालना चाहिए।

गेहूं बोवाई, एलड्रीन नामक दवा दस किलो ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से करें। इस दवा से दीमक नहीं लगते हैं। गेहूं बीज प्रति एकड़ तीस से चालीस किलो ग्राम खेत की उपजाऊ शक्ति अनुसार डालना चाहिये। सिमडेगा क्षेत्र के लिए बोवाई का समय २० ओक्टोबर से २० दिसम्बर तक उपयुक्त मौसम है। कल्यान सोना बोवाई के दिन से पकने तक १२० दिन लेता है। यह प्रति एकड़ साठ मन तक उपज दे सकता है।

अगले माह कीट नाशक दवा (या गेहूं रोग के विषय में) और गेहूं पटावन के बारे लिखा आयगा।

आपका कृषक भाई
एम० एस० कन्डुलना
खुटी टोली रांची

शोक समाचार

यह शोक समाचार देते हुए दुःख हो रहा है जब कि गोबिन्दपुर इलाका के कोटबो पेरिश के अन्तर्गत सुरहू+कजरा मंडली के प्रचारक को पिता ईश्वर ने सेवाकाई की अवधि पर ही लगभग ५५ वर्ष की उम्र में खाँसी एवं झाड़ा बिमारी के द्वारा दिनांक ३०-८-७३ को सूर्योदय के पूर्व अनन्त बिश्राम के लिए अपने पास बुला लिया। वे खांसी बिमारी से गत साल से पीड़ित थे पर मार्च माह से उनके बिमारी की हालत बहुत ही बढ़ती चली गयी। फिर भी इस भयानक खांसी बिमारी के होने पर भी मंडली की सेवाकाई मृत्यु के पूर्व तक करते रहे। उनके मृतक देह को पाद्री पी. एस. तिड़ू द्वारा दिनांक ३१-८-७३ को अपने जन्मभूमि स्थान पकरा में आदरमय साथ मिट्टी दिया गया।

संक्षित परिचय :— इलाका रिर्कोड अनुसार १९५३ ई० से मंडली में सेवाकाई का कार्य आरम्भ किये, और लगभग २० वर्ष की सेवाकाई की अवधि में गोबिन्दपुर इलाका के निम्न मंडलियों में सेवाकाई का कार्य रहा। कर्रा, बुढ़नी, कोटबो, इचाः+उकरीमारी, लुँगटु, इट्ठे+गाड़ी, बसिया, कुरमुल, मुरहू+कजरा। वे एक संगीत प्रेमी होने के कारण अपने सुस्वर रागों से परमेश्वर के बचनो को स्वर-रागो में मिलाकर लोगों को केन्द्रित किया करते थे।

वे अपने धर्म पत्नि दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों को छोड़कर सनातन बिश्राम के लिए प्रभु में मिल गये। अतः आप सभों से प्रार्थना है कि आप भी उस शोकित परिवार को अपनी प्रार्थनाओं में याद करें ताकि पिता परमेश्वर की आशीष उस शोकित परिवार के आत्माओं को शान्ति प्रदान करें।

(पाद्री पी· एस· तिड़ू कोटबो)

Gossner Mission

सूचना

१९७४ से १९७५ सत्र के लिए भी कितने छात्र-छात्राएँ गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोबिन्दपुर में लिये जावेंगे। प्रशिक्षण अभिलाषी नीचे लिखे पते पर फॉर्म मंगाकर अवेदन पत्र भेंजे। अवेदन पत्र पहुँचने की अन्तिम तिथि ३० नोवेम्बर ७३ को है अवेदन कर्त्ताएँ अवेदन पत्र की एक प्रति संबन्धित अंचल अध्यक्षों को दें। अवेदकों की योग्यता कम से कम माध्यमिक इमतिहान उत्तीर्ण तथा कलीशा के कामों में बहुत दिलचस्प रखते हों।

प्रशिक्षण केन्द्र में ठहरने का कुल खर्च ४०) रूपया प्रति माह है जिसमें चुने हुए छात्र-छात्राओं को के० एस० एस० से ३०) रूपया प्रति माह छात्रवृत्ति मिलेगी तथा इलाकाओं वा निज वा अन्य जरियों से १०) रु० प्रति माह देना पड़ेगा। उम्मीद की जाती है कि के० एस० एस० छात्रवृत्ति के लिए सुसमय पर पैसे का बन्दोवस्त करेगी।

प्रधानाध्यापक
गोस्सनर बैबल बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र
पी॰ ओ गोबिन्दपुर
जिला राँची, बिहार।

[आशा गतांक से आगे]

कल्पनाएँ की होगी·····मगर······ मैं ज.नता हूँ कि मुझसे शादी करने के बाद तुम्हारे सभी सपने टूट गये......।" और यह बात सच भी था उसके बाद शायद ही ऐसा कोई अवसर आया हो जब अबिनाश पीकर न आया हो। एक दिन जब आशा ने खीज कर कहा था—यही करना था फिर शादी क्यों की ? उसने आहत होकर उत्तर दिया था—आशा, मानवीय दुर्बलताओं का मुझमें अभाव नहीं; यदि मेरे कोई काम से तुम्हारी भावनाओं को ठेस लगे तो क्षमा करना।" उसके बाद आशा ने चुप रहने की कसम खा ली। यह सच है कि वह आशा को बहुत चाहता था लेकिन कौन सी शक्ति उसे बार की ओर खींच ले जाती······वह स्वयं भी नहीं जानता। जो स्वयं डूबना चाहता हो उसे डूबने से रोक भी कौन सकता है सास और ससुर अपने एकलौटे पुत्र की यह दशा देख न सके और बारी-बारी से उन्होंने भी आँखे मूँद ली। आशा का अन्तिम सहारा भी टूट गया। इसी बीच फूल सी बच्ची का जन्म हुआ—कुछ धीरज हुआ लेकिन अबिनाश में कोई परिवर्तन न हुआ। कहने के लिए तो वे मसीही थे लेकिन पर्व त्योहार को छोड़ शायद ही दूसरे समयों में गिर्जे गये हों। अबिनाश को शराब और दोस्तों से फुरसत न थी आशा दुःखों के बोझ से इतनी दबी हुई थी कि ईश्वर ध्यान में उसका मन ही न लगता। तब भी आशा अपने नाम के अनुकूल आशा करना न भुलती।

अचानक कहीं बिजली गिरी और बादलों के गर्जन से बेबी उठ गई। आशा उसे छाती से चिपकाए सुलाने की कोशिश कर रही थी। तभी तुफान का आवेग कुछ कम हुआ, सहसा ही द्वार की सिकड़ी बज उठी। आशा को समझते देर न लगी कि अबिनाश आ गया है आशा ने बेबी को उठाए ही दरवाजा खोल दिया। सामने अबिनाश मनीष का सहारा लिए खड़ा था। उसने आशा को देखते ही मुस्कराने का असफल प्रयत्न किया। फिर कहा—"आशा तुम अभी तक जाग रही हो ? फिर वह

Gossner Mission

स्वयं भीतर आ गया। आशा के बिपरीत आज अविनाश नशे की हालत में भी होशो हवास सम्भाले था—आशा को आश्चर्य हो रहा था।

अबिनाश—'कितनी बार कहा कि तुम मेरा इन्तजार न करना लेकिन मानती ही नहीं हो......तुम्हें अपने शरीर का भी ख्याल नहीं।"

आशा — चुप चाप खाना परोसने चली गई।

अबिनाश—"आशा आज मैं एक दोस्त के यहाँ खाकर आया हूँ।"

(फिर कुछ रुक कर) 'ओह! ठहरो, जब तक मैं ना खाऊँ, भला तुम कैसे खाओगी।" भोजन के उपरान्त दोनों अपने-अपने बिछौने पर चले गये। आज उसे आशा को चुपी अखर रहा था। वह आशा की नाराजगी का कारण जानता था......वह स्वयं भी जानता था कि वह गलती कर रहा है......लेकिन जाने क्यों अपने आप को रोक ही नहीं पाता......और अपनी इसी गलती के कारण उसे नौकरी से अलग कर दिया गया। अबिनाश नशे में होने के बावजूद इस बात को न भुल सका। अबिनाश ने सोये सोये कई बार आवाज दी, पर हर वक्त सन्नाटा रहा। उसे समझते देर न लगी कि आशा रो रही है। आज अपने प्रतिज्ञा के बाद भी घर न पहुँच सका था। उससे रहा नहीं गया तो नजदीक जाकर उसके सर पर हाथ रख दिया......उसका हाथ जल उठा।

अबिनाश "यह क्या आशा! तुम्हें Fever है? तुमने बतलाया नहीं?"

आशा — (रोष भरे शब्दों में उत्तर दिया) "तुम रहते कहाँ हो जो बतलाती।"

अबिनाश—'मैं न सही तुम्हें तो अपने साथ अन्याय नहीं करना चाहिए।'

आशा — (उसी स्वर में) आप न्याय करने दे तब न?"

अबिनाश - (शान्त स्वर में) मैंने कब रोका है?

आशा —हाँ, तुमने कब रोका है?......रोका तो तुम्हारे पैसों ने है।"

अबिनाश—"तुमने मुझसे कहा होता!"

आशा —"हाँ जिससे माँग लेती......मैं भिखारिनी नहीं।

अबिनाश– "समझने की कोशिश करो।"

आशा – "समझ तो सिर्फ ईश्वर ने आपको ही दी है जो हर महीने, चार सौ रुपये शराब का बिल होता है......यही दिन दिखाना था तो शादी क्यों की थी...—कसमें क्यों खायी थी......और ...।"

मानसिक तनाव के कारण आशा अधिक न बोल सकी बेहोश हो गई। डाक्टर ने बतलाया आशा माँ बनने वाली है......शरीर में खून की कमी है......केश सिरीयस है। आशा को भी मालुम हुआ मगर इस समाचार से उसे कताई खुशी न हुई। आशा जो बेहोश हुई......तो उस दिन से बिछोने से उठ ही न सकी...... अब तो उसमें जीने की भी चाह नहीं थी। अबिनाश दिन भर उसकी सेवा करता......उसे बहलाने की कोशिश करता। उसने आशा को यह नहीं बतलाया कि उससे नौकरी से अलग कर दिया गया।

आज आशा के तबियत में साधारण रूप से सुधार दिखाई पड़ रहा था। अबिनाश को आज लम्बे अरसे बाद बाहर निकलने का मौका मिला। रात में आया तो वह अपने रंग में था। घर में अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था। अविनाश आशा के नजदीक आया...... उसकी सांसे साधारण रूप से तेज थी......वह बड़बड़ा रही थी......"नहीं नहीं मुझे मत ले जाओ......मैं नहीं जा......सकती बेबी......को छोड़......" ज्यों ही अबिनाश ने द्वार से बाहर कदम रखा......उसे आशा की क्षीण आवाज ने रोक लिया......"अबिनास......मत जाओ......डाक्टर की अब......आवश्यकता नहीं।" ......मेरा......अन्त......निकट है......आह!...... पानी! (अबिनाश ने पानी लाया और सहारा देकर पिलाया)।

अबिनाश—"देखो! ज्यादा बातें मत करो .... मैं अभी आया।"

आशा —नहीं...अबिनाश मत जाओ......मैं नहीं......

अबिनाश—"ऐसा मत बोलो।"

आशा —नहीं अबिनाश! यह सच है......मृत्यु एक चिरंतन सत्य है......मनुष्य का......जीवन तो धोखा है......।

Gossner Mission

अबिनाश·· ···बेबी (ऐसा लगता था कि वह अपने समस्त शक्ति समेट कर कह रही हो) ख्याल रखना······मैं······मैं तुम्हें कुछ न दे सकी······आज ······ ईश्वर····· साभ

अबिनाश····· पानी······

(दूसरे ही क्षण आशा का सिर अविनाश की गोद में लुढ़क गया। अबिनाश चीख मार कर उससे लिपट गया "आशा......यह क्या किया तुमने......मुझे इस संसार में अकेला छोड़......दिया......लौट आओ......आशा। लेकिन आशा जा चुकी थी ...संसार के समस्त बन्धन तोड़कर वहाँ, जहाँ इन्सान जीते जी पहुंच नहीं सका।

अबिनाश अब पहले का अबिनाश न रहा उसमें काफी परिवर्तन हुआ। अब उसे शराब के नाम से भी घृणा है। अब पहले से ज्यादा गम्भीर हो गया है। अबिनाश पाया बहुत कुछ इसके लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। ठीक वैसा ही जैसे मसीह ने हमारी कीमत चुकाई है।

मिशन पर्व १९७३

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी मिशन पर्व के निमित ठहराया दिन निकट आ ही गया अत: आप अपने अंचल के अन्तर्गत इलाकाओं पेरिशों तथा मंडलियों में इस दिन की विशेषता को बतलाते हुए मिशन पर्व मानने का कार्य-क्रम अवश्य रखें, वह दिन न केवल स्मरण का दिन होवे, परन्तु आप विशेष कार्य-क्रम बना कर सुसमाचार प्रचार कार्य में अपना पाठ अदा करने का कोई न कोई कदम उठायें। इससे न केवल दूसरों को सुसमाचार से सेवा होगी, पर मडली में जाग्रति आयेगी। इसकी साक्षी वे मंडली दे सकते हैं जिनमें ऐसे कार्य-क्रम रखे जाते हैं।

इस वर्ष मिशन पर्व का उपदेश मत्ती २१ : १८ - २२ पर है। इस वचन को समझने के लिये हम लूक १३ : ६ - ९ भी पढ़ लें और यूहन्ना १५ : ४ - ८ को भी मिलायें।

फलवन्त पेड़ से मालिक की महिमा होती है। यीशु मसीह के साथ जो प्रसंग है इससे इस्राएली जाति की फल रहित परिस्थिति दर्शायी गयी है जिससे परमेश्वर की महिमा के बदले उसका अनादर हुआ, अन्य जातियों के बीच परमेश्वर का अपमान और ठट्ठा भी हुआ।

मसीही बपतिस्मा के कारण मसीह में कलम की हुई दाखलता है। लता या वृक्ष हमारे लिये यह परमेश्वर का अनुग्रह है। यह कलम किया जाना इसी उपदेश से है कि मसीही फल लावें और परमेश्वर की महिमा करें। पर क्या वह फल रहित अंजीर पेड़ बन गया है ? आप ने परिवार, मंडली व इलाका ने कितना फल लाया ? फल लाने के लिये कुछ उपाय और परिश्रम किया ? इस मिशन पर्व में आप अपनी मंडली के भाई-बहनों के साथ अवश्य उपाय व परिश्रम करें कि आप लोगों के द्वारा भी फल लाने के कारण परमेश्वर की महिमा होवे, ऐसा न होवे कि हरा भरा होते हुए भी — जीवित दीखते हुए भी स्राप का दण्ड पड़े - - यह न्याय की भयंकरता है।

आप से अर्जी है कि संक्षेप में [बीस वाक्याओं तक] आप के मिशन पर्व का समाचार हमारे पास घरबन्धु के लिये लिख भेजें, मिशन पर्व का चन्दा अवश्य काम के लिये दिया जावे।

मिशन पर्व आप के लिये आनन्द व आशीषपूर्ण होवे।

आप का विश्वस्त

[सी० के० पॉल सिंह]
डाईरेक्टर,
बी० ई० एल०

गोस्सनर कलीसिया की सोचनीय आर्थिक दशा की ओर ध्यानाकर्षण

[डा० एम० बागे]

गोस्सनर कलीसिया के कुछ अधिकारी कलीसिया की वर्तमान आर्थिक स्थिति को अति ही गंभीर और शोचनीय बता रहे हैं। श्री सलन भेंगरा जो केन्द्रीय आमद-खर्च के हिसाब-किताब से विशेष जानकारी रखते हैं जब कहते हैं कि दिसम्बर १९७३ के अन्त तक में केन्द्रीय सलाहकारी सभा के संचालन मद में कुल १०००००) रु० (एक लाख) का घाटा हो जायगा तब मुझे भी विश्वास होता है, कि स्थिति गंभीर है। के० एस० एस० के संचालन मद में घाटा होते हुए भी के० एस० एस० के सभी कार्यकर्त्ताओं को मासिक बेतन प्राप्त होते जाने और के० एस० एस० एवं केन्द्रीय खजाने पर अवलम्बित बोर्डों की बैठकियों के होते जाने का अर्थ यह है कि अन्य मद के रकम उपरोक्त कार्य में खर्च किए जा रहें हैं। ये अन्य मद सम्भवत: हैं :— राज्यवृद्धि के लिए एवं हाई स्कूलों को ऋण सुलभ कराने के लिए जर्मनी से प्राप्त रकम। प्रश्न है : क्या राज्यवृद्धि कार्य के खर्च के लिए एवं उसी तरह हाई स्कूलों को ऋण देने के लिए जब उक्त रकम की आवश्यकता होगी तब यह रकम भरा जा सकेगा? इसके भरे जाने को संभावना पर मुझे संदेह है। अतएव स्थिति अवश्य ही गंभीर है। यह तभी भरा जा सकेगा जब इलाकाओं एवं अंचलों से प्राप्य रकम वर्ष के अन्त तक में निश्चितरुपेण आ जाए, पर यह मेरे अनुभव के आधार पर असंभव है। अत: स्थिति सिर्फ गंभीर नहीं अपितु सोचनीय है।

यह अनुमान और ही ठोस प्रतीत होगा जब हम १९७४ साल के अनुमानित बजेट पर ध्यान दें। उक्त वर्ष में व्यय के लिए कुल ५३८३७३) रु० ८८ पैसे की व्यवस्था है। इस खर्च के बहन निमित्त आमदनी के विभिन्न श्रोत निर्धारित है। कुछ वैदेशिक हैं और कुछ गोस्सनर कलीसिया के निजी श्रोत हैं। निजी श्रोतों से प्राप्य रकमों में एक अपेक्षित है ४००००) रु० वार्षिक लिफाफा चंदा द्वारा और दूसरा है ५६४५१) रु० जो अंचलों से प्राप्य दर्शाया गया है। कुछ ऐसे रकमों की चर्चा है जिनको वैदेशिक श्रोत से प्राप्त करने की आशा व्यक्त की गई है परन्तु श्रोत निश्चित नहीं है। ये रकम हैं:— ७९४६) रु० जो आध्यात्मिक प्रशिक्षण कार्य के खर्च-बहन के निमित है और ४६०००) रु० राज्यवृद्धि कार्य के लिए है—कदाचित यह सुरगुजा क्षेत्र के कार्य से विशेषत: संबन्धित है—और ८६००) रु० केन्द्रीय शिक्षा विभाग के कार्य संचालन हेतु है। यदि यह निश्चित हो कि ये रकम विदेश से अवश्य प्राप्त होंगे तब तो यह चिन्ता का विषय नहीं होगा परन्तु यदि यह संदेह जनक हो तब तो घाटा का अप्रत्याशित रूप में बढ़ना स्वाभाविक है। जहाँ तक अंचलों से अथवा लिफाफा चंदा द्वारा प्राप्य रकमों के अंकड़ों का अनुमान किया गया है कि यह साफ कहा जा सकता है कि उतने रकम प्राप्य नहीं हो सकेंगे। यदि इस तरह से १९७४ में भी घाटा बढ़ जाए तब तो केन्द्र की स्थिति आर्थिक दृष्टि से भयङ्कर हो जायगी।

घाटा के कारण:—केन्द्रीय खजाना के बजेट में घाटा सिर्फ आज की बात नहीं है। यह हमेशा ही कुछ अंशों में रही है। परन्तु घाटे का रकम आज इतना बढ़ गया कि इसको भरना असंभव प्रतीत होता है। फलत: कलीसिया के संचालन में इसका प्रभाव अवश्य हो पड़ेगा। इस घाटे के भिन्न भिन्न कारण हैं जिनमें मेरे विचार से कुछ ये हो सकते है :—

[१] कलीसिया के आर्थिक बोझ बहन करने वाली इकाइयों का लंगड़ापन :— केन्द्र की संस्थाएं एवं अंचल कार्यालय के स्तर के खर्च के निमित्त कलीसिया को नीचे के संगठनों पर निर्भर होना पड़ता है। नीचे की ऐसी संगठन-इकाइयां कलीसिया की इलाकाएं वे इकाइयां हैं, जिन्हें कलीसिया के चालू विधान के अनुसार आमदनी एवं दान बटोरने और खर्च करने का अधिकार प्राप्त है। आवश्यकता बस कुछ

[शेष अगले अंक में]

Gossner Mission

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा (३०वीं सितम्बर तक) मिला

1. Mr, Christ Emmanuel Kandulna
2. ,, Daniel Samad
3. Mrs. C. S. Khakha
4. Sri Johan Surin (Prachin)
5. ,, Jusaph Purti
6. ,, Sursen Dang for 5 members
7. Rev. Theodore Dungdung
8. Mr. B, B. Purti
9. ,, Moses Khakha
10. ,, Ch. H. Barla
11. ,, Jusaph Surin for 11 members
12. ,, Bimal Dan Khakha for 2 members
13. Cand. Anjor Kullu
14. Mr. J. Mundu
15. Mrs. M. Lakra
16. Sep. Joseph Purti
17. Mr. Antony Suren
18. Rev. D. Hemrom
19. Mr. M. Horo
20. ,, P. Aind
21. ,, M. S. Kandulna
22. ,, Daniel Khoya
23. Mrs. Shanti Purti
24. Mr. Peter Kullu.

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO ; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—
School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड न० प१० टा० १५
वर्ष—४३ राँची, नव १९७३, संख्या न०—११

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न॰ पी॰ टी॰ १५

वार्षिक मूल्य ४ रु॰

वर्ष — ६३ | रांची, सेप्तेम्बर १९७३ | संख्या न॰ — ६

Eingegangen
2 4. OKT. 1973
Erledigt: ....

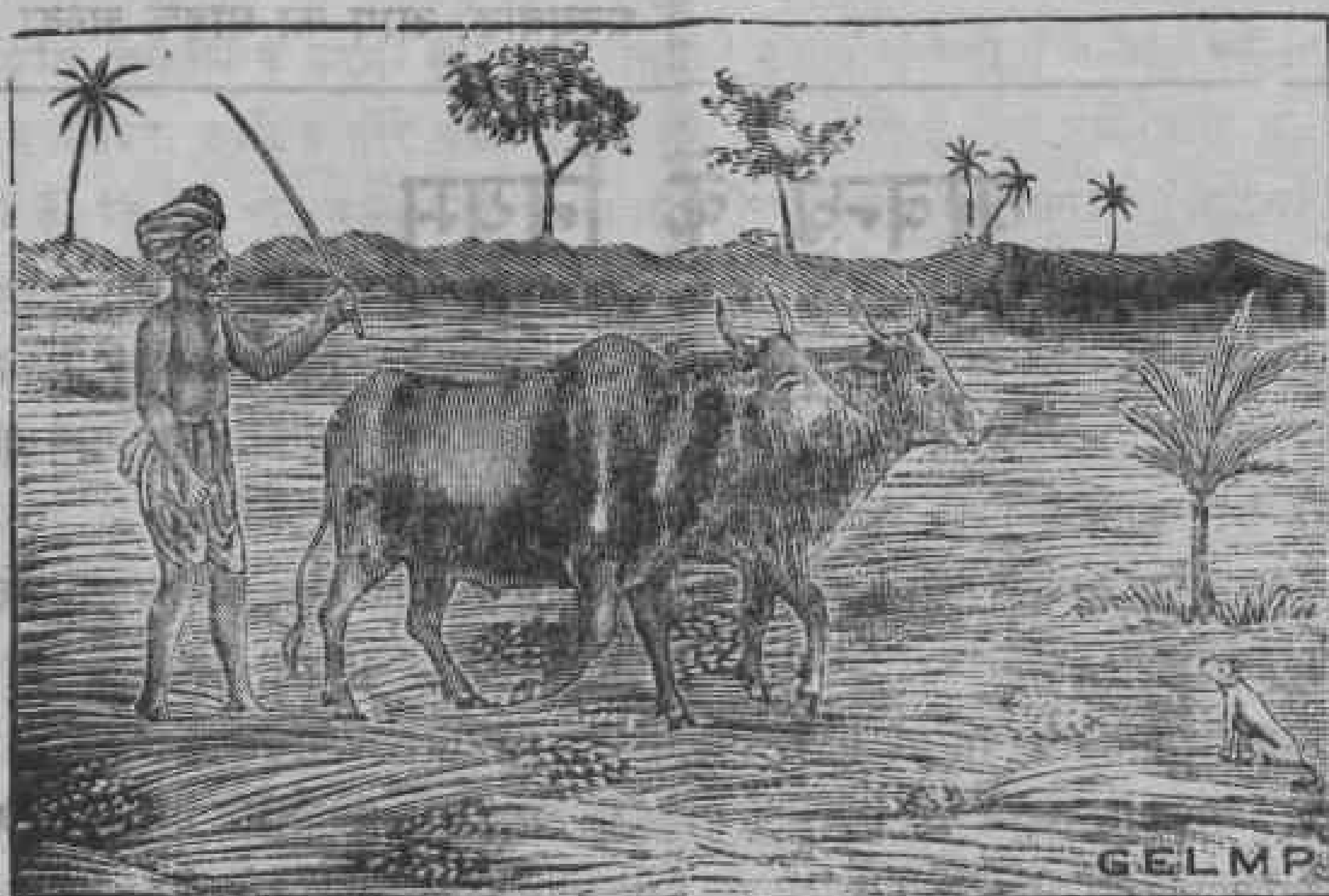

"किसी की रोटी सेंत में न खाओ — परिश्रम
और कष्ट से रात-दिन काम धन्धा
करो—किसी के लिये भार
न होओ"

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — —	३
उपदेश की तैयारी — रेभ एम· टेटे —	४
ज्ञान और सामर्थ — सी· डी· जोजो —	७
कलीसियाई समाचार—देश विदेश —	८
सूचना—गोस्सनर कलीसिया महिला संघ—	११
शोक समाचार —	१२
Sympathy Society of India — मनोहर कन्डुलना —	१२
अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट — डा· सी· के· पॉल सिंह	१६
ढकोसला — इम्मानुएल पन्चु —	६
जी· ई· एल· चर्च…… पेन्सन फंड — पा· बि· मिंज —	१३
धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा मिला —	१५

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणत: १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवत: डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

"सच्चा प्रोत्साहन"

प्रोत्साहन विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा विभिन्न कार्यों के निमित होते हैं, पर बहुधा ऐसे अवसर में बहुधा दूसरों को ही सम्बोधन कर कहा जाता है, परन्तु प्रोत्साहन ऐसा केवल नहीं होता है। वह प्रोत्साहन देने वाले को भी सम्मिलित कर सकता है, इसी माह के पथ प्रदर्शक पद में इसी बात की ओर संकेत है; 'तो आओ हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप जायं '(इब्रानी १० : २२)।

हमारा लक्ष्य है परमेश्वर की समीपी में आना; यह अपने में सम्भव नहीं है, पर चूंकि मसीह ने अपनी ही देह में और क्रूश मृत्यु में हमारे लिये, सारी मनुष्य जाति के लिये द्वार खोल कर सम्भव बना दिया है, हम उसकी समीपी में जा सकते हैं। यह तो सारे मसीही जीवन और विश्वास का लक्ष्य है। मसीही को इसी लक्ष्य को सामने रखना और जो भी अन्य कार्य दिये गये हैं करना है। इसी निशान की ओर धनी व गरीब, पढ़े-लिखे व अनपढ़, सभ्य व असभ्य, काले व गोरे कदम बढ़ाते हुए जाने वाले हैं; इस निशान से भटकना नहीं है। अवश्य है, कि इस ओर बढ़ने वाले के जीवन में नवीनता, विश्वासता एवं शुद्धता रहे! पत्री का लेखक "तुम्हें" या "तुम" नहीं पर "हम" लिखता है, हम सभों को पूर्ण-विश्वास व शुद्धता की आवश्यक्ता जब हम परमेश्वर की अनन्त समीपी में जाना चाहते हैं। बहुत बार यह एक आदत सी बन जाती है कि हम बराबर "वे" या "तुम" की भावना में ही रह कर प्रोत्साहन को सामने पेश करते हैं यह भी विशेषकर जब दोष-गुनाह या कमजोरी पर धावा बोलना चाहते हैं। पर सच्च कहा जाय तो प्रोत्साहन और चेतावनी हम सभों को समिलित करता है, वह कौन सा प्रोत्साहन होगा जिसमें हम बराबर दूसरों को प्रोत्साहन देंगे 'पूर्ण विश्वास एवं शुद्धता" के लिये पर स्वयं अविश्वास व अशुद्ध जीवन बिता कर परमेश्वर से और लोगों से दूर भागते हैं और स्वयं परमेश्वर और लोगों के विरुद्ध काम करते हैं। अत: परमेश्वर की समीपी के लक्ष्य में बने रहने के लिये आवश्यक है कि हम एक दूसरे के साथ मिल-कर विश्वास में बढ़ने एवं शुद्धता की कसौटी में खरे बने रहने की मनसा रख कर ही काम करें तभी हम कह सकते हैं : आओ हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप जायं। (स· स·)।

Gossner Mission

उपदेश की तैय्यारी

मार्टिन टेटे

त्रिनितातिस के पीछे ११वां एतवार

लूका १८ : ९-१४

पलस्तीन देश में ईश्वर भक्त लोग प्रतिदिन तीन बार मंदिर में जाकर प्रार्थना किया करते थे। ९ बजे भोर, १२ बजे दिन एवं ३ बजे दूसरी बेला। निश्चित समय में मंदिर में प्रार्थना के लिये आते थे। यीशु इस दृष्टान्त में फरीसी तथा तहसीलदार की प्रार्थना के द्वारा हमें सिखाने चाहता है।

"प्रार्थना के विषय उपदेश"

१. घमंडी मनुष्य प्रार्थना नहीं कर सकता है : स्वर्ग के फाटक में लोग घुटनों के बल प्रवेश कर सकते हैं। बलवन्त हाथों द्वारा नहीं। अर्थात् सत्य प्रार्थना के निमित्त दीन हृदय की आवश्यकता है।

२ पड़ोसी से घृणा करने वाला प्रार्थना नहीं कर सकता है :

प्रार्थना में हम अपने को बड़ा नहीं बना सकते हैं। प्रार्थना द्वारा हम अपनी पापी दशा को पहचानते हैं। यह भी जानते हैं कि हमारे समान पापी, दोषी, दुःखी आदि लोगों के घुटने परमेश्वर के सामने झुकते हैं।

३ सत्य प्रार्थना ईश्वर के साथ सम्भव है :

यह सच है कि फरीसा प्रार्थना करता था। अपने आप को अन्य लोगों से बड़ा दिखलाता था। ईश्वर के साथ प्रार्थना करने वाला बराबर कहेगा"— हे ईश्वर मुझ पर दया कर—मैं पापी हूँ"।

आज के वचन के प्रकाश में हम अपने जीवन को देखें और अपने आप को परखें और पूछें—मुझ में क्या कमी है? क्या मैं परमेश्वर के साथ प्रार्थना करता हूँ?

त्रिनितातिस के पीछे १२वां एतवार

मरकुस ७: ३१—३७

आज के वचन में बहरा तोतला मनुष्य चंगा किया जाता है। यीशु चंगाई के द्वारा हमें हमारे जीवन के लिये अनेक विषयों को सिखाता है।

"यीशु के वचन की शिक्षा"

१ वचन में लोगों को चंगा करने का सामर्थ है:— "खुल जा" यही यीशु का बचन है। इसी वचन के द्वारा बहिरा चंगा किया गया।

२ वचन प्रचार वा गवाही के निमित्त शक्ति प्रदान करता है:—

बहिरा और हकला को शक्ति दी गयी। वह अपनी चंगाई के विषय गवाही देता है। उसके जीभ की गांठ खुल गयी। वह सुनने भी लगा। आज भी चंगापन पाया हुआ पापी गवाही देता है। क्या हम चंगे हो गये हैं। अगर चंगे हो गये हैं तो आइये हम गवाही देवें।

३ वचन के द्वारा यीशु की महिमा होती है:—

उसने सब कुछ अच्छा किया है। वह बहिरों को सुनने और गुंगों को बोलने को शक्ति देता है।

क्या यीशु हमारे जीवन में सब कुछ अच्छा किया है? हम अच्छे हो गये हैं तो आइये बचन के द्वारा उसकी गवाही देवें और उसकी महिमा करें।

त्रिनितातिस के पीछे १३वां एतवार

लूका १०:२३-३७

आज के वचन में बतलाया गया है कि जिनका मन बालकों के समान है वे ही सत्य को पहचान सकते हैं। पिता एवं पुत्र में विशेष सम्बन्ध है। इस सत्य को नबी लोग देखने को लालसित थे। यीशु आप

Gossner Mission

ही इतिहास का प्रभु है। इतिहास का प्रभु आज हमें बतलाता है कि हमारा पड़ोसी कौन है ?

"मेरा पड़ोसी कौन है"

१ क्या याजक मेरा पड़ोसी है ? :— डाकूओं के द्वारा घायल किया हुआ मनुष्य आप ही विपत्ति मोल लिया था। वह जान बूझ कर डाकूओं के हाथ में पड़ा था। उन दिनों में यरीहो से यरूसलेम का मार्ग विपत्ति से खाली नहीं था। याजक जानता था कि लाश को छूने से वह सात दिन तक अशुद्ध हो जायगा। (गिन्ती १६:११) उनकी नौकरी चली जायगी। वह उद्धार नहीं परन्तु व्यवस्था के द्वारा अपने धर्म्म को नापने चाहता था। गिर्जा चलाना और आराधना में अगुवाई करना याजक के लिये किसी का दुःख देखने से बड़ा काम था। इसलिये वह घायल मनुष्य का पड़ोसी नहीं हुआ। हमारा पड़ोसी वही है जो हमारे दुःख के अवसर पर हम पर तरस खाता है।

२ क्या लेवी मेरा पड़ोसी है ? :— ऐसा मालूम पड़ता है कि लेवी घायल मनुष्य के पास गया था। उस युग में डाकू लोग कभी-कभी घायल मनुष्य का बहाना बनाते थे और लूटने का काम करते थे। लेवी सर्वप्रथम अपनी रक्षा एवं आड़ चाहता था। वह दूसरों की रक्षा के लिये विपत्ति मोल लेना नहीं चाहता था। इसलिये लेवी भी हमारा पड़ोसी नहीं हो सकता है।

३ क्या सामरी मेरा पड़ोसी है ? यहुदी लोग सामरियों को तुच्छ समझते थे। यूहन्ना ८:४८ के अनुसार यीशु भी सामरी कहा गया है। व्यवस्था तोड़ने वाले को भी यहुदी लोग सामरी कहते थे। सामरी हमारा पड़ोसी है। क्योंकि उसने सहायता के लिये अपना हाथ बढ़ाया।

मसीही का यह कर्त्तव्य है कि वह आवश्यकता में पड़े हुओं की सहायता करे।

(यात्रा १३:१-१०; ११-१६ व्यवस्था ६:४:६; ११:१३-२० ६:३; ६:११+१३) हम यीशु के आदेश के अनुसार काम करें।

त्रिनितातिस के पीछे १४वां एतवार

लूका १७:११-१६

आज के वचन के अनुसार दस कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं। नव कोढ़ी अधन्यवादी हो जाते हैं और केवल एक कोढ़ी धन्यवाद के लिये यीशु के पास लौटता है। दुःख के अन्त होने पर लोग धन्यवाद देना भूल जाते हैं।

"क्या हम धन्यवाद के लिये तैयार हैं :

१ क्या बच्चे आज धन्यवाद के लिये तैयार हैं ? बच्चे युवापन की प्राप्ति पर मां बाप को भूल जाते हैं। साथ ही साथ वे ईश्वर को भी भूल जाते हैं। वे अधन्यवादी हो जाते हैं। बूढ़े मां बाप को भूल जाना वा ठोकर खिलाना ही अधन्यवादी होना है।

२ क्या हम अपने पड़ोसी को धन्यवाद देने के लिये तैयार हैं ? हम जानते हैं कि हमारे पड़ोसी हमें सहायता देते हैं। गुरु, पुरोहित, डाक्टर सभी हमारी सहायता करते हैं। पर हम धन्यवाद नहीं देते हैं। अतः हम भी दस कोढ़ी के समान हैं।

३ क्या हम ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये तैयार हैं ? ईश्वर ने हमारे जीवन का बीमा ले लिया है। अपने पुत्र को हमारे लिये छोड़ दिया। उसने हमें मंडली दिया। तौभी हम ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये तैयार नहीं होते हैं। (भजन १०३:२।

हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह और उसके उपकार को न भूल।

त्रिनितातिस के पीछे १५वां एतवार

मत्ती ६:२४-३४

परमेश्वर अपनी दया एवं अनुग्रह के कारण मनुष्य को जीवन प्राण के साथ जीवन की आवश्यकताओं

Gossner Mission

को भी देता है। धन सम्पति हमारे जीवन के लिये प्रदान किये गये हैं। यीशु उपदेश में समझाता है हमारे जीवन में धन सम्पति का क्या स्थान है।

"हमारे जीवन में धन सम्पति का स्थान:

१ धन सम्पति का मालिक ईश्वर आप ही है—

प्रथ्वी और जो कुछ है — सब ईश्वर का है (भजन २४:१;५०; १०+१२; मत्ती २१:३३) मनुष्य धन का क्रय विक्रय कर सकता है। परन्तु धन की सृष्टि नहीं कर सकता है। धन हमारे जीवन क लिये दिया गया है। इस लिये हम धन का व्यवहार ईश्वर की इच्छा के अनुसार करें।

२ हम ईश्वर की दृष्टि में धन सम्पति से अधिक मूल्य के हैं: देखो २५+२६ पद।

इसी कारण ईश्वर आप ही हमारे लिये चिन्ता करता है।

३ धन हमारे जीवन के अधीनस्थ है :

हम धन के गुलाम नहीं पर धन हमारा गुलाम है। धन से हमारी भलाई होती है। धन ईश्वर नहीं परन्तु ईश्वर आप ही हमारे जीवन के लिये धन देता है।

ईश्वर की इच्छा है कि हम धन (आनन्द) प्राप्त करने के लिये यीशु को अपना लेवें। वही हमारे धन (आनन्द) का मूल और सार है।

"ढकोसला"

'इम्मानुएल पन्चू'

जी० टी० सी०, राँची

प्रभु जी, प्रभु जी कहते हैं, मसीह यीशु को बहुत,
दिल में झाकों तो दिखता है ; सांसारिक मैल बहुत।
धनी गरीब को दबाता ; गरीब अमीर से लड़ता,
सांसारिक धन है ; जो दोनों को खूब लड़ाता।
कह ए 'पन्चू' जब तक है लोग ; रिश्ते व काले धन्धे की दृष्टि में,
कभी शान्ति न पा सकेंगे ; वे इस सृष्टि में।
रह जाएगा सब धार्मिक 'ढकोसला' ; हर नाम के मसीह का,
स्वर्ग उसी को प्राप्त होगा ; जो हृदय से भजेगा नाम यीशु का।।

Gossner Mission

ज्ञान और सामर्थ

सी· डी· जोजो, जी· टीएच· कॉलेज, रांची

यदि आज हम कलीसियाओं पर 'ज्ञान और सामर्थ' इन दो बातों के आधार पर गौर करें, कि इन दो बातों में किस बात की अधिक आवश्यकता है ? या हम किसे अधिक पसंद करते हैं ? तो इसके उत्तर में हम ऐसा विचार करते हैं, कि दोनों ही बातें प्रत्येक के जीवन में आवश्यक हैं, पर हम इन दोनों में 'ज्ञान' पर अधिक जोर देते हैं ।

पर यदि कोई बहुत ही ज्ञानवान हो और सामर्थहीन हो तो वास्तव में उसके लिए दुःख की बात है, उसी तरह कोई सामर्थी हो और उसमें ज्ञान की घटी हो तो यह भी उसके लिए दुःख की बात होगी ।

आज हम यीशु खृस्त के इन दो गुणों पर ध्यान दें, "यीशु खृस्त परमेश्वर का ज्ञान एवं सामर्थ दोनों हैं," १ कु० १:२४ । जो यीशु पर विश्वास करते हैं उनके लिए खृस्त परमेश्वर का ज्ञान है. एवं उसी यीशु में उद्धार देने की सामर्थ भी है । जब हम कोई बड़ा कार्य करने की बात सोचते हैं तो उसके लिए हमें ज्ञान एवं सामर्थ दोनों की आवश्यकता पड़ती है; इन दोनों के सामंजस्य के बिना सुचारू रूप से कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता ।

यही बात हम उद्धार के महान् कार्य में परमेश्वर का महान् ज्ञान एवं उसकी सामर्थ का प्रदर्शन पाते हैं ।

यीशु खृस्त को ग्रहण करनेवाले को भी ईश्वरीय ज्ञान एवं सामर्थ दी जाती है । यीशु खृस्त में विश्वास करने के द्वारा हमें पवित्रात्मा दिया गया है और इसी पवित्रात्मा में परमेश्वर का ज्ञान एवं सामर्थ है । 'जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है । याकुब ३:१७ । यीशु में जो सामर्थ है वह हमें सामर्थी बनाती है, जिसमें हम पाप पर जयवंत होते हैं ।

आज हमारे लिए विशेष प्रश्न है कि इस प्रकार ज्ञानी एवं सामर्थी ईश्वर की प्रजा होते हुए भी हम क्यों प्रभाव रहित एवं दुर्बल जीवन व्यतीत कर रहे हैं ? क्या ईश्वर ने सुबुद्धि नहीं दी ? या क्या ईश्वर ने हमें पाप पर विजयी नहीं बनाया ? कलीसिया में प्रेम एवं ईमानदारी एवं सुचाल चलन की घटी क्यों है ? क्या ज्ञान की घटी से या सामर्थ की घटी से ?

यीशु के उपदेश ज्ञान से पूर्व एवं सामर्थ सहित था जिस कारण लोग आश्चर्य करते थे लुका ४:३२, ३६ । इस संसार की बुद्धि तो मनुष्य को परमेश्वर से दूर ले जाती है, इस कारण यह ज्ञान परमेश्वर के ज्ञान एवं सामर्थ के सम्मुख ठहर नहीं सकता, प्रेरित ६:१० १ को० १:२० ।

यीशु को ही परमेश्वर ने न्याय करने का भी एवं उसपर विश्वास करने वाले को पाप क्षमा एव अनंत-जीवन देने का अधिकार दिया है, यूहन्ना १:१२ । यीशु जीवन का अधिकारी होकर लोगों को आत्मिक एवं मानसिक, शारीरिक रोग एवं मृत्यु से भी बचाया यह यीशु का अधिकार एव सामर्थ है यीशु ने यह अधिकार अपने शिष्यों एवं विश्वासियों को भी दिया कि वे भी दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ रखें एवं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करें एवं बीमारों को चंगा करें । लूका ९:१-२ । यदि आज हम उस पर विश्वास करने के बावजूद भी यह सामर्थ अपने में नहीं रखते तो वास्तव में हम आत्मिक रूप से निर्बल हैं ।

वर्तमान में सच कहा जाय तो हम बुद्धि की प्राप्ति में लगे हुए हैं, सामर्थ पाने की इच्छा ही नहीं रखते । यदि हमारे दिल में परमेश्वर की ओर से सामर्थ एवं ज्ञान पाने की इच्छा नहीं है तो यह हमारे लिए अफशोष की बात है । क्या कलीसिया के अगुवे कलीसिया की बिगड़ती परिस्थिति को देखते ही रह जाएगे और कोई कदम न उठायेंगे ? अगुवों में ज्ञान की कमी है या सामर्थ की ? मेरे ख्याल से ज्ञान की घटी नहीं है पर सामर्थ की एवं सच्चे लगन की । हम नीति वचन २९:१८ पर ध्यान दें, जहाँ लिखा है, "जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग

Gossner Mission

निरंकुश हो जाते हैं।" यह सच है कलीसिया के सामने कोई नया दर्शन न आने के कारण कलीसिया के सदस्य घबड़ा उठे हैं। परमेश्वर के सच्चे प्रेम एवं ज्ञान एवं सामर्थ का दर्शन आवश्यक है।

आज आवश्यक है कि एक-एक अगुवा ईश्वर के आगे खड़े होकर ईश्वरीय ज्ञान एवं सामर्थ माँग ले कि वह उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को निबाह सके। कलीसिया का एक-एक सदस्य ईश्वर के सामने प्रार्थना के साथ आवे और कलीसिया की इस बुरी परिस्थिति से मुठभेड़ करने के लिए तैयार हो जाय।

डा० मार्टिन लूथर प्रति दिन तीन घंटा प्रार्थना किया करता था। ताकि उसको आत्मिक सामर्थ मिले; पर आज मैं और आप प्रार्थना में कितना समय देते हैं? वे भाई-बहनें जो कलीसिया में नई जागृति एवं सुधार लाना चाहते हैं, प्रार्थना में कितना समय देते हैं? क्या हम अपनी बुद्धि के बल पर नवजीवन एवं सुधार लाना चाहते हैं या ईश्वरीय सामर्थ एवं ज्ञान से परिपूर्ण होकर?

कितने उपदेशक कहते हैं कि मण्डली उपदेश सुनते-सुनते थक गई या कहते हैं कि हम उपदेश देते-देते थक गए। ऐसा क्यों? मण्डली उपदेश से प्रभावित क्यों नहीं होती, इसलिये कि हमारा उपदेश सामर्थ-रहित है. ईश्वरीय सामर्थ से भरा उपदेश ही मण्डली को प्रभावित कर सकती है हम ईश्वरीय सामर्थ से पूर्ण होकर ही उपदेश दें। क्या ईश्वर ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण होने की प्रतिज्ञा नहीं दी? योएल २:२८, इफीसी ५:१८। यदि अभी तक हम ईश्वर के सामर्थ एवं पवित्रात्मा से परिपूर्ण नहीं हुए तो शीघ्र ही हम प्रार्थना में लग जाएं। 'यहोवा के भक्तों को किसी भली वस्तुओं की घटी न होगी' भजन संहिता ३४:१०।

क्या हम ईश्वर का ज्ञान ढूँढ़ते? जो यहोवा से बुद्धि माँगता है उसको वह बिना उलाहना के उदारता से देता है, याकूब १:५ हमें ईश्वर का सत्य ज्ञान पाने की आवश्यकता है, यह ज्ञान सब की भलाई के लिए होती है।

परमेश्वर की प्रजा को भलाई करने के लिये बुद्धिमान होनी चाहिये। यहूदियों की बिगड़ती नैतिक स्तर को देखकर यहोवा का वचन यर्मयाह के पास पहुंचा—"क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है वे मुझे नहीं जानते, वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं जिनमें कुछ भी समझ नहीं, बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, पर भलाई करना वे नहीं जानते।" यर्मयाह ४:२२। आज मसीही मण्डली नई इस्राएल एवं नई सृष्टि है, पर आज हम में भी यही दोष है हम बुराई करने के लिए काफी बुद्धिमान हैं, पर भलाई करना नहीं जानते।

सच कहा जाय तो हमारा मान-मर्याद हमारी खुमार-पन; आज हमें परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान एवं सामर्थ एवं आत्मिक बरदानों की भरपूरी पाने से दूर कर दिया है:

आज हम अपने को धर्मशास्त्र रूपी ऐने में देखें, कि हम कैसे हैं? आज मेरे और आप के लिए यही चुनौती है कि हम कलीसिया में नई जागृति लाएं। इसके लिए हमें बहुत देर तक सोचने की आवश्यकता नहीं है, पर ईश्वर से क्षमा माँगने एवं सामर्थ माँगने की आवश्यकता है अन्यथा हम संसार की दृष्टि से तो गिरे ही रहेंगे और निर्बल एवं पंगु होकर एक दूसरे को ताकते रहेंगे।

कलीसियाई समाचार

● राँची: गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी ओटोनोमस दिवस रांची हेडक्वाटर्स मंडली में बड़े धुमधाम से मनाया गया। गिर्जा उपासना के अतिरिक्त खेल–कूद आदि मनोरंजन के कार्य-क्रम भी दूसरी बेला आयोजित थे जिसमें छोटे बड़े जवान युवती एवं बुजुर्गों ने भाग लिया। सब में प्रथम द्वितीय होने वालों को तो कुछ इनाम मिले ही पर सबसे अधिक उम्र वाले उपस्थित बुजुर्ग को भी इनाम देकर हर्षित किया गया।

● पानीसानी: पानी सानी इलाका के जुलाई माह बैठकी में विशेष निर्णय क्षेत्र के उत्थान के लिये गये। इस बैठकी में विशेष सम्मितियां बनायीं गयी ताकि विशेष कर साहय्य कार्य सुचारू रूप से चल सके। बघमा मिशन क्षेत्र

Gossner Mission

के विषय भी कुछ मत व्यक्त किये गये हैं जिसके द्वारा क्षेत्र में काम ठीक से चलाया जा सके।

● राऊरकेला/रांची : जुलाई माह के अन्तिम दिनों में उत्तर हिन्दुस्तान के विभिन्न मसीही समुदायों की बैठकी राऊरकेला में हुई। हमारी कलीसिया से प्रमुख अध्यक्ष ने प्रतिनिधित्व किया। बैठकी में आपसी सहयोग व सहायता की सम्भावनाओं पर विचार विमर्श हुआ जिससे कि इस क्षेत्र में मसीही एक साथ कार्य कर सकें। इस प्रकार की यह पहली बैठकी थी। (खकपस)

● हजारीबाग : सिंघानी (हजारीबाग) इलाका के घाटो (वेस्ट बोकारो कोलियरी) मंडली में इस साल बड़े उमंग के साथ ओटोनोमी दिवस, १० जुलाई १९७३ ई० को मनाया गया। एतवार तक पूर्बिया लहरा (वर्षा) पड़ने के कारण भाई-बहनों का जमा होना नाउम्मेदसा लग रहा था। लेकिन ईश्वर पिता ने स्वयं हीं समस्याओं का हल कर दिया। मौसम साफ था, पर सभी नौकरी वाले होने के कारण यह प्रोग्राम शाम को रखा गया। शाम ७ बजे श्री बिमल दान खाखा के द्वारा गिर्जा आराधना शुरू किया गया। उन्होंने 'छोटानागपुर में गोस्सनर कलीसिया की स्थापना और ओटोनोमी की प्राप्ति" का एक संक्षिप्त किन्तु सुन्दर झांकी मंडली के सम्मुख प्रस्तुत किया। तद्पश्चात् सचिव हीं के निगरानी में प्रोग्राम के अनुसार बच्चों का मौखिक और बड़ों का लिखित् बाईबल प्रतियोगिता परीक्षा ली गयी। क्रमशः ८ और १० प्रश्न थे जो धर्मशास्त्र, कलीसिया और घाटो मंडली के इतिहास से लिये गये थे। मंडली के सभी भाई-बहन और बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सचिव के द्वारा जब परीक्षाफल तैयार किया जा रहा था तभी सबों के लिये बुन्दिया बांटा गया। परीक्षा फल तैय्यार हुआ :-

मौखिक		लिखित	
१ मिस॰ बासन्ती कुजूर	I	१ मिस्ट्रेस एस॰ खाखा	I
२ जस्टीन कु० तीगा	II	२ मि॰ एस. टोपनो	II
३ जीवन प्रकाश कुजूर	III	३ मि॰ रीफिरदन खाखा	III
४ फुलमनी कुजूर	IV	४ मिस्ट्रेस किरण कुजूर	IV
		५ मि॰ एम॰ बरवा	V

मंडली के सभापति श्री सरन कुजूर के कर कमलों द्वारा विजयी प्रतियोगियों के लिये बाइबिल सम्बन्धित किताबें पुरस्कार स्वरूप दिये गए। तद्पश्चात् सभापति ही के द्वारा अभिवादन भरे शब्दों में अन्तिम प्रार्थना के साथ रात १०½ बजे प्रोग्राम का विसर्जन किया गया।

जुलाई १०, डोमटोली मंडली (टकरमा इलाका)

विलम्बित समाचार

बड़े हर्ष की बात है कि विगत १० वीं जुलाई दिन मंगलवार को श्री॰ पी॰ डांग की अध्यक्षता में यहां सादे, किन्तु भव्य ओटोनोमस समारोह (५४ वां वर्ष गांठ), बड़े धूम-धाम से मनायी गई। इस शुभावसर पर प्रतिभाशाली वक्ताओं ने अपना मन्तव्य देकर ओटोनोमस कलीसिया के दीर्घजीवन की कामना की। प्रमुख वक्ताओं में श्री॰ सी॰ के॰ कन्डुलना (अंचल-सदस्य, डोमटोली), श्री॰ ई॰ समद (प्रचारक रैबेड़ा मंडली), श्री. एम. समद (इलाका सदस्य लुड़गी), उल्लेखनीय है। इनके संवाद का मूल यह है कि "आत्मशासित कलीसिया की क्षत्रछाया में रहकर हमें आत्मिक एवं लौकिक क्षेत्र में वृद्धि लाने के साथ-साथ कलीसिया के भाई-बहनों के साथ एकता, प्रेम तथा शांति का जीवन बिताना है।"

ओटोनोमस समारोह के उपलक्ष में संवाद के साथ-साथ बैबल परीक्षा, मनोरंजन एवं विभिन्न प्रकार के खेल-कूद का भी आयोजन था। सभी भाई-बहिनों एवं युवक-युवतियों ने सहर्ष भाग लेकर कार्य-क्रम को सफल बनाया। विजेताओं को स्थानीय विद्यालय के भूतपूर्व शिक्षक श्री॰ पी॰ पी॰ बागे द्वारा पुरस्कार वितरण कार्य संपन्न किया गया।

अंत में अध्यक्ष महोदय ने मंडली तथा खास कर युवक-युवतियों को बधाई देते हुए कहा कि — "भावी पीढ़ी को उज्ज्वल एवं जीवित कलीसिया की शिरोमणी निर्मित करने का एक मात्र मार्ग आत्मिक एवं लौकिक क्षेत्र में जाग्रित लाना, कलीसिया रूपी दाखबारी को हरा-भरा बनाना है। प्रभु के काम में जिस प्रकार मिशनरियों ने आंसू बहा-बहाकर परिश्रम के साथ सुसमाचार वचन का प्रचार किया, इसी नमूने पर हमें भी चलना है।"

Gossner Mission

प्रभु आप ही अपने आत्मा से हमें परिपूर्ण कर आत्मशासित कलीसिया को सुदृढ़ बनावें।

सधन्यवाद,-

सचिव- जे· सुरीन.
जी·ई· एल· चर्च, डोमटोली।

गुमलाः- पवित्र दृढ़िकरण :—

१० जून ७३ को पेन्तीकोष्ट पर्व के अवसर पर गुमला के जी. ई. एल. चर्च में पवित्र दृढ़िकरण एवं पवित्र प्रभुभोज का अनुष्ठान नये पाद्री विलियम खलखो के हाथों सम्पन्न हुई।

दृढ़िकरण लेने वाले लड़के-लड़कियों की संख्या ५९ थी। नव-दृढ़िकृत लड़के-लडकियों की ओर से गुमला मंडली के गिरजें को एक लम्बी दरी दी गई। लड़के-लड़कियों की ओर से प्रभुभोज के बाद Grouping photography तथा 4 बजे शाम को Tea party रखा गया था। Tea party में स्थानीय उच्चविद्यालय के हेडमास्टर के अलावे पाद्री खलखो, कंडीदात बरला, एवं नाग उपस्थित थे। नव दृढ़िकृत लड़के-लड़कियों की ओर से श्री· मिंज, विनोद, मेंजस हाशिम, भूषण, पैंकस एवं सुश्री हिलरया ने कार्यक्रमों को सफल बनाने में काफी योगदान दिया।

कंडीदात श्री· बरला नवदृढ़िकृत लड़के-लड़कियों को अच्छे मसीही सिद्ध हो सकने के हेतु आशीष दी, इसके लिये और सभी मुख्य अतिथियों के अच्छे सलाहों एवं विचारों के लिए नवदृढ़िकृत लड़के-लड़कियां अभारी हैं। कंडीदात की अगुवाई में प्रार्थना के साथ इस दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

पिता परमेश्वर से हम नवदृढ़िकृत लड़के लड़कियां प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा से हमों में ऐसी गभीरता भर दे, जिससे भविष्य में हम एक सच्चे मसीही सिद्ध हो सकें॥

(वसन्त कुमार सुरीन) गुमला

समाचार - देश-विदेश

● आइजनाख :- पूर्वी जर्मनी के इस शहर में लुथरन वर्ल्ड फेडेरेशन की एक्सेक्युटिभ कमिटी की मिटिंग जुलाई २९-- अगस्त ४, १९७३ तक होने के लिये समय व जगह की निश्चयता हो गयी है। यह पहली बार है, कि एल· डब्ल्यु. एफ· के अफसर पूर्वी जर्मनी में एक साथ बैठने जा रहे हैं और पूर्वी देशों में यह तीसरी बार है।

● जनेवा :— तानजानिया तथा जामबिया के दो शरणार्थी शिविरों को एल· डब्ल्यु· एफ· के सेवा विभाग द्वारा चलाये जाकर अब पूर्ण स्वपालित कर दिया गया है, अब वे देश की सरकार के हाथों सुपुर्द कर दिये जायेंगे।

● बॉन्न (पश्चमी जर्मनी) :- जर्मनी की नयी एवंजेलिकल कलीसियाई कौंसिल ने संकल्प किया है कि दक्षिण अफ्रिका की परिस्थिति में सुधार लाने के लिये वह आगे भी दृढ़ रहेगी। कौंसिल वहां के जर्मन कारखानों से मिल कर विशेष सेवा के विकास कार्य के लिये योजना बनाने को तैयार है।

● जेनेवा :— यह आशा की जाती है कि अगले समयों में मिसुरी लुथरनों के साथ बात चीत होने की और अधिक सम्भावनाएँ दीखती हैं अब अधिक मिसुरी लुथरन कलीसियाएं एल· डब्ल्यु की सदस्यता के लिये आवेदन कर रही हैं।

● लकुज (रूमानिया) :— रूमानिया के युनाइटेड प्रोटेस्टैंट थेऑलोजिकल इन्स्टिटियुट के नये प्रिंसिपल एक लुथरन चुने गये हैं, वे हैं डा· हेरमन बिन्डर, जो नये नियम के प्रोफेसर हैं।

Gossner Mission

• चिकागो :— डा. मर्टिन लुथर की हस्तलिखित चिट्ठी जो एक सौ बर्षों से खो गयी थी यहां के पुस्तकालय संग्रह में मिल गयी। जब एक पुस्तकालय संचालक मतसंशोधन काल के लेखों का फोटो-कॉपी बना रहा था इसी बीच चिट्ठी मिली है।

• नीयुओर्लियन्स (यु·एस·ए·) :— मिसुरी सिनोड की धर्म सभा के फैसलानुसार डा· जोन तीत्जेन प्रेसीडेन्ट के पद से तथा कोन्कोर्डिया सेमीनरी, सेन्टलुइस में प्रोफेसर काम से भी मुक्त कर दिये जायंगे। डा· तीत्जेन को गलत शिक्षा के आरोप के कारण कॉलेज के इन पदों से पदच्युत किया जाने वाला है। मिसुरी सिनोड सभा और अन्य भूल शिक्षा के विषय संकल्प किया। (एल. डब्ल्यु. एफ. के सौजन्य से : डा· सिंह)।

सूचना

गोस्सनर कलीसिया महिला संघ सम्मेलन

एवं

बैबल शिक्षा शिविर

४ अकटोबर से ७ अकटोबर तक

१९७३

स्थान — बेथेसदा ट्रेनिंग स्कूल

जी० ई० एल० चर्च

राँची

खर्च —प्रति बेला — ६ छटाक चावल

१ " दाल

५० पैसा

कुल ७ बेले का खर्च लावें साथ में बैबल सोसाइटी दान और संघ दान साथ लेते आवें।

पराक्लेसा मिंज

सेक्रेटरी

महिला संघ

Gossner Mission

शोक-समाचार

यह शोक समाचार देते हुए हमें काफी दुःख हुआ, जब हमने एक कर्मठ और होनहार नवयुवक को खो दिया। वह दिन ता० १७-७-७३, मंगलवार ११ बजे दिन में बिलकन कन्डुलना को २४ वर्ष की उम्र में ईश्वर पिता ने अपने पास सनातन विश्राम के लिए बुला लिया। वे करीब चार-पाँच महीनों से बिमार थे। डाक्टरों का कहना था कि वे किसी भयानक अन्द्रुणी बिमारी से ग्रस्त थे, अन्ततः वे हमेशा के लिए प्रभु में सो गये।

संक्षिप्त परिचय :—इनका योगदान कलीसिया के कामों में काफी सराहनीय रहा है। गोस्सनर कलीसिया के सदस्य होने और एक कर्मठ युवक होने के नाते जहाँ कहीं भी किसी तरह की सेवाकाई की जरुरत पड़ी है इनको पाया गया है। इनकी विशेष रूचि युवा पीढ़ी को आगे ले चलने की थी। इनका संबंध युवा-संघ, एस०सी०एम०, बी०सी०वाइ०यू० तथा अनेक धार्मिक युवा संस्थाओं से था। इतना ही नहीं, इनकी झुकाव राजनीति की ओर भी थी। इनका संबंध काँग्रेस से झारखण्ड पार्टियों तक था। ये सजग और कर्मठ जवान थे। सन् १९६८ में बिरसा सेवा-दल में इनका बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कई जगहों पर ये बिरसा सेवा दल की स्थापना भी किये। जनता सेवा ही इनका मुख्य उद्देश्य था। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग इसके सम्पर्क में रहकर काफी लाभान्वित हुआ है। वे जिस काम को एक बार करने का संकल्प कर लेते थे उन्हें पूरा किये बगैर नहीं छोड़ते थे। इसके अलावे इनको फोटो खींचने और प्रकृति से बहुत प्रेम था। साथ ही संगीत के भी प्रेमी थे। किसी भी क्षेत्र में वे एक कुशल संस्थापक के रूप में थे। इनकी मृत्यु से पहले ये राउरकेला के स्टेट टेक्नोलोजिकल इन्स्टीटुट के तृतीय वर्ष के छात्र थे। इनका विषय विद्युत अभियन्ता से संबंधित था। ये राउरकेला आदिवासी छात्र-संघ के सभापति थे। तथा राउरकेला में नागरा संग्राम समिति के कर्मठ सदस्य थे। इनका विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

उस कर्मठ युवक को हमारी ओर से श्राद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा उनके शोकित परिवार के लिए प्रार्थना है कि ईश्वर उन्हें शान्ति देवे।

सुशील कुमार बरला
रांँची

SYMPATHY SOCIETY OF INDIA

संसार में कोई भी व्यक्ति अपने दुःखों को अपने हितैषियों के समक्ष प्रस्तुत करता है, कि वे उसका दुःख दूर करें। इसी प्रकार मैं भी अपने दुःखों को आप सभी जी०ई०एल० चर्च के हितैषियों के समक्ष प्रस्तुत करने में शर्माता नहीं हूँ जिससे आप लोग सोचें और अमल करने की कृपा करेंगे।

मेरे जन्म के छः महीने बाद ही पिताजी का स्वर्गवास हुआ। माताजी ही के साथ ममहर जाया करता था। रास्ते में रोमन कैथोलिक कम्पाऊण्ड बाँकी को देखता था तथा सफेद चोंगे वालों को देखकर माँ जी से प्रश्न करता था, कि ये लोग कौन हैं? वे बतलाती थीं कि ये लोग फादर हैं, जो विदेशों से आकर आजीवन अविवाहित रहने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर त्यागमय जीवन व्यतीत कर हम सभों की सेवा करते हैं।

उसी वक्त से मेरे मन में यह भावना घर कर गयी है, कि मैं भी हमारी कलीसिया की सेवा उसी प्रकार जरूर करूँगा। हाई स्कूल में भी यही तमन्ना रही। १९६५ ई० में राँची काँलेज आकर मुझे गोस्सनर कॉलेज होस्टल

Gossner Mission

न० १ में रहने का अवसर मिला। हॉस्टेल की परिस्थिति देखकर मैं रात में फूट-फूटकर रोने लगा। अपने गाँव से कुछ नवजवानों को लाकर मैं मराम्मत करने का विचार तत्तकालीन प्रमुख अध्यक्ष, के समक्ष रखा पर लौटा दिया गया। वह भव्य-भवन गिर कर नाश हो गया और हमारे कॉलेज-छात्रगणों को टिकने का स्थान नहीं रह गया है।

मैंने आज तक जगत के मसीही कलीसिया इतिहास में नहीं पढ़ा है कि किसी भी मसीही कम्पाऊण्ड में रात के सात बजते ही घुसने का हिम्मत नहीं होता है आज हमारी राँची मिशन कम्पाऊण्ड को यही स्थिति है।

हमारे सन्तान बिहार बंगाल, असम, उड़िसा तथा मध्य प्रदेश से कॉलेज पढ़ने के लिये रांची आते हैं, क्योंकि यहाँ अनेकों प्रकार के कॉलेज हैं। वे सोचते हैं राँची में तो कलीसिया का हेड ऑफिस है, रहने की सुविधा मिलेगी, पर आने से उनकी आशा में पानी फिर जाता है।

इसलिये आप लोगों के सन्तानों की भविष्य उज्जवल के लिये दो हजार कॉलेज छात्र-छात्राओं का अलग-अलग राँची में छात्रावास निर्माण करना मेरी जिन्दगी का एक मात्र दृढ़ संकल्प है। इसी के लिये मैं Sympathy Society of India नामक संस्था स्थापना करने जा रहा हूँ जो मैंने मार्च १९७३ ई॰ को ही के॰एस.एस॰ को स्वीकृत करने के लिये आवेदन पत्र सुपुर्द कर दिया है; शर्त यही रहेगी, कि इस संस्था का हेड वही व्यक्ति होगा जो आप लोगों के सन्तानों की भविष्य उज्जवल के लिये साधु सुन्दर सिंह के सदृश्य अविवाहित जीवन बिताने को तैयार है।

मैं अपनी विधवा माँ का एकलाही औलाद हूँ। तौभी अविवाहित रह सेवा करना तथा आप की सन्तानों का भविष्य उज्जवल बनाना मेरा परम-धर्म समझता हूँ। इस महानतम् सेवा कार्य के सम्पन्न के लिये आप लोगों की सहायता परमावश्यक है। जो प्रति महीना शक्ति के अनुसार सहायता स्वरूप लिया जायगा।

मेरी बिन्ती है, कि ऐसा महानतम् सेवाकार्य सम्पन्न के लिये ईश्वर पिता पवित्रात्मा प्रदान करे कि हम लोग अपनी भावी पीढ़ी के लिये पवित्र विचार कर सकें।

आप सभों का सेवक

कन्ड़िदत्त मनोहर कन्डुलना, जी ई॰एल॰ चर्च
बाई पास रोड चास, बोकारो स्टील सिटी
जिला-धनबाद; बिहार।

नोट : इस लेख में लेखक के निजी विचार व्यक्त किये गये हैं जो उनके मन की अपनी सेवा भावना की समझ और निशान पर आधारित है, इसमें किसी संस्था या अधिकारी गणों की स्वीकृति या हाथ नहीं है अतः पाठक भी अपना मत लेखक के पास या घरबन्धु के 'एसोसिएट एडीटर' के पास भेजें।

जी० ई० एल० चर्च प्रचारक/प्रचारिकाओं के पेनसन फण्ड नियम।

अगस्त महीने के घरबन्धु में प्रकाशित किया गया है कि प्रचारक / प्रचारिकाओं का पेनसन नियम बीते पूर्ण के॰ एस॰ एस॰ बैठकी में पास हो गया है। नियमावली के अनुसार अब वह आखरी / विचार ओ / फैसला निमित अंचल समितियों के पास भेजा गया है। यदि पांचों अंचल समिति भी पास कर दें, तो पेनसन नियम १ली जनवरी १९७४ से लागू हो जायगा। इस पेनसन नियम के सम्बन्ध में खास कर प्रचारक और प्रचारिकाओं के जानने योग्य कुछ बातें नीचे दी जाती है।

१—फण्ड का निर्माण– चूँकि हमारी कलीसिया ओटोनोमस कलीसिया है, पेनसन देने के पहले ओटोनोमी आधार पर फण्ड का निर्माण करना आवश्यक है। अतः सभी प्रचारक / प्रचारिका को जो इस फण्ड के सदस्य हो सकते हैं, चन्दा देना होगा। पेनसन नियम के अनुसार

कुछ प्रचारक/प्रचारिका सदस्य नहीं हो सकते हैं; अतः सभी प्रचारक/प्रचारिकाओं को पेनसन नहीं मिलेगा। जो प्रचारक/प्रचारिका पेनसन फण्ड के सदस्य हो सकते हैं पर चन्दा नहीं देंगे, उनको भी पेनसन नहीं मिलेगा। पाद्रियों के पेनसन का भी यही नियम है। प्रचारक/प्रचारिकाओं के लिये चन्दा दर इस प्रकार ठहराया गया है :—

१— प्रचारक/प्रचारिका अपने वेतनानुसार (भत्ता छोड़ कर) रुपया में चार पैसा देंगे।

२. प्रचारक/प्रचारिका जितना देंगे/देंगी, इलाका भी उतना ही देगी।

३. प्रचारक/प्रचारिका के चन्दा का एक चौथाई के. एस. एस. देगी।

२—पेनसन दर :—

(क) १ली जनवरी १९७४ को, प्रचारक/प्रचारिका जिनका उम्र ६५ वर्ष हो जायगा, कार्य्य मुक्त (रिटायर) कर दिये जाएंगे तथा उन्हें पेनसन दिया जायगा। पेनसन पाने वालों में उन प्रचारक/प्रचारिकाओं को भी सामिल किया जायगा जो १ली जनवरी १९७४ से आज के दिन तक में कार्य्य-मुक्त हो चुके हैं। चूँकि उन प्रचारक/प्रचारिकाओं को पेनसन फण्ड में चन्दा देने का अवसर नहीं होगा, उनको निम्न दर से पेनसन मिलेगा : —

(१) गोस्सनर कलीसिया की सेवा जो २० वर्ष से कम की हो......१०—०० प्रति माह।

(२) गोस्सनर कलीसिया की सेवा, जो २० वर्ष और उस से अधिक की हो १५-०० प्रति माह।

(ख) कितने प्रचारक/प्रचारिका ऐसे होंगे जो १ली जनवरी १९७४ से पहले से काम करते आ रहे हैं, और बाद में अवकाश ग्रहण करेंगे उनको निम्न प्रकार पेनसन दिया जायगा:—

(१) १ली जनवरी १९७४ से पहले की सेवा अवधि के लिये ऊपर दिये गये (क)—(१) और (२) के अनुसार।

(२) १ली जनवरी १९७४ के बाद की सेवा अवधि के लिये आखरी वेतन का उतना ही सैंकड़ा दिया जायगा जितना साल उसकी सेवा हुई हो।

जैसा — मान लिया जाय कि प्रचारक मोहन सुरिन की सेवा अवधि १ली जनवरी १९७४ से पहले १५ साल, और पीछे २० साल हो और उसका आखरी वेतन १०५-०० हो तो :—

१५ साल के लिये	... ...	१०·००
२० साल के लिये १०५·०० का बीस सैकड़ा		२१·००
	प्रति माह जोड़	३१·००

ग) १ली जनवरी १९७४ के बाद काम करने हारे प्रचारक/प्रचारिकाओं को अवकाश ग्रहण करने पर सेवा अवधि अनुसार अपने आखरी वेतन का उतना ही सैंकड़ा दिया जायगा, जितना साल उसकी सेवा अवधि हो।

जैसे - मान लिया जाय कि प्रचारक सोहन लकड़ा की सेवा अवधि ४० साल हो और उसका आखरी वेतन १२५·०० हो, तो १२५·०० का चालीस सैकड़ा; अर्थात ५०·०० प्रति माह दिया जायगा।

३ (१) मृत्यु के बाद पेनसन—ऐसे प्रचारक/प्रचारिका जो ५५ साल या उससे अधिक काम किया हो पर ६५ वर्ष उसकी उम्र न हुई हो और अवकाश ग्रहण करने के पहले मर जाय, तो प्रचारक/प्रचारिका का अपना निज चन्दा तुरन्त उसके वारीसन को दे दिया जायगा, और प्रचारक/प्रचारिका का माहवारी पेनसन जो भी होता, उसका एक तिहाई उसके वारीसन को दिया जायगा।

(२) प्रचारक/प्रचारिका जो अवकाश ग्रहण करने के बाद अपने निज चन्दा के बराबर भी पेनसन नहीं पाया हो और वह मर जाय, तो निज चन्दा का बाकी रुपया तुरन्त उसके वारीसन को दे दिया जायगा, और उसके पेनसन का आधा उसके वारीसन को दिया जायगा।

४ एक पुस्त पेनसन — प्रचारक/प्रचारिका जो १ली जनवरी १९७४ के बाद काम आरम्भ कर १५ साल से कम काम करके अवकाश ग्रहण करे, तो ऐसे प्रचारक/प्रचारिका को एक ही बार पेनसन दिया जायगा, अर्थात जितना साल काम किया, उस संख्या से उसका आखरी वेतन गुणा किया जायगा, और गुणनफल जो होगा, उतना

Gossner Mission

ही रुपया उसको एक मुस्त पेनसन दिया जायगा। एक मुस्त पेनसन पाने के पहले अगर उसकी मृत्यु हो जाय तो वह पेनसन रुपया उसके वारीसन को दिया जायगा।

५ प्रचारक/प्रचारिका की मृत्यु पर पेनसन पाने के हकदार :—

(१) प्रचारक की पत्नी।

(२) प्रचारक की पत्नी अगर पहले मर गयी हो, तो उसके बच्चे जो नवालिग हों।

(३) प्रचारक के माता-पिता।

(४) प्रचारिका के पेनसन का हकदार केवल वही होगा, जिसे प्रचारिका ने मनोनय (Nomi-) nate) की है।

६ पेनसन देना – (१) साधारणतः एक मुस्त पेनसन के०एस०एस० औफिस में प्रचारक/प्रचारिका के स्वयं आने या अपना दूत भेजने पर दिया जायगा।

(२) माहवारी पेनसन साधारणतः हर महीना के आरम्भ में मनीओर्डर द्वारा भेजा जायगा। नजकीद वाले स्वयं आने या अपना दूत भेजने पर दिया जायगा।

७ (१) अवकाश ग्रहण करने का समय – ६५ साल के बाद।

(२) सेवा अवधि का हिसाब अपने काम पर ठहराये जाने के दिन से।

(३) सेवा अवधि साल—पूरा साल ही हिसाब किया जाता है, महीना और दिन नहीं।

इस पेनसन फण्ड के सदस्य वे ही प्रचारक/प्रचारिका हो सकते हैं, जिनका इलाका या अंचल में प्रोभिडेण्ट फण्ड खाता खोला गया है। अतः वे प्रचारक/प्रचारिका जो अब तक प्रोभिडेन्ट फण्ड के सदस्य नहीं बने हैं, जल्द से जल्द सदस्य बन जांय, ताकि वे पेनसन फण्ड के भी सदस्य बन सकें। सभी इलाका चेयरमनों से मेरी अपील है कि पूर्ण वेतन भोगी सभी प्रचारक/प्रचारिकाओं को प्रोभिडेन्ट फण्ड के सदस्य बनने के लिये बाध्य करें।

पाद्री विमल मिंज
जी०ई०एल० चर्च, रांची।

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा [३१वीं जुलाई तक] मिला

1 Mr. Gerson Tiru
2 ,, Suresh Kumar Barla
3 Rev. H. Lugun
4 Mr. T. Jushaph Barla
5 ,, A. N. Nair
6 ,, Philip Bairjo
7 Sep. K. Kandulna
8 Shri Isahak Kujur
9 Cat. Daud Kamal
10 Mr. Luther Kiro
11 ,, Manohar Lakra
12 ,, Manmasih Dungdung
13 Rev. Kushalmay Tirkey
14 Mr. Manohar Kujur
15 Mr J. O. Ekka
16 ,, Marshal Purti
17 ,, Lucas Topno
18 Rev. Shem Lakra
19 ,, H. M. Bage
20 Mr. P. C. Topno
21 Rev. D. Hecker
22 G E. L. Church Hospital Amgaon
23 Rev. N. E. John Samad
24 Mr. Patras Kandulna
25 ,, Kushal Kerketta
26 Cand Nelson Topno
27 Mr Sheo Dutta

Gossner Mission

अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट

(डाइरेक्टर, सु॰ प्रचार एवं साहित्य विभाग)

प्रिय मित्रो,

यह अर्धवार्षिक रिपोर्ट आप की जानकारी, सलाह एवं कार्यवाही के लिये पेश किया जाता है :

डाइरेक्टर की निजी रिपोर्ट : १९७३ का आधा वर्ष भिन्न-भिन्न जगहों में भिन्न-भिन्न प्रकार के कामों से व्यस्त था। जनवरी माह में उड़िसा अंचल के कारीमाटी इलाका में विशेष कार्य-क्रम था। इलाका के सभी तीन पेरिश केन्द्र में पन्चों के लिये तथा महिलाओं के लिये अलग-अलग शिक्षा शिविर का आयोजन था, ऐसे शिविरों में अन्य आम मसीही भाई-बहन एवं जवान-युवतियों ने भी भाग लिया, अत: उपस्थिति अपेक्षा से अधिक ही रही। तीनों स्थानों के लिये विषय था; "पंचों का कार्य" और "माताएं कैसे घराने को एवं कलीसिया (इलाका) को स्वपालित बना सकती हैं ?"। इलाका के कार्य-क्रम के बाद २२ वीं जनवरी तक सुन्दरगढ़ के मिशन मंडलियों में दौरा किया गया। नये मसीहियों की बपतिस्मा हुई, कुछ नये स्थान खोलने के लिये स्थान भी चुने गये। नये मसीहियों एवं कर्मचारियों के उत्साह एवं आनन्द के लिये और साथ चितौनी के लिये कुछ और नयी मंडली में भी दौरा किया गया।

जनवरी के अन्तिम सप्ताह अनेक प्रकार की बैठकी रांची में करने के बाद असम अंचल के के॰ एस॰ एस॰ प्रतिनिधियों के साथ असम अंचल के दौरे में निकल गया। असम अंचल के प्राय: सभी पेरिश केन्द्र में कार्य-क्रम रखा गया था। थोड़े समय में ईश्तिहार के बावजूद भी अधिकाधिक संख्या में भाई-बहन जमा होते थे। प्राय: सभी स्थानों में मसीही भाई-बहनों को सुसमाचार प्रचार कार्य और मसीह की गवाही के लिये अधिक समय, धन एवं शक्ति देवें और विशेष कर मिकिर पहाड़ी क्षेत्र के सुसमाचार प्रचार कार्य में अपना योगदान देवें। दौरा के अन्तिम चरण में मिकिर क्षेत्र था। वहाँ युवा विभाग की ओर से कार्य-क्रम था, पर वह कई कारणों से सम्भव नहीं हुआ पर उस क्षेत्र में हमारा जाना अच्छा हुआ नये मसीहियों से मुलाकात तो हुई ही पर साथ ही वहाँ के कार्य की सम्भावनाओं समस्याओं एवं सफलताओं के विषय भी हम बात विचार कर पाये। रंगागोड़ा छोड़ने के पहले हम आठ मील पैदल चल कर एक छोटा, पर सुन्दर आराधनालय का संस्कार भी किये। असम से लौटते वक्त प्रमुख अध्यक्ष के साथ हमारी पड़ाव कलकत्ता में भी थी। वहाँ रह कर एक मंडली में राज्यवृद्धि गिरजा करने का मौका हुआ।

फरवरी माह के अन्तिम सप्ताह में हजारीबाग इलाका की मण्डली में युवा संघ बैबल क्लास में "मसीही भंडारीपन" पर भाषण देने के लिये निमंत्रित था, एक मान्य सदस्य के देहान्त हो जाने से क्लास बन्द किया गया, अत: वहाँ से मैं पच्छिम बंगाल में एक जगह ७३ जनों की बपतिस्मा के लिये दौड़ लगाया, पर वहाँ पहुंचने पर बताया गया कि कैथोलिक फादर ने उन्हें बपतिस्मा दे दिया, अत: वहाँ से भी निराश हो कर लौटना पड़ा।

मार्च माह में उदयपुर तथा सुरगुजा क्षेत्रों में कुछ मेहमानों के साथ जाना था पर वे नहीं आये अत: कार्य-क्रम स्थगित किया गया। जब वे अप्रील माह में आये तो मुझे उनके साथ जाने नहीं बना चूंकि मैं पूर्वी जर्मनी की कलीसियाओं में निमंत्रित था और इन्हीं दिनों मुझे पश्चिम बर्लिन होके पूर्वी जर्मनी जाना था; मैं पूर्वी जर्मनी एवं पश्चिम बर्लिन में ६वीं जून तक था, इसका रिपोर्ट मैं ने अपने विभाग के जरिये के॰ एस॰ एस. में दे दिया है और इस सम्बन्ध कुछ संकल्प भी हो चुके हैं।

क्षेत्र के रिपोर्ट : अफशोष की बात है, कि सभी क्षेत्र से रिपोर्ट यथा समय नहीं पहुंचे जो आये उनमें का संक्षिप्त वर्णन यों है :

Gossner Mission

(१) मिकिर पहाड़ी इलाका : यह क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है, रास्ते इतना कठिन है कि कोई कोई क्षेत्र दो तीन दिन के पैदल में गाँव फैले हैं। क्षेत्र में छः कर्मचारी हैं एक मिश्नरी पाद्री हैं। इस साल लगभग बीस जनों की बपतिस्मा हो गयी, इस समय तक और भी हो गये होंगे, यदि इस कार्य क्षेत्र में सभी ओर से ध्यानकेन्द्रित किये जायेंगे तो कार्य में बढ़ती की आशा है। अभी जुलाई माह से एक जवान प्रचारक ट्रेनिंग में प्रशिक्षण पा रहा है एक बर्ष बाद वह थिओलोजिकल में पुरोहिताई में विशेष प्रशिक्षण पायेगा ताकि उस क्षेत्र के लिये वह पदाभिषेक पाये। वहा और भी प्रशिक्षित जवान हैं अतः कार्य योजना ऐसी होनी चाहिये कि उनको भी उस क्षेत्र में काम कर सेवा करने का अवसर दिया जाय। गृह निर्माण एवं विकास कार्य अन्य आवश्यक कार्य होना है। वहां स्कूल खोलने की भी अर्जी पेश की गयी है और दो स्कूल भी खोले जा चुके हैं। ऐसी सारी योजनाओं के लिये अचल, बी॰ ई॰ एल॰ एवं गोस्सनर मिशन का इस क्षेत्र के साथ सहयोग होना आवश्यक है।

अप्रील से जुलाई ७३ माह में इस क्षेत्र में भारी विपत्ति आयी थी, लोगों के बीच दस्त की बीमारी हो गयी थी, अनेक लोग मरे। हमारे मसीहियों के लिये आनन्द साहस कि बात है कि बहुत बीमार होते से भी हमारे मसीही लोगों में से नहीं मरे।

(२) दक्षिण पूर्वी क्षेत्र : यह द॰ पू. अंचल का क्षेत्र है और पहले के जैसे ही तीन प्रान्तों के पांच जिलों में फैला हुआ है। कुल ४५ कर्मचारी हैं जिनमें छः पाद्री एक कन्डीदात तथा बाकी ३८ प्रचारक हैं। हाल ही मनोहरपुर को एक नया मिशन पेरिश बनाया गया है।

निर्माण कार्य इस आधे वर्ष में मनोहरपुर का पूर्ण किया गया मनिकडंगा, शीशीबहा तथा नकटी में कार्य बाकी है। कुछ जगहों में मरम्मती कार्य हुए। प्रचारक कार्य में विशेष मोड़ लिया गया है रात्रि पाठशाला, सन्डे स्कूल, पर विशेष जोर दिया जा कर इनका संगठन भी हुआ है। पेरिश माहवारी बैठकी के अवसर में धर्म मेला, साक्षी सभादि के विशेष आयोजन होते हैं और इनका मानो होड़ लग गयी है। क्षेत्र के मिनिस्टेरियम की बैठकी भी सुचारू रूप से होती हैं जिनमें क्षेत्र की कलीसिया का रिपोर्ट लिया जाता है और सुझाव के लिये विचार विमर्श होते हैं। इस आधे बर्ष में १०९ धर्मखोजकों ने बपतिस्मा पायी। क्षेत्र में मंहगी व सूखा के कारण मसीहियों एवं कर्मचारियों को अत्यन्त तकलीफ है। अतः भत्ता में वृद्धि तथा साहाय्य कार्य की अपेक्षा की जाती है।

(३) उदयपुर क्षेत्र : यह क्षेत्र एक ही जिले में है फिर भी बड़ा विस्तृत है कुल मिला कर ४५ कर्मचारी हैं; तीन पाद्री और एक प्रचारिका तथा ४१ प्रचारक हैं। प्रचारकार्य रात्रिपाठशाला, सन्डे स्कूल, माता समाज के द्वारा होता है इसके अतिरिक्त प्रचार गैरमसीही घरों एवं गाँवों में जा जाकर भी प्रचार करते हैं, प्रचार के समय परचे, पुस्तिकाएं भी बांटे जाते हैं। इस आधे साल में ३५ जनों की बपतिस्मा हुई एवं अभी ६३ धर्मखोजक हैं।

इस साल इस क्षेत्र के लिये निर्माण-रकम न मिलने से बहुत कठिनयां हुई। कई स्थानों में समस्याएं उठ खड़ी हुई अतः विवश हो कर मधुपुर, बहलागोड़ा एवं महुआदरहा में गृह निर्माण हुआ। जमीन खरीदने के लिये भी रूपैया नहीं मिला अतः जो जमीन खरीदी गयी उनका रजिस्ट्री भी नहीं हो पायी। इस हानि के कारण संस्था को भविष्य में बहुत हानि उठानी पड़ेगी।

[डाइरेक्टर की टिप्पणी : उदयपुर के क्षेत्र के लिये गृहनिर्माण की रकम या जमीन खरीदने की रकम नहीं दी गयी, वैसे ही और क्षेत्र भी है। उन्हीं क्षेत्रों को रूपैया नहीं दिया गया जिन्होंने ली गयी रकम का सही हिसाब किताब नहीं दिया है; जब इन क्षेत्रों के हिसाब किताब सन्तोषजनक होंगे तो क्षेत्र का रूपैया अवश्य दे दिया जायगा]।

सुरगुजा एवं बामड़ा क्षेत्र का रिपोर्ट अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट बनाते वक्त नहीं पहुंच पाये थे अतः वे यहां नहीं दिये जा सकते हैं।

Gossner Mission

हमारी दो संस्थाओं का (जी० ई० एल० चर्च प्रेस और छोटानागपुर क्रिश्चन पब्लिशिंग हाउस) रिपोर्ट हिसाब किताब सहित है जो बेहतरीन दीखता है लेकिन फिर भी ये दोनों संस्थाएं मिल कर गोस्सनर कलीसिया में व्यवहार की जाने वाली आवश्यक पुस्तकें नहीं छाप पा रही हैं। हमारी विभाग ने इस निमित विशेष कदम उठाये हैं पर अभी तक असफल ही रहे हैं। इस बार की विभागीय बैठकी में भी विचार विमर्श हुआ तथा इन संस्थाओं के सभापति व सेक्रेटेरी को विशेष कार्य भार दिया गया है कि आवश्यक पुस्तकें शीघ्रातिशीघ्र छापे जायं।

कुछ टिप्पणियां एवं सिफारिशें :

घरबन्धु : अभी घरबन्धु का पूर्ण कार्य डाईरेक्टर को ही एसोसिएट एडीटर कर के दिया गया है। हमारी पुरी कोशिश है कि यह मासिक पत्रिका सुचारू रूप से चले, जौभी अनेक दु.ख, कठिनाइयां एवं चिंताओं सहित है। डाईरेक्टर के सहायक पाद्री के० डी० सोय प्राय: अधिकांश घरबन्धु के कार्य में ही व्यस्त देखे जाते हैं। हमें विशेष कर घरबन्धु भेजने में दिक्कतें होती हैं। क्योंकि हमें छापाखाना से बहुधा देर से मिलती है, कभी कभी तो हम निस्सहाय छोड़ दिये जाते हैं। इन अनेक करणों से यह असम्भव है कि बाह्य रूप से भी घरबन्धु में सुधार लायें। तौभी घरबन्धु कुछ लोगों के अथक परिश्रम से सुचारू रूप से चालू तो कर दिया गया है। थोड़ा और योगदान से न केवल पत्रिका के अवैतनिक कार्यकर्ताओं को साहस मिलेगा पर घरबन्धु में भी सुधार और उन्नति की जा सकती है, विशेष कर छापाखाना को तनिक और ध्यान देना आवश्यक है।

इस आधे वर्ष के लिये भी सुरगुजा क्षेत्र एक नाजुक बच्चा ही रहा। उसकी परिस्थिति में सुधार व सहायता के लिये विभागीय एवं अंचल स्तरीय कदम लिये गये पर फिर भी कम ही किया जा सका। बेहतरीन सहयोग आवश्यक है ताकि क्षेत्र में कुछ विशेष कार्य हो सके।

जून' ७३ में विभागीय कार्यकारिणी ने सिफारिश पेश करते हुए अर्जी की है कि विभाग के डाइरेक्टर से निवेदन कर अनुमति दी जाय कि वे सुसमाचार प्रचार कार्य का आन्दोलन पुरी कलीसिया में चलाने के लिये अंचल की स्थापित मंडलियों, पेरिशों तथा इलाकाओं में भी कार्यक्रम बनायें और ऐसे अवसरों में चंदा उठाकर मिशन काम के लिए स्वयं लेते जायं जैसे बाइबल सोसाइटी आदि संस्थाओं को अनुमति दी जाती है। के०एस०एस० ने इस सिफारिश को स्वीकृति दे दी है। सम्भवत: बरसात के बाद इस प्रकार के कार्य-क्रम बन जायेंगे।

कॉलेज कौंसिल की अर्जी पर तथा विभागों एवं के०एस०एस० की स्वीकृति पर डाइरेक्टर को थिऑलोजिकल कॉलेज में इसी जुलाई माह से अंशकालिक (पार्ट टाइम) शिक्षा देने का कार्य भी दिया गया है। यह कार्य विशेष कर वर्षाकालीन होगा।

हमारे विभाग के लिये विशेष चिन्ता की और एक बात है : गोस्सनर कलीसिया में व्यवहार की जाने वाली किताबों की छपाई। इस निमित हमारी संस्थाएँ भी हैं वे अपने में भले ही काफी तरक्की में हैं, पर जो सेवा कलीसिया को तथा इस क्षेत्र के लोगों को जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं हो पा रही है। अत: हमारा इस ओर विशेष ध्यान होना चाहिए, अभी जिस प्रकार परिस्थिति दीखती है यदि वैसी ही रही तो मेरा व्यक्तिगत विचार है कि ये दो संस्थाएँ वैसी सेवा नहीं कर सकती हैं जैसी सेवा के लिये ये स्थापित की गयी हैं।

सधन्यवाद समर्पित,

डा० सी० के० पॉल सिंह
डाइरेक्टर, बी०ई०एल०

राँची, २५-७-७३

Gossner Mission

जाग

D. M. Khess
I yr. Com.

उठ जाग मसीही देर न कर
अब रैन कहाँ जो सोवत है ।

तू सोते सोते पिछड़ गया,
प्रभु की महिमा देना भूल गया ।
उसकी ज्योति से तू बिछड़ गया,
ऐ गाफिल क्यों तू सो ही गया ।

इतने दिन खुद तुझे पहचान न सका
झूठे संसार के बीच से हट न सका
जान बूझ इस फन्दे से भाग न सका
जगत की ज्योति का पीछा कर न सका

झूठी माया ने तुझे घर भरमाया,
जाति औ दलगत तत्वों ने तुझे उकसाया।
परमेश्वर विरुद्ध चंचल मन ने तुझे फुसलाया
शैतान ने इन फन्दों में तुझे धर ही दबाया।

प्रभु के वचन ने तुझे स्वयं ही बुलाया,
त्रिएक परमेश्वर ने तुझे मुक्ति दिलाया।
प्रभु ख्रीष्ट के द्वारा अदभुत प्रेम दिखाया,
चेलों के पैर धो हमें प्रेम सिखाया ।

क्यों तू फसे दलदल में, पैर मारे कीचड़ में।
जब प्रभु का वचन घर किया तेरे मन में,
तुझे जगाने प्रभु आया इस पार्थिव भुवन में,
चेत जरा ऐ मसीही दे ध्यान जरा मन में।

Serampore University
L. th. Results 1973.

Gossner Theological College
Ranchi.

III Class

1. Miss Promila Lugun, 2. Namjan Musa Kandulna, 3. Biraj Kujur, 4. Solomon Kispotta, 5. Ambrujius Dungdung, 6. David Efraim.

A MOTTO TO PRACTICE
LEARN TO DO; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES
ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—
School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER
Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR
PHONE — 21011

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष—६३ राँची, सितम्बर १९७३, संख्या नं०—९

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission

Eingegangen
2 9. MAI 1973
Erledigt:

घरबन्धु

रजिस्टड नं० पी० टी० १०

वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६३ रांची, जून १९७३ संख्या नं० — ६

परमेश्वर का भय मानना
ज्ञान और बुद्धि का
आरम्भ है।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय — — — —	३
उपदेश की तैयारी — — —	४
गोस्सनर कॉलेज राँची — — —	७
बर्जित पेड़ — — — —	८
"विजयी मसीह" — — —	९
मण्डली के प्रति नया विचार — —	१०
पांचवीं आज्ञा की पुकार — —	१२
कलीसियाई समाचार — — —	१५
देश-विदेश — — — —	१६
टी० टी० सी० कुदी में नये प्रशिक्षणार्थियों...	१७
ग्राहक चन्दा — — — —	१८
आनन्दपुर क्षेत्र के अन्य जातियों के बीच ...	१९
शोक समाचार — — —	२०

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संखया लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

प्रभु यीशु के मृतकों में से जी उठने के द्वारा सारे संसार के लोगों को एक नई आशा मिली है कि जिस प्रकार मसीह यीशु जी उठे उसी प्रकार व मृतक जो कब्रों में पड़े हुए हैं जी उठेंगे तथा हम जो अब जीवित हैं और मरेंगे वे भी समय की पूर्णता से जी उठेंगे। यह एक बड़ी शान्ति और आशा की बात मसीहियों के लिये है। जिसको जो देख लेता, पहचान लेता वह इसकी साक्षी भी देना आरम्भ करता है। प्रभु यीशु के शिष्य लोगों के द्वारा इस जीवते प्रभु की साक्षी दी गई। पवित्रात्मा का दान जब उनको पेन्तिकोस्ट के दिन मिला तो वे नई सामर्थ एवं नये साहस के साथ जी उठे हुए प्रभु की गवाही देना आरम्भ किये और मंडलियों की स्थापना हुई। जीवते प्रभु की साक्षी देते समय एक बार प्रेरितों के विरोध में याजक मन्दिर के सरदार एवं सदूकी चढ़ आए और उन्होंने उन्हें पकड़ कर दूसरे दिन तक हवालत में रखा और पीछे उन्हें चिता कर कहा कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखाना। परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उत्तर दिया कि तुम ही विचार करो कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हमने देखा और सुना है वह न कहें।

यह जून महीना है जो हमें स्मरण दिलाता है कि ९ जून १८५० ई० में चार उराँव भाईयों का बपतिस्मा हुआ तथा ८ जून १८६६ में दो खड़िया भाईयों का बपतिस्मा हुआ। बचन के प्रचार से उक्त भाईयों को पवित्रात्मा का दान मिला और जीवते प्रभु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता करके उन्होंने स्वीकार किया। इतना ही नहीं बरन गवाही देने का कार्य जारी रहा और इसी जून महीने के अन्य विशेष बातों को देखने से पता चलता है कि बहुत से स्थानों में भिन्न-भिन्न समयों से मंडलियों की स्थापना हुई। २६ वीं जून १८७० को गोविन्दपुर गिर्जा का संस्कार हुआ, २३वीं जून १८८६ को लोहरदगा का, २१ वीं जून १९०८ को सिंघानी, १९५० में जोभिया तथा ७ वीं जून १९७० से हड़सेर (हटिया) गिर्जा घर का संस्कार हुआ। सुसमाचार का प्रचार जब किया जाता है तो लोगों को उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह का ज्ञान मिलता है, लोग उसे ग्रहण करते एवं मंडलियों की स्थापना होती है। गोस्सनर कलीसिया का भी यह प्रथम कार्य है कि वह जीवते प्रभु की साक्षी बिना भय और डर के करे। यदि हम सुसमाचार प्रचार नहीं करते तो मसीही होना भी बन्द करते हैं अतएव इस उतरदायित्व को हम पहचाने, विश्वस्तता से कार्य करें, यीशु की गवाही देते जीवन बितावें।

Gossner Mission

उपदेश को तैंयारो

(मार्टिन टेटे)

एकसौदी (मेरी सुन)

यूहन्ना १५:२६—१६:४

यूहन्ना सुसमाचारक इन पदों में तीन विशेष विषयों को हमारे सामने रखता है। पहला विषय :- पवित्रात्मा की गवाही, दूसरा विषय :- शिष्यों की गवाही। तीसरा विषय :- शिष्यों के लिये ललकार।

१· पवित्रात्मा यीशु के विषय गवाही देता है :- कलीसिया का काम पवित्रात्मा का काम है। बचन प्रचार का काम पवित्रात्मा का काम है। आज पवित्रात्मा कलीसिया तथा विश्वासियों के द्वारा यीशु का प्रचार करता है। इस विषय के लिये देखिये यूहन्ना १६:५-११।

२· शिष्यगण यीशु की गवाही देते हैं : कलीसिया के सभी सदस्य यीशु के शिष्य हैं। इसलिये सदस्यगणों को यीशु की गवाही देना है।

क· कलीसिया यीशु की संगति रखती है। इसलिये यीशु की गवाही दे सकती है। कलीसिया यीशु के विषय अनुभव करती है। इसलिये गवाही दे सकती है।

ख· कलीसिया यीशु के विषय जानती है। इसलिये गवाही दे सकती है। यीशु के विषय बिना जाने हम गवाही नहीं दे सकते हैं। वही यीशु के विषय गवाही देता है जो सचमूच यीशु के विषय जानता है।

३· शिष्यों के लिए ललकार :- यीशु ने अगोत्तर ही कहा कि शिष्य सताये जावेंगे। यीशु के स्वर्ग चले जाने के उपरान्त सचमूच विश्वासी लोग सताये गये। यहुदी लोग मंदिर से निकाल दिये गये। (प्रेरित क्रिया २६:९–११)।

यीशु ने साफ साफ कहा कि मैं ने तुझे कठिन काम के लिये चुन लिया है। गवाही का काम सहज नहीं है। गवाही के काम में दुःख, होगा। मृत्यु के मुख में जाना पड़ेगा। महिमा की प्रतिज्ञा है। परन्तु क्रूश की राह से ही महिमा प्राप्त होगी। आज भी कलीसिया के लिए ललकार है। कलीसिया को क्रूश की राह से ही महिमा प्राप्त होगी।

पेन्तिकोष्ट (५० वां दिन)

यूहन्ना १४:२५-३१

यीशु मसीह पवित्रात्मा के विषय प्रकाश डालता है। पवित्रात्मा सत्य का आत्मा एवं शिक्षक कहा गया है। यीशु पवित्रात्मा के साथ अपने विषायक बातों को भी प्रगट करता है। आज के बचन में निम्नांकित बातों पर प्रकाश डाला गया है।

१· यीशु पवित्रात्मा के विषय प्रकाश डालता है। यीशु के बचन के अनुसार पवित्रात्मा हमारा शिक्षक होगा। वह सब बातों में शिक्षक होगा। आज भी पवित्रात्मा ही हमारा शिक्षक है। वह (पवित्रात्मा) यीशु के बचन को भी स्मरण कराता है। विश्वास की बातों में वही हमारा सहायक है। वह भूल से आप ही हमें बचाता है। प्रेरितों को उसने भूल से बचाया।

चाल-चलन के विषय भी पवित्रात्मा हमारा सहायक है। वह हमें सुधारता है। न केवल सुधारता पर हमारे व्यवहार को शुद्ध भी करता है।

२· यीशु अपने दान के विषय प्रगट करता है। यीशु का दान तो शान्ति है। यहां शान्ति का अर्थ हमारे सारे जीवन में भलाई। यीशु आप ही हमारे जीवन में भलाई ले आता है।

Gossner Mission

३. यीशु अपने विषय भी प्रगट करता है। वह पिता के पास जावेगा। अर्थात अपनी सीमित दया को छोड़ देगा। वह महिमा में प्रवेश करेगा। यीशु की पार्थिव दया उसकी सीमित दया थी। यीशु इस बचन के द्वारा कहने चाहता है कि विश्वासी लोग भी सीमित दया के उपरान्त असीमित दया को प्राप्त करेंगे। वे मृत्यु में नहीं परन्तु दया में प्रवेश करेंगे।

४. यीशु अपनी लड़ाई के विषय प्रगट करता है (३०)। यीशु ने क्रूश के द्वारा शैतान से लड़ाई किया और विजय भी प्राप्त किया। लोगों ने क्रूश में उसे हारता हुआ देखा था। परन्तु क्रूश ही में उसका आज्ञापालन एवं प्रेम ईश्वर एवं मनुष्य दोनों के प्रति प्रगट हुआ।

यीशु अपने सम्पूर्ण जीवन द्वारा ईश्वर की आज्ञाओं का पालन किया तथा मनुष्यों के प्रति अपने प्रेम को प्रगट किया। आज आवश्यक है कि कलीसिया के लोग भी ईश्वर की आज्ञा पालन करें और मनुष्यों के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करें।

त्रिनितातिस पर्ब (त्रिएक परमेश्वर का पर्व)

यूहन्ना ३: १-१५

त्रिएक परमेश्वर का काम मनुष्य को नया जन्म प्रदान करना है। यीशु के दुःख एवं मृत्यु एवं पुनरुत्थान के द्वारा मनुष्य को नया बनाने का काम पूरा हो गया है। आज के बचन में यीशु एवं नीकुदेमुस के बीच नया जन्म के विषय बातचीत होती है। यीशु नये जन्म के साथ साथ अनन्त जीवन एवं परमेश्वर के राज्य के विषय भी प्रकाश डालता है।

१. नया जन्म क्या है ?:—देखो १ पतरस १: ३; १ पतरस १:२२+२३; याकूब १:१८। तीतूस ३:५। रोमियों ६:१-११; १ कुरि ३:१+२; २ कुरि ५:१७; गलाति ६:१५. इफिसियों ४:२२-२४; इब्रानियों ५:१२-१४: नया नियम अन्य जगहों में भी नये जन्म के विषय प्रकाश डालता है। मत्ती १८:३ में कहा जाता है कि बालकों के समान मन रखना ही नया जन्म है। इसका अर्थ है :—जीवन का नियम बदल डालना। अर्थात अगर आप झूठे हैं तो सत्य हो। पौलुस के जीवन में हम इस परिवर्त्तन को भलीभांति देख सकते हैं।

२. स्वर्ग के राज्य का क्या अर्थ है ?
जिसका नया जन्म होगा वही स्वर्ग जावेगा। स्वर्ग राज्य क्या है ? प्रभु की प्रार्थना में इस विषय पर प्रकाश डाला गया है—तेरा राज्य आवे—तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में है वैसी पृथ्वी पर भी होवे। परमेश्वर का राज्य एक समाज है जहां ईश्वर की इच्छा पूर्ण रीति से पूरी की जाती है। ईश्वर के राज्य में रहना ईश्वर की इच्छा पूरा करना है। आज भी जब हम ईश्वर के राज्य में हैं तब ईश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। जिसका नया जन्म हो गया है वे ईश्वर की इच्छा पूरी करते हैं।

३. अनन्त जीवन क्या है :—(३:१५).
अनन्त जीवन ईश्वर का जीवन है। अनन्त जीवन शांति एवं मेल मिलाप का जीवन है। अनन्त जीवन के द्वारा मनुष्य का ईश्वर एवं मनुष्य दोनों से मिलाप है। अनन्त जीवन निश्चयता का जीवन है।

यीशु में परमेश्वर का काम सिद्ध है। यीशु के सिद्ध किये हुए काम में मनुष्य पवित्रात्मा की सहायता से विश्वास करता है। त्रिएक परमेश्वर की सहायता से मनुष्य बचन के द्वारा नया बनाया जाता है। त्रिएक परमेश्वर का मुख्य काम मनुष्य को नया जन्म देना और अपनी संगति में अर्थात स्वर्ग में लेना है।

त्रिनितातिस के पीछे १ला एतबार

लूक १६:१६-३१

आज के बचन में लोक एवं परलोक के जीवन के विषय समझाया गया है। इस लोक में जिसको सुख

Gossner Mission

मिला था वह परलोक में दुःख उठाता है। जिसको इस लोक में दुःख था वह परलोक में सुखी है।

"जोवन का दो दृश्य"

१. पृथ्वी पर का दुःख :—

क: धनवान का जीवन :—वह मलमल पहिनता था। सुख विलास एवं धूमधाम से रहता था। उसने प्रभुवार के विषय चिन्ता नहीं किया। उसने चौथी आज्ञा का पालन नहीं किया। गिर्जा बचन तुच्छ किया :—

ख: लाजर का जीवन :— कंगाल था। भीख मांगता था। घावों से भरा था इत्यादि।

२. स्वर्ग का दृश्य :—

क: धनवान का जीवन :—
पीड़ा में पड़ा हुआ है (२३-३०)

ख: लाजर का जीवन :—
दूतों ने उसे इब्राहीम की गोद में पहुँचा दिया है। वह सुख के स्थान में है।

अब हम विचार करें कि धनवान का पाप क्या था। लाजर उसकी डेवढ़ी पर बैठता था। धनवान ने उसे डेवढ़ी पर से नही हटाया था। उसने लाजर पर अपनी कठोरता भी प्रगट नही की थी। धनवान का पाप यही था कि उसने लाजर पर दृष्टि न की। वह जगत के दुःख एवं आवश्यकता को जानता था। पर उसने सहायता के लिये कुछ भी नहीं किया।

आज भी हम कलीसिया होकर वा व्यक्ति होकर लोगों के दुःख को नही देखते हैं। यह हम एवं हमारे देश का पाप है। हमारे देश में रोगी एवं दुःखी है, उनके लिये कुछ नही करना ही पाप है।

तुम क्या देखने गये थे ?

(मत्ती ११ : ८)

स्वर्ग दूतों ने गाया। आकाश में परमेश्वर की महिमा हो। पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो। स्वर्गदूतों का इस्तिहार ने गड़ेरियों को उत्साहित किया। वे बैतलहम के गोशाले में आते हैं। गायों एवं बैलों के बीच यीशु राजा पाया गया। गडेरियों ने बैलों वा गायों की ओर नहीं परन्तु यीशु की ओर देखा और उसे दण्डवत किया। "तुम क्या देखने गये थे ?"

ज्योतिषियों ने पूर्व में यीशु का तारा देखा। तारे की अगुवाई के अनुसार— गोशाला पहुँचा। क्या उन्होंने गायों, बैलों वा महान वक्ताओं को देखा ? नहीं,। उन्हों ने यीशु को देखा और प्रणाम किया। तुम क्या देखने गये थे ?

यीशु के पीछे भीड़ हो लेती थी। यीशु पहाड़ पर चढ़ गया और अपना मुँह खोलकर उपदेश देने लगा। धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं। इत्यादि। पहाड़ पर लोगों ने क्या देखा ? क्या हिरन वा बाघ ? नहीं ? उन्हों ने यीशु को देखा। फिर तुम क्या देखने गये थे ?

यीशु बड़े विभव से यरुशलेम में प्रवेश करता है। भीड़ पुकार पुकार कर कहती थी : - दाऊद के सन्तान को होशाना ; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना।" शास्त्री वा प्रोफेसर लड़कों की होशाना पुकार से क्रोधित होते हैं। "तू सुनता है कि वे क्या कहते हैं ? यीशु ने कहा— बालकों के मुँह से मेरी स्तुति सिद्ध होती है। जुलुस में भीड़ थी। बच्चे थे। गधी के बच्चे पर प्रभु यीशु सवार थे। "तुम क्या देखने गये थे ?" प्रभु यीशु अथवा गधी के बच्चों को। तुम क्या करने गये थे ? स्तुति आराधना वा अपना क्रोध प्रगट करने।

अब आइये गतसमनी नाम बारी में। यीशु मुँह के बल गिरा और उसने प्रार्थना किया - "हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाय ; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" (मत्ती २६ : ३९)। पतरस एवं उसके साथी सोते हैं। घनेरी रात है। यहुदा

बैरियों के हाथ यीशु को पकड़वा देता है। बैरियों के हाथ तलवार, लाठियां एवं मशाल हैं। गतसमनी बारी में तुम क्या देखने गये थे। क्या तलवार वा लाठियों को तुम ने देखा ? या क्या आप पतरस के समान सो गये थे। जागने पर पतरस ने वही किया जिसे नहीं करना था। फिर तुम क्या देखने गये थे ?

प्रभु यीशु खोपड़ी की जगह पर पहुंचाया गया। वह वहां क्रूश पर चढ़ाया गया। दो कुकर्मी भी उसके दाएं बायें क्रूश पर चढ़ाये गये। भीड़ एवं सिपाही यीशु की ठट्ठा करते थे। यीशु बैरियों के लिये प्रार्थना करता था। गलगथा पहाड़ पर दुःख का दृश्य था। ठट्ठा का दृश्य था। पाप का दृश्य था। अनेक प्रकार के दृश्य थे। तुम क्या देखने गये थे ?

सबत का दिन बीत गया। प्रभु रविवार के दिन जी उठा। बहनें कब्र पूजा के लिये चल पड़ी थी। परन्तु प्रभु जीवित है और जीता है। स्वर्गदूत की यही गवाही है। बहिनों ने स्वेत वस्त्र पहिने हुए जवान को देखा। तुम क्या देखने गये थे ?

शिष्यों के देखते देखते यीशु ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। जब शिष्य ताक रहे थे तो देखो दो श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए। उन्होंने कहा—तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? ...यीशु फिर आएगा। फिर तुम क्या देखने गये थे ?

पिन्तेकुस्त का दिन आया। (देखो प्रेरितों के काम २) बड़ी आंधी आयी। सनसनाहट का शब्द हुआ। शब्द से सारा घर गूँज गया। सब पवित्रात्मा से भर गये। वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। अब वहां भीड़ लग गयी ; कितने घबड़ा गये। कितनों ने ठट्ठा करके कहा कि वे तो नई मदिरा के नशे में हैं। तब पतरस ने ऊँचे शब्द से कहा—नशा नहीं। "यीशु की प्रतिज्ञा पूरी हुई है। पवित्रात्मा का दान मिला है। फिर तुम क्या देखने गये थे ? क्या पतरस को या किसी उपदेशक को ? क्या ठट्ठा करने हारों को अथवा यरुशलेम में घूमते जानवरों को वा कुत्तों को ? फिर तुम क्या देखने गये थे ?"

गोस्सनर कॉलेज राँची

गोस्सनर कलीसिया का कॉलेज खोलने की बड़ी इच्छा पूरी हो गयी है। नवम्बर १६७१ से गोस्सनर कॉलेज खुल गया है। १६७२ का परीक्षा फल एक सौ प्रतिशत है। १६७३ में आशा की जाती है कि परीक्षा फल उत्तम होगा। इस बार विद्यार्थीगण आई· ए· एवं आई· कॉम की परीक्षा दे रहे हैं। जुलाई १६७३ से बी. ए. एवं बी· कॉम की पढ़ाई प्रारम्भ कर दी जायगी।

राँची विश्वविद्यालय ने गोस्सनर कॉलेज को गत् वर्ष ही मान्यता प्रदान कर दी है। आदिवासी एवं अनूसूचित जातियों को छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। छात्र छात्राओं के टिकने के लिये छात्रावासों का उत्तम प्रबन्ध है।

आदिवासी भाषाओं (मुंडारी, कुड़ख, नागपुरिया) की पढ़ाई वैज्ञानिक ढंग से होती है। प्रवेश (admission) में कठिनाइयां होंगी। इसलिये बहाली के लिये विद्यार्थीगण जल्द पधारें।

प्राचार्य
गोस्सनर कॉलेज

Gossner Mission

वर्जित पेड़

प्रत्येक परिवार, प्रत्येक समाज, गांव तथा विद्यालय अदनबारी की तरह है जिसमें एक न एक वर्जित पेड़ अवश्य होता है। साथ ही साथ वही धूर्त सांप भी पाया जाता है। जब तक व्यक्ति वर्जित पेड़ को नहीं छूता है उसका मन स्थिर रहता है, हृदय पवित्र होता है, फलस्वरूप मन एकाग्र होता है और व्यक्ति कर्त्तव्यनिष्ट होता है। विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के बारे भी यही बातें देखने से आती है।

बचपन के जीवन के बारे बहुतों का यही सही कहना है कि फलाना नीचे वर्गों में पढ़ने में बड़ा अच्छा था। इसके क्या वजह है? वजह पता लगाने पर यह निकलता है — उम्र कम था, आज्ञाकारी था, धूर्त से भेंट नहीं हुई थी, वर्जित पेड़ का फल उसने अब तक नहीं खाया था। इस समय वह अपने काम को तन-मन-धन और समझ से करता था। अपने काम को पूरे मन से करता था। मन विचलित नहीं होता था, चंचल नहीं था, फरमाये काम को भय से करता था। तन से भी उस समय स्थिर था। तन एक जगह से दूसरी जगह उतना नहीं घूमता था। धन भी आवश्यक वस्तु की खरीदगी में खर्च होता था। इसलिये उसको उस समय पठन-पाठन के सभी सामग्रियां प्राप्त थी। परन्तु उम्र बढ़ने पर, धूर्त के सम्पर्क होने पर धन अपने कर्त्तव्य काम के साधन जुटाने में खर्च न होकर अन्य धन्धों में खर्च होता है और व्यक्ति साधनहीन काम करता है। समयका खर्च भी बेहिसाब दूसरे कामों में खर्च करता है - ऐसा क्यों? इसलिए कि बालक उम्र के बढ़ने के साथ-साथ कौन-कौन साथी हैं—

क्या-क्या आज्ञाएँ दी गयी हैं—
आज्ञाओं को पूरा करते हैं कि नहीं, इन्हें देखना है सिर्फ आज्ञा देकर चुप नहीं रहना।

उनके साथी कर्त्तव्य काम में सहायक है कि बाधक धूर्त कौन? शैतान कौन? हे शैतान मुझसे दूर हो—

माता-पिता, अभिभावक तथा गुरूजनों के वर्जित पेड़ को छूता है उनके फल को खाता है। उसको धूर्त के द्वारा बताया जाता है कि वर्जित काम को करने से कुछ हानि नहीं होगी परन्तु बुद्धि की बढ़ती तथा लाभ ही लाभ है। सचमुच कल्पना उस समय मनभाऊ होता है और व्यक्ति माता-पिता और गुरूजनों की वर्जित बातों को जानबूझ कर नहीं मानता है और धूर्त की बातों को ही अधिक विश्वास से मान कर उसके अनुसार काम करता है, लेकिन एक बार जब व्यक्ति वर्जित पेड़ को छूने की कोशिश करता है वह साथ ही साथ छिपने की भी कोशिश करता है और छुपने के प्रयत्न में अपना कर्त्तव्य काम नहीं कर पाता, मन आकाश-पताल भ्रमण करता है किताबों से दूर। क्लास कोठरी से दूर ईश्वर से दूर। मन के इस स्थिति को दूसरे सहज से नहीं लख पाते। लेकिन यह असम्भव नहीं है। माता-पिता या शिक्षक को व्यक्ति के दिये गये कर्त्तव्य काम के पूरा नहीं करने पर, दिये गये धन को दूसरे में बिना अनुमति जाने पर, उसका धूर्त के साथ सम्पर्क होने का शंका करनी चाहिए, और शंका की पुष्टी के लिये सचेत एवं सचेष्ट होना चाहिए।

बहुधा यह देखने में आता है कि आदिवासी विद्यार्थी जो नीचे वर्गों में दूसरों को ताड़ता है वरन् वर्ग में प्रथम आता है ऊपर जाते-जाते स्थान खो बैठता है और दर्जा भी खो बैठता है। वजह कर्त्तव्य के ज्ञान एवं समय की पहचान के सूझ-बूझ से हट जाता है। वास्तविक दुनिया से कल्पनिक दुनियां में गोता लगाता है। माता-पिता जो अनपढ़ है और खेती गृहस्ती ही मुख्य पेशा है और उनके बच्चे जो प्रथम पीढ़ी ही में पढ़ रहे हैं, अपने बच्चों को पढ़ाने की उत्कृष्ट इच्छा से उन्हें सुविधाएँ देने हेतु जो उनकी मांग बच्चों की होती है पूरा करते हैं। स्कूल जाने

Gossner Mission

वाले बच्चे माता-पिता को अज्ञानता से उन्हें ठगना शुरू करते हैं। इसी कठिनाई के समाधान हेतु शिक्षक एवं अभिभावकों का सम्बन्ध परम आवश्यक है। अभिभावकों को परामर्श की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को पढ़ाने के साथ उनके माता-पिता को कुछ एक दो बातों की शिक्षा देना आवश्यक प्रतीत होता है। विद्यालय में भर्ती खतम होने के बाद तथा प्रथम ६ माही परीक्षा के बाद शिक्षक अभिभावक गोष्ठी हो जाय तो कुछ सुझावों का आदान-प्रदान करने तथा सुधार का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।

गैर आदिबासी विद्यार्थी जो शिक्षित और व्यापारिक वर्ग से आते हैं — उनका सम्पर्क बुद्धि-जीबियों तथा व्यापार जगत से रहता है जैसे-जैसे उनके बच्चों की उम्र बढ़ती है वे देश विदेश कानून उन्नति-अवन्नति की बातें करते हैं व्यापारी सुवह शाम बम्बई, कलकत्ता की बातें करते हैं — आते जाते भी हैं। फलस्वरूप उनके बच्चों का दृष्टिकोण उधर आकर्षित होता है वैसा बनने के लिए वैसा प्राप्ति के प्रेरणा मिलती है, जिज्ञासा बढ़ती है जिससे बचपन में जब उनकी बुद्धि कम तीव्र थी उम्र के साथ उनकी बुद्धि तेज निखरते जाती हैं। ये बात में, काम में आगे बढ़ते जाते हैं और आदिवासी विद्यार्थी पिछड़ते नजर आते हैं।

अतएव शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए अपने पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं को समृद्ध बनाने के लिए प्रत्येक परिवार तथा विद्यालय को बर्जित पेड़ का निशान ठीक रहना चाहिए।अपने बच्चों को विद्यार्थियों को बर्जित पेड़ के बारे यादस्त चितावनी तथा शिक्षा देते रहना चाहिए। जो कुछ आज्ञा दिये जाते हैं, वे पालन किये जाते हैं कि नहीं। आज्ञा देना और पूरा नहीं करवाना बच्चों को अकर्मण्यता की ओर ले जाता है। अत: आज्ञा देकर सुबह-शाम, समय-समय पर देखना आवश्यक है कि आज्ञा पालन हुआ कि नहीं। माता-पिता तथा अभिभावकों को यह भी जानना आवश्यक है कि बच्चों के कौन-कौन साथी है — उनके कर्त्तव्य काम में सहायक होते हैं कि बाधक होते हैं। साथी को हमेशा सहायक होना चाहिए बाधक नहीं। इतनी बातों को गौर करने पर बच्चों को समृद्ध बनाने में बहुत हद तक सफलता मिल सकती है।

प्रभुदयाल लकड़ा
गुमला

"विजयी मसीह"

Anand Masih Tirkey
Howrah RMS.

दो हजार वर्ष पहले एक अद्भुत नारा इस भूमण्डल पर गूँजा था। वह अद्भुत नारा था "प्रभु जी उठा है और वह जीवित है"। प्रणिमात्र इस नारा से आश्चर्यचकित था। कोई कहता असम्भव है, कोई कहता सब मिथ्य है, ढोंग है। कोई कहता, बात तो सही है, पर इस नारा को रुपैया-पैसा, चांदी-सिक्कों के बल पर दबा दिया जाय। कब्रगाह के पास की यह आवाज," वह जी उठा है," उस समय के ऊँचे वर्ग के लोगों को घातक सिद्ध हुआ था। इस आवाज को मिटाने, नेसनाबूत करने के प्रयत्नशील लोगों में बड़े-बड़े याजक, महा-याजक, फरीशी उल्लेखनीय हैं।

कुछ सदियों बाद, नीरो राजा के प्रशासन काल में हजारों लाखों निरीह नर-नारियों को कत्ल कर दिया गया। खून की नदी बहाई गयी। कितने

Gossner Mission

ही नर-नारियों को जघन्य से जघन्य मृत्यु का सामना करना पड़ा। जब-तक कत्लेआम, जलते हुए भठीं में झोंकना, भूखे शेरों के मांद में ढकेला जाना मामूली सी बात थी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसने इस अद्‌भूत आवाज को मिटाने के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया। नीरो और इसी प्रकार के प्रयत्नशील व्यक्ति इस आवाज को मिटाने के प्रयास में असफल, इस जगत से चल बसे।

जमाना ने पलटा खाया। लोग कहते हैं यह विज्ञान का जमाना है। हजारों-लाखों यन्त्र-पाती का अविष्कार हुआ है। इन यन्त्र-पातियों का उपयोग तथा दुरूपयोग मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है। उन्नतशील समाज आज विज्ञान के चमत्कार के द्वारा इस गूँजती आवाज को निरर्थक, मिथ्य साबित करना चाहती है। सब से आश्चर्य की बात तो यह है कि लोग आंतरिक्ष का चक्र काटने के उपरान्त, स्वर्ग की उपलब्धी न होने का शिकायत् करते हैं। आज का विज्ञान, विज्ञान के द्वारा स्वर्ग का स्पष्टिकरण चाहती हैं। स्वर्ग को देखने के लिए शारीरिक आंख नहीं, आत्मिक आंखों की आवश्यकता है।

सादियों पहले की वही वाणी वही गुंजती हुई आवाज इस काल में भी हम सुन सकते हैं। 'आवाज बिल्कुल साफ है। हमारे आत्मिक कान इस बात का साक्षी है कि इस आवाज में कुछ भी परिवर्त्तन नहीं हुआ है।

सचाई; सचाई है, और हम सभी जानते हैं कि सचाई में कोई परिवर्त्तन नहीं आता है।

प्रिये मसीही भाइयों तथा बहनों, प्रभु में आप का घमण्ड सच्चा है। उसने यह अश्वासन दिया है, "देखो मैं जीता हूं, तुम भी जीवोगे"। प्रभु का यह दावा सच्चा है। आप चट्टान पर अपना नेव स्थापन कर चुके हैं, इसलिए आवे जो कुछ आवे उस के प्रेम से हमें क्या विलगावे। मसीह में आप का विश्वास और एकता सदा बनी रहे। हमें मसीह का रक्त है, और वह हम में वास करता है, और हम उसमें।

"यीशु हमारा सहायक हो"।

मण्डली के प्रति नया विचार

पादरी सी· डी· जोजो

वर्त्तमान समय कलयुग और बैज्ञानिक युग है! इस युग समुद्र में हम मछलियों की तरह जीवन बिता रहे हैं। इस युग में सब बातों की नवीनता एवं नया विचार को पाते हैं।

मनुष्यों का चन्द्रमा में पहुँचना एक नई बात और नया बिचार है। अंचल, ब्लोक का होना एक नई बात और नया बिचार है।

अब सवाल है क्या हम मसीही होकर मण्डली और कलीशा के प्रति नया बिचार न करें? हम को जरुर मण्डली के प्रति नया बिचार करना है। मण्डली और कलीशा को अब नया बिचार के दृष्टिकोण से देखना और उसके अनुसार कदम बढ़ाना है। हम में जब तक नया बिचार और उसके अनुसार कार्य न हो तब तक हम मण्डली और कलीशा किसी भी संस्था के उन्नति की शिखर पर नहीं पहुँच सकते हैं। मण्डली; कलीशा को उन्नत दशा में देखना चाहते हैं तो हम को नया विचार में बदलना है। बिचार और काम में धनी बनना है।

"आप क्या नहीं कर सकते" नाम पुस्तक के लेखक "स्वेट मार्डेन" का कहना है कि "गरीब वह नहीं जिसके पास जायदाद न हो या थोड़ी हो। गरीब वह है जिसके पास बिचार गरीब है। जो

Gossner Mission

पुरानी बिचार में अब तक है। जिसकी भावना में गरीबता दीख पड़ती है। मानसिक दरिद्रता का नाम ही आर्थिक गरीबी है।

जिस मण्डली के भाई-बहनों का विचार पुराना है वह मण्डली धनी होते हुए भी यदि उसमें नया बिचार न हो तो अवन्नति की ओर बढ़ना है। उसके बदौलत यदि कोई मण्डली गरीब है पर लोगों में नया विचार हो और उसके अनुसार कार्य हो तो उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है। इसका बदाहरण अप्रेल माह का घरबन्धु में हजारीबाग इलाका के विषय जो लेख छापा गया है उसमें नया विचार और काम को पाते हैं। इस लेख में यह भी पाते हैं कि पहले यहाँ के पादरी रोते थे। लेकिन वही रोना अब आनन्द में बदल गया है। चूँकि मेरे ख्याल में वे नया विचार में बदल गये हैं। आत्म पालन दान और लिफाफा दान देना भी एक नया बिचार है।

इसके आधार पर गौर से बिचार करें तो क्या पाते हैं कि "जो मण्डली, पेरिश, इलाका एवं परिवार नया बिचार में नहीं बदलता है वह बिना पाइन का तालाब के समान है। उन्नति के बदले अवन्नति की ओर कदम बढ़ाना है। कोई मनुष्य नहीं चाहता कि हमारी स्थिति अवन्नति की ओर जाय।

बृक्ष में बहुत से जड़ हैं जो छोटे-बड़े हैं। जड़ जो छोटे-बड़े हैं सबका ध्येय है कि बृक्ष मजबूत सुन्दर बनते हुए बढ़े। वृक्ष के जड़ जौभी बहुत हैं तौभी एक हैं और एक बिचार में होकर बृक्ष को मजबूत, सुन्दर बनाने का नया बिचार है।

हमारी मण्डली, कलीशा एक बृक्ष के समान है। कलीशा एवं मण्डली परिवार के सभी भाई-बहन छोटा बचा से लेकर बुढ़े तक मण्डली, कलीशा रूपी बृक्ष के जड़ हैं। जड़ होकर मण्डली रूपी वृक्ष को मोटा ताजा और सुन्दरता में बढ़ाना है। इसके लिए हम को एक बिचार में होकर रहना है ताकि प्रभु के लिए एक उत्तम बृक्ष बनावें।

मण्डली के प्रति नया बिचार प्राप्त करने के लिए किस स्कूल या कॉलेज में जाँय कि हमारा बिचार नया हो! किसके द्वारा नया बिचार मिल सकता है? इसका उत्तर तो बैबल ही है। इसके अलावा मण्डली के प्रति नया बिचार प्राप्त करना मेरे ख्याल में कुछ कठिनता है।

बैबल में नया बिचार बिषायक बातें पाते हैं जिसको अमल करना जरूरी है। इसराएली जाति को मिस्र से कनान देश ले जाने में परमेश्वर का नया विचार और काम को पाते हैं। पीतल का सांप में इसराएली का बचाव निमित्त परमेश्वर का नया बिचार को पाते हैं। अनेने नगर के यूनानी और गैर यूनानी अरयुफागुस पर जाकर दिन दिन नया बिचार प्रगट करते थे।

आज गोस्सनर कलीशा के जितने भी खृस्तान हैं सभों को दरकार है कि प्रभु की मण्डली, कलीशा को सम्भालने बढ़ाने और सुन्दर दशा में लाने के लिए नया बिचार में परिवर्तन होना है।

हमारा पारिवारिक जीवन के प्रति नया बिचार, मण्डली, कलीशा, खेती-बारी, धार्मिक शिक्षा, खृस्तानी व्यवहार मण्डली में आमदनी बढ़ाने का नया बिचार में अपने को बदलना है। एक अच्छा कृषक अपना प्रतिदिन काम काज के प्रति भी नया बिचार करते हुए करता है। उसी प्रकार मण्डली के प्रति सोचना बिचार करना दरकार है। मेरे ख्याल में और एक विषय है जिसके प्रति हम को नया बिचार में बदलना अति जरूरी है। वह विषय है "सुसमाचार प्रचार" राज्य वृद्धि विषय। दूसरे तरह से कहा जाय तो मिशन फील्ड के प्रति नया बिचार करना और काम करना।

मिशन फील्ड के पादरी प्रचारक जो काम कर रहे हैं वे तो आत्मिक लड़ाई मैदान में हैं जो वैरी से मुठभेड़ होती है लड़ाई करते हैं। इनके प्रति नया बिचार में होकर सहायता करना कि वे और अधिक फील्ड में काम कर सकें। मिकिर पहाड़ी

Gossner Mission

मिशन क्षेत्र, द॰ पू॰ अंचल के भीतर बोड़सोल, कानपुर, जस्सीपुर, जगन्नाथपुर एवं नकटी। इन मिशन फिल्डों के प्रति नया विचार करना जरूरी है। जागृति होना जरूरी है। फिर ऐसा ही अन्य मिशन क्षेत्र के लिए करना है। बोड़सोल पेरिश के पादरी प्रचारक यह विचार कर रहे हैं कि अपना वेतन में से एक रुपया काट कर एक प्रचारक को कोई एक मण्डली में रखा जाय, मेरे ख्याल में यह एक नया विचार है। अभी फैसले पर नहीं आये हैं। यदि मण्डली, कलीशा नया विचार में बदल जाय तो गोस्सनर कलीशा झिलमिलाती हुई नया यीरूशलीम बन जायगा।

पांचवीं आज्ञा की पुकार

"बाबू जी एक पैसा"

वर्षों से यह भिखारिन एक ही स्थान पर बैठकर भीख मांगा करती। वह वहां आती और एक-एक पैसे के लिये हाथ फैलाकर गिड़गिड़ाती। सालों तक यह क्रम चलता रहा। सहसा एक दिन नीले गगन में पका हुआ जमुन रंग के बादल छाने लगे।

आशा अपने फटे-पुराने गुदड़ियों में लिपटी हुई झोपड़ी के एक कोने में गुमसुम सी पड़ी थी। उसकी दोनों भावहीन आंखें किसी चीज की खोज में थीं। सामने भैंस तलाब के चिरनिवासी मेंढक टर्र-टर्र करने में व्यस्त थे। पंक्षी, पानी के आने से पहले ही अपने अपने घोंसलों को लौट जाना चाहती थीं। झोंपड़ी के अन्त:निवासी चार गरौया आपस में ठोटका-ठोटकी हो रहे थे। आशा के नजरें उधर ही उठ गये और अनजाने में आंसू बहाने लगी।

उसने अपने अतीत को मानस-पटल पर चल-चित्र के भांति उभरता हुआ देखी और वह एक बीता हुआ कठोर सत्य के राज्य में पहुँच गयी। — रविवार का दिन था। वह सदा की भाँति सान्डे-स्कूल में सबसे पहले पहुँची। दिसम्बर का महीना होने के कारण सर्दी बहुत पड़ रही थी। वह गिर्जा घर के सामने ही नरम-नरम धुप तापने लगी।

आस्ते-आस्ते एक के बाद एक, सभी बच्चे आ गये; मास्टर जी भी आ गये। क्लास शुरू हो गई। आशा को उस दिन का सुसमाचार वचन आज तक याद है। अक्सर वह उस वचन को बड़बड़ाती रहती है "—दोष मत लगाव कि तुम पर भी दोष लगाया जाय। क्योंकि जिसप्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जायगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए नापा जायगा।" उस दिन सभी बच्चे पांचवी आज्ञा को मास्टरजी के पीछे-पीछे दुबारा कई बार बोले थे। अंत में वे प्रभु का जन्म पर्व का संदेश सुने। छुट्टी होने के बाद सभी बच्चे खुशी-खुशी नाचते-डेगते अपने अपने घरों को चले गये।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जब आशा विवाह की लायक हो गई तब वह ठेकेदार रोबिन की पत्नी बनकर ससुराल आई वहां उसे अपने पति और सास और एक ननद तथा एक देवर के साथ रहना पड़ा। उन दिनों उसका देवर बंगलोर में मेडिकल पढ़ रहा था। आशा के आने से घर में रौनक आ गई। सभी खुश थे। परिवार खुशहाल था। लोग इस घराना के आदर्श की बड़ाई करते नहीं थकते।

लेकिन सब दिन एक नहीं आता। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है। यह नियम रोबिन के घराना में भी लागू हो गया। एक

Gossner Mission

वर्ष के बाद घर में एक नया मेहमान चहकने लगा। विजय के जन्म होने के बाद आशा का व्यक्तित्व ही बदल कर रह गया। उसमें सदा चिड़चिड़ापन सवार रहने लगा। वह अब सास और ननद के साथ हर वक्त खटर-पटर लगाये रहती। घर में अशांति बढ़ते गया।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

घर में खमोशी का साम्राज्य था, मानो कोई तूफान आनेवाला हो। वैसे आये-दिन इसघर में बराबर तूफान आते ही रहता है। दुलारी जमीन में चावल फैलाए बीन रही थी। लड़की पुष्पा चुप-चाप पास आकर बैठ गई। भीतर ड्राईंग रूम में आशा अपने पति के साथ बैठी थी। रोबिन आवाज दे कर मां को बुलाया। पीछे पीछे पुष्पा भी आ गई।

कुछ देर बाद रोबिन बोलना शुरू किया—"मां आज बंगलौर से सुनील का खत आया है- -रूपया मांगता है; लेकिन रूपया मेरे पास नहीं है। सो अब उसे पैसा देना मुश्किल ही दीख रहा है। अब एक हफ्ता के अंदर मुझे अपना काम पर जाना होगा ब्राह्मणी नदी पर एक पुल का ठेका लिया हूं। अब तो मुझे पैसा देना नामुमकिन हो गया।"

"रूपया तो है पर तुम देना नहीं चाहते। तीस हजार रूपया तुमको अपनी शादी में मिला। जो लिया था वह भाई को दिया भी तो जा सकता है? तुम भी तो ठेकेदार हो, काफी आमदनी होती है।"

मेरे आमदनी में उतना रूपया नहीं बचता कि भाई का खर्च वहन कर सकूं। और रहा तीस हजार रूपया का सवाल, वह आशा का है, वह मैं नहीं लूंगा।"

"शादी में जो कुछ भी मिलता है; उसपर लड़के मां-बाप का हक होता है, वह रूपया आशा का कैसे हो गया?"

"वह रूपया आशा का ही है जो उसके मां-बाप ने शादी में उसे दिया। उसपर मेरा कोई हक नहीं है।"

"तुम झूठ बोलते हो, तुम मियां-बीवी की मिली भगत है, तुमलोगों का सुनील को पढ़ाने का इरादा ही नहीं है। तुम्हारी बहन और मैं मुफ्त की नौकरानियां हैं, सबेरे से रात तक घर का सारा-काम हम ही करते हैं।" कहकर बड़बड़ाती हुई 'दुलारी' उठकर जाने लगी, तभी रोबिन ने रोक लिया—

"ठहरो मां अभी बात खत्म नही हुई।"

"कहो" वह फिर बैठ गयी।

"बात यह है कि, तुम हमारे-साथ नहीं रहोगी।'

"तो कहां जाऊँगी?"

"तुम कहीं भी रहो।"

आज पहली दफा जिंदगी में 'दूलारी' बोल नहीं सकी कुछ कहन को मुह खोली-पर आवाज नहीं निकली सबसे पहले रोबिन की ओर देखी, आँखों में खून उतर आया। फिर पुष्पा की ओर देखी, पुष्पा निगाहें झुकाती अंत में अपनी बहू आशा की ओर देखी, पुष्पा ने निगाहें टकराई और दोनों एक दूसरे के ओर बराबर देखतीं रहीं। आशा के आँखों ने कहा, "देख लिया, बुढ़िया, मुझसे टकराने का नतीजा?"

'दुलारी' के आँखों ने कहा "देख लिया बहू, देख लिया—तुम जीति मैं हारी।" फिर वह बोल उठी "ठीक है मैं कहीं भी चली जाऊँगी लेकिन पुष्पा का क्या होगा।"

"उसका सब इंतजाम कर लिया है।"

',कहां?"

'अनाथालय में,

"तुम मेरी बेटी को अनाथालय में भेजनेवाले कौन होते हो?" तुम्हारे छोटे भाई से पुछा?"

पूछ लिया मां, सब पूछ लिया, सुनील को सिर्फ तीन-सौ मिलता है, जो कि अकेले के लिये पर्याप्त नहीं है। और वह तुम को खिलायगा? उसका अपना ही रहने का ठिकाना नहीं है 'यदि विश्वास न हो तो यह लो उसकी चिट्ठियाँ—"कहकर रोबिन ने एक चिट्ठी मां की ओर बढ़ा दी।

Gossner Mission

"तो यही सजिश बहुत दिनों से चल रही थी। शर्म नहीं आई? तुम्हारे पिता के मरने के बाद सब बच्चों को पढ़ाया लिखाया। कम नही कमाया था तुम्हारे पिताने, वह सब रूपया तुम लोगों को पढ़ाने और पालने में खर्च हो गया। तुम इतने बड़े ठेकेदार ऐसे ही नहीं बन गये। सुनील पढ़-लिख कर बंगलौर चला गया। पुष्पा को भी कम नहीं पढ़ाया। सब इसलिये किया कि तुमलोग अपनी मां को घर से निकाल रहे हो—" यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगी।

तब रोबिन ने कहा —"अब इन बातों से कोई फायदा नहीं है। अगर तुम इस घर में रहोगी तो आशा नहीं रहेगी और बिना आशा के मैं नहीं रह सकती। एक बच्चा है उसका देख भाल कौन करेगा? मेरे पास इस रास्ते को अपनाने के सिवा और कोई चारा नहीं।"

"वही रहेगी इसघर में, मैं नहीं रहूँगी। अगर मुझे पहले मालूम होता तो आज तुमलोग मजदूरी कर रहे होते, पर ऐसे नहीं होने दिया, इसलिये कि आज तुम लोग अपनी बुढ़ी लुटी हुई मां को सड़ी हुई मछली की तरह घर से बाहर फेंक दो—" अब वह सिसक रही थी।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

उस दिन आशा बहुत खुश हुई थी—क्योंकि हर बात में टोकने वाली नहीं है। अब मनमौज से जी सकती थी। और रोबिन भी खुश हुआ था। उसे लगा मानो पीठ से एक भारी बोझ उतर गया हो - अब वह शांति से जीवन बिता सकता है।

ठीक पंद्राह दिन के बाद बंगलौर से एक खत आया।

भाई साहब नमस्ते,

तुमने मां और बहन को घर से निकाल दिया, ठीक नहीं किया। इसका उपयुक्त दण्ड तुम निश्चय ही पावोगे। आगे तुमको मालूम होवे कि अब तेरा और मेरा बीच का सम्बन्ध टूट गया—यह कभी नहीं जुड़ सकता। तुम यह खुश खबरी सुनलो कि अब तेरा भाई निकट भविष्य में ही सिविल सर्जन हो जाएगा, वह अपनी मां और बहन के साथ मजे में रहेगा। अब तुम अपने भाई को किसी प्रकार का खत भी नहीं लिखोगे।

अनूज सुनील

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

वर्षा रूकने का कोई सुरत नजर नहीं आ रहा था। दुर्भाग्य से आशा के मैके में हैजा लग गया। यह हैजा आशा के मां बाप को भी नहीं छोड़ा।

आशा के ख्याल से इतना जोर का वर्षा शायद ही हुआ हो। लगातर मुसलधार वर्षा होने से नदी में छकमछाक पानी भर गया। और नदी के उपर नया बनता हुआ पूल भी बह गया।

यही गम रोबिन को प्रतिक्षण घुन की तरह खाने लगा और अंत में टी०बी० ने उसे आ घेरा। घर में जो कुछ भी बच रहा था, वह सब उसी का इलाज ही में खर्च हो गया। पैसा खर्च करने के बावजूद भी वह बच न सका।

अंत में आशा को परिस्थिति ने भीख मांगने के लायक कर दिया। उसदिन से वह विजय को साथ लेकर भीख मांगने निकल जाती। इतने होने के बावजूद भी दुर्भाग्य ने आशा का साथ नहीं छोड़ा। जब विजय बड़ा हो गया तो वह अपनी मां के साथ झगड़ कर कहीं भाग निकला।

तभी कहीं ऊपर आकाश में बिजली कौंधी और आशा चौंककर वास्तविक दुनिया में आ गई, उसके आंखों से आँसू की धारा बह रहा था। कानों पर पांचवी आज्ञा का प्रति ध्वनित स्वर बार-बार टकरा रहा था।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दूसरे दिन वही झोपड़ी के पिछवाड़े में एक भिखारिन की शव को गिद्ध और कौवे नोच-नोच कर खाते हुए लोग-बाग देख रहे थे। ●●●

Sushil Kumar Topno
1st B. Sc. G.M. College Sambalpur

Gossner Mission

कलीसियाई समाचार

हटिया पेरिश संवाद

हटिया पेरिश में छोटी २ बारह मंडलियां हैं। इस बार भला शुक्रवार को करीब एक हजार दो सौ लोग पवित्र वियारी में भागी हुएऔर अत्मिक लाभ उठाये। भला शुक्रवार को आराधना पाद्री ओबेद टोप्पो, पाद्री सुरेन्द्र मोहन, पाद्री मार्टिन टेटे, पाद्री विकसल तिर्की तथा पाद्री रोयन डांग के द्वारा किया गया। यह पहला अवसर था कि अधिक पुरोहितों के द्वारा अधिक सेवकाई भला शुक्रवार के दिन हटिया पेरिश में हुई।

हटिया पेरिश में डिबाडीह में एक हाई स्कूल तथा हड़सेर एक उच्च प्राथमिक स्कूल और कल्याणपुर में एक नरसरी स्कूल खोला गया है जिनका संचालन मंडली खुद करती है। हटिया पेरिश के कल्याणपुर में आठ हजार रुपये में एक कब्रस्थान खरीद रहे हैं, जिसके लिए जमीन मालिक को पांच हजार रुपये दिया गया है, और बाकी रकम चुका देने के बाद कल्याणपुर में हटिया पेरिश के लिए एक कब्रस्थान हो जायगा।

हटिया पेरिश के अन्दर तुपुदाना और हुलहुन्डु के बीच में एक गिर्जा घर बनाने और एक कब्रस्थान के लिए जगह खरीदने के लिए मंडली अपना काम आरम्भ कर दिया है। हटिया पेरिश के ईर्द गिर्द चारों तरफ मसीह का सुसमाचार फैलता जा रहा है और बहुत सारे आत्मायें प्रभु के नाम से जीवित की जा रही है। इस साल अप्रेल महीना तक ७५ संसारी लोग मसीह का पवित्र बपतिस्मा ग्रहण किये और मंडली के बहुत जगहों से फिर नये मसीही होने के लिए तैयार कर रहे हैं। इन सभी कामों को पाद्री, प्रचारक मंडली के एक-एक भाई-बहन तथा युवा-संघ और सन्डे स्कूल बच्चों की एकता और सहयोग से किया जाता है। बहुत कुछ हो चुका है और कुछ बाकी ही है।

आशा है कि ईश्वर की दया से और हमारे मसीही भाईयों तथा बहिनों की प्रार्थना के सामर्थ्य से हम सारे कामों को कर सकेंगे और ऐसा ही हमारी कलीशा के दूसरे मंडली भी करेंगे और हमारी घरबन्धु पत्रिका के द्वारा प्रकाशित करेंगे जिससे हम दूसरे मंडली कामों को जान सकें और और अपनी मंडली को उत्साहित कर सकें।

पाद्री सुरेन्द्र मोहन
हड़सेर ध्रुवा

स्थापन पर्व तथा भला शुक्रवार

रांची तथा हटिया (हड़सेर) में गंभीरता पूर्वक मनाया गया जहां पांच २ पाद्रियों के द्वारा सेवकाई की गई। पवित्र वियारी में भागी होने वालों की संख्या दोनों जगह ११०० से ऊपर बतलाया गया। यों प्रतीत होता है कि आत्मिक भूख और प्यास की जगृति है।

टकरमा — इलाका एक सौ वर्षीय जयन्ती २४वीं मई को मनाने जा रही है, जिसके लिये यथा सम्भव तैयारियाँ हो रहीं हैं।

बैबल क्लास —

मई जून मास में हर साल विभिन्न दलों के द्वारा बैबल कलास का आयोजन किया जाता है। इस साल ज्योति सेना गुमला (१६ से १६ मई) क्रूस सेना चैनपूर (१४ — १७ मई) युवा संघ बरहा डेगा (२८ मई) किनकेल सेवई (२१—२३ मई) अंचल यूथ एसोसिएसन मर्चा (२१-२३ मई) इन जगहों में डा० सिंह को विशेष निमंत्रण दिया गया पर वे अप्रील १७ को दो महिने के लिए विदेश निकल चूके सो जून १५ के पहले वापस आने की बहुत कम आशा है।

ईश्वर आप ही ठहराये कार्यक्रम को आशीष देवे, अगुवाई करे तथा सफल बनावे। आसाम

Gossner Mission

हुलुट्रपू (१३-१४ अप्रैल ७३) युवा संघ और महिला संघ की बैठकी की गयी, अपर असाम इलाके के इस मंडली में जागृति लायी गई।

टकरमा इलाका शत वर्षीयजयन्ती :— टकरमा इलाका अपनी सौ वर्षीय अर्से की लम्बी यात्रा २४ मई को समाप्त कर रही है। ईश्वर पिता को धन्यवाद और स्तुति का अवसर आया है। अनेक निमंत्रित स्वदेशीय तथा विदेशियों के आने की आशा।

जयन्ती-दिवस के निकटतम पधारते तैयारियों के होड़ लग गये — इलाका महिला संघ, युवा-संघ, सन्डे स्कूल आदि के। आशा है कि २३-२५ मई को बृहत भीड़ होगी यथा सम्भव ठहरने खाने-पीने आदि सुविधों को ध्यान रखकर जयन्ती समारोह उचित ढ़ंग से प्रभु की महिमा के लिए किया जा सके। उसका प्रबन्ध हो रहा है आमोद-प्रमोद के लिए भी स्थान रखा गया है।

एम॰ पी॰ सुरीन
बानो

रांची प्रोपर्टी बोर्ड की बैठक

१६वीं अप्रील को बोर्ड अफ प्रोपर्टीज की बैठक राँची में हुई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि पहली मई १९७३ से दो मैनेजरों की नियुक्ति कलीसिया के जमीन जयदादों की देख-भाल के लिये हो। पहला जन प्रमोद तिग्गा हैं जो नयाटोली राँची से आते हैं तथा सहायक मैनेजर सुशील बरला हो जो प्रमोद तिग्गा से धीरे-धीरे काम सीखें ताकि किसी दिन वे आप खुद इस विभाग के कार्य को कर सकें।

२६वीं अप्रील को बोर्ड अफ एडयूकेशन की बैठक खुटीटोली में हुई जिसमें उन्होंने यह निर्णय लिया है कि १ली मई १९७३ से इस विभाग के कार्य के लिये दो अधिकारियों की नियुक्ति हो। पहले जन अवेनएजर लकड़ा हो तथा दूसरे जन श्री हेरन समद हो जो क्रमानुसार एडयूकेशन अफसर तथा डिपुटी एडयूकेशन अफसर कहलावेगें। इस बावत के॰ एस॰ एस॰ का यह फैसला है कि एक एडयूकेशन अफसर हो जो अवैतनिक रहेंगे तथा दूसरे एगजेक्यूटिव अफसर हो जो सवैतनिक होंगे।

विदेश समाचार

- हाईटस टाऊन—मारग्रेट एन्नीक्रीच छटवां लूथेरान महिला पादरी विगत २५वीं मार्च को न्यू जेरसी सेनोड में पदाभिषेक की गई।
- फिलाडिलफिया—टेलीविजन के द्वारा शिक्षा का प्लान किया गया, तथा क्षेत्र के भीतर ६० मंडलियों में प्रयोग किया जा रहा है।

मस्को — खबर है कि सोवियत संघ में विश्वासी धर्मी लोग २% है।

- वेनीपेग—कनाडा के सारे लुथेरान युवा युवतियों की तीसरी बैठकी आगामी १९७४ के अगस्त में मनीटोभ में होने वाली है।
- ब्यूडापेस्ट— विशप जोलतन कल्दी और एर्नो ओटलिफ हंगरी लोगों के प्रतिनिधि पूर्वी जर्मनी मुलाहिजा के लिये २ अप्रैल को निकले हैं। वे १० दिन तक मंडलियों को देखेंगे जैसे सेकसोनी ग्रेपस्वाल्द, मेकलेनवर्ग, और थुरिंगगिया आदि।
- पूर्वी बार्लिन—गत् २ वर्षों से पूर्वी बार्लिन की मंडलियां अन्य प्रोटेस्टेन्ट मंडलियों से सहयोग में और विशेष ठहराये प्रोग्राम में हाथ बटाने आरम्भ किये हैं।

गोस्सनर कलीसिया के प्रचारकों का पेनसन

१ली जून १९६८ से कलीसिया के पादिृयों का पेनसन नियम लागू किया गया तथा सेवावधि प्राप्त पादिृयों को पेनसन दिया जाने लगा है। उसी समय के बाद से इसकी चर्चा सुनाई देने लगी थी कि कलीसिया के प्रचारकों का भी पेनसन नियम बन रहा है। परन्तु यह विषय ठप सा हो गया था। बीते तीन साल इस विषय पर कोई कदम नहीं उठाया जा सका। अतः ये प्रचारक भाई लोग जिन्होंने पेनसन की चर्चा सुनी थी, निराश हो चुके होंगे।

Gossner Mission

कलीसिया में निराश होने की बात न केवल इसी पेनसन के सम्बन्ध में हुई है, वरण कलीसिया की हिस्ट्री में अनेक बार भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न विषय पर निराश होना हुआ है। इनका कारण अवश्य ही भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न प्रकार का रहा। परन्तु कभी-कभी निराशा में भी नयी आशा आ जाती है जो आश्चर्य्य कर्म सा प्रतीत होता है।

आनन्द का समाचार है कि प्रचारकों के पेनसन के सम्बन्ध में भी नयी आशा आ गयी है। प्रमुख अध्यक्ष पाद्री जे· तोपनो ने अपनी चिट्ठी न· २७५/७३ दिनांक १६-४-७३ के द्वारा मुझे आदेश दिया है कि मैं प्रचारकों का पेनसन नियम जल्द बनाऊं। उन्होंने यह भी जनाया है कि इस पेनसन फण्ड के लिये जर्मनी से लगभग ३५ हजार रूपैया सहायता मिलने की भी सम्भावना है। अतः पेनसन नियम बनाना आरम्भ कर दिया गया है। आशा की जाती है कि इस साल के अन्त तक में पेनसन नियम तैयार हो जायगा तथा के· एस· एस· द्वारा निर्धारित किसी तिथि से लागू हो जायगा।

प्रचारकों का पेनसन नियम बनाने के लिये मुझे सभी इलाका चेयरमेन तथा अंचल अध्यक्षों से पत्र व्यवहार करना होगा। सुन्दर सहयोग द्वारा पेनसन नियम सहूलियत से बनाया जा सकता है। अतः मैं सभी इलाका चेयरमेन तथा अंचल अध्यक्षों से सादर अनुरोध करूंगा कि इस कार्य्य में मुझे सहयोग दें कि कलीसिया का अभिप्राय पूरा हो और प्रचारक भाईयों को भी पेनसन मिले।

पाद्री बी· मिंज
जी· ई· एल· चर्च, रांची।

टी॰ टी॰ सी॰ फुदी में नये प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश

हमारे टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर फुदी में १९६३ साल से आई॰ टी॰ आई॰ (ITI) स्तर पर फिटर एवं बढ़ईगिरी व्यवसायों में औद्योगिक प्रशिक्षण चालु है। इसमें प्रति वर्ष प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश होता है। इस वर्ष भी १ली अगस्त से फिटर एवं बढ़ईगिरी व्यवसाय (I.T.I. Standard) तथा ग्रमीण स्तरीय बढ़ईगिरी के लिये उम्मेदवार लिये जायेंगे। उम्मेदवारों का दरखास्त टी॰ टी॰ सी॰ ऑफिस में ११ वीं जून तक पहुंच जाना चाहिये। दरखास्त टी॰ टी॰ सी॰ के फॉर्म ही में भेजा जाना है। ये फॉर्म निशुल्क निम्न जगहों में उपलब्ध होंगे— (i) टी॰ टी॰ सी॰ फुदी (P.O.), राँची, (ii) के॰ एस॰ एस॰ ऑफिस, जी॰ ई॰ एल॰ चर्च, राँची और (iii) विकास मैत्री ऑफिस, सेन्ट जोसेफ क्लब, पुरूलिया रोड, राँची और (iv) डैयोसियन ऑफिस, (C.N.I.) पुराना हजारीबाग रोड, रांची।

ITI स्तरीय प्रशिक्षण के उम्मेदवार १६ से २२ वर्ष के हों तथा उनकी शैक्षणिक योग्यता किसी भी स्वीकृत स्कूल से कम से कम ९ वें क्लास उत्तीर्ण हो। विज्ञान तथा गणित के विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जायगी। ITI स्तर के आदिवासी तथा पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के लिये सरकार की ओर से प्रति माह २५) रु॰ स्टैपेन्ड प्राप्त है। अन्य जनकारी संस्था के Prospectus (नियमावली की विवरण-पत्रिका) से प्राप्त होगी।

ग्रामीण स्तरीय विद्यार्थी भी १६ से २२ वर्ष के हों। उनकी शैक्षणिक योग्यता ७ वें वर्ग उत्तीर्ण हो। उन्हें सरकार की ओर से स्टैपेन्ड नहीं मिलेंगे पर संस्था की ओर से प्रति माह ४०) रुपये देने की व्यवस्था है।

Rev. C. B. Aind
Director
T. T. C. Fudi (P.O.) Ranchi.

धन्यवाद, आपका ग्राहक चन्दा ३० अप्रैल ७३ तक मिला

1. Mr. Benjamin Lugun,
2. Rev. Namsukh Tirkey,
3. Jaiman Kujur (J.C.54042 N/Sub,)
4. Cate Hanukh Minj,
5. Cate Hardugan Topno,
6. Mr. S. K. Tete,
7. Mr. B. Kandulna,
8. Gossner Bible Buniayadi Prasikchan Kendra,
9. Miss Nakeshari Narjary,
10. Mr. P. Soy,
11. Hony. Capt. C. H. M. Champi,
12. Shri Nelson Philip Kandulna,
13. Mr. P. S. Barjo,
14. Rev. C. P. Kandulna,
15. Mrs. Telani Soy,
16. Shri Samuel Herenj,
17. Mr. M. Indwar,
18. Mr. M. P. Kongari,
19. Shri Lorenthieus Bage,
20. Shri Nathaniel Purti,
21. Cate C. K. Ekka,
22. Shri Manohar Burh,
23. Shri J. Modi,
24. Shri Heran Champi,
25. Mohan Kujur,
26. Shri Immanuel Minj.

REMEMBER !

1. If one does all the talking it is MONOLOGUE.
2. If one expects only to admonish and instruct the other, it is a SERMON.
3. If both talk only to score points or to expose the other's weakness, it is DEBATE.
4. If neither takes the subject seriously, it is BADINAGE.
5. If neither takes the other seriously, it is BANTER.
6. If each takes both person and subject seriously then it is DIALOGUE.

30 Apr 73 A.D. TOPNO

Gossner Mission

आनन्दपुर क्षेत्र के अन्य जातियों के बीच शुभ सम्वाद

मसीह द्वारा शारीरिक एवं आत्मिक चंगाई तथा सुसमाचार प्रचार :—

बड़े हर्ष की बात है कि जीवते प्रभु परमेश्वर ने आज भी अपने विश्वासियों को सारे जगत में अपना जीवता वचन प्रचार करने के लिये सैनिकों को पवित्र आत्मा का सामर्थ देकर सारे जगत में भेजता है :— मती २८ : १९ : २०,

ईश्वर को धन्यवाद हो कि प्रभु भक्त श्री पौलुस मिंज, सुसमाचारक, ग्राम - धंगरीनचा, थाना - कुरडेग, पो· ओ· - किनकेल, जिला - रांची (बिहार) को हमारे द्वारा श्री पी· के· सिंह डैरेक्टर के दिनांक ५-३-७३ के आवागमन प्रोग्राम के अवसर पर मिश्रित चर्च चरवन्दिया में जीवते परमेश्वर का सच्चा प्रेम और सामर्थ का साक्षी के लिये निमंत्रित किया गया था।

कारण वस ५.३.७३ को न पहुँच कर दिनांक ७.३.७३ को हमारे समक्ष पधारे। हय आवागमन इस क्षेत्र के लिये दूसरा मौका था। इनके पहुँचने पर निम्न प्रकार विभिन्न स्थानों में साक्षी प्रोग्राम निशिचित किया गया। (१) दिनांक ८.३.७३ को महीषगिड़ा ११.३.७३ को वेड़ा इचिन्डा, १४.३.७३ को पहाड़ डिहा, १५.३.७३ को टेन्ड्राउली, १९.३.७३ को वेड़ा केन्दुवा, २०.३.७३ को लोवारोम, २१.३.७३ को रायकेरा, २२.३.७३ को अभयपुर तथा २४.३.७३ को वापस लौट गये।

उपरोक्त प्रोग्रामानुसार क्रमशः उपस्थिति इस प्रकार थी :— महीषगिड़ा १५०, वेड़ा इचिन्डा २००, पहाड़ डिहा ३५०, टेन्ड्राउली १०००, वेड़ा केन्दुवा १०००, लोवारोम १५००, रायकेल ५००, अभयपुर १५००, जिसमें शारीरिक चंगाई प्राप्त व्यक्ति क्रमशः १०, ४०, १५०, ४००, ६००, ८००, ३००, १०००। उपरोक्त चंगाई प्राप्त व्यक्ति में विभिन्न प्रकार के रोगी जैसे :— अन्धे, लंगडे, गुंगे, टी. बी. हैड्रोसील, चरपाई में पड़े तीन चार वर्ष के बीमारी, इस प्रकार नाना प्रकार के रोगी जैसे की प्रभु के पास चंगाई के लिए आते थे। इन उपस्थितियों में ५०% गैर मसीही थे जैसे रौतिया, भुईया, गोंड़, ब्राह्मण, क्षत्रि आदि भी। जब लोगों ने श्री मिंज के पवित्र आत्मा की सामर्थी हाथों से आश्चर्य जनक चंगाई को देखा और प्रभु के जीवते वचन को सुना, तो लोग खुशी और आनन्द के मारे झूम उठे। क्या मसीही क्या गैर मसीही प्रभु के नाम की जयजयकार करने लगे। बहुत से टोन्हा भूतों ने प्रभु के सामने और भूत ग्रस्त व्यक्तियों ने प्रभु के सामने उसके सामर्थ को देखकर घुटना टेक के झुक गये और प्रभु के सामने अपने सारे दोषों को मान कर प्रभु से क्षमा प्राप्त किये।

प्रभु के ऐसे सामर्थ को देखकर बहुत से सोये हुए मसीही जग गये और प्रभु की सेवा के लिए अपने को समर्पित कर दिये, गैर मसीही आनन्द भर कर भीड़ के सामने मसीही होने के लिए प्रतिज्ञा किये। बहुत से विरोधी दल प्रभु को परखने के लिए उपस्थित थे, खुशी से भरकर जयजय का नारा लगाने लगे और प्रभु का गवाह देने लगे। आश्चर्य की बात, कि अभयपुर में प्रभु के नाम से दो भैंसा भी चंगा हो गये। इस आश्चर्य कर्म से हमारे आनन्दपुर स्टेट में हलचल मच गया। मोती ओझाओं का मांग कम हो गया, हिन्दु साधुओं का मान मर्यादा घट गया। अन्य जातियों के बीच आपस में तर्क-वितर्क बढ़ गया। खुशी की बात कि इसी माह के इसी सप्ताह के हर मन्डली में धर्म खोजक बढ़ गये! अन्य अन्य कलिशाओं का भेद भाव खत्म हो गया।

Gossner Mission

प्रभु को धन्यवाद हो कि यदि प्रत्येक मसीही इस प्रकार जागृत हो जांय तो हमें पूरा विश्वास है कि चन्द दिनों में सारे पृथ्वी के जातिगण प्रभु के सामने झुक जायेंगे। हमें पूरा विश्वास है कि इस लेख के पाठकगणों में भी जागृति की ज्योति चमकेगी।

कुमारी मुकता लुगुन (जे० लुगुन)
बेड़ा इचिन्डा राज आनन्दपुर

+ शोक-समाचार +

सिंहभुम वृहत वन-मार्ग स्थित टोकद पेरिश के कंका-कित्ता ग्रामवासी पौलुस मुण्डु के बेटे पाद्री जोहन ने (जन्म १९०५ ई०) बड़े धैर्य एवं महापरिश्रम से शिक्षा-दीक्षा प्रवीणता (टोकद, बुड़जू एवं रांची) गोस्सनर हाई स्कूल में किया तथा शिक्षक-प्रशिक्षण चैनपुर में करके शिक्षक काम (टोकद, चैंबासा एवं बुड़जू में) किया। १९५० साल में पाद्री सोर्ट कोर्श के लिए बुलाये गये। पाद्रीपद पाकर टकरमा, बड़ीबिरिंगा, कोटबो, बुड़जू और टोकद में प्रभु की मण्डली की सेवकाई बड़े सफलता पूर्वक किये। गोबिन्दपुर (इटहे) बासी नरमी आईन्द से शादी १९३२ में हुई। ये अपने काम में सदैव लीन रहते थे जिससे बड़ीबिरिंगा में पक्का गिर्जाघर, कोटबो में स्कूल घर तथा अन्य स्थानों में आवश्यकतानुसार निर्माण का काम किये। संगीत के बड़े ही प्रेमी थे जिससे जहां भी वे रहे गीत-गान में लोगों को प्रोत्साहन एवं अगुवाई दिये। अपनी (६७ वर्ष में) अन्तिम स्वांस (११ अगस्त १९७२, रात्री १० बजे, जमशेदपुर अस्पताल में) लेने तक मण्डली की सेवकाई किये ये अपनी धर्म पत्नी, दो बेटे तथा दो बेटियों को अनाथ छोड़ गये। इनकी अन्तिम क्रिया जमशेदपुर में किया गया। जो ईश्वर करता सब भला है। वही जो सच्ची शांतिदाता है आप ही शोकितों को कुशल और शांति देवे।

पा॰ बी॰ लकड़ा

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO; DO TO EARN
EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE
LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—

School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**
MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० ९५
वर्ष—६३ राँची, ...न १९७३, संख्या नं०—६

Eingegangen
19. APR. 1973
Erledigt:..................

घरबन्धु

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५

वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६३ रांची, मई १९७३ संख्या नं० — ५

मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं वैसा मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और अपनी भेड़ों से जाना जाता हूं (यूहन्ना १०:१४)

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher

Pramukh Adhyaksh
Rev. J. Topno

Associate Editor

Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee

Rev. J. Topno
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	—	३
उपदेश की तैयारी	— मार्टिन टेटे	४
घर और परिवार	—	७
कलीसियाई समाचार/समाचार देश-विदेश	—	८
हजारीबाग इलाका [एक प्रतिक्रिया]	—	११
हजारीबाग इलाका स्वशासित ···	—	१२
टी· टी· सी. फुदी	—	१३
पुनरुत्थान का प्रताप	—	१४
शोक समाचार	—	१५
कचनपुर पेरिस युवा संघ	—	१६
नागपुर शिविर	—	१६
ग्राहक चन्दा	—	१८
एक जटिल समस्या	—	१९

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआडर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पुरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते हैं तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के वाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

हम लोगों ने प्रभु यीशु ख्रिस्त का मृत्यु में से जी उठने का पर्व बड़े आनन्दता के साथ मान लिया है। यह पर्व हम मनुष्य जातियों के लिये बड़े आनन्द का पर्व है। यह कहीं नहीं सुना गया था कि कोई व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् जी उठा हो। केवल बैबल इस बात का ज्ञान देता है कि यीशु मसीह जिसकी मृत्यु गलगथा के क्रूश में हुई, जो अरमथिया के युसफ के कब्र में रखा गया, तीसरे दिन मृत्यु में से जी उठा। जगत के इतिहास में बड़े-बड़े धर्म उपदेशकों की, अवतारों की चर्चा आयी हुई है जिसे लोग अपना गुरू एवं देवता मानते हैं जिनकी सेवा आराधना करते हैं परन्तु उन अवतारों का इतिहास मृत्यु ही तक का बताया गया है परन्तु यीशु मसीह जिसे जगत के कुछ लोग नबी करके मानते हैं परन्तु जो लोग उसके जी उठने की बातों को जानते एवं मानते हैं उसे परमेश्वर की ओर से मनुष्य जातियों के उद्धार के निमित्त ठहराया गया उद्धारकर्ता मानते हैं। इसका इतिहास मरने के बाद का भी है इसी से वे सभों से भिन्न ठहरते, उच्च ठहरते एवं विश्वास योग्य ठहरते हैं। उसका जी उठना इस बात का प्रमाण है कि वह परमेश्वर है, सब पापों से निर्दोष है, उसका क्रूश पर का बलिदान ग्रहण किया गया तथा यह कि उसका जी उठना उसके विश्वासियों के जी उठने की गैरन्टी (Guarantee) देता है। यही उसके लोगों के लिये आनन्द एवं शान्ति की बात है। क्या आप ने उसके जी उठना पर्व में इस आनन्द एवं शान्ति का अनुभव किया। यदि किया है तो आप के कार्यों से इस बात की पुष्टी होगी, आप उसकी गवाही देंगे, उसकी महिमा के कार्य करेंगे। प्रभु यीशु के मृत्यु के पश्चात् तीसरे दिन में जब उसके शिष्यों ने उसे जी उठा हुआ देखा तो उनका भय जाता रहा, वे उसकी साक्षी देना आरम्भ किया और मसीही मंडलियों की स्थापनाएँ हुई। क्या आज की मंडली का यही कार्य नहीं है। मंडलियाँ यदि इस बात की सच्चाई को जानती हैं तो चुपचाप नहीं रह सकती है वे अपने जीवन के द्वारा, अपने कार्यों के द्वारा उसकी गवाही देने को तैयार होगी। क्या आप जानते हैं कि यदि हम मिशन काम नहीं करते (उसकी गवाही देने का) तो मसीही होना भी बन्द करते हैं। प्रभु यीशु का मृतकों में से जी उठना हमें इतनी बड़ी शक्ति दे, हियाव, साहस, शान्ति एवं आनन्द दे कि हम उसकी गवाही दिये बिना इस संसार में जीवन न बिताएं। प्रभु हमें इस कार्य के लिये सामर्थ और अगुवाई दे।

रेभ० जे० तोपनो
सम्पादक

उपदेश की तैयारी

(मार्टिन टेटे)

मिसेरीकोरदियस दोमिनी

(प्रभु की दया)

यूहन्ना १०: ११-१६

यहुदी यह समझने में लाचार है कि यीशु ही अच्छा चरवाहा है (१०: १-१८)· उसने अपने बचन में इस बात को भी साफ कर दिया कि फरीसी लोग अच्छे अगुवे नहीं परन्तु चोर एवं डाकू हैं। यीशु आप ही दृष्टान्त एवं बचन के द्वारा समझाता है कि अच्छा चरवाहा कौन और कैसा है।

"अच्छा चरवाहा यीशु है"

१ वह भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है (२-५; ७, ६, ११, १४; १५) यीशु संसार के सब मनुष्यों के लिये मर गया। इस समय पंच पुरोहित एवं प्रचारकगण यीशु के नाम में भेड़ों की अगुवाई करते हैं। उन्हें भी मंडली के लोगों के लिये दुःख उठाना है। जब तक पंच, प्रचारक, पुरोहित आदि दुःख नहीं उठावेंगे तब तक मडली की रक्षा एवं रखवाली नहीं होगी।

यीशु भेड़ों का मालिक भी है। इसी कारण भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।

२ वह अपनी भेड़ों को जानता है। (१५) जीवन की पुस्तक में यीशु के भेड़ों का नाम लिखा हुआ है। वह अपने भेड़ों को अपने खून से खरीद लिया है। वह छोटे बड़े सब लोगों को जानता है और सबों की सहायता आवश्यकता के अवसर पर करता है। वह आज भी हमारी सहायता के निमित तैयार है।

३ वह खोये हुए भेड़ों के लिये भी चिन्ता करता है (१६) : जितने लोग खोये हुए हैं अर्थात मंडली में नहीं हैं उनको भी अपनी मंडली में लाने की चिन्ता करता है। वह भले एवं बुरे दोनों पर मेहरबान है।

मजदूर एवं अच्छा चरवाहा में भिन्नता है। इस विषय को हम इस बचन में देख सकते हैं। अतः हम यीशु के द्वारा ही स्वर्ग जावें उसका शब्द सुने एवं मानें (२७).

युबिलाते (ललकारी)

यूहन्ना १६: १६-२३

यीशु क्रूश की ओर दृष्टि कर रहा था क्रूश उसके लिये अंधकार का समय भी था। उसने अपने दुःख एवं अंधकार के विषय अगोत्तर ही शिष्यों को समझाया। उसने साफ-साफ कहा—"रोओगे और बिलाप करोगे— (२०) परन्तु इसी अंधकार के बाद शिष्यों के लिये आनन्द का समय आवेगा। वह शारीरिक रूप से नहीं परन्तु आत्मिक रूप से शिष्यों के बीच उपस्थित रहेगा। उसकी उपस्थिति पवित्रात्मा के कार्य्य के द्वारा प्रगट की जायगी। पेन्तेकोष्ट के उपरान्त पवित्रात्मा उनके बीच में काम करेगा। यीशु उन्हें समझाता है कि थोड़ी देर के दु.ख के बाद सुख होगा।

दुःख के बाद सुख

१ चूंकि यीशु क्रूश के द्वारा पिता के पास लौट जावेगा :— शिष्य उसकी उपस्थिति के लिये रोवेंगे। चूंकि वह क्रूश के द्वारा पिता के पास लौट जावेगा। यीशु की बात हमारे जीवन में भी लागू होता है। हम भी दुःख एवं मृत्यु के द्वारा पिता के पास लौट जाते हैं। परन्तु मृत्यु के बाद सन्तों के साथ अपने प्यारे लोगों को साक्षात देखते हैं।

२ चूंकि पवित्रात्मा यीशु की उपस्थिति को हमारे बीच प्रगट करता है :— यीशु का काम पवित्रात्मा के काम के द्वारा कलीसिया में प्रगट है। हमारा दुःख पवित्रात्मा के द्वारा आनन्द में परिवर्त्तन कर दिया जाता है। इस जीवन में बचन, साक्रामेन्त आदि के द्वारा हमारे पास यीशु बराबर आता है।

३ चूंकि वह फिर आवेगा :— (२२) :— थोड़ी देर के लिये अभी हम बिलाप करते हैं। परन्तु यीशु ने

Gossner Mission

आप ही हमारे लिये जगह तैय्यार किया है और वहां हमें महाविचार के उपरान्त ले जावेगा। वहाँ सदा का आनन्द बास करेगा।

४ चूंकि यीशु नाम में हमारे लिये प्रतिज्ञा है :— (२३) :— ईश्वर ने सब कुछ यीशु नाम में केन्द्रित कर दिया है। वह यीशु में ही हमें सब कुछ देता है।

हम यीशु नाम में मांगे ताकि हमारा आनन्द पूरा हो जावें।

कन्ताते (गीत गाओ)

यूहन्ना १६: ४-१५

जगत में दुःख होगा। यीशु के विश्वासियों के लिये शान्ति नहीं है। "तुम ठोकर खाओगे—निकाले जाओगे, इत्यादि (१-३) यीशु चाहता है कि हम इस बचन के द्वारा दुःख का सामना करने के लिये तैय्यार हो जावें। दुःख के बाद सुख होगा। चूंकि पवित्रात्मा आवेगा। वही मेरे मिशन के काम को आगे बढ़ावेगा। यीशु इस बचन के द्वारा पवित्रात्मा के काम की ओर हमारे ध्यान को ले जाता है।

"पवित्रात्मा का काम"

१ पाप के विषय साफ-साफ बतावेगा :— आज पवित्रात्मा की शिक्षा के बिना पाप के विषय हम समझने में लाचार हैं। पाप क्या हैं? पाप का फल क्या है?। पाप कैसे मनुष्य में पैठता है? — देखो प्रेरितों के काम नाम का पुस्तक ५ अध्याय।

२ धार्मिकता के विषय शिक्षा देगा :— धार्मिकता यीशु में है। यीशु क्रूश के द्वारा पिता के पास चला जाता है। क्रूश ही के द्वारा उसने हमारे लिये धार्म्मिकता प्राप्त किया। पौलुस इस विषय में यों लिखता है —जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्म्मिकता बन जाए' (२ कुरि० ५:२१)

३ न्याय के विषय प्रकाशन देगा :— पापियों का न्याय होगा। शैतान का न्याय भी होगा। क्रूश के न्याय के द्वारा शैतान हराया गया। पुनरुत्थान के न्याय के द्वारा शैतान लज्जित किया गया है। महाविचार के समय यीशु शैतान के विषय उचित न्याय करेगा। वह अंधकार में डाला जावेगा।

आज संसार को पवित्रात्मा ही मार्ग बतलाता है। वह कलीसिया की अगुवाई करता है। इसलिये हम उसकी पुकार सुनें।

रोगाते (बिन्ती करो)

(यूहन्ना १६:२५-३३)

यीशु इस बचन के द्वारा खुलकर बात करता है। अब दृष्टान्त में नही परन्तु साफ-साफ अपने को बचन में प्रकट करता है।

"यीशु का बचन"

१ यीशु के विषय प्रगट करता है .— कि वह हम से प्रेम रखता है। कि वह आप ही हमारे लिये प्रार्थना करता है। (२६-३०) वह परमेश्वर से आया और परमेश्वर के पास चला जाता है।

२ शिष्यों के विषय प्रगट करता (३२) है :— बचन साफ-साफ बोलता है कि शिष्य दुर्बल हैं। ये व्यर्थ घमंड पर फूल जाते हैं वे यीशु के साथ अन्त तक परीक्षा में स्थिर नहीं रह सकेंगे। देखो पतरस एवं अन्य शिष्यों के विषय। हम भी बराबर परीक्षा में स्थिर नहीं रहते एवं गिरते रहते हैं। परन्तु यीशु आप ही हमें संभालता है।

यीशु आप हमारे साथ है। अन्त तक हमारी अगुवाई करता है। वह हमें बराबर शान्ति देता है। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है॥

स्वर्गारोहन पर्ब

मरकुस १६: १४-२०

स्वर्गारोहन के द्वारा यीशु उठा लिया गया। उसकी दैहिक उपस्थिति की जगह शिष्यों को आत्मिक उपस्थिति प्राप्त होने लगी। शिष्यों ने उसपर अविश्वास

Gossner Mission

किया। इसलिये उन्हें उलाहना दिया गया। मरकुस सुसमाचारक के आधार पर प्रभु यीशु दो विशेष आदेश देता है।

प्रभु यीशु का दो विशेष आदेश

१ आदेश :— सुसमाचार प्रचार करो—विश्वासियों को व्यक्ति एवं समूह दोनों होकर सुसमाचार प्रचार करना है। शिष्यों ने एवं प्रारम्भिक मंडली ने इस आदेश को पूरा किया। इसी कारण मंडली में जीवन या और मंडली बढ़ती में रही। आज भी मंडली को बढ़ना चाहिये। जिस मंडली में जीवन है वह सुसमाचार सुनाती और जिस मंडली में जीवन नहीं है वह सुसमाचार नहीं सुनाती है क्योंकि वह मृत मंडली है। सुसमाचार प्रचार प्रगट करता है कि मंडली में जीवन अथवा मृत्यु है। मंडली जीती है — इसका प्रमाण है कि वह सुसमाचार सुनाती है।

२ आदेश :— आश्चर्य्य कर्म्म करो :—
प्रभु यीशु ने अपने जीवन में आश्चर्य्य कर्म्म किया। मंडली उसकी देह है। इसलिये मंडली को आश्चर्य्य कर्म्म यीशु की गवाही एवं महिमा के लिये करना है। जिस मंडली के द्वारा रोगियों को चंगाई नहीं मिलती वह प्रभु की देह नहीं, जिस मंडली के द्वारा दुष्टात्मा भगाये नहीं जाते वह भी प्रभु यीशु का नहीं और न वह मंडली प्रभु यीशु का है जहां उद्धार पाये हुए लोग नहीं हैं। आज भारतवर्ष में मंडलियों को यीशु नाम में आश्चर्य्य कर्म्म करना है। आज भारत के भूतों को कलीसिया ही को भगाना है। भूतों का रूप अज्ञानता, मिथ्य रूढ़ीवाद विश्वास आदि है।

हम यीशु की सुनें एवं उसके आदेशों का पालन करें।

—०—०—

— सूचना —

१९७३ ई० में गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज में विद्यार्थी लिये जा रहे हैं। २५/७३ अप्रील को बहाली के लिये प्रवेश परीक्षा होगी। प्रवेश परीक्षा के लिये दो स्थान हैं— १ ला खूंटी—रांची से २४ मील दक्षिण में स्थित है। २रा खूंटीटोली (सिमडेगा), खूंटीटोली (सिमडेगा) आने के लिये आवागमन का सुविधा चारों ओर से है। प्रवेश परीक्षा देने वाले विद्यार्थी दोनों जगहों में से किसी एक में आवें। परीक्षा का समय ६ बजे भोर से ६ बजे शाम है। परीक्षा का विषय :— बैबल का साधारण ज्ञान (पुराना और नया नियम) भाषा विज्ञान (हिन्दी और अंग्रेजी) साधारण ज्ञान (कलीसिया का इतिहास तथा सामान्य ज्ञान)।

कॉलेज की ओर से चुने हुए विद्यार्थियों को ५०) (पचास रूपैये के दर से प्रतिमाह छात्रवृत्ति दी जायेगी। जितने विद्यार्थी अपने खर्च से पढ़ना चाहते हैं वे भी आवें। इस वर्ष से विद्यार्थियों को गोस्सनर कॉलेज में भी पढ़ने का मौका दिया जायगा। इस वर्ष गोस्सनर कॉलेज में २०० विद्यार्थीगण पढ़ रहे हैं १७-४-७३ से लगभग ६० छात्र एवं छात्राओं को रांची विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठने का मौका हुआ। गोस्सनर कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओं को सरकार की ओर से छात्रवृत्ति दी जाती है। उनके टिकने के लिये छात्रावास का भी विशेष प्रबन्ध है।

—०—०—

Gossner Mission

घर और परिवार

(बेन्जामिन तोपनो, रौरकेला)

हरएक मनुष्य का एक घर होता है और मनुष्य का "घराना" (परिवार) उसका आवश्यक परस्पर बांधी अंग है। परमेश्वर की अटल इच्छा है, कि प्रत्येक "ख्रिस्तान" और उसका "घराना" बच जाय। प्रत्येक घर में अपने परिवार को सही रास्ते में चलाने, संभालने तथा सब के "दैनिक जीवन को ठीक बनाये रखने के लिये एक खास व्यक्ति घराने का "सिर" माना जाता है, जो उनके रहन-सहन-खान-पान आदि को ठीक-ठीक रख कर उन्हें हर बुराई और नुकसानी से बचाये रखने की इच्छा रखता है। हम प्रत्येक प्राणी एक-एक घराने में उत्पन्न हुए हैं। परमेश्वर हमारे घर के एक-एक जन को बचाना चाहता है। वह नहीं चाहता कि एक भी नाश हों (२ पितर२:६) आइये हम सब अपने-अपने घराने को देखें और हमारे उद्धारकर्ता प्रभु-यीशु मसीह के घर के बारे सुनें, सीखें और समझें। यूहन्ना १४:२। स्वर्ग को हमारा प्रभु कहता है "मेरे पिता का घर"। प्रत्येक ख्रिस्तान के दिल में यह बात जड़ पकड़ लिया है कि "स्वर्ग उसका सदा ठहरने का घर है। चलिये हमें उस घर में प्रवेश करने के पहले "नूह" इब्राहीम, जक्कई, फिलीपी का दरोगा, कोर्नेल्युस तथा "बहिन" राहाब और लुदिया से मुलाकात करना है और उनसे बातें करना है कि वे—किस तरह 'घराने समेत" प्रभु से मिले। परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने घराने समेत जहाज में जा (उत्पति ७:१), अपने घराने के बचाव के लिये नूह ने "जहाज" बनाया (इब्रानी ११:७), जहाज हमारा "यीशु" है। परमेश्वर की बुलाहट से इब्राहीम अपने जन्म स्थान, घर और गाँव छोड़ दिया और नहीं जानता था कि मैं अनजान दिशा की ओर कितनी दूर तक कहाँ पहुँचूँगा। परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से जो परिवार का सिर है यही चाहता है कि वह उन्हें पवित्र आज्ञा दें और अपनी बतायी हुई राह पर चलकर अपना तथा अपने घराने का उपकारक ठहरे। उत्पति १८:१९, सदोम-अमोरा के लिये इब्राहीम को यहोवा से बहुत बार बातें दुहरानी पड़ी कि "सदोम-अमोरा पर ऐसी विपत्ति न पड़े (उत्पति १८:१६-३३)। दुनिया में पाप और बुराई भर गई जिसको सोचने से ऐसा लगता है कि फिर से और एक बार पूरी दुनिया "महाबाढ़" और जल-प्रलय से खत्म किई जाय। खेद है कि हम वही जीवन जीते हैं जिस "जीवन" में सदोम-अमोरा के निवासी जीते थे जहाँ परमेश्वर को गन्धक और अग्निपानी द्वारा भूमि की सारी उपज समेत नाश करना पड़ा था। परमेश्वर की ऐसी सख्त और कड़ी चेतावनी का परवाह न करके यीशु के खून के बजाय अपने ही खून से नहा रहे हैं (गलाती ५:१९-२१)। ईब्रानी २:३, हम इस उदाहरण से चेतावनी लें और अपने "घराने को हर बुराई से बचावें और उन्हें बुराई से रोकें, जैसे यह लेखक घुम-फिर कर प्रत्येक गाँव में खूब जोरों से "माँदर बाजा" की आवाज सुन रहा है और अनेकों ख्रिस्तान् भी उनके संग खड़े-खड़े देख रहे हैं हंस रहे हैं। १ शमुएल ३:१३, में हम एली याजक से मिलते हैं जिस पर परमेश्वर का क्रोध भड़का। वह अपने घराने का ठीक प्रबन्ध न कर सका जो अपने पुत्रों की बर्बादी का कारण हुआ। किसी भी बुद्धिमान ख्रिस्तान प्राणी को अपनी उत्पत्ति तथा अंतिम लक्ष्य के बिषय में समुचित ज्ञान होना जरुरी है, अतः हमारे गिरजाओं और प्रत्येक गाँव-गाँव के "सन्डे स्कूलों में बैबल शिक्षा का बिशेष स्थान होना चाहिये। बैबल ज्ञान के द्वारा पक्के और सच्चे अन्तःकरण का निर्माण होता है। अहा; कैसा बिचित्र तमाशा है जो पेड़ पर चढ़ कर 'जक्कई" अपने घराने समेत उद्धार पाया (लूक १९:९) फिलीपी का दरोगा उद्धार पाया, जिसने चिलाया था "हे साहिबो उद्धार पाने के लिये क्या करूं ? प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पायगा।" वह पाया (प्रेरित १६:३०-३१), यह अनमोल प्रतिज्ञा न केवल उसी के लिये था। यह तो मेरे लिये भी, तेरे लिये भी, और सब ख्रिस्तानों के लिये आशापूर्ण जीवनदायक आश्वासन है। कोर्नेल्युस

Gossner Mission

अपने घराने समेत उद्धार पाया (प्रेरित ११:१४) लुदिया बहन को देखें—वह अपने नौकरों, मित्रों और "घराने समेत बपतिस्मा लिया (प्रेरित १६:१५) यरीहो शहर की बर्बादी और दीवाल गिर जाने पर भी "बहन राहाब वेश्या को सिर्फ एक ही घर को विश्वास के स्मारक के रुप में खड़े पाते हैं जो अपने माता पिता सहित उसके पूरे कुटुम्ब बच गये (यहोशु २:६-१३, + यहोशु ६:२३—२४) यहाँ परमेश्वर बताता है कि उद्धार की इकाई "घराना" है। स्मरण रखें, परमेश्वर ने कहा था :— घराने पीछे एक मेम्ना ले रखो (निर्गमन १२:३) परमेश्वर के मेम्ने के लोहू से उद्धार है। अब हम 'फसह नाम पर्व मनाने के समय में जी रहे हैं। आईये हम एक एक खिस्तान अपने घराने समेत "महोपवासकाल को गंभीरता पूर्वक बैबल अध्ययन तथा ईश्वर की आराधना में जुटें और दुनिया के मसीही एक विशाल "स्वर्गीय घराने में प्रभु यीशु मसीह के साथ युग-युग जीयें। ईश्वर हमारी सहायता करे कि हम इसी घड़ी से क्रूस की ओर अपनी अपनी आँखें उठावें, (ईब्रानी १२:१-१७)।

कलीशियाई-समाचार

राँची की हमारी महिलाओं ने यह कदम उठाया है कि जुबिली स्मरण पत्थर के चारों ओर ईट का घेरा लगाएँ, इसकी बड़ी आवश्यकता थी, घेरे के न होने से बैल-बकरी, बाल-बच्चों की भरमार यहीं रहा करती थी। उसकी सुन्दरता खत्म हो चुकी थी, आनन्द की बात है कि हमारी बहनों ने इस बात को देखा तथा घेरा बनाने का भार उठाया एवं जी उठना पर्व के पहले बना कर तैयार किया। कलीसिया के नाम में उनको हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूं।

हमारे लिये प्रसन्नता की बात है कि डा० सी० के० पौल० सिंह १७ वीं अप्रील को पूर्वी एवं पश्चिमी जर्मनी, के हमारे प्रेमियों एवं मित्रों के निमंत्रण पर जर्मनी चले गये हैं। उनकी यह यात्रा गोस्सनर मिशन के बीच के सम्बन्ध को और मजबूत बनाने में सहायक हो यह हमारी आशा एवं प्रार्थना है तथा हमारी शुभकामना है कि परमेश्वर उनका रक्षक, आड़ और ढाल हो तथा सकुशल मई महीने में हमारी कलीसिया में वापस ले आये।

रेभ० जे० तोपनो
सम्पादक

रांची : गतांक (घरबन्धु) समाचार से पाठकों को मालूम ही है कि पास्टर जे० ह्यु मेल, बर्लिन के ब्राण्डेनबुर्ग कलीसिया के नियुक्त पाद्री हमारी कलीसिया के साथ सम्बन्ध बढ़ाने के दौरे में यहां आये हुए थे - उन्होंने हमारी कलीसिया के कई स्थानों एवं संस्थानों का निरीक्षण किया, तात्पर्य था कि इससे वे हमारी समस्याओं को जाने और यह भी कि हम कलीसिया हो कर उनका कैसा समाधान करना चाहते हैं और दूसरों से सहायता की हम क्या आशा रखते हैं! अनेक स्थानों में उन्होंने प्रश्नोत्तर का समय भी मांगा : स्वयं प्रश्न पूछा एवं प्रश्नों का उत्तर भी दिया! सामाजिक समस्याएं, युवा वर्ग एवं गैर-पुरोहित वर्ग के विभिन्न समस्याएं एवं जबाबदेहियां, इस बदलते युग में कलीसिया अगुवों एवं पुरोहितों की विशेष जबाबदेही आदि विषय प्रमुख थे। (खकपस)।

रांची : १४ वीं मार्च को रांची में प्रोपर्टी बोर्ड एवं एडुकेशन बोर्ड की बैठकियां हुई और विभागीय विशेष समस्याओं पर बात चीत हुई एवं कुछ निर्णय भी लिये गये, ये निर्णय के० एस० एस० की मंजूरी के बाद कार्यान्वियन के निमित वैध होंगे। के० एस० एस० अफसरों की बैठकी भी इसी दरम्यान हुई एवं विशेष कर सेवा-काल-वृद्धि के निर्णय लिये गये जिनमें पाद्री फिलिप हेमरोम एवं श्री अरविन्द होरो के दरखास्त पर विचार किया जाकर सेवा काल वृद्धि की गयी हैं।

इसी माह में 'रिलीफ-कमिटी' (राहत कार्य-समिति) की भी बैठकी हुई और अफसरों की चुनाव की गयी। रेभ० डा० एन० मिंज सभापति, श्री भुषण खेस्स सचिव एवं रेभ० सी० बी० आइन्द कोषाध्यक्ष चुने गये हैं। इन्होंने

Gossner Mission

अपना काम आरम्भ कर दिया है, आशा है इनके कामों से बहुतों को सहायता एवं लाभ होगा।

बुड़दा (पुरुलिया)। रांची : पश्चमी बंगाल इलाका के बुड़दा पेरिश में एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था ; पूरे पेरिश के मसीही भाई बहनों को निमंत्रण था। रांची से पादरी सी० बी० मिंज सपत्नीक पादरी सुरेन्द्र मोहन, एम० जी० (धुर्वा-हड़सेल) तथा डा० सिंह भी उपस्थित थे। पहला शाम स्वागत इत्यादि कार्यक्रम के बाद महोपवास काल की आराधना की गयी जिसमें पादरी सी० बी० मिंज ने उपदेश दिया। आराधना के पश्चात् जन सम्पर्क विभाग (पुरुलिया) तथा डा० सिंह की ओर से कुछ फिल्म भी दिखाये गये। दूसरे दिन पहली बेला उपासना (पा० सुरेन्द्र मोहन एम० जी०) के बाद बैबल अध्ययन का विषय था ; डा० सिंह ने "ज्योति" के आधार बैबल अध्ययन में अगुवाई की। तत्पश्चात् प्रश्नोत्तर के लिये भाई एवं बहनों का दो अलग दल बनाया गया।

दूसरी बेला परिवार परिदर्शन का कार्यक्रम था विशेष कर बुड़दा मंडली के सभी परिवारों में जाना था। लगभग तीन बजे आरम्भ किया गया, आरम्भ में छोटा दल था, पर होते न होते दल बढ़ता गया, भजन एवं कीर्तन ने पूरी बस्ती गुलजार कर दिया, प्रतिघर में प्रार्थना होती थी, दो जगहों में छोटे साक्षी उपदेश भी दिये गये, विशेष कर उकादरा एवं कोड़ेंग में! यों तो हमारा परिवार परिदर्शन ही साक्षी हो गया क्योंकि भजन और कीर्तन ने तो लोगों को घर से बाहर आकर हमारी सुनना मजबूर कर दिया! इस कार्यक्रम में हम समय की पाबन्दी नहीं रख सके फिर भी रात ८ बजे गिर्जा आराधना की जिसमें डा० सिंह ने उपदेश दिया। तत्पश्चात् विदायी कार्यक्रम था।

एक दिवसीय कार्यक्रम में समयाभाव महसूस किया गया, पर फिर भी सम्मेलन सफल रहा। यह विशेष कर "भेड़ों को चुराये जाने" के सम्बन्ध में था। हमारी वचन-संगति, परिवार परिदर्शन-संगति एवं श्री संडिल के यहां सभों के खान-पान की संगति आनन्द पूर्ण एवं आशीष वर्द्धक रही। इस कार्यक्रम से भाई बहनों में नयी जागृति के साथ ही अच्छी आत्मिक संगति भी हो गयी। (खकपस)

रांची : मार्च (११वीं) में रांची-महिला सम्मिति ने मीना-बाजार का आयोजन की। यह मीना बाजार बैबल सोसाइटी (बिहार औक्सीलियरी) के तत्वावधान में ठहरायी गयी। रांची की महिला कई वर्षों से इसी प्रकार के मीना बाजार से आमदनी करके बैबल सोसाइटी को अपना अंशदान देती है। स्थानीय महिला-समिति-सभापति सुश्री अनुग्रहीत मिंज के कहने अनुसार इस साल भी लगभग चार सौ रूपैया वे बैबल सोसाइटी को दे सकेंगी। इस साल के मीना बाजार में और भी रंग आ गया था, प्रचलित पाक-पकवान, छोटी बिक्री दुकान एवं खेल तमाशे के अतिरिक्त इस वर्ष पास्टर हेकर सपत्नीक की अगुवाई में थेओलोजिकल कॉलेज की ओर से विशेष मनोरंजन कार्यक्रम भी था; लघु चलचित्र तथा प्रदर्शनी आनन्दवर्द्धक एवं शिक्षा पूर्ण थे। (खकपस)।

● जयपुर (उड़ीसा) उत्तर भारत की लुथरन एवंजेलिकल कलीसियाओं का क्षेत्रीय सम्मेलन यहां जयपुर एवंजेलिकल लुथरन कलीसिया के अहाते में २५-२८ फरवरी तक हुआ। उन दिनों प्रदेश में अनिश्चित परिस्थिति होने के कारण हमारी कलीसियाओं के प्रतिनिधियों के जाने को रद्द कर दिया गया, फिर अपनी ही जबाबदेही में हमारी कलीसिया के चार प्रतिनिधि गये हुए थे, अन्य लुथरन कलीसियाओं से २० सदस्य प्रतिनिधि थे, इस सम्मेलन में "कलीसिया" के विषय भिन्न भिन्न दृष्टिकोण से भाषणों एवं प्रश्नोत्तरों से आगन्तुकों को लाभान्वित किया गया।

"उतर भारत की संयुक्त कलीसियाओं" के लिये जो संविधान प्रारूप बनाया गया है उसपर भी बातचीत हुई; जयपुर एवं उतरी भारत लुथरन कलीसियाओं का भोट अब तक प्रारूप के लिये नहीं आया है, अतः अन्तिम निर्णय नहीं लिया जा सका। (खकपस)।

● सुन्दरगढ़–महिला समाज के दान (बिलम्बित समाचार)

वैसे तो जब से सुंदरगढ़ गिरजा का संस्कार हुआ, यानी १९५४ से सुन्दरगढ़ महिला समाज, गिरजा के

Gossner Mission

लिये समय-समय पर दान देते आया है यथा, बेदी-टेबल, बेदी कपड़ा, चट्टाई, प्रभुभोज खानेवालों के लिये गद्दी, सिरनी उगाहने का चांदी का बर्तन, गिरजा घर के गच को पक्का करना इत्यादि । हाल में ८ दिसम्बर १९७२ को उसने ४००) खर्च करके १५ बेंच दिया । इस दान को पा० एन० कुलु ने गिरजा लिये ग्रहण कर संस्कार किया । इस प्रकार के दानों से यहाँ की बहिनों का मंडली के प्रति प्रेम साफ-साफ प्रगट होता है । इस दान के द्वारा बेंचों की घटी कुछ अंशों में दूर हुई ।

इस दान के लिये सुंदरगढ़ मंडली ईश्वर को और महिला समाज को धन्यवाद देती है । पा० बाबु और श्री फिलिप टेटे को भी धन्यवाद, कि उन्होंने इन बेंचों को राजगांगपुर से लाने का विशेष कष्ट उठाया । बढ़ई पौलुस गुड़िया भी धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि उसने गिरजा के लिये दान समझकर अधिक मुनाफा न लेकर बेंच बनाकर दिया ।

यह समाचार घरबंधु पाठकों को देने का मतलब है कि वे समय-समय पर अपनी मंडलियों के समाजों के कार्य-कलाप, कलीशा की जानकारी के लिये घरबंधु में दिया करें जिससे अन्य महिला समाज जगाये जायं और प्रभु की महिमा के लिये उसके प्रेम से चलाये जा कर उस के लिये काम करने को आगे बढ़ते जायं ।

प्रेषक-डॉ० नुअस केरकेट्टा
सुंदरगढ़

समाचार देश-विदेश

● आदिस अबीबा (इथियोपिया) : कैसर हाइले सेलासी I ने यहां एल० डब्ल्यु० एफ० द्वारा संचलित "रेडियो भोइस ऑफ द गॉस्पेल" के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं विकास कार्यक्रम में जो सेवा अदा की गयी है सराहना की । बीते फरवरी में उक्त रेडियो केन्द्र का १० वां वर्षगाँठ मनाया गया है जहां कैसर ने उपरोक्त बातों में अपनी खुशी जाहिर की । पाठकों को मालूम होवे, कि इस रेडियो केन्द्र से प्रतिदिन १३ भाषाओं का कार्यक्रम जारी किया जाता है । यह आधुनिक युग का विशेष साधन है जिससे करोड़ों लोगों तक सुसमाचार की बातें पहुंचायी जाती हैं ।

● ख्रिस्तियानजान्ड (नोर्वे) : नये चुने गये बिशप ने यहां हाल ही में कहा है, कि वे अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सम्बन्ध रखने के पक्ष में हैं; एल० डब्ल्यु० एफ० एवं डब्ल्यु० सी० सी० जैसे संस्थाओं से सम्बन्ध रखना अच्छा है ! उन्होंने उन आलोचकों के प्रत्युत्तर में कहा जिनकी मांग है कि नोर्वे की कलीसिया दूसरों से सम्बन्ध विच्छेद कर लेवे ।

● आदिस अबिबा : इथियोपिया की एवंजेलिकल कलीसिया 'मेकाने येसु' पार्लियामेन्ट में एक पत्र भूमि सुधार-विधायक के निमित अर्जी पेश करते हुए दिई है । यह पत्र वहां की कलीसिया की महासभा के निर्णय के आधार पर भेजा गया है ।

● सेऊल (कोरिया) : कोरिया लुथरन कलीसिया ने अपनी १५ वर्षीय जुबिली मनायी । इसी कलीसिया से डा० ओंग जी (एशिया सेक्रेटरी एल० डब्ल्यु० एफ०) आते हैं । हम उस कलीसिया के लिये शुभ कामना एवं प्रभु की आशीष चाहते हैं ।

● वीनिपेग (कनाडा) : कनाडा के लुथरन कलीसिया की एकता के रूप एवं स्वभाव पर विचार विमर्श हो रहा है । कहा गया है कि एकता का आन्दोलन बढ़ता ही जा रहा है, पर एकता के विरोधी भी बढ़ते जा रहे हैं ।

● जेनेवा : डा० केन्ट एस० न्कुटसन की मृत्यु से न केवल अमेरिका की लुथरन कलीसिया को आघात पहुंचा परन्तु सारे जगत के लुथरनों के लिये दुःख एवं शोक का विषय है । डा० न्कुटसन ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्र लुथरन जगत में अपने कामों के द्वारा अनेक सेवा व सहायता के कार्य किये हैं । यह डा० युवा, प्रेसीडेन्ट एल० डब्ल्यु० एफ० के सभापति के हृदयोदगार से पता चलता है ।

● होंग-कोंग : की सरकार ने १९६० से लुथरन वर्ल्ड फेडरेशन द्वारा संचलित ५४ बिछौने वाले अस्पताल को अपनी देखरेख और शासन में लेने में सहमति प्रगट की है । यह पहला कदम है, कि एल० डब्ल्यु० एफ० अपने सारे समाज-सेवा के कार्यों का भार धीरे धीरे होंगकोंग की हाथों सुपुर्द कर देगा ।

Gossner Mission

● बर्लिन : रेभ ऊबे होल्म, जो बर्लिन मिशन के महासचिव है दक्षिण अफ्रिका में प्रवेश-अनुमति दे दी, उन्हें तीन सप्ताह के लिये "विशेष-अनुमति" प्राप्त हुई। बीते सितम्बर (१९७२) में उन्हें ऐसी अनुमति अस्वीकृत कर दी गयी थी।

● जेनेवा : बीते मार्च में यूरोप की कलीसियाओं को एक विशेष अध्ययन शिविर के निमित निमंत्रण दिया गया, इस में यूरोप के अनेक गण्य मान्य समाज सेवियों एवं अध्ययन कर्त्ताओं महिला व पुरुष वर्ग ने भाग लिया। विषय था, महिलाएँ परिवर्तन लाने का दल"। इसके निमित विशेष प्रश्न उठाये गये हैं :

कलीसिया और समाज में बदलाहट लाने के लिये महिला किस प्रकार अपनी नयी सम्भावनाओं एवं स्वज्ञान से रचनात्मक अशदान दे सकती हैं ?

हम धर्मज्ञान और कलीसिया के रूप में महिला का उत्थान या महिला की विमुक्ति क्या अर्थ रखता है ? क्या इससे हमारी कलीसिया के रूप और पुरोहितो के कार्यो में नयापन है और हमारा धर्म शिक्षा की शब्दावली में भी नयापन है ?

— महिला के उत्थान (विमुक्ति) यीशु ख्रिस्त के उद्धार के साथ किस प्रकार सम्बन्धित हैं (सम्पूर्ण-मानव के आधार पर—आत्मिक अर्थ यहां न लें) ?

— किस महिला एवं पुरुष के पाठ की समझ में जो बदलाहट है उससे वर्तमान समाज, राजनैतिक आदि निर्णय प्रभावित होते हैं जिससे कि जगतीय सभ्य पर शान्ति कायम हो ?

— कौन से कारण हो सकते हैं जो महिलाओं को बदलाहट लाने का दल होने में रुकावटें होती हैं ......[और]...—ये रुकावटें किस प्रकार हटायी जा सकती हैं ?

[एल० डब्ल्यु० एफ० इनफोर्मेशन के सौजन्य से : डा० सिंह]

हजारीबाग इलाका स्वशासित एवं स्वपालित

(एक प्रतिक्रिया)

हजारीबाग इलाका स्वशासित एवं स्वपालित शीर्षक पर प्रो० पी० सी० होरो का लेख बहुत ही प्रशंसनीय है।

उस इलाका की उन्नति का यही कारण मुझे मालूम हुआ कि वहाँ के खजांची और चेयरमेन दोनों विश्वस्त और ज्वलन्त निकले।

मुझे भी छोटी-छोटी कलीसिया के संस्थाओं का कार्यभार कभी-कभी देखने तथा संभालने का भार मिला है। जैसे राँची हेड क्वाटर का खजांची के रूप में तथा गोस्सनर मिडिल स्कूल और बेथेसदा मिडिल स्कूल के मंत्री के रूप में।

मेरे अनुभव में कलीसिया के संस्थाओं की आर्थिक दशा संचालक, मंत्री हो या सभापति के ऊपर निर्भर करता है। अगर संचालक ईमानदार और योग्य निकला तो निसन्देह सस्था की उन्नति होगी। किसी संस्था का पतन होना संचालक के अयोग्य होने का प्रतीक है। इसी तरह कलीसिया के मालिक ही आर्थिक अवन्नति के कारण हैं।

मैं प्रो० होरो का पूरा समर्थन करता हूं कि हम विदेशों की सहायता के लिये बाट न जोहें जब कि हमारे यहाँ काफी जन और धन हैं। प्रमुख अध्यक्ष को इस बात की छान-बीन करनी चाहिये कि क्यों हमारी कलीसिया की आर्थिक दशा खराब है ? और इसका कैसे समाधान हो सकता ?

अगर हम प्रो० होरो का सम्वाद पढ़ेंगे तो हमारे अवन्नति का कारण मालूम हो जायगा अत: हमेशा—

(१) योग्य तथा ईमानदार व्यक्ति को उचित स्थान देवें। जात-पात, दल-बन्दी को लेशमात्र भी स्थान न दें।

(२) हिसाब किताब का लेखा (Audit) कलीसिया के कर्मचारियों को छोड़ दूसरों से जांच पड़ताल साल में एक बार अवश्य कराना चाहिये।

Gossner Mission

(३) पूरी कलीसिया में हर संस्था को चलाने की नियमावली हो जिसके आधार पर कार्य अच्छे ढंग से होने पावे।

(४) पूरी कलीसिया में हिसाब किताब रखने का एक ही तरीका हो।

(५) पाद्री सिर्फ सेवकाई का कार्य करें।

मुझे पूरा विश्वास है, कि अगर हमारी कलीसिया के अगुवे इन्हीं पाँच विशेष बातों पर ध्यान दें तो हमारी आर्थिक हालत निश्चय ही दूर हो जायगी।

MICHAEL KERKETTA
Senior Auditor
Govt. Office

हजारीबाग इलाका स्वशासित एवं स्वपालित

[गतांक से आगे]

लिखा जाता है। पादरी भी, अपने टूर का आमदनी का हिसाब, अलग-अलग मण्डली का, अलग-अलग हिस्से में, प्रत्येक महीना दिखाते और आमदनी जमा करते हैं। प्रत्येक महीने के प्रथम या द्वितीय रविवार को इलाके की मिटिंग होती है। बीत गये महीने की आमदनी का हिसाब होता है और इलाका सेक्रेटरी के मिनट-बुक में भी उसका विवरण लिखा जाता है। अगर बचत हो तो बाकी रकम बैंक-हिसाब या नगद में लिखी जाती है। कोई पादरी या प्रचारक या पंच या खजान्ची गोलमाल नहीं कर सकता है। यहां का नियम ही है, **जो खायगा, मार खायगा।**

विशेष विशेष कामों या परिस्थितियों के लिए विशेष दान लिए जाते हैं। अगर रुपैया घट गया, तो सुसमय में पुकार करा कर संकटकालीन दान लिया जाता है। इस इलाके में संकटकालीन फण्ड है। नया गिर्जाघर बना, तो पूरे इलाके से चन्दा लिया गया। कहीं स्कूल बनाना हुआ तो पूरे इलाके से मांगा गया। मण्डली के कामों के लिए दान भाई-बहन सहर्ष देते हैं। यहाँ की आमदनी का प्रधान स्रोत मण्डली चन्दा और घड़ा सिरनी है। जो घड़ा सिरनी चावल या आटा के रुप में नहीं चढ़ाते, उनसे प्रति माह २)रु० घड़ा सिरनी के नाम से लिया जाता है।

(च) इस इलाके में लोगों की आत्मिक और लौकिक दोनों सेवाओं पर जोर दिया जाता है। यहाँ के पाद्री और प्रचारक विद्वत्तापूर्ण उपदेशों पर नहीं परन्तु पारिवारिक भेंट (Visit) पर अत्यधिक जोर देते हैं। आराधनाएँ छोटी होती हैं। गिर्जे के बाद पाद्री लोगों से घर-घर मिलते हैं। अगर किसी मण्डली के किसी परिवार से भेंट के सम्बन्ध में शिकायत आती है, तो खुली मिटिंग में वहाँ के पाद्री या प्रचारक या पंच से कैफियत ली जाती है। साधारण भाई बहन इस विषय में बहुत तेज हैं। मण्डली काम में वे बड़े जागरूक हैं। पाद्री और प्रचारक भी। एक समय की घटना है जब यहाँ पाद्री निकोदीम भुईयाँ थे। एक भाई संत कोलम्बा कॉलेज (उस समय मैं वहीं था) आकर मुझे कहा कि उनकी पोती मिशन अस्पताल में सख्त बीमार है। कृपा कर तुरन्त जाकर सकेती बपतिस्मा दे दीजिये। मैं ने कहा कि सिंघानी में पाद्री हैं। मैं तुरन्त जाकर अपने स्कूटर पर उन्हें बैठा कर अस्पताल ले आता हूँ। आप के पहुँचने के पहले मैं अस्पताल पहुँच जाऊँगा। मैं सीधे सिंघानी गया। पाद्री भूईयाँ खाने के लिये बैठे थे। दिन का प्रायः एक बजा था। मिस्सेस भूईयाँ भोजन निकाल कर रख रही थी। उसी समय मैं वहाँ पहुँचा। सुनते ही पाद्री भुईयाँ उठ गये और अपना थालर और बेग लेकर मेरे साथ अस्पताल पहुँचे और उन्होंने बच्ची को बपतिस्मा दिया। एक दूसरी घटना है। जोभिया पेरिस के प्रथम पादरी आनन्दमसीह मुन्डु थे। वे बहुत बीमार हो गये। उन्होंने दो भाईयों को भेज कर कहला भेजा कि वे प्रभुभोज खाना चाहते हैं। उस समय सिंघानी में पादरी लूथर कोनगाड़ी थे। बाबू अन्द्रियस तोपनो को कौंसिल की ओर से पुरोहित काम पुनः मिल गया था। वे भी सिंघानी में अपने घर में

Gossner Mission

रहते थे। पादरी कोनगाड़ी बीमारी को भारी न समझ कर पटना टूर में चले गये और वे दो भाई मेरे पास आये। उन्होंने कहा कि पादरी मुन्डु मरने पर हैं। मैं ने तुरन्त पादरी तोपनो को निवेदन किया कि उन दो भाईयों के साथ जोभिया चले जायं। वे तुरन्त तैयार हो गये। रेलगाड़ी या बस में जाने से लेट होता। इसलिये वे पैदल प्राय: २ बजे शाम को सिंघानी से निकले और आठ बजे रात को जंगल पार कर जोभिया पहुँचे। बिना हाथ पैर धोये उन्होंने प्रभुभोज का संस्कार किया और पादरी मुन्डु को दिया। इसी के तुरन्त बाद ही वे सो गये।

आत्मिक सेवकाई के साथ-साथ, लौकिक सेवकाई की जाती है। जैसा आरम्भ के जर्मन मिश्नरियों ने किया। कचहरी और नौकरी प्राप्त करने और अन्य भले कामों में इलाका के अधिकारी भाई-बहिनों की सहायता करते हैं। सिंघानी बंगला का एक हिस्सा हमेशा खाली रखा जाता है इस उद्देश्य से कि बाहर से आए भाई-बहिन कुछ समय या दिनों के लिए वहाँ ठहर सकें।

छ) सब से अधिक प्रार्थना पर जोर दिया जाता है। हम प्रार्थना करते हैं कि पिता परमेश्वर जिसने गोस्सनर कलीसिया और हजारीबाग इलाके की स्थापना की है अपनी महिमा के लिये, वहीं अपने निरी पैतृक प्रेम से, उनकी सहायता और अगुवाई करे।

आगे जब हजारीबाग इलाका आत्मपालित हो सकता है, तो क्यों अन्य इलाकाएँ और सम्पूर्ण कलीसिया नहीं कर सकती?

मेरा विश्वास है कि गोस्सनर कलीसिया आत्मपालित हो सकती है। क्रमश:

P. C. Horo,

टी॰ टी॰ सी॰ फुदी में नये प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश

हमारे टेकनिकल ट्रेनिंग सेन्टर फुदी में १९६३ साल से आई॰ टी॰ आई॰ (ITI) स्तर पर फिटर एवं बढ़ईगिरी व्यवसायों में औद्योगिक प्रशिक्षण चालु है। इसमें प्रति वर्ष प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश होता है। इस वर्ष भी १ली अगस्त से फिटर एवं बढ़ईगिरी व्यवसाय (I.T.I. Standard) तथा ग्रमीण स्तरीय बढ़ईगिरी के लिये उम्मेदवार लिये जायेंगे। उम्मेदवारों का दरखास्त टी॰ टी॰ सी॰ ऑफिस में ११ वीं जून तक पहुंच जाना चाहिये। दरखास्त टी॰ टी॰ सी॰ के फॉर्म ही में भेजा जाना है। ये फॉर्म निशुल्क निम्न जगहों में उपलब्ध होंगे— (i) टी॰ टी॰ सी॰ फुदी (P.O.), राँची, (ii) के॰ एस॰ एस॰ ऑफिस, जी॰ ई॰ एल॰ चर्च, राँची और (iii) विकास मैत्री ऑफिस, सेन्ट जोसेफ क्लब, पुरुलिया रोड, राँची और (iv) डैयोसियन ऑफिस, (C.N.I.) पुराना हजारीबाग रोड, राँची।

ITI स्तरीय प्रशिक्षण के उम्मेदवार १६ से २२ वर्ष के हों तथा उनकी शैक्षणिक योग्यता किसी भी स्वीकृत स्कूल से कम से कम ९ वें क्लास उत्तीर्ण हो। विज्ञान तथा गणित के विद्यार्थियों को प्राथमिकता दी जायगी। ITI स्तर के आदिवासी तथा पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों के लिये सरकार की ओर से प्रति माह २५) रु॰ स्टैपेन्ड प्राप्त है। अन्य जनकारी संस्था के Prospectus (नियमावली की विवरण-पत्रिका) से प्राप्त होगी।

ग्रामीण स्तरीय विद्यार्थी भी १६ से २२ वर्ष के हों। उनकी शैक्षणिक योग्यता ७ वें वर्ग उत्तीर्ण हो। उन्हें सरकार की ओर से स्टैपेन्ड नहीं मिलेंगे पर संस्था की ओर से प्रति माह ४०) रुपये देने की व्यवस्था है।

Rev. C B. Aind
Director
T. T. C. Fudi (P.O.) Ranchi.

Gossner Mission

पुनरुत्थान का प्रताप

अलफ्रेड डांग
(जी॰ टी॰ एच॰ कॉलेज राँची)

ललकारो, ललकारो आज उसको
जो क्रूस पर घात किया गया
परंप्रधान के पूत यीशु को
जो निंदित घिनित अपमानित भया
दीन बढ़ई के पूत मसीह को
जो थूका, मारा ओ बेधा गया
राजाओं के राजा यीशु को
यहूदियों के राजा मसीह को
ललकारो, ललकारो आज मेमने को ॥

जिन्दा हो यीशु है घूम रहा
भूवन सारे मग्न पा लाड़ले को
खोल दिया वक्षःस्थल धराधाम ने
हो रही मर्मभेदो मार्मिक जयध्वनि
गूंज उठा सौर्यमण्डल है आज
पड़े मूक, फतिंगे-सा नर
दाँतों तले उंगली है उसकी
एकलौता खुदाबंद का आज
सनक मिटा दी है आज !!

जग हे ! मारा तू ने खूब !
थूक औ' थप्पड़ अति भयंकारा !
बेधा हाथ-पाँव तू ने उस 'दुष्ट' के !
चुम्बन औ' प्रणाम—क्रूर हथौड़े !

मरे को भी मारा तू ने बर्छी !
बलिहारी का यह आखरी क्षण तेरा
देख प्यारों को रोते विलखते
रख के भी फौज, मुहर न कभी छोड़ा
देख ! क्रूस पर ! चुकाया गया न्याय तेरा !!

जिन्दा हो यीशु है घूम रहा
हैं शिष्य सारे, हर्षित पुलकित
पोंछ डाले हैं आंसू मसीह
युगयुगान्त के त्राता मसीह
हो रहे हैं दर्शन आज भी
मुकर सकते नहीं 'सुन्दर सिंह'
'पावल' कभी कर सकते इनकार ?
अंधे गूंगे चुप कभी हो सकते ?
जीवन बलिदान की वेदी कभी रोक सकते ?

नहीं अपमान, जग हे ! तेरा विमोचन !
पूछो आज : नासरी का आना क्यूं ?
निहारो, जरूरत मसीह का है क्यूं ?
करो न जुल्म रोमी सरदार समाना—
कौड़ी छींट-छींट सत्य दबाना ।
निष्कपट भू है साक्षी उसका
मिलजुल के लोक सारे उस से
होंगे न आज, देखे को अनदेखे ॥

अपील

आप अपना समाचार यथासम्भव संक्षिप्त एवं समय पर भेजें, बहुत पुराना समाचार छापने में अधिक मूल्य का नहीं दीखता है।

एसोसिएट एडीटर

Gossner Mission

असम समाचार

शोक समाचार

पाद्री विश्राम जोहन मरैया पेन्सनर, जी०ई०एल० चर्च राजावहार पेरिश, तिनसुकिया इलाका ता: १९-१-१९७३ को जो बहुत दिनों से अर्धांगि बीमारी से पीड़ित थे। तथा पूरे ८५ बरस की वृद्धावस्था उम्र में होकर प्रभु में पूर्ण विश्राम के लिये रात ११ बजे सो गये। ता: २१-१-७३ को पाद्री एल० कोनगाड़ी द्वारा मिट्टी दीई गयी।

पाद्री विश्राम जोहन की धर्म्म पत्नि मिसेस मरियम मरैया को भी अपने बीमार ग्रस्त वृद्ध पति की सेवा करते २ बुखार ओ निमोनिया की बीमारी ने पकड़ लिया और दो चार दिन के बीच ही में अपने पति से साल भर पहले ही ता: ५-२-७२ को ७४ बरस की उम्र में प्रभु ने अपने पास बुला लिया। पाद्री एल० कोनगाड़ी द्वारा मिट्टी दीई गयी।

पाद्री विश्राम जोहन मरैया का संक्षित जीवन वृत्तान्त :— पाद्री विश्राम जोहन मरैया के माता पिता लूत और एन्नी मरथ़ेथा जिला रायपूर के विश्रामपूर गांव में रहते थे जहां १८ नोवेम्बर १८८७ ई० में जन्म हुआ। यहां रहते २ पढ़ाई लिखाई भी हुई और प्राईमरी इमतिहान भी दे कर पास कर गये। ता: २४ जून १९०३ में धर्मतरा में मण्डली काम में बहाल हुए। असम में प्रचारक तथा माष्टरी काम की अतिसय आवश्यक्ता होने पर वहां से बुलाये गये और ता: १५ अगस्त १९०५ को डिगबोई बड़पाबोई मारग्रेटा लिद् और दिरस आदि जगहों के लिये प्रचारक नियुक्त किये गये। बड़े ज्वल्लनता से काम चलाते रहे।

पाद्री W. Radsic वहां से तिनसुकिया बुला लिये और माष्टरी तथा प्रचारक काम में लगाये। प्रथम महायुद्ध के समय जब मिशनरी लोग विलायत लौट गये, तब तिनसुकिया हाता, स्कूल, तथा मंडलियों के देख रेख का काम संभाले। वेकमन मिशनरी साहेब जब जोरहाट में थे तो यहां भी आकर कुछ दिनों तक काम किये, यहां से आस पास की मंडलियों में दौरा करते राजावहार तक का काम देखा करते थे। १९१६ ई० में राजावहार बदली किये गये। सन् १९२४ में पाद्री पद के लिये सार्ट कोर्स के लिये रांची बुलाये गये, इमतिहान में पास होकर कन्डिदत्त होकर सन् १९२५ मार्च २२ तारिख को पाद्री पद के लिये पदाभिषेक हुआ और राजावहार वापस आकर पेरिश का काम संभालने लगे।

राजाबहार में रह कर बहुत मंडलियों को बढ़ाये। उन्होंने राजाबहार में रहते एक बड़ा गिरजा घर का निर्माण किया जो मंडलियों तथा भाई बहनों के सहयोग से तैयार होकर "मरथा ख्रिस्त गिर्जा के नाम से संस्कार हुआ। कठिन परिश्रम तथा मंडली सेवाकाईयों से अवकाश (रिटयर) प्राप्त कर घर में रहते समाज सेवकाई में हाथ बटाये। वे लोकल बोर्ड के मेम्बर असम सब-प्रोपर्टी ट्रास्टो बोर्ड के मेम्बर तथा १० वर्ष तक पोष्ट मास्टरी का काम सम्भाले। अवकाश प्राप्त अवस्था से कुछ काल के लिये रैंडांग पेरिश के पाद्री के बिमारी होने से पेरिश के काम में लगाये गये और अच्छी तरह से संभाले।

बुढ़ापे अवस्था में उन्हें अर्द्धांगि रोग पकड़ लिये बांया अंग एक तरफ का सब नलायक हो गया। दुर्बलता दिनों दिन बढ़ते गया और ता: १९ जनवरी १९७३ को पाद्री एल० कोनगाड़ी से प्रभु-भोज का सक्रामेन्ट लेकर शांत से ११ बजे रात को प्रभु में सो गये। रविवार ता: २१-१-७३ को, पाद्री एल० कोनगाड़ी द्वारा राजावहार के कबरस्थान में अपने धर्म्म पत्नि मरियाम के सनिकट मिट्टी दीई गयी। प्रभु उनके शोकित घराने को शांति देवे।

Rev L. Kongari, 28-2-73
Rajabahar.

Gossner Mission

कचनपुर पेरिश युवा संघ

कचनपुर पेरिश का द्वितीय वार्षिक सम्मेलन रेन्डोवा में दिनांक ४ और ५ जनवरी १९७३ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पेरिश के भाई-बहन और बच्चे तथा गैर मसीही भाई भी उसमें शामिल हुए जिसके कारण उपस्थिति संख्या लगभग ५०० थी।

सम्मेलन में मुख्य अतिथि Rev. N. Bhuiyan Adhyaksh S.E. Anchal, Rev. L. Topno, Govindpur, Capt A. D. Topno, Ranchi तथा Sri S. K. Horo, Ranchi थे। अतिथियों का स्वागत बुढ़नी मंडली द्वारा, सुन्दर गीत फूलमाला और मधुर गीतों के साथ ४ जनवरी, शाम को ६ बजे हुआ। श्री N. Barla, युवा संघ सभापति ने स्वागत भाषण दिया। सम्मेलन का मूल विषय—निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो इफि ६:१०।

५ जनवरी ७३ को सुबह ८ बजे मूल विषय पर Rev. Bhuiyan द्वारा भाषण और भाई-बहनों के साथ सवाल-जवाब करते हुए शिक्षा आरम्भ हुआ। उन्होंने कहा ख्रिस्तानी जीवन में अनेक कठिनाइयां है इस लिये प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांधलो कि तुम बुरे दिनों का सामना कर सको।

Capt A. D. Topno, आत्मिक जागृति पर सम्मेलन में उपस्थित भाई बहनों के बीच कहा कि हम अपने पापों के लिये उदास होवें और पश्चाताप करें कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करे और अनन्त जीवन दे। फिर उन्होंने कहा कि यीरूशलीम को हिलाने के लिए पेन्तिकुस्त की आवश्यकता हुई, आज हमें हिलाने के लिए पवित्रात्मा के भयंकर आन्दोलन की आवश्यकता है।

Rev. L. Topno ने कलीसिया के साथ युवा संघ के सम्बन्ध पर बड़ी सुझाव किया। अंचल अध्यक्ष द्वारा तीन नन्हें बच्चों को पवित्र बपतिस्मा देकर प्रभु के मंडली में मिलाया गया।

दूसरी बेला चुवांटोली रेन्डोवा में साक्षी का प्रोग्राम था। वहां के भाई बहन अभी तक पुराने धर्म को मानने वाले हैं। Capt Topno और Sri S. K. Horo ने उत्पति से प्रभु यीशु के आने तक और यीशु मसीह के द्वारा किस तरह पापों से क्षमा पाते हैं और स्वर्ग राज्य का अधिकारी बनते हैं, अच्छी तरह लोगों को उपदेशों द्वारा समझाया।

शाम को भोजन के बाद भजन होड़ और मनोरंजन का प्रोग्राम था। विजेताओं को अध्यक्ष महोदय ने पुरस्कार दिया और सम्मेलन को आशीष दी।

N. Barla
सेक्रेटरी युवा संघ कचनपुर पेरिश

चैनपुर/नागपुर : नागपुर शिविर

एन० सी० सी० के तत्वाधान में दिनांक २३-२५ फरवरी'७३, नागपुर में सारे भारत के कलीशियाओं तथा क्षेत्रीय ख्रिश्चियन कौंसिल के सेक्रेटेरियों का एक शिविर किया गया था। काफी संख्या में प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। ठहरने एवं बैठक का प्रबन्ध नागपुर के एम० एल० ए० होस्टेल में जिसे 'नवीन आमदार निवास" कहा जाता है, किया गया था। यह एक आधुनिक ढंग का विशाल निवास स्थान है तथा निर्धारित शुल्क देकर कोई भी व्यक्ति कुछ काल तक वहाँ ठहर सकता है।

विषय चर्चा :— उक्त शिविर का विषय चर्चा निम्न तीन विषयों को लेकर किया गया।

(क) कलीशियाओं का बाहरी दुनियाँ एवं जनता

Gossner Mission

से सम्पर्क ।

(ख) क्षेत्रीय क्रिश्चियन कौंसिल के कार्य एवं गवाही

(ग) कलीशियाओं के समक्ष कुछ आर्थिक एवं कानूनी समस्यायें ।

उपरोक्त विषयों पर गहरे तौर पर विचार विमर्ष किया गया तथा प्रत्येक पर कुछ ठोस निष्कर्ष कलीशियाओं के मार्गदर्शन के लिये निकाले गये । एन० सी० सी० उन सभी निष्कर्षों को प्रत्येक कलीशा में कार्यरूप देने के लिये सुझाव के साथ भेजेगी । कलीशा उनकी व्यावहारिकता को देखते हुए उन बातों को अपने क्षेत्र में लागू करने का प्रयत्न करेंगे ।

शिविर के मार्गदर्शन के लिए बिशप क्राइसोस्टम, एन० सी० सी० प्रेसिडेंट ने बड़े ही रोचक ढंग से बैबल अध्ययन के द्वारा उपरोक्त विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया ? उन्होंने कलीशियाओं का ध्यान वर्तमान जगत के विभिन्न समाज एवं व्यक्तियों के साथ सम्पर्क करने पर अधिक जोर दिया ।

मसीह के व्यक्तित्व को लेकर उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया कि मसीह अपने जीवन काल में रोगी, दुखित और पीड़ित समाज से सम्पर्क कर उनका दुःख दूर किया । उसी प्रकार आज आवश्यक है कि कलीशिया में गिरे हुए लोगों के दुःख को दूर करें और उठावें । यह तभी संभव होगा जब हमारा सम्पर्क ऐसे लोगों से होगा । आगे उन्होंने कहा कि मसीह ने सूखे हाथ वाले रोगी को विश्रामवार के दिन चंगा कर और सामरी स्त्री से बात चीत कर यहूदी परम्परा एवं ढांचा को तोड़ दिया । यहूदियों का काम करने का ढांचा ऐसा था कि वे रोगी और दुखित समाज से सम्पर्क नहीं कर सकते थे । अतएव ऐसे लोगों की सेवा भी नहीं कर सकते थे । हमारी वर्तमान कलीशियाओं में भी कुछ पुराने ढांचे हैं जिसके कारण हम दुखित समाज की तह तक पहुँच नहीं सकते । आज हमारी ढांचा को बदलना होगा तथा आत्मिक और आर्थिक तौर से भूखी जनता की सेवा करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है । अन्त में उन्होंने जोर दिया कि एन० सी० सी०, आर० सी० सी० एवं प्रत्येक कलीशा को इस ओर सही कदम उठाना है, तत्काल काम करना है तथा साहस के साथ आगे बढ़ना है ।

सी० ए० तिर्की
सेक्रेटेरी,
गोस्सनर चर्च ।

सूचना

बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय, राँची में सत्र १९७३-१९७५ के लिये छात्राओं की बहाली होगी । प्रवेश चाहने वाली मैट्रिक पास तथा मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित छात्राएं भी अपना आवेदन पत्र प्रधानाध्यापिका बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय के पते पर भेजें । आवेदन पत्र १५-६-१९७३ तक पहुंच जाना चाहिये ।

प्रधानाध्यापिका
बेथेसदा महिला प्रशिक्षण विद्यालय
राँची ।

Gossner Mission

धन्यवाद, आपका ग्राहक चन्दा ३१ मार्च ७३ तक मिला

1. Mr. Patras Kandulna
2. Cate Boas Samad
3. Mr. Komal Dungdung
4. Shri Eliah Bodra
5. Mrs. Ch. Dalit Kushum Horo
6. Mr. Komal Kongari
7. Rev. Shem Lakra
8. Shri Stiphan Dungdung
9. Mr C. B. Lakra
10. Shri Patras Soy
11. Mr. Turan Barla
12. Mr. P. Purti
13. Mr. R. Horo
14. Mr. P. S Runda
15. Shri Bimal Toppo
16. Shri Daniel Bhengra
17. Mr. D. P. D. Kujur
18. Cat. Aiyub Kerketta
19. Mrs. Dulari Tirkey
20. Rev. Eliajar Kindo
21. Cat. Anand masih Lakra
22. Cat. Jusaph Barwa
23. Mr. Masih das Sanga
24. Cat. J. Tirkey
25. Mr. Taldas Minj
26. Miss H. Bhengra
27. Shri Leon Guria
28. Rev. Junas Bage
29. Mr. Peter Furad
30. Mr. Masihdas Lakra
31. Mr. Bardan Ekka
32. Rev. N M. Surin
33. Shri Iswardas Ekka
34. Mrs. Rahil Topno
35. Mr. C M. Ekka
36. Christ Pyare Dungdung
37. Mr. Pritam masih Lakra
38. Mr. Jyotish Surin
39. Mr. Dhan Kumar Khess
40. Mr Junul Lugun
41. Mr. Junul Barla
42. Mr. P. Jojowar
43. Mr. P. S. Mundu
44. Rev. Pritammasih Ekka
45. Mr. S. Bading
46. Mr. Maskalyan Mundu
47. Mr. Daud Topno
48. Mr P. S. Lugun
49. Mr. B. Kujur
50. Mr. Mansukh Surin
51. Mr. J. Bodra
52. Mr. Z Bage
53. Mr. Abinesh Tiru
54. Cat. U. Kongari
55. Cat. J. Dang
56. Mrs. A. K. Lugun
57. Cat. Hardugan Surin
58. Mrs. Tara Lakra
59. Mr Thomas Minj
60. Mr. Hiralal Lakra
61. Mr. Cyril Topno
62. Rev. H. M Bage
63. Mr. Nuas Lugun
64. Mr. Benjamin Lakra
65. Rev. Hardugan Tutti
66. Cat. Marshal Dang
67. Patras Kandulna
68. Rev. Amus Barla
69. Mr Hiranjan Horo
70. Miss Halwanti Horo
71. Mr. Daud Surin
72. Mr. Masihdas Topno
73. Mr. Jaimasih Guria
74. Rev. M. Horo
75. Cate. K. Hemrom
76. Cate B. W. Topno
77. Cate A. M. Marki
78. Cate E. Longa
79. Cate J. Sanga
80. Mr. E. Kerketta
81. Mr. K Bage
82. Mr. S. Paul
83. Mr. E. Horo
84. Mr. A. K. Horo
85. Mr. D Jojo
86. Mr. H. Purti
87. Cate D. Birwa
88. Rev. Mansid Kindo
89. Rev. M. P. Jojo
90. Rev. M. Jojo

Gossner Mission

एक जटिल समस्या

(युवक और युवतियों का आपसी संबंध)

[मसीहदास तिड़ु]

यह एक ऐसा विषय है जो सभाओं में विवाद का विषय रह चुका है क्योंकि यह विषय आज ख्याति प्राप्त कर चुका है बरन हमारे सामने एक समस्या का रूप ले चुका है। मेरे विचार से इसके दो बड़े कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि हमारे देश की पुरानी संस्कृति ऐसी है जिसके अनुसार यह समझा जाता है कि हर नवजवान लड़के लड़की को शादी से पहले एक दूसरे से मिलना ही नहीं चाहिये। दूसरा कारण है पाश्चात्य देशों की संस्कृति का भारत पर प्रभाव जिसके अनुसार शादी के पूर्व युवक युवतियों का आपसी संबंध जरुरी समझा जाता है। मैं यह कहना नहीं चाहता कि कौन सी संस्कृति अच्छी या बुरी है मगर इतना अवश्य कहूँगा इन दोनों ही संस्कृति में समझौता आवश्यक है।

बैबल में इस विषय पर हमें प्रत्यक्ष रूप से तो कुछ नहीं मिलता किन्तु यह संकेत अवश्य है कि आज के युवक तथा युवतियों को किसी भी काम करने के लिये पूरी आजादी है जैसा कि बैबल में दिखाया गया है (सभोपदेशक ११:६) में लिखा है ऐसों का क्या दशा होगा सो (सभोपदेशक १२:१+८) में लिखा है बैबल खोलिये और ध्यान से पढ़िये। प्यारे युवक और युवतियो आप के पास बैबल है ? क्या आप रोज बैबल अध्ययन करते हैं ? अगर आप के पास बैबल नहीं है तो भारी नींद में पड़े हैं आप की नींद टुटती नहीं। आप को चितौनी मिलती है फिर पढ़िये (सभोपदेशक १२:६ + १४) आप व्यभिचार में न फंसिये प्रभु क्या शिक्षा देता है (मत्ती ५:२८) बचन को पढ़िये प्रभु यीशु कितनी गहराई से एक युवक और युवति को देखता है। गौर से देखा जाय तो युवक युवतियों में आपसी संबंध है ही नहीं यदि हैं तो वे ऐसे हैं जिन्हे हमारा समाज उचित नजर से नहीं देखता। यह विषय वर्तमान प्रचण्ड रूप धारण किये हुए है इनके आपसी संबंध तथा भावनाओं को बदलना चाहिये ?

उनका संबंध कैसा होना चाहिये — मैं कहूंगा कि उनका जीवन पवित्र हो। जैसे उदाहरण – एक घराने में दो लड़के और दो लड़कियां रहती हैं। वे आपस में एक दुसरे से मिलते हैं हंसी मजाक करते हैं, लेकिन उन पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता क्योंकि उनकी भावनायें पवित्र हैं। नवजवान लड़के लड़कियों को ऐसा ही होना चाहिये। चाहे वे भाई बहन न भी हों। लेकिन उनके संबंध में उपरोक्त संबंध तो अवश्य होना चाहिये। एक अच्छे तथा पवित्र संबंध के लिये निम्नलिखित बातों का होना जरूरी है।

(१) आपस में एक रूपता होनी चाहिये। संबंध तभी लोगों को बुरा लगता है जब उसमें अरूपता आ जाती है।

(२) भावनाओं का पवित्र होना आवश्यक है चाहे वे सगे संबधी अथवा दूर के रिश्तेदार या दोस्त हो।

(३) संबंध अत्यन्त ही पवित्र (स्वस्थ) होनी चाहिये। किसी अन्य भावना की मिलावट नहीं होनी चाहिये।

(४) सबंध ऐसे हों कि जब वे आपस में मिलें तो अपने आप को एक ही वर्ग तथा एक जाति का अंग समझें।

(५) आपस में हमेशा एक दूसरे का आदर करें

(६) संबंध एक सीमित क्षेत्र के अन्दर ही हो।

उपाय:— बहुत से कारण ऐसे होते हैं जो हमारे युवक युवतियों को गलत संबंध बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसके लिये सर्वप्रथम हमारे देश का बंधन

ही अत्यधिक दोषी है। दूसरा :- एक विशेष आयु तक युवक युवतियों को आपस में न मिलने देना। तीसरा :- युवक युवतियों के संबंध को हमेशा सन्देह की दृष्टि से देखना। चौथा -- यदि युवक युवति गलती कर भी बैठें तो समाज उन्हे ऐसी सजा देता है कि बजय सुधरने के और भी गलत रास्ते पर चलने लगते हैं। पांचवा :- अभिभावकों का अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा से दूर रखना चाहिये जो उनके ठीक रास्ते पर बाधक होती है। —— कभी कभी तो हमारा समाज खुद ही ऐसे वातावरण का निर्माण करता है जिससे युवक युवति अपने संबंध बिगाड़ बैठते हैं और परिवारों को भी अपनी इज्जत खोनी पड़ती है। हम नीचे कुछ ऐसी संस्थाओं का उल्लेख करते हैं जहां जाकर लड़के और लड़कियां अपना जीवन सफल बना सकते हैं :—

(१) जुनियर सन्डे स्कूल (२) सीनियर सन्डे स्कूल (३) युवा संघ (४) पुराना नियम नया नियम पढ़ना चाहिये (५) कटेखिस्म से वचन और प्रार्थना सीखना (६) गीत भजन आदि। उपरोक्त विषयों को बचपन से भाग लें तो उन्हे अच्छे संबंध निर्माण करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। इसके अतिरिक्त संबंध सुधारने में घर का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है।

माता-पिता बच्चों को कैसा चलावें :—

माता-पिता को यह सोचना चाहिये कि उनके बच्चे कहां जाकर लाभ उठा सकते हैं और कहां जाना उनके लिये हानिकारक है। आमतौर पर माता-पिता अपने बच्चों को सिनेमा, नाटक, नाचगाण आदि में जाने से नहीं मना करते। इसके विपरीत ऊपर लिखे स्कूलों में नहीं भेजते धार्मिक संस्थाओं में जाने के लिये प्रोत्साहित नहीं करते। पालगणों को चाहिये कि वे शुरू से ही अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा तथा धार्मिक संस्थाओं में भेजें जहां पहुंच कर उचित मूल्य समझ सकें तथा ठीक रास्ता चलना सीखें।

A MOTTO TO PRACTICE

LEARN TO DO ; DO TO EARN

EARN TO LIVE, LIVE TO LOVE

LOVE TO SERVE

TIRKEE ENTERPRISES

ALWAYS AT YOUR SERVICE

Expert manufacturer of :—

School, College, Office & Domestic Furniture, Steel Gate, Grille, Window, Trusses

FABRICATOR & DESIGNER

Reliability, Efficiency, Economy & Quality

CONTACT :— **G. E. L. CHURCH COMPOUND**

MAIN ROAD, RANCHI/BIHAR

PHONE — 21011

Edited and Published by Rev. J. Topno Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५

वर्ष— रांची, मई १९७३, संख्या नं०—५

Gossner Mission

घरबन्धु

रजिस्टर्ड न० पी० टी० १५
वार्षिक मूल्य ४ रु०

वर्ष — ६३ | रांची, जनवरी १९७३ | संख्या न० — १

Eingegangen
- 6. APR. 1973
Erledigt:

बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हे मत वर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा।
मार्क १० : १४—१६।

गोस्सनर चर्च की मासिक हिन्दी पारिवारिक पत्रिका।

Gossner Mission

Editor & Publisher
Pramukh Adhyaksh
Rev. C. B. Minz

Associate Editor
Rev. Dr. C. K. Paul Singh

Editorial Committee
Rev. C. B. Minz
Rev. Dr. C. K. Paul Singh
Rev. M. Tete
Shree S. Bhengra

सूची

सम्पादकीय	— मार्टिन टेटे	३
उपदेश की तैयारी	— मार्टिन टेटे	४
अपील	— सुरगुजा मिशन क्षेत्र	७
दुर्भिक्ष का भय	— पा० एम० भेंगरा	८
युग संदेश	—	६
खूबसूरती की घमंडी	— समड़ोम समद	१०
धर्म प्रदेश की दूसरी चढ़ाई		१२
गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी		१३
गोस्सनर कलीसिया आर्थिक···		१४
पंच प्रतिष्ठापन—		१५
गोस्सनर कलीशिया के भाई···		१७
कलीसियाई समाचार		१६

घरबन्धु के नियम

१ घरबन्धु प्रति मास साधारणतः १७ ता० तक छप कर भेजा जायगा।

२ इसका वार्षिक मूल्य चार रूपये हैं।

३ घरबन्धु विषयक पत्र व्यवहार में ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।

४ घरबन्धु का ग्राहक-मूल्य दिये गये पते पर ही भेजें। एसोसिएट एडीटर, घरबन्धु; जी० ई० एल० चर्च [के० एस० एस० ऑफिस], राँची।

५ समाचार, लेख, विज्ञापन और सूचना आदि प्रत्येक माह के १ली ता. तक ऑफिस में पहुँच जाना चाहिए।

६ लिखी सामग्रियां सादे कागज पर सिर्फ एक ओर साफ-साफ लिखें, इस में बांयी ओर १½" "मार्जिन तथा ऊपर, नीचे व दाहिनी ओर १" का मार्जिन छोड़ना आवश्यक है।

७ सम्पादकीय मंडल को यह पूर्ण अधिकार है कि प्राप्त लेखों को स्वीकृत या अस्वीकृत तथा आवश्यकता अनुसार उस पर परिवर्तन कर सके। अस्वीकृत की वापसी चाहने वाले आवश्यक मूल्य का टिकट सहित लिखित पते लिफाफे भेजें।

८ स्मरण रहे कि लेखकों के प्रकाशित लेख के भावों के लिये सम्पादक या सम्पादक मंडल जवाबदेही नहीं रहेगा।

९ भेजे गये लेख की एक प्रति आप के पास अवश्य रखनी चाहिये, लेख के खो जाने की जवाबदेही सम्पादकीय मंडल नहीं रहेगा।

१० ग्राहक मूल्य भेजने पर ही पत्रिका चालू की जायगी।

११ सदस्यता शुल्क भेजते समय मनीआर्डर फार्म के नीचे स्पष्ट से अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या लिखें।

१२ पता बदलते है तो ग्राहक अपना नया पता के साथ ही साथ अपना पुराना पता का ग्राहक संख्या माह के १० ता० के पहले ही भेजें।

१३ ग्राहक चन्दा भेजने पर सम्भवतः ग्राहकों के नाम घरबन्धु में छप जाते हैं; ग्राहक चन्दा के बाद घरबन्धु न मिलने पर तुरन्त मांग भेजें।

१४ बीच महीनों में घरबन्धु न मिलने या कम मिलने पर अपने डाकघर में पूछताछ कर ही के घरबन्धु के प्रबन्धकर्त्ता के पास पत्र लिखें, सम्भवतः डाकघर के अधिकारियों से भी इसके निमित कुछ लिखा लें।

Gossner Mission

सम्पादकीय

नूतन वर्ष आदर्श

यीरूशलीम की माता मंडली के अंगों का आदर्श यीरूशलीम को ऊंचा उठा दिया था। वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलिन रहे (क्रिया २ : ४२) नूतन वर्ष में आप भी आर्दश पेश करेंगे।

मनुष्य को उपदेश की आवश्यकता है। जीवन की आराधना का केन्द्र यीशु आप ही है। नूतन वर्ष में वह आप का केन्द्र होवे। आप उपदेश के लिये लालायित होवें।

परमेश्वर का परिवार सुखी परिवार है। परिवार के अंग एक दूसरे से आनन्दित हैं। क्योंकि सब कुछ साझे का है। यीशु ही परिवार का केन्द्र है। वे एक दूसरे से मिलकर नये साल में यात्रा करते हैं। नूतन वर्ष का यही आदर्श है।

सुखी परिवार प्रभुभोज में पृथ्वी पर ही स्वर्ग का दर्शन पाता है। यीशु में वे संतों की संगति का आनन्द लूटते हैं। यह तो ज्योति का भेद है। नूतन वर्ष आप को प्रभुभोज का भूखा बनावे ताकि ज्योति के भेद का आनन्द आप को प्राप्त होवे।

पारिवारिक आराधना में—उपासना में—उन्होंने यीशु को पहचाना और उससे अधिक प्रेम रखने के लिये बुलाये गये। वे आनन्द और मगन हो प्रभु की इच्छा पूरी करने को चले। नूतन वर्ष का प्रत्येक दिन आप के निमित्त प्राथना का दिन होवे॥

प्रेरित में परमेश्वर प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार वह कलीसिया के अगुवों को बुलाता और सजाता है। अगुवे तो यीशु केन्द्रीत, ईश्वरीय ललकार, ईश्वरीय परिवर्त्तन आदि से श्रृंगारे जाते हैं। वह अपने चुने हुए जन को अनुग्रह से श्रृंगारता है। परमेश्वर अगुवों को आवश्यकता की जगह पर प्रयोग करता है। पौलुस को हमेशा संकट, परिश्रम और मार्तिर होने की जगह में प्रयोग किया। परमेश्वर आप ही दिन बा दिन अगुवों के जीवन को नूतन वर्ष में आदर्श बनावे।

नूतन वर्ष सामने है। स्वर्ग की यात्रा लम्बी है। जीवन की आंधियां बहती हैं। जीवन नैया डगमगाती है। "हे सज्जनों, ढाढ़स बांधों; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूं कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। (प्रे० क्रिया २७:२३-२५)

आंधियों के बीच विश्वासी बनो। व्यावहारिक विश्वासी होने का अर्थ जीवते मसीह पर भरोसा करना है। यीशु जानता है। वह यहां है। वह चिन्ता करता है। मृत्यु के भय से छुटकारा देता है। नूतन वर्ष में वह आप को भयमुक्त कर सकता है। आप विश्वासी बनें। ईश्वर ने स्वर्ग के सब यात्रियों को आप को दिया है। चलती आंधियों के बीच यीशु की ओर ताकिये और सबों के लिये प्रार्थना कीजिये। ईश्वर अपनी प्रतिज्ञा में स्थिर है। नूतन वर्ष में ईश्वर आप के जीवन को आदर्श बनावे।

(मार्टिन टेटे)

Gossner Mission

उपदेश की तैयारी

मार्टिन टेटे

नया साल

लूका २:२१

हमारे लिये विशेष प्रश्न है — "नया साल कैसे आरम्भ करें? क्या नया साल के लिये संकल्प करें? संकल्प तो किसी के ध्यान में नहीं रहता है। क्या हम पुराने साल (१९७२) के पापों एवं गलतियों को त्यागते हुए नया साल आरम्भ करें? प्रश्न के उत्तर में बहुतों का उत्तर *"हाँ"* है। प्रश्न के उत्तर का सारांश यह है — नया साल में यीशु आप ही हमारी सारी योजनाओं का स्रोत एवं केन्द्र होवे। *"नये साल का आरम्भ यीशु में विश्वास से करें।"*

१ यीशु में विश्वास का अर्थ पुराने साल (१९७२) के पाप को नये साल (१९७३) में नहीं ले जाना है।

क· दुनियादारी मनुष्य नये साल का आरम्भ अपने एवं अपने परिवार के विषय सोचते हुए करता है। वह चाहता है कि नया साल पुराने साल से उत्तम हो। वह पाप की मजुरी के विषय एकदम भूल जाता है। दुनियादारी मनुष्य पर हाय!

ख· मसीही नये साल का आरम्भ यीशु में आनन्द के साथ करता है। वह यीशु में क्षमा का अनुभव करता है और पुराने साल के पापों को नये साल में नहीं ले जाता है। वह जानता है कि यीशु के कारण उसके सारे पाप परमेश्वर के प्रेम की गहराई में गाड़ दिये गये हैं। यीशु का नाम रखा जाना एवं खतना इसी विषय की ओर संकेत करता है। हम यीशु की दीनताई में आनन्दित हैं। वह अपने आप को ईश्वर के नियम में सौंप दिया। अब परमेश्वर का नियम (व्यवस्था) हमें दोषी नहीं ठहरावेगा।

२ यीशु में विश्वास का अर्थ अनिश्चित भविष्य के लिये तैयार हो जाना है।

क· नये साल के विषय हम अंधकार में हैं। प्रत्येक दिन, घंटा वा घंटा पाप प्रलोभन हमारे सामने है। नये साल के अंधकार में मानों हम यात्री हो कर यात्रा के निमित्त पहला कदम बढ़ाते हैं। विश्वास के द्वारा मानो हम अंधकार में चलने के निमित्त तैयार हो गये हैं।

ख· यदि आप अविश्वासी हैं तो नये साल की यात्रा के लिये आप ने क्या किया है? पाप के प्रलोभन, दुःख, रोग, मृत्यु आदि के समय आप (१९७३) में क्या करेंगे? अकाल वा मान हानि के अवसर पर आप क्या करेंगे? आप के पास मृत्यु आवे तो आप क्या करेंगे?

ग· क्या ही धन्य है वे जो नये साल का प्रारम्भ यीशु में विश्वास के साथ करते हैं। यीशु निश्चयता देता है कि आप पाप पर विजयी हैं। पौलुस के साथ आप कह सकते हैं — "मैं यीशु के साथ सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे शक्ति प्रदान करता है"।

नया साल आप के लिये मुबारक हो। ईश्वर आप को विश्वास का दान देवे। विश्वास आप को १९७३ ई० में संभाले। विश्वास आप को दुःख के समय भी शान्ति देवे। विश्वास आप को मृत्यु के समय भी संभाले।

इपिफानियस के उपरान्त १ला एतवार

लूका २:४१-५२

प्रत्येक देश में किसी भी प्रकार के सरकार की अधीनता में कलीसिया जी सकती है। संकट काल

Gossner Mission

में कलीसिया की भीतरी दशा दृढ़ होती है। परन्तु जितने लोग ऐश आराम में रहना चाहते हैं वे आत्मिक जोखिम में अपने बालकों को रखते हैं। स्वतंत्रता एवं विवेक की छूट की आड़ में आज सारे देश में भयानक पाप होते हैं। इस वातावरण में हम अपने बालकों को कैसे रखें? चिन्ता की बात नहीं है। परमेश्वर हमारे साथ है। अतः पवित्र परिवार से हम सीखें।

पवित्र परिवार का आदर्श

१ माता पिताओं के लिये है :—

क· युसुफ एवं मरियम ने १२ वर्ष के यीशु को मंदिर में लाया। देखिये कि उन्होंने यीशु के लिये क्या किया। क्या हम अपने दुष्ट बालकों के लिये कम चिन्तित हैं? अपने बालकों के मन को हम नहीं बदल सकते हैं। परन्तु हम दुष्ट पुत्रों को परमेश्वर पिता के पास ला सकते हैं।

ख· हमारा प्रथम कर्त्तव्य है कि पवित्र बपतिस्मा के द्वारा बालकों को यीशु के पास लावें। इसके उपरान्त बालकों को सन्डे स्कूल एवं बैबल क्लास द्वारा यीशु के पास लावें। अन्त में अपने बालकों पर विशेष ध्यान देवें।

ग· दृढ़ापन के उपरान्त कोई माता पिता यह न समझे कि अब बालक स्वतंत्र हो गये। दृढ़ापन के पश्चात् जो माता पिता अपने बालकों को स्वतंत्र कर देते हैं उनको तो लाज उठाना पड़ता है। जब ईश्वर पूछेगा कि वे बालक कहां हैं — जिनको मैं ने दिया — तब माता पिता क्या उत्तर देंगे?

घ· कितने माता पिता बालकों पर विशेष ध्यान देते हैं। परन्तु उनके ध्यान का फल नहीं दिखायी देता है। ऐसे माता पिता लोग निराश न होवें। आप के आँसुओं को ईश्वर जानता है। वह आप की प्रार्थना को सुनता है। उसपर भरोसा करें। ईश्वर ने मोनिका की प्रार्थना अगुस्तीन के लिये सुना था। वह आप की प्रार्थना भी अपने समय में सुनेगा।

२ पवित्र परिवार का आदर्श बालकों के लिये है।

क· ईश्वर का पुत्र युवक होकर इस संसार में प्रगट हो सकता था। परन्तु उसने तो बालक होकर प्रगट होना पसन्द किया। वह बालकों को उनके अपराध से स्वतंत्र करता है और ईश्वर के भय एवं प्रेम में बढ़ने में सहायता देता है।

ख· बालक याद करें कि यीशु बालक परमेश्वर का पुत्र भी है। यीशु में परमेश्वर का ज्ञान है। वह वचन सुनने के लिये यीरूशलीम आया। क्या आप यीशु बालक के समान वचन सुनने के लिये गिर्जा आते हैं? क्या आप को ईश्वर के वचन में आनन्द प्राप्त होता है?

ग· बालक याद करें कि किस प्रकार यीशु बालक नासरत आकर माता पिता की अधीनता में रहता है। माता पिता की आज्ञा पालन करो।

आज यीशु बालक का परिवार सारी कलीसिया के लिये आदर्श है।

इपिफानियस के उपरान्त २रा एतवार

यूहन्ना २:१-११

इपिफानियस का अर्थ है प्रगट होना अथवा प्रकाशित होना। सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर अपने को यीशु में प्रगट किया। परमेश्वर ने मनुष्यों को अपना प्रेम दिखलाने के लिये ऐसा किया। यीशु इस चिन्ह के द्वारा ईश्वर की महिमा को प्रगट करता है। क्रूशित यीशु आज भी परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करता है। परमेश्वर का प्रेम इसमें है कि मनुष्य यीशु में शुद्ध किया जाय।

"यीशु जीवनदाता एवं शुद्ध करनेहारा है"

१ गलील के काना नगर में अपने आप को जीवनदाता एवं शुद्ध करनेहारा प्रगट किया।

२ दाखरस बनाने के द्वारा अपने आप को जीवनदाता एवं शुद्ध करनेहारा प्रगट किया।

Gossner Mission

३ आश्चर्य्य कर्म के द्वारा यीशु प्रगट करता है कि उसने अपने जीवन को हमारे जीवन एवं हमारी शुद्धता के लिये उंडेल दिया।

ईश्वर अपने आप को यीशु में प्रगट किया है। विश्वास करो और जीवन पाओ।

इपिफानियस के पीछे ३रा एतवार

मत्ती ८:१-१३

कितने मसीही केवल अपने समाज को सत्य एवं अन्य लोगों के समाज को असत्य समझते हैं। कितने लूथेरान अपनी कलीसिया को सत्य एवं अन्य लोगों की कलीसिया को असत्य समझते हैं। इस प्रकार का विचार गलत है। जहाँ कहीं भी सुसमाचार सुनाया जाता है वहाँ लोग यीशु पर विश्वास करते हैं। यीशु आप ही सुसमाचार है।

"सुसमाचार के विश्वासी शुद्ध होते एवं जीवन पाते हैं"

१ कोढ़ी ने विश्वास किया और यीशु ने उसे शुद्ध किया। पाप का कोढ़ हम में भी लगा हुआ है। हम यीशु पर विश्वास करें ताकि वह हमें शुद्ध करे। कोढ़ियों के समाज में भी विश्वासी लोग पाये जाते हैं।

२ सुबेदार ने विश्वास किया और उसका सेवक चंगा हो गया। हमारा विश्वास बहुतों के त्राण का कारण हो सकता है। हम भी विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगियों को यीशु पास लावें। वह आप चंगा करेगा। यीशु की प्रार्थना से बहुत बैरी लोगों को चंगापन प्राप्त हुआ। सुबेदारों के बीच भी विश्वासी लोग पाये जाते हैं।

हम विश्वासी बने रहें और शुद्ध हो जावें और आलोचना करने में सतर्क रहें।

इपिफानियस के पीछे ४था एतवार

मत्ती ८:२३-२७

परमेश्वर की आशीष से प्रेरितों की कलीसिया बढ़ चली। रोमी अधिकारियों ने कलीसिया को सताया। आज भी कलीसिया के बैरी कलीसिया के भीतर एवं कलीसिया के बाहर हैं। आज भी बैरी सुसमाचार वचन का मज़ाक उड़ाते हैं। परन्तु वचन स्थिर है और विश्वासियों को शान्ति देता है। आज के वचन में हमारे दिनों की कलीसिया का तस्वीर दिया गया है।

"कलीसिया का बर्तमान तस्वीर"

१ कलीसिया जोखिम में हैं :—

क. आंधी आती है। कलीसिया पाप के सागर को पार कर रही है। पाप का सागर तो अविश्वस्त झूठा प्रेम आदि है।

ख. वचन के प्रचार से कलीसिया की बढ़ती हुई। परन्तु आंधी सताहट के रूप में आयी। लोगों को ऐसा मालूम पड़ा कि यीशु चुपचाप हो गया है। देखिये हमारी कलीसिया की परिस्थति।

२ कलीसिया के सदस्यों का बर्तमान तस्वीर :-

क. विश्वासियों का विश्वास तो है पर विश्वास कमजोर है। वे प्रार्थना करते हैं तौभी विनाश से डरते हैं।

ख. कलीसिया में अब तक दृढ़ विश्वासी हैं। परन्तु वे शिष्यों के सदृश्य घबड़ाते और डरते हैं। आज अगर सताहट आवेगी तो हम क्या करेंगे? विश्वास में कमजोर होने से हम गिर पड़ेंगे।

ग. विश्वास में कमजोर मसीही भी यीशु पर विश्वास करते हैं। यीशु उनकी सुनता है और वे बचाये जाते हैं।

३ कलीसिया रक्षित है :—

क. विश्वास में कमजोर लोग यीशु की निद्रा देखते हैं। पर ऐसी बात नहीं। वह आंधी को आज्ञा देता है। कलीसिया उसकी आड़ में रक्षित है।

ख. कलीसिया गिरती हुई दिखायी देती है। विश्वासी लोग भटकते हुए दिखायी देते हैं। परन्तु तौभी यीशु कलीसिया के साथ है। आशा रखो। विश्वास करो। यीशु आज भी कलीसिया के साथ है।

Gossner Mission

अपील

सुरगुजा-मिशन-क्षेत्र निमित प्रार्थना एवं धन्यवाद दान दिवस

प्यारे भाईयो तथा बहनो,

गत् बरस की तरह इस बरस भी हम आप सभों को सुरगुजा मिशन क्षेत्र निमित प्रार्थना एवं धन्यवाद दान के लिये अपील करते हैं, कि आप लोग इस साल भी अपनी मंडलियों में ऐसा दिवस को धुमधाम से मनायें। बीते साल की अपील से आप को मालूम हो ही गया है कि सुरगुजा मिशन क्षेत्र १९७१ (जनवरी) से गोस्सनर कलीसिया के हाथ आ गया, साथ ही वहां का आर्थिक भार भी हमें दे दिया गया है। अब तक क्षेत्र के लिये अमेरिका के भाई-बहन ने भार उठाया, बीते साल गोस्सनर मिशन ने कुछ भार उठाया फिर भी क्षेत्र के कर्मचारियों को बहुत दु:ख उठाना पड़ा है। १९७३ के लिये ऐसा दीखता है कि हमारी सहायता के बिना क्षेत्र की दुर्गति होगी। अभी भी क्षेत्र में ६८ कर्मचारी हैं जो अम्बिकापुर के ४०-७० मील की दूरी पर इधर-उधर १३६ गांवों में कार्यरत हैं। दो छात्र-छात्रावास भी हैं क्षेत्र में प्रतिवर्ष धर्मखोजक हो रहे हैं और होने की भी सम्भावना है। इस क्षेत्र के कार्य को चलाना कठिन हो गया है। इसकी बढ़ती एवं गोस्सनर कलीसिया की जवाबदेही हमारे सामने है, इस लिये के० एस० एस० एवं सुसमाचार प्रचार विभाग ने इसके लिये कदम उठाया है, आप लोगों से सहायता एवं सहयोग के लिये अपील है।

अत: आप लोगों से अपील है, कि ११ वीं फरवरी १९७३ (एतवार) को पूरी गोस्सनर कलीसिया में सुरगुजा मिशन क्षेत्र दिवस मनाया जाय, क्षेत्र के लिये प्रार्थना एवं धन्यवाद दान वेदी पर अर्पण किये जायं कि सुरगुजा मिशन क्षेत्र आगे भी सम्भाला जाय और वहां का कार्य किसी रीति से रुक न जाय। यह आप की मंडली में भी हो और पादरीगण आमदनी को के० एस० एस० खजाने में भेज देवें।

"यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं तो मेरा कुछ घमंड नहीं क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है और यदि सुसमाचार न सुनाऊं तो मुझ पर हाय" (१ कुरि० ९:१६)।

आप लोगों का

पादरी जे० तोपनो
प्रमुख अध्यक्ष, के० एस० एस०
जी० ई० एल० चर्च, राँची

पादरी सी० के० पॉल सिंह
डाइरेक्टर सुसमाचार प्रचार विभाग
जी० ई० एल० चर्च, राँची

ख्रिस्त-गिर्जा-राँची

राँची मंडली ने दिसम्बर १९७२ में राँची ख्रिस्त गिर्जा का नवीकरण करना सोचा और बहुत कम समय के होते हुए भी जन्म-पर्व के पहले गिर्जा घर के अन्दर के सफाई एवं रंग वगैरह लगाने का कार्य समाप्त किया। कहा जाता है कि २४ दिसम्बर १८५५ के बाद यही पहला अवसर है जब कि मंडली ने यह कदम उठाया। गिर्जा घर देखने में सुन्दर है तथा आशा की जाती है कि नये साल में गिर्जा घर का बाहरी हिस्सा भी नया बन जायगा। आप से अपील है कि इस कार्य में आप अपना योगदान देवें।

प्रमुख अध्यक्ष

Gossner Mission

दुर्भिक्ष का भय

(ले· प्रचारक याकूब तोपनो केरेया)

प्रिये पाठक गण हम जानते हैं, कि हमारा यह छोटानागपुर, कृषि प्रधान क्षेत्र है। इस विषय में कोई भी अज्ञान नहीं हैं कि किस प्रकार खेती किई जाती है।

खेत में बीज बोने के पूर्व हम खेत को कितना परिश्रम से तैयार करते हैं। बोने के पश्चात् हम ईश्वर की आशीषों को पाते हैं, जो भले-बुरे सभों के लिये एक सा है (मत्ती ५:४५)। वह हवा, पानी और धूप प्रदान करता है, जिससे बीज उगता, बढ़ता, फूलता, फलता और पकता है, तब अन्त में हमें अन्न की प्राप्ति होती है जिसे खा कर हम अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

पर आज हमारे खेतों में वर्षा का अभाव तथा तरह-तरह के रोग पड़े हैं, जिस के वजह से खेतों की शोभा मुरझाई हुई है। उसको देख हम भी दुःखित हैं और दुर्भिक्षता की भय से हमारे सुन्दर चेहरे भी मलीन हैं। जिस कलीसिया रूपी खेत को हमारे प्यारे मिशनरियों ने कितनी कठिनाई और परिश्रम से तैयार करके बीज बोया, वही बीज उग कर आज बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश और असम आदि क्षेत्रों को हरा भरा कर दिया है। पर क्या है? उन्हीं खेतों में आज मतवालपन, मिथ्या विश्वास, व्यविचार, चोरी आदि तरह-तरह के अधर्म के काम पनपते नजर आते हैं जिससे कलीसिया की शोभा दिनों दिन बिगड़ते जा रही है। अतः एक मंडली पंच से लेकर कलीसिया के बड़े बड़े आगुवों के मन मलीन हो रहे हैं।

मतवालपन नामक रोग तो इतना बलवन्त है कि पढ़े लिखे लोग भी इसका गुलाम बनते जा रहे हैं। वे मतवालपन के बुरे फल को जो नीति वचन २०:१/ २१:१७/ होशे ४:११ में दर्शाया गया है नहीं देखते। फिर उसके दण्ड जो व्या वि २०:२०/ यशै ५:११/ योएल १:५/ आमोस ६:६/ १ कोर· ६:१०/आर गलाति ५:२१ से भी नहीं डरते हैं। यदि कोई पंच, प्राचीन या प्रचारक समझौता की बात कहें (हिज ३:१७-२०) तो सहज ही से बोल देते हैं कि वे तो हमारे ठहराये हुए सेवक हैं उनका काम है कहना हमारा काम पीना है। कभी तो एक मंडली कर्मचारी की झूठी शिकायत पेरिश या इलाका तक पहुंच जाती है कि हमारे प्रचारक को बदली किया जाय क्योंकि बराबर मतवालपन ही के विषय बोलता है। अगर बदली न किया जाय तो हमारी मंडली गिर जायगी, आमदनी घट जायगी। बस क्या हुआ? कर्मचारी को बदली कर दिया गया। यह तो इलाका की बहादुरी नहीं, पर बुराईयों की मंडली में बढ़ती के लिये अपनी कमजोरी को प्रगट करना है।

तो क्या हम जो अपने अपने जवाबदेहीत्व का भार लिये हैं अपनी बड़ाई के लिये ड्यूटी समझ कर काम करें? अथवा इश्वरीय भय और प्रेम के साथ अपनी जवाबदेहीत्व का परिचय दें। निश्चय हमारा परिश्रम व्यर्थ न होगा (१ कोरि· १५:५८), और उस प्रतिज्ञा के भागी होंगे जो (यशै १२:३) में पाते हैं। जिस्से अन्न और जल का आकाल तो नहीं पर ईश्वर के वचन का आकाल हमारे बीच में न हो।

शायद अनेक भाई बहन अपने मन में सोचेंगे कि सच है कि ईश्वर के वचन की मंहगी होती तो बड़ी मुश्किल होगी। लेकिन फिर भी ईश्वर दया करेगा। यह बात सही तो है, पर यह भी मानना पड़ेगा कि कितनों के लिये एक दिन ईश्वर की दया का अन्त होगा (मत्ती २५;१२+४१)। यदि हम सोचें कि ईश्वर का वचन छापा हुआ है, तो आत्मिक भूख और प्यास हमारे लिये कभी नहीं होगा। कोई कहे कि जब मैं ईश्वर का वचन पढ़ूँगा तो मैं ईश्वर से और ईश्वर मुझ से बातें करेगा, ऐसा विचार करना भूल

Gossner Mission

बात है। हम ईश्वर के वचन को केवल पवित्रात्मा की सहायता से सुन सकते, पढ़ सकते और समझ सकते हैं।

डाक्टर मार्टिन लूथर कहता है कि आज ईश्वर का वचन पकड़ो। अब तक ईश्वर की दया का समय है (अर्थात) यीशु मसीह के क्रूश की रोशनी हम को अनन्त जीवन का रास्ता दिखाता है।

आज मुक्ति खोजो आज.....
आज हर एक दया पावे,
न हो कि तुम पर लाज,
और मृत और दण्ड कल आवे।
तो और मत हो कठोर,
हे पापी आज पछता,
यीशु पर कर विश्वास
और अपना प्राण बचा।।

एक समय आयगा कि ईश्वर का वचन कोई नहीं सुनाएगा, पवित्र शास्त्र खरीदना नहीं बनेगा। उस समय आमोस नबी की नबुवत पूरी होगी जो कितनी गम्भीर बात होगी (आमोस ८:११+१२)। कौन है जो उस भयानक काल से नहीं डरता? वही जो ईश्वर के वचन पर विश्वास नहीं करता, पर प्रति दिन, शैतान, संसार और शरीर की कुअभिलाषों में लीन रहता है। इस लिये हमारी प्रार्थना होवे कि हे परमेश्वर मुझ में एक शुद्ध मन उत्पन्न करो और मेरे भीतर दृढ़ आत्मा नये सिरे से उपजा। और उस बड़े आकाल से मुझे बचा।

युग संदेश

(सलमोन आईन्द)

प्रायः सारी सृष्टि के लिए युगान्त पीढ़ी आ पहुंची है। ऐतिहासिक एवं आकाश मण्डल में साहसिक घटनाओं का अवलोकन तथा सिंहावलोकन से मानव द्वारा असम्भव को सम्भव किया जा रहा है। यह वैज्ञानिक युग है। संदिग्ध एवं असंजस्य का कारण जग लोक में पैदा हो गया है। मानव जीवन वृतान्त की आध्यात्मिक सभ्यता घटती जा रही है, तो दूसरी ओर फैशन प्रबल रीति से फैलती जा रही है। मानव पतन की गर्त में बड़े शान से गिरता-पड़ता जा रहा है। सत्य का श्रृंगार एवं विश्वास का आविष्कारक को अपने सिध्दान्तानुसार सृष्टि भूल गई है। अद्वैत, महान भाग्य-विधाता, विश्व का शासक एवं समस्त जीविकोपार्जन का एक मात्र सिद्धान्त जो सारी बातें यीशु ही के द्वारा उस महान मुक्ति एवं शाश्वत जीवन के बारे बताती है, हनन् किया जा रहा है। शान्ति एवं आनन्दायक जीवन की अपेक्षा भयंकर दुर्दशा को जन्म दिया जा रहा है। कलात्मक कार्यों के कारण मानव अपने आचरण और व्यवहार को ही धर्म का दूसरा नाम दिया है। मानवीय शक्ति की कृत्रिम बातों के कारण ह्रास न होने देना, दैनिक गति-विधि को सुव्यवस्थिति रखना, मानसिक तथा शारीरिक तत्वों को स्वस्थ एवं निर्मल बनाए रखना, प्रयत्नों व क्रियाओं को ठीक आचरण, शिक्षा अथवा विद्याध्ययन कहा गया है। इन्हीं को मानसिक व शारीरिक निरोगता के आधार पर उद्धार का अनुकुल एवं सुन्दर आचरण कह सकते हैं। व्यवस्था हीनता ही अधर्म है। अधर्म ही रोगों एवं व्याधियों का मूल कारण है। मानव शरीर की सुव्यवस्था अर्थात् अच्छे स्वस्थ्य तथा वातावरण के लिए धर्म कार्य हैं। जैसे:- शरीर की शुद्धि, ठीक समय पर सोना, जागना, भोजन, साफ-सुथरी जगह में निवास, सत्संगति और अवस्थानुकुल व्यायाम आदि। इसी प्रकार समाज या देश की सुव्यवस्था अनेक धर्म कार्यों के

Gossner Mission

आधार हैं। जन-जीवन गतिविधि की समुचित गठन नैतिक तथा आर्थिक प्रगति में कल्याण की भावना क्यों न हो, किन्तु दूसरे शब्दों में इसे सामाजिक प्रदूषण का नियंत्रण कह सकते हैं। विक्षोभ और दुर्वासनाओं में विलीनता के कारण जीवात्माओं को विपथगामी होने का प्रोत्साहन मिला है। मानवीय समझ का सहारा लेना दुर्लभ है। यदि ईश्वरीय सिद्धान्तानुसार धर्म कार्यों का अभाव या अवहेलना आधुनिक विचार धारानुसार मानव मात्र अथवा समाज को युग निर्माण योजनान्तर्गत कोई भी प्राणी आत्मोद्धार नहीं कर सकता है। मानवीय धर्म का संचार, तथा प्रसार अपनी दृष्टिकोण से वैभव, सुव्यवस्था, ठीक आचरण, गृहस्थ सामाजिक एवं राजनैतिक शासन प्रणाली होने पर भी अनिश्चित है। राष्ट्रीय स्तर पर अशान्ति, व्यक्तिगत जीवन में असन्तोष और अनेक क्लेशों से केवल जगत गुरू प्रभु यीशु जो अब स्वर्ग में विराजमान है, मुक्त कर सकता है, क्योंकि मानव आत्मिक भावनात्मक क्रियाओं से वंचित है। दार्शनिक ज्ञान और विज्ञान से सर्वशक्तिमान परमेश्वर को जानना असम्भव है। विशुद्ध तथा शाश्वत जीवन के विषय मानव जाति के लिए यीशु मसीह द्वारा प्रकाशन किया गया है। समस्त जगत में ख्रिस्त प्रभु ही व्यवस्था का अन्त है। मनुष्यीय काल्पनिक, विचार एवं वैज्ञानिक सिद्धान्तों की अपेक्षा पवित्रशास्त्र (बैबल) में वर्णित यीशु उद्धारक का "सर्वोत्तम परामर्श" समस्त मानव जाति के लिए इस युग संदेश में ही सुरक्षा है। जन-जीवन में सर्वत्र अवर्णनीय महिमायुक्त स्वर्गीय आध्यात्मिक और सुनहला नियम दिया गया है। ताकि जो कोई उस पर सरल विश्वास करे वह विनाश का कारण नहीं परन्तु शाश्वत जीवन पाए। परमेश्वर का वरदान, शाश्वत जीवन प्रभु यीशु में है। क्योंकि परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा स्वयं यीशु मसीह ने प्रकाशन किया है।

खूबसूरती की घमंडी

समड़ोम समद - बिरमित्रापुर

बहुत दिनों की कहानी है! कहते हैं कि ग्लेडसन को अपनी खूबसूरती पर बड़ा.नाज था। अपने से ज्यादा सुन्दर वह लोक-परलोक में किसी को नहीं समझता था। यह अहसास धीरे-धीरे अहंकार में विकशित होता गया। और, कालांतर में ग्लेडसन अपने को 'जीयस' अर्थात् ईश्वर से भी ज्यादा खूबसुरत कहने लगा।

एक दिन ग्लेडसन अपनी सुन्दरता के योग्य प्रेमिका खोजने के लिए घर से निकला। उसकी महत्वाकांक्षा थी कि पृथ्वी और स्वर्ग में जो भी सब से सुन्दर नारी हो उसी से ब्याह वह करे, जिससे कि उन दोनों से उत्पन्न संतानें ईश्वर की सृष्टि से बेहतर सृष्टि का निर्माण करें। वह, असल में, ईश्वर को पराजित कर उसके स्थान पर राजा के रूप में सारे प्रजा का स्वामी बनना चाहता था।

अहंकार की उस भयंकर पराकाष्ठा के साथ वह धरती और स्वर्ग के हर नगर-ग्राम, वन-उपवन, पर्वत, मैदान, खोजता फिरा, मगर उसे अपने सौंदर्य के साथ जोड़ मिलाने वाली कोई सुन्दरी नहीं मिली। आखिर भटक-भटक कर उसकी हालत पागलों जैसी हो गई और बियाबान जंगलों में वह अपनी प्रेमिका के आह्वान में अनर्गल प्रलाप करता फिरने लगा। एक दिन वह एक ऐसी पर्वतीय घाटी में पहुंच गया जिसमें चारों तरफ गहरे-गहरे गड्ढे

Gossner Mission

ओर गुफाएँ थीं। वहाँ जाकर अपनी आदत के मुताबिक वह चिल्लाया — 'कहां हो तुम?' गड्ढों और गुफाओं से भी प्रतिध्वनि आई — 'कहाँ हो तुम?' ग्लेडसन को कुछ आशा बंधी। उसने फिर आवाज लगाई — 'मैं तुम्हारी खोज में हूँ।' पर्वत-कंदराओं ने भी फिर इन्हीं शब्दों को दोहराया। ग्लेडसन की महत्वाकांक्षा के सड़ रहे बीज में जैसे अंकुर फूट आए हों, गला फाड़ कर आह्वान का स्वर उसने फिर दोहराया — 'आओ, हम-तुम दोनों मिलकर नई सृष्टि बनाएंगे और ईश्वर को पराजित कर इस चराचर जगत् पर शासन करेंगे।' वाक्य खत्म होते ही घाटी के गह्वरों से भी ये ही शब्द गूंजे।

काफी समय तक गुहार लगाता रहा। उसका गला रुंध गया और थकान के मारे मुंह सूख गया, मगर बोलने वाली प्रेमिका उसके सामने नहीं आई। चक्कर खाकर वह जमीन पर गिर पड़ा। चेत आने पर उसे प्यास ने सताया। रेंगता-रेंगता वह एक पोखरे के निकट पहुँच गया जिसमें दर्पण के समान निर्मल पानी भरा था। पानी देखकर उसकी जान में जान आई। मगर जैसे ही वह पानी पीने के लिए नीचे झुका तो उसने अपना चेहरा पानी में प्रतिबिम्बित देखा। कितना सुन्दर चेहरा। वह टकटकी लगा कर उसे देखता रहा। घंटों गुजर गए उसकी नजर अपनी परछाईं पर से नहीं हटी। अपनी ही सुन्दरता पर वह इस कंदर मोहासक्त हो गया कि सूखते हो जा रहे प्राणों को पानी पिलाने तक की उसे सुध नहीं रही। देश, काल और स्थिति का उसे कोई भान नहीं था। आखिर, इस पोखरे के जल में अपना प्रतिबिम्ब देखते-देखते ग्लेडसन प्यास से मर गया— एक क्षण के लिए भी उसकी दृष्टि पानी में प्रतिबिम्बित अपने चेहरे से हट नहीं सकी।

धन्यवाद, आप का ग्राहक चन्दा (३०वीं नोवेम्बर १९७२ तक) मिला।

1 16 – R/22 Mr. C. S. Topno
2 Miss Asrita Purti
3 Mr. C. M. A. Lakra
4 ,, Marshal Barla
5 ,, Gladson Bage
6 ,, I. D. Kujure DEE
7 ,, B.J. Areya
8 ,, Isaiah Purti
9 ,, K.A.Rejan Topno
10 ,, Komal Kindo
11 Mrs. M. Hemrom
12 Shri L. Kongari
13 Mr. Paulus Purti
14 Rev. Santosh Surin
15 ,, Surendra Mohan MG.
16 Mr. B. F. Tirkey
17 ,, Isahak Minz
18 Rev. B. Minz
19 Shri Immanuel Lugun
20 Susri B. Topno
21 Shri Anandmasih Topno
22 Susri Bahalen Kerketta
23 Mate Jiwanmasih Burh
24 Rev. M. P. Ekka
25 Miss Mukta Lugun.
26 ,, Bishwasi Ekka
27 Cat. Jaijit Toppo
28 Shri Yakub Kandulna

Gossner Mission

धर्म प्रदेश की दूसरी चढ़ाई

इलियस केरकेट्टा

गुमला मंडली की ओर से एक समाचार गोस्सनर कलीसिया के लिए है। तिथि २२-१०-७२ गुमला के लिए परीक्षा और संकट की एक घड़ी आ पहुंची थी। संकट का विषय धर्म प्रदेश की दूसरी चढ़ाई थी। लेकिन यह संकट ईश्वर की दया से खुशी में परिणत हो गया। ईश्वर को धन्यवाद हो कि इसी तरह का संकट कलीसिया के हर कोने में टलता रहे। गोस्सनर कलीसिया का अटूट प्रेम एक दूसरे के साथ है वह कभी भी छिन्न-भिन्न न होने पाये।

बात तो बिलकुल सची है कि २२ ता० को धर्म प्रदेश के सभापति श्री जे० लकड़ा ने पुनः दूसरी आक्रमण करने की कोशिश की थी लेकिन उन्हें निराश लौटना पड़ा। उनका विचार था कि दूसरी आक्रमण में निराश होना न पड़े, पर देखिये यहां के मंडली पंचों की होशियारी। उन्होने बड़ी बुद्धिमानी की। गिरजा आराधना तो और रविवार की तरह ही हुई, लेकिन साथ में और भी कार्य-क्रम रखा, जिसमें था मंडली पंचों का सपथ ग्रहण, प्रार्थना दिवस, तथा भजन दिवस का भी आयोजन था। यह आयोजन १२ बजे से लगातर ६ बजे शाम तक चलता रहा। इसी सुअवसर में इलाका चेयरमैन पा० पी० बागे सर्वेसर्वा थे। उन्होने काफी गंभीरता पूर्वक दाऊद का गाया गीत पर उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि दाऊद संकट की घड़ी में अपने विश्वास में पका रहा, उसी प्रकार हम भी अपने विश्वास में स्थिर रहकर जयवन्त जीवन की बाट जोहते रहें।

इस मंडली के युवक-युवती भी अपनी मंडली तथा कलीसिया की रक्षा के लिए तन-मन के साथ जुटे रहे। मंडली में प्रेम को हाथ से जाने देना देखना नहीं चाहते वे। अपने कर्त्तव्य को पूर्ण रूप से समझ चुके हैं। वे गान-भजन के साथ शत्रुओं का सामना करने में कामयाबी हुए। यहां का वातावरण भी गुंज उठा था। इस वातावरण को सुगंधित बनाने के लिए मंडली के परिवार भी शामिल थे। इसके साथ-साथ युवक के कुछ दल गिरजा घर के प्रवेश द्वार पर खड़ी थी इसी माने पर कि शत्रु पवित्र गिरजा में न घुस जाय। युवक दल अन्तिम समय तक सेना की तरह डट कर खड़ी थी इसी सिलसिले में चाय का भी एक छोटा आयोजन था।

धर्म प्रदेश के लोग प्रवेश के लिए भर पूर कोशिश कर रहे थे। उन लोगों का प्रोसेशन गिरजा घर के चारों तरफ करीब तीन बार घुमने के बाद बाहर ही थक कर बैठ गयी। बैठ जाने के बाद वे अपना आराधना विधि को चालू किये। उन लोगों का उपदेश K. S. S. के विरोध में था। लोगों को गुमराह में डाल रहे थे। उन लोगों की जमाईत नहीं के बराबर थी। स्थानीय भाईयों की संख्या केवल ४-५ ही थी, बाकी सभी विदेशी थे। वे हम लोगों के मुकाबले में नहीं के बराबर थे। इतना से क्या धर्म प्रदेश चल सकता है? यह तो सुलेमान लकड़ा का ही कर्तूत कहेंगे। याद रखें, धर्म प्रदेश के भाई बहन कि गुमला, गुमला ही है, इसे कोई भी शक्ति बाल बांका नहीं कर सकती है।

लकड़ा के अनुयायी सभी धर्म प्रदेशी कहलाते हैं, इस लिए लकड़ा साहब से सावधान रहें। आज की स्थिति गंभीर है। भाई-भाई में, कलीसिया में, मत भेद है यह भी लकड़ा के कारण हो रहा है। मेरे विचार से **जब तक वे जिन्दा रहेंगे तब तक कलीसिया में शांति के बदले अशांति ही रहेगी** मैं मानता हूँ कि वे बुजूर्ग हैं **लेकिन इस काम में नहीं।** जिस समय वे कलीसिया में थे, उस समय वे लकड़ा थे।

उस समय उनका नाम सुन कर देखने के लिए तरसते थे, उनका स्वागत के लिए भीड़ उमड़ पड़ती थी। उनके गले में पुष्पहार समाता नहीं था। उनके हाथ दूध से धोये जाते थे। वे बेदी पर चढ़ कर सिंह के समान गरजते थे। वे जो कहते सो मानते थे, लेकिन आज उनकी हालत को देख कर दुःख लगता है कि कितना आदरनीय व्यक्ति अनादर होते चले जा रहे हैं। वे अपना व्यक्तित्व समाप्त कर डाले।

कलीसिया के भाई बहनो से अर्जी है कि अपने मंडली में धर्म प्रदेश को आने न दें। मंडली को दो भाग होने से कृपया बचावें क्योंकि कलीसिया एक है, प्रभु एक है।

आईये हम सब मिलकर प्रार्थना करें कि जितने भी धर्म प्रदेशी हैं पश्चाताप करके फिर से गोस्सनर कलीसिया में आ जावें।

गोस्सनर बैबल एंव बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र गोबिन्दपुर में २ वर्ष के प्रशिक्षण प्राप्त करने का अनुभव

सन्त शेत जयजीत टोप्पो

मैं लोहरदगा इलाका उ० प० अंचल का एक प्रचारक हूँ। उ० प० अंचल की मेहरवानी से मैं गोस्सनर बैबल एवं बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र में २ वर्ष के लिये प्रवेश पाया। मेरा प्रशिक्षण अवधि १९७२ के दिसम्बर माह में समाप्त होता है। प्रशिक्षण केन्द्र में आने से जो अनुभव हुआ उसे निःपक्ष रूप से प्रकाश करता हूँ।

बैबल ज्ञान :— पहले मुझे बैबल ज्ञान नहीं था, जौभी खिस्तान घराने में जन्मा और प्रचारक का पुत्र भी हूँ। मैं सरकारी स्कूल में पढ़ा। मिशन स्कूल में पढ़ने का बहुत ही इच्छुक था पर असफल रहा।

मैं प्रचारक काम करीब ३ वर्षों तक करते आ रहा था। इलाका कर्मचारी बैठकी में बैबल सिखाये जाने के लिये सोचा तो जाता था पर समयाभाव से नहीं होने पाता था। खास रूप से सेन्ट्रालाइजेसन काम तथा अन्य कामों में समय चला जाता था। घर में सीखने चाहता था पर मण्डली काम तथा परिवार का झंझट तबाह करता था। यहां आने से गुरु जनों से मदद मिली और अपने पढ़ने और सीखने का मौका मिला। पूरा बैबल को कम से कम एक बार संक्षेप से पढ़ने सका और ज्ञान हासिल किया।

अन्य विषय :— मुझे अन्य विषयों को भी जानने का मौका मिला — मण्डली पाल, मण्डली साल, मण्डली इतिहास, साक्षीवाणी, मुन्डा, उरांव, खड़िया आदि गीत। फिर कोनफेसिओ औगुस्ताना जो एक मुख्य विषय है। इन में से कितने ऐसे विषय हैं कि पहले मुझे मालूम नहीं था कि ये किस चिड़िया का नाम है।

अभ्यास का विषय :—

प्रचारक होस्टेल हाता करीब दो एकड़ है। इसका घेरा पकी ईंटों से सिमेन्ट द्वारा जोड़ाई किया हुआ है। मेरे प्रशिक्षण अवधि ही में घेरे का निर्माण हुआ। मुझे ईंट बनाने, पकाने आदि का अनुभव हुआ। बगान में रोज काम करना होता है, इससे परिश्रम करने का अभ्यास हुआ। फिर प्रचारकों को अपने से पकाना पड़ता है। इससे मैं रसोई का काम भी सीखा। होस्टेल जीवन से अनुशासन में रहने की बात सीखी। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से आये हुए साथियों से अन्य लाभदायक विषयों को भी सीखा। (शेष पृष्ठ १५ पर)

गोस्सनर कलीशा के आर्थिक विकास के कुछ साधन

ए० पी० बरला

भारत सरकार खाद्यान्नों की आपूर्ति के लिए कटिबद्ध है। पहले यही सरकार वाणिज्य और उद्योग पर विशेष ध्यान देकर बजेट में उन्हीं को प्रथम तथा द्वितीय स्थान देती थी और कृषि को तृतीय स्थान मिलता था। श्रीमती गांधी के राजत्वकाल में अभी यह महसूस किया गया कि खाद्य सामग्री की आपूर्ति के बिना आर्थिक विकास लाना सम्भव नहीं होगा। कृषि उत्पादन, विकास का मूल है क्योंकि खाद्य के बिना मनुष्य को यथेष्ट बल और बुद्धि नहीं मिल सकती है। पुरातन काल से ही भारत कृषि प्रधान देश कहलाता था पर आज उसका उल्टा है। विदेश से खाद्य पदार्थ मंगाना पड़ चुका है क्योंकि कृषि पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया जिसके फलस्वरूप कृषि उत्पादन कम होते गया जहां कि यहां की जनसंख्या में दिन दूना रात चौगुणा बढ़ती हुई।

यही हालत आज हमारी गोस्सनर कलीशा की है। पुरातन काल में विदेशी मिशनरियों के देख-रेख में तथा उनके प्रबन्ध से कलीशा को काफी जमीन जयदाद मिली है। इसके अलावे बड़े-बड़े मिशन स्टेशनों में बड़े-बड़े बगान और कूएं भी हैं। इन बगानों से मिशनरियों ने इतना धन कमाया कि उस स्टेशन का केवल नहीं पर कलीशा की आमदनी में भी बढ़ती लाया। ओटोनोमी के बाद ज्यों-ज्यों कलीशा का बागडोर देशी संचालकों के हाथ में आया ये जगह जमीन और बगानों पर ध्यान कम होते गया। विदेशी सहायता काफी मात्रा में आने लगी जिससे कलीशा में आत्मपालन का भावना शिथिल हो गया। जमीन और बगानों से आमदनी घट गयी क्योंकि उनपर ध्यान नहीं दिया गया।

दूसरी महायुद्ध के बाद कलीशा का संविधान भी बदल गया और कलीशा कई अंचलों में बांटा गया। इस प्रबन्ध से भी कलीशा की आर्थिक उन्नति नहीं हुई। जब विदेशी सहायता में कमी होने लगी तब कलीशा का ध्यान उधर होना चाहिये था पर हुआ नहीं। कलीशा के संचालकों की संख्या में भारी वृद्धि हुई पर आमदनी में नहीं। प्रतिफल यह हुआ कि चन्दा के लिए अपील पर अपील निकलने लगे। परन्तु उन अपीलों की सफलता कितनी हुई यह तो हम इसी से देखते हैं कि अभी हमारे के॰ एस॰ एस॰ खजाना में बी॰ ई॰ एल॰ का पैसा छोड़ कोई पैसा नहीं रह गया है। कलीशा को चलाना अब एक कठिन समस्या हो गया है।

परिस्थिति को देख कर भारत सरकार ने कृषि विकास में जैसा कदम उठाया है उसी प्रकार अब कलीशा को भी कदम उठाना पड़ेगा। के॰ एस॰ एस॰ को चाहिए कि एक पूर्ण रूपेन प्रोपर्टी बोर्ड स्थापित करे जहां एक मैनेजर, एक फील्ड सुपरवैजर, एकाउन्टेट और क्लर्क रहें। कुछ समय पहले ऐसी व्यवस्था थी और प्रोपर्टी बोर्ड में पैसा भी होता था। उसके उठ जाने के बाद लोकल कमिटियां जयदाद की देखरेख के लिए बनायी गई हैं पर उनसे कोई खास काम नहीं होने पाया है। अभी जो नया प्रोपर्टी बोर्ड का अधिकारी या मैनेजर होगा वही हर एक मण्डली में जहां - जहां जयदाद है अपने तरफ से लोकल कमिटियां बनावे और उन कमिटियों के जरिये वहां का जयदाद और बगानों पर पूरा काम करवाने का प्रबन्ध करे। बड़े-बड़े बगान अभी गोविन्दपुर और रांची में है जिन्हें प्रयोग किया जा सकता है। रांची के दोनों बगानों में डिजेल या बिजली पम्प बैठाया जा कर पूरे बगान में तरह-तरह का साग सब्जी तथा गेहूं तक पैदा किया जा सकता है। गोविन्दपुर में डिजेल पम्प या दो तीन माली काम करने से पूरे बगान में खेती किया जा सकता है। जमीन में तो धान की खेती है सो है ही उस पर भी विशेष

Gossner Mission

निगरानी करने से उसका ऊपज अधिक और आमदनी अधिक बढ़ सकता है।

जयदाद से कलीशा गरीब नहीं है पर उन जयदादों का इस्तेमाल ठीक से न होने के कारण उन से लाभ नहीं उठाया जा रहा है। यदि कलीशा को आत्मपालित बनाना है तो एक मजबूत प्रोपर्टी बोर्ड रहे जो पूरी कलीशा के जयदाद को पूरा इस्तेमाल करे। इस दिशा में कदम बढ़ाने से कलीशा को चन्दा के भरोसे जीना न पड़ेगा न तो विदेशी सहायता ही की आवश्यकता होगी। अभी समय है कलीशा की स्थिति सुधारने का। इस मौका को खो देने से कलीशा कभी उन्नति नहीं कर पायगी। चन्दा भी कम होते जायगा तब कलीशा की क्या हालत होगी उसे आप भी जान सकते हैं।

पृष्ठ १३ का शेषांश

अपना अनुभव है कि जो मण्डली सेवकाई करना चाहता है उसे ऐसे प्रशिक्षण केन्द्रों में आना ही चाहिये और ऐसी संस्थाएं कलीशा में होना ही चाहिये।

—सूचना—

बेथेसदा बालिका उच्च विद्यालय दिनांक ५ जनवरी १९७३ प्रातः १० बजे खुलेगा। इस विद्यालय में वर्ग ६ से वर्ग ११ तक की पढ़ाई होती है। वर्ग ८ से विज्ञान Science और कला (Arts) की पढ़ाई होती है।

वर्ग ६, ७ और ८ में प्रवेश के लिए विद्यालय खुलने के दिन ही प्रधानाध्यापिका से मिलें। वर्ग ८ में प्रवेश के लिए वर्ग सात के वार्षिक परीक्षा का अंक पत्र साथ में लाना आवश्यक है। विद्यालय त्याग प्रमाण पत्र और अंकपत्र के बिना वर्ग ८ में प्रवेश नहीं हो सकता।

विद्यालय के साथ छात्रावास भी है। छात्रावास का वार्षिक शुलक ४५) रू० है। विद्यालय में प्रवेश होने पर ही छात्रावास में प्रवेश हो सकता।

प्रधानाध्यापिका
बेथेसदा बलिका उच्च विद्यालय रांची

पंच प्रतिष्ठापन आराधना

पाद्री ए० लकड़ा

[जो मनुष्य मण्डली पंच एवं पेरिस पंच हैं सो वेदी के सन्मुख खड़े होवें]

गीत

पाद्री :— परमेश्वर पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से आमीन।

पाद्री :— हे ईश्वर मुझ में एक पवित्रमन उत्पन्न कर और एक स्थिर आत्मा मुझ में डाल, मुझे अपने आगे से मत हांक और अपना धर्म्मात्मा मुझ से मत ले।

पाद्री + मंडली :— प्रभु हम पर दया कर खृस्त हम पर दया कर प्रभु हम पर दया कर।

पाद्री :— यशायाह ५४ : १० चाहे पहाड़ हट जाय और पहाड़ियाँ टल जाय तौभी मेरी करूणा तुझ पर से न हटेगी, और मेरी शांतिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है। आमीन।

वचन :— इफिसी ४ : ११ - १६

उपदेश

पाद्री की प्रार्थना : – हे सर्वशक्तिमान दयालु ईश्वर

Gossner Mission

पिता तू ने अपने प्रिये पुत्र के द्वारा हम लोगों को आज्ञा दी है कि हम तेरी कटनी में विश्वस्त बनिहारों को भेजने के लिये यत्न करें। तू हमारे मन में, मुँह में अपना वचन रख दे कि हम पूरे आनन्द और दृढ़ता से अपना काम करें जिससे तेरी मन्डली सुधारी जावे और हम प्रधान अध्यक्ष खृस्त के प्रगट होने पर आदर का मुकुट पावें उसी तेरे पुत्र अपने प्रभु यीशु खृस्त के द्वारा। आमीन।

पाद्री :— अब तुम सब मिल के अपना पवित्र विश्वास दर्पण मान ले के यों कहें — मैं विश्वास करता हूँ परमेश्वर पिता पर जो स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वशक्तिमान सृरजनहार है।

और उसके एकलौटेपुत्र अपने प्रभु यीशु ख्रिस्त पर जो पवित्र आत्मा से गर्भ में आया कुँवारी मरियम से उत्पन्न हुआ पन्तुस पिलातुस की आज्ञा से दुःख उठाया क्रूश पर चढ़ाया गया मर गया और गाड़ा गया पताल में उतरा तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर सर्वशक्तिमान पिता के दहिने हाथ बैठा है जहाँ से वह जीवतों और मृतकों का विचार करने को फिर आवेगा।

मैं विश्वास करता हूँ पवित्र आत्मा पर एक ही पवित्र ख्रिस्तानी कलीशा पवित्रों की संगत पर पापों की क्षमा देह के जी उठने और अनन्त जीवन पर आमीन।

पाद्री :— अभी वह वाचा जो तुमने दृढ़िकरण और पवित्र शादी के समय दिया है। उसको प्रभु के सामने और सारे मंडली के सन्मुख आप ही दे कर यों कहें —

मैं संसार और शैतान को संसार का कार्य और शैतान का कार्य और सब पाप और बुराई और इस देश की बुरी रीति छोड़ देता हूँ और हे त्रिएक परमेश्वर पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा मैं अपने को तेरे हाथ में सौंप (छोड़) देता हूँ कि तेरे लिये जीऊँ और तेरी दया में मरूँ हे प्रभु इस में मुझे सहाय कर आमीन।

पाद्री :— अब मैं ……… ईश्वर एवं मंडली के सन्मुख प्रतिज्ञा करता हूँ कि जहाँ तक सम्भाव हो विश्वस्ता से जब लों प्रभु की इच्छा है तब लों मंडली पंच का पद धारण करता रहूँगा और मंडली के लोग साँझ और बिहान, वैसे ही रविवार को ईश्वर आराधना में यत्न से उपस्थित होते रहें उसके लिये चिन्ता करू गा। लड़के-लड़कियों की सुधि ले कर उनको स्कूल भेजने तथा अन्छे स्कूलों में ईश्वर का वचन सीखने के लिये अगुवाई करूंगा। भटकने-हारे भेड़ों को फेर लाने की चिंता करूँगा।

परिवार निरीक्षण कर दुःखित व्यक्तियों की सुधि ले कर बिन्ती प्रार्थना करूँगा एवं अन्य प्रबन्ध द्वारा उनकी सहायता करूँगा। अपने वचन और चालचलन से मंडली को आदर्श बनाने के लिये उद्योगी रहूँगा तथा जो अब तक अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं उनके बीच वचन एवं अपने चालचलन से सुसमाचार प्रचार करने में प्रयत्नशील रहूँगा। मतवालपन, व्यभिचार, चोरी, मूर्ति-पूजा और वैसे ही अनेक पापों से अलग रहने की कोशिश करूँगा साथ में मंडली के अनेक आशीषित दानों का सुव्यवहार करने तथा कलीशा के नियमानुसार सेन्ट्रालाईज कराने को प्रोत्साहित करूँगा। आमीन

पाद्री :— अब तू ने उपरोक्त प्रतिज्ञाओं को ईश्वर एवं मंडली के सम्मुख इकरार किया है। इस लिये मैं कलीशा का अभिषित्तकजन तुम लोगों को अपने-अपने मंडली का मंडली पंच स्थापित करता हूं। परमेश्वर पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से आमीन।

सो अब वेदी के सम्मुख उपस्थित हो, घूटने टेक कर प्रभु की आशीषग्रहण करें।

आशीष वचन :—

पाद्री :— I परमेश्वर तुझे आशीष देवें और तेरी रक्षा करें।

II परमेश्वर अपना मुँह तुझ पर प्रकाश करें और तुझ पर अनुग्रह करें।

Gossner Mission

III परमेश्वर अपना मुंह तुझ पर प्रकाश करें और तुझे कुशल देवें।

अमीन।

पाद्री :— हम प्रार्थना करें :—

हे प्रभु यीशु खृस्त तू अपनी मंडली का राजा और स्वामी है। हम तेरी बिन्ती करते हैं कि तू इन चुने हुए और स्थापित किये गये पंच भाइयों पर अपना पवित्रात्मा उंडेल जो उसे प्रकाशमय करें, चलावें और दृढ़ावें जिससे वह अपना काम तेरी आत्मा और तेरे प्रेम से मंडली को आशीष के लिये करें। अनुग्रह कर कि वह सब बातों में विश्वस्त हो, आनन्द से तेरी और तेरी मंडली की सेवा करें जिससे इस संसार में तेरा नाम पवित्र होता जावे और सर्वथा तेरा राज्य बढ़ता जावे। आमीन।

पाद्री + मंडली :— हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र किया जावें —

आमीन।

पाद्री :— यीशु सहाय
मंडली :— यीशु सहाय ॥

गोस्सनर कलीसिया के भाई बहिनों को पत्री

रेभ० जे० जे० पी० तिगा
एक्स प्रेसिडेन्ट जी० ई० एल० चर्च, रांची

गोस्सनर कलीसिया के सब
भाई-बहनों को मेरा और मेरी धर्म पत्नी का सप्रेम यीशु सहाय। इस पत्री के द्वारा मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम लोग यहां १९७० के जून महिना में आये और मैंने इस कॉलेज में १ली जुलाई, १९७० से थेओलोजी विभाग में पढ़ाना आरम्भ किया। कॉलेज में मैं विशेष करके प्रेक्टिकल थेओलोजी और धर्मों का इतिहास पढ़ाता हूँ। प्रक्टिकल थेओलोजी में मैं तीन विषयों के जिम्मा में हूँ अर्थात (१) पाद्री का जीवन और उसका काम (२) देहाती मंडलियाँ और उनकी सेवकाई, और (३) कलीसियाओं का संगठन और शासन। धर्मों के इतिहास में निम्न धर्म आते हैं— हिन्दु, बौद्ध, सिक्ख, जोरोवारिटियानिज्म, इसलाम और जैन।

इसी साल के जून महिना में डा. मार्सलन बागे भी हमारे आचार्यवर्ग में आ मिले। ज्ञात रहे कि हमों को इसी कॉलेज ने निमंत्रण दिया जिसके कारण हमलोग यहां हैं और हमारी कलीसिया ने डाक्टर बागे को यहां आने के लिए अनुमति दी तथा मैं तो अवकाश पा चुका था और उस समय कलीसिया में मेरे लिये कोई काम नहीं था।

इस कालेज के साथ हमारी कलीसिया का बहुत पुराना सम्बन्ध है। अनेक साल हमारी कलीसा इस कालेज को साल-साल एक चिन्ह-स्वरूप ग्रांट भेजा करती थी। अभी कई सालों से शायद याद न रहने के कारण रुक गया है। इस चिन्ह का जिन्दा रहना हमारी कलीसिया के लिये एक गौरव का कारण है।

इसी कॉलेज से हमारी कलीसिया के अनेक अगुवे पढ़ लिख कर निकले जैसे :— [१] मृत पाद्री बेनजामिन मिंज [२] पाद्री जे· जे· पी· तीगा [३] पाद्री सुदर्शन लकड़ा, [४] पाद्री सामुएल हेमरोम, [५] पाद्री मनसिद्ध हेमरोम, [६] पाद्री निर्मल मिंज, [७] मृत मतियस समद, [८] पाद्री विक्सल तिर्की, [९] पाद्री प्रभुचरण मिंज, [१०] पाद्री मार्टिन जोजो, [११] पाद्री निरंजन एका। और अनेक भाई लोग भी इस कॉलेज से पढ़ के निकले जैसे [१२] मि· विमल कुमार तिर्की, हिन्दपीड़ी [१३] मृत खृस्ट सेबेयान तोपनो, [१४] मि· बेन्यामिन डांगवर, [१५] मृत फिलिमोन एका, [१६] मृत मतियस बडिंग — इनके उपरान्त अनेकों ने इसी कालेज से एफिलियेटेड मद्रास के

Gossner Mission

गुरूकुल कालेज के जरिये उच्च डिग्री प्राप्त किये अर्थात् [१७] पाद्री सी· के· पी· सिंह, [१८] श्री पौलुस केरकेट्टा, [१९] पाद्री सिलास कुजूर और इसी साल [२०] पाद्री खृस्त रोयन डांग और [२१] बंगलोर कालेज से जो भी इस कालेज का एक एफिलियेटेड कालेज है। और हमारे लूथेरन कालेज, रांची से जो भी इस कालेज से एफिलियेटेड है कम से कम २० जन एल· टी· एच· पास करके हमारी कलीसिया की सेवकाई कर रहे हैं। उपर्युक्त ४० व्यक्तियों के सिवाय अभी इसी कालेज में निम्न विद्यार्थी हैं— (१) श्री अंजोर डुंगडुंग, (२) श्री मनोहर कंडुलना, (३) श्री हिजकिएल खेस्स, (४) कंड सबनमार्टिन तोपोनो और (५) पाद्री नेहेमियाह तोपोनो।

इनमें से अनेक बी· डी· इसी कालेज से बी. डी· की उपाधि प्राप्त करके और अधिक योग्यता प्राप्त कर ली जिनका आधार यहीं था अर्थात [१] पाद्री जे. जे. पी. तिगा ने एम. ए. और एस. टी· एम., [२] पाद्री सी· के. पी. सिंह डाक्टर ऑफ थेओलोजी [३] पाद्री निर्मल मिंज एम· ए., एम· टी· एच· और पी· एच· डी· [४] मि· पौलुस केरकेट्टा एम· ए· [५] पाद्री विक्सल तिर्की एम· ए· [६] पाद्री मार्टिन टेटे एम· ए·।

इस बात से हमों को आश्चर्य है कि हम सिरामपुर से केवल ४११ किलो मीटर की दूरी पर रहते हुए भी ऐसा लाभ नहीं उठाये जैसा केरल की मसीही कलीसियाएं। दूर से आकर डाक्टर वेर्ग और डा· एच· फ्रागेल ने भी इसका दर्शन कर चुके हैं।

अब मैं थोड़ा सा इस कालेज के स्थापना के विषय वर्णन करूंगा। आप मुझे क्षमा करेंगे क्योंकि मैं इसका अंग्रेजी में जैसा बताया जाता है वही ंगा।

Historical Summary

Missionary educational work at Serampore dates from the year 1800, and Serampore College is a direct outcome of the earlier educational activities of the Serampore Mission. The following are the main landmarks of our growth as an educational institution.

In 1818, established in the Danish Settlement of Serampore by the Christian Missionary pioneers, Carey, Marshman, and Ward, for the instruction of Indian youth in Christianity and the Sciences; in 1827, incorporated by Royal Charter granted by His Danish Majesty with University powers under the control o an independent Council and having for its main object the promotion of piety and learning, particularly among the Indian Christian population of India, though open to all castes and creeds; in 1845, confirmed by the British Government in its chartered rights and immunities on the transfer by the Treaty of Purchase of the Settlement of Serampore from Denmark to Great Britain; in 1856, placed by the College Council at the disposal of the Baptist Missionary Society to become a part of its educational operations, Art and Theological; in 1857, affiliated to the newly formed Calcutta University, the first body in India to exercise, though not the first to receive University powers; in 1883, closed as an Arts College to become purely a Christian training institution, secondary, normal and theological for the Baptist Churches of Bengal; in 1900, and the following ten years, made a subject of important discussions in various Conferences denominational and interdenominational with a view to its reorganization as a high grade teaching institution and the utilizing of the College Charter for the granting of theological degrees to qualified students of all Churches; in 1910, reorganized on the lines laid down by the original founders under the direct control of the College Council by the appointment of a qualified Theological Staff and the opening of Higher Theological Classes

Gossner Mission

on an interdenominational basis; in 1911, again affiliated to the University of Calcutta up to the standard of the Intermediate Arts, in 1913 to the B.A., in 1920 to the intermediate Science, and in 1924 to the B.Sc.; in 1915, its Charter utilized for the first time for the conferring of degrees in Diviney ; in 1918, the Centenary year of the College, the Serampore College Act passed by the Bengal Legislative Council, with the object of enlarging the College Council, and constituting a new Senate on an interdenominational basis in 1919, the Governing Bodies of the College Council, Senate, and Faculty—reconstituted in accordance with the provisions of the Serampore College Act; in January 1925, responsibility for the full efficiency of the College on its present basis assumed by the Baptist missionary Society; in June 1949, the Council transferred to India with its headquarters at Serampore: such, in brief, are the main landmarks in the history of Serampore College

'Any person in India, Europe or America shall be at liberty to found any Professorship, or to attach to Serampore College any annual exhibition or prize for the encouragement of learning in the same manner as in Universities of Great Britain, regulating such endowment according to their own will; and it shall be the duty of the College Council to carry such benefactions into effect in strict consonance with the will of the donors as far as shall be consistent with the Statutes of the College.' ***(No. 15 of the original Statutes and Regulations, still binding under the Serampore College Act.)***

Further particulars may be obtained from the Principal, Serampore College, Serampore, W. Bengal, India.

सिरामपूर कॉलेज का दो काम है : (१) पढ़ाना और (२) डिग्री देना। पढ़ाने के सम्बन्ध में यहाँ थिओलोजी, आर्ट्स, साईन्स और कमर्स की पढ़ाई होती है— थिओलोजी की परीक्षा और उपाधि का सम्बन्ध सिरामपूर कॉलेज के सेनेट के साथ है और आर्ट्स आदि के लिये कलकत्ता युनिवर्सिटी से है। थिओलोजी का जहां तक सम्बन्ध है उसके लिये एक सिनेट की नियुक्ति हुई है जिसके जिम्मा में कोर्स ठहराना, परीक्षा लेना और सफलवन्त विद्यार्थियों को M. th; B.D; B.R.E; B. th;

[शेष अगले अंक पर]

कलीसियाई समाचार

१ धुमकुन्दा मण्डली में युवा सम्मेलन—असम अंचल के तिनसुकिया "ए" पेरिश के धुमकुन्दा मण्डली में २१-२२ अक्टोबर को युवा सम्मेलन हुआ। लगभग चार सौ भाई-बहन एवं युवा-युवती उपस्थित थे। भजन, गजल, और नाटक दिखाने का अच्छा अवसर था। वक्ताओं ने धार्मिक शिक्षा द्वारा सभों को आत्मिक लाभ पहुँचाया। सभी कार्य्य-क्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। उपस्थित लोगों में मसीही सहभागिता की बढ़ती का अनुभव हुआ।

२ बालू गढ़ा मण्डली में मिशन पर्व — १-२ नोवेम्बर, ७२ को असम अंचल के तिनसुकिया "ए" पेरिश के बालू गढ़ा मण्डली में बड़े धूम-धाम से मिशन पर्व मनाया गया जिसमें लगभग तीन सौ भाई-बहन उपस्थित थे। चुने हुए वक्ताओं ने मिशन पर्व के सम्बन्ध में सम्वाद दिया। कार्य्य-क्रम के अन्तर्गत नाटक एवं गीत प्रतियोगिता भी रखा गया था। भिन्न-भिन्न मण्डलियों के भाई बहनों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार

Gossner Mission

इलाका चेयरमेन द्वारा बिजेताओं को दिया गया। सभी कार्य्य-क्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। सभी को बड़ा आनन्द मिला।

३ पाद्री डा० ग्रोटहाऊस का गोस्सनर कलीसिया में भ्रमण लूथेरान वर्ल्ड फेडरेशन की ओर से भेजे गये पाद्री डा० ग्रोटहाऊस अक्टोबर ३' ७२ को रांची पहुँचे और उसी दिन से अपना दौरा आरम्भ कर नोवेम्बर २० तक दौरा करते रहे और अपना कास समाप्त कर नोवेम्बर २१ को रांची वापस लौट गये। डा० ग्रोटहाऊस गोस्सनर मिशन कुराटोरियम के एक सदस्य हैं और गोस्सनर कलीसिया को बहुत प्यार करते हैं। उनका हमारे बीच में दूसरा आगमन था। इस बार वे एल. डबल्यू. एफ. की ओर से हमारी कलीसिया के शिक्षण संस्थाओं को देखने आये थे। उन्होंने सभी हाई स्कूलों को तथा कितने मिडिल स्कूलों को देखा, आर्थिक स्थिति की जांच की तथा संचालन व्यवस्था की जानकारी हासिल की। अब वे अपना रिपोर्ट एल. डबल्यू. एफ. को देंगे। आशा की जा रही कि उनके रिपोर्ट के आधार पर हमारे शिक्षण संस्थाओं के लिये आर्थिक व्यवस्था की जाएगी। उनको दुःख हुआ कि वे कारण बस आसाम नहीं पहुँच सके और कलकत्ता से रांची बापस लौट गये।

४ Ex-Pramukh Adhyaksh की नियुक्ति-बोते पूर्ण के. एस. एस. की ३-८ नोवेम्बर, ७२ की बैठकी के फैसलानुसार भूत-पूर्व प्रमुख अध्यक्ष पाद्री बी. मिंज की नियुक्ति ए. टी. सी. खूटी टोली में पहली नोवेम्बर से हो गयी थी, किन्तु कुछ कारण बस उनका वहां जाना स्थगित हो गया है। अतः प्रमुख अध्यक्ष के आदेशानुसार वे अगामी के. एस. एस. की बैठकी तक रांची ही में रहेंगे और ऑफिस के काम में प्रमुख अध्यक्ष की सहायता करेंगे।

May the blessing of the Christ Child
Bring happiness to you at Christmas
Joy throughout the New Year.

TIRKEE ENTERPRISES

G. E. L. CHURCH COMPOUND
MAIN ROAD RANCHI, BIHAR, INDIA

Manufacturer of :— OFFICE, SCHOOL, CHURCH,
COMMERCIAL & DOMESTIC
IRON & WOODEN FURNITURES
DESIGNER & STEEL FABRICATOR.

रजिस्टर्ड नं० पी० टी० १५
वर्ष — १३ रांची, जनवरी १९७३, संख्या नं० — १

Edited and Published by Rev. C .B. Minz Pramukh Adhyaksh for and on behalf of G. E. L. Church and Printed at G. E. L. Church Press, Main Road, Ranchi/Bihar.

Gossner Mission